८११.०५
कुल|मं

१ ओकार सतिगुर प्रसादि ।

मंगल कलश

(श्री गुरु ग्रन्थ चयन)

(गुरुवाणी चयन, अर्थ, अनुशीलन, श्री गुरुग्रन्थ परिचय एव भारतीय तथा विश्व साहित्य के सदर्भ मे भावसाम्य सहित)

जिसकी सेवा परम कृपा पूर्वक
वाहिगुरू ने पन्थ के दास
कुलदीप सिह से करायी

प्रकाशक

सरदार मोहन सिह
गुरुमत विचार केन्द्र
इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश शासन भाषा विभाग
राजाज्ञा सख्या १८३/दिनाक ३१ ३ १९९७
द्वारा रू० ५,०००/– प्रकाशन अनुदान
प्राप्त ग्रन्थ

प्रथम सस्करण अप्रैल १९९९

प्रकाशक
कुलदीप सिह
(सेवा निवृत खण्ड विकास अधिकारी)
गुरुमत विचार केन्द्र
सी–१२७ गुरू तेग बहादुर नगर
इलाहाबाद–२११०१६

मूल्य सजिल्द ७०/–
पेपर बैक ५०/–

खालसा पन्थ के सृजन के त्रिशताब्दि वर्ष के दिवस को समर्पित

ठाढ भयो मै जोरि कर बचन कहा सिर निआइ ।
पन्थ चलै तब जगत मै जब तुम करहु सहाइ ।।

बचित्र नाटक ३० **गुरू गोविन्द सिह**

मै अकाल पुरूष के सामने हाथ जोडकर खडा हुआ और शीश झुकाकर प्रभु से प्रार्थना की । हे प्रभु ! जब तुम सहायता करोगे तभी ससार मे कुबुद्धि को रोकने तथा धर्म पर चलने का निर्मल खालसा पन्थ चलेगा ।

देह सिवा वर मोहि इहै सुभ करमन ते कबहू न टरो ।
न डरो अरि सो जब जाइ लरो निसचै कर आपनी जीत करो ।।
अरू सिखहो आपने ही मन को इह लालच हउ गुन तउ उचरो ।
जब आव की अउध निदान बनै अति ही रन मे तब जूझ मरो ।।

चण्डी चरित्र/गुरु गोविन्द सिह

हे प्रभु मुझे यह वर दीजिए कि मै शुभ कर्म करने से कभी पीछे न हटूॅ । मै कभी शत्रु से भय न मानू जब मै युद्ध मे जाऊॅ तो निश्चय ही मुझे विजय प्राप्त हो । मेरे मन का एक ही गुरूमत्र हो कि मै उत्साह पूर्वक तुम्हारा गुणगान करू । जब मेरा ससार से विदा होने का समय हो तो मेरी मृत्यु रण भूमि मे वीरता पूर्वक युद्ध करते हुए हो ।

मै गुलाब मेरा करतब एहो
खिड खिड बाग सजाणा ।
सुक सड जाणा भुर जाणा
ते मुड खेडे विच आणा ।।
बाग सलामत बूटा हरिआ
जीवे जागे माली ।
शाला । बणिआ रहे मेरा एथे
नित्त नित्त आउणा जाणा ।।

धनी राम चात्रिक
(१८७६ १९५४)

मै गुलाब हूँ ।

(इस छोटे से जीवन मे) मेरा यही शुभ कार्य है कि मै हॅसते हुए प्रस्फुटित होकर (अपने वतन के) बाग को सजाता हूँ ।

(अपने इस जोखिम भरे काम मे) मै जल्दी ही सूख जाता हूँ और (तप्त हवा के झोको से) जल्दी ही जल जाता हूँ । जल कर मै शाखा से अलग होकर मिट्टी मे मिल जाता हूँ और जल्दी ही चमन की बहार का पुन अग बन जाता हूँ ।

हे प्रभु । मेरा बाग (राष्ट्र) सलामत रहे मेरा देश हरे पेड के समान प्रफुल्लित रहे और इस के माली (कर्णधार) कुशल और चैतन्य रहे ।

हे प्रभु । (मुझे मुक्ति जैसी किसी दुर्लभ वस्तु की कामना नही है) मेरी एक हसरत है कि मेरा यहा इस चमन मे बार–बार आना जाना बना रहे ।

भई परापति मानुख देहुरीआ । गोबिन्द मिलण की इह तेरी बरीआ।
अवरि काज तेरै कितै न काम । मिलु साधसगति भजु केवल नाम।
सरजामि लागु भवजल तरन कै ।
जनमु ब्रिथा जात रगि माइआ कै ।। रहाउ
जपु तपु सजमु धरमु न कमाइआ । सेवा साध न जानिआ हरिराइआ।
कहु नानक हम नीच करमा । सरणि परे की राखहु सरमा ।।२।।

राग आसा गुरु अर्जन देव/१२

मानव जीवन के सम्बन्ध मे इस सबद का अर्थ पृष्ठ ११५ पर दिया गया है ।

हरि रस अमृत तुल्य है और गुरू बादल के समान है सावन मानव जीवन का प्रतीक है इस सम्बन्ध मे सबद सख्या ५७ पृष्ठ १५० पर अकित है ।

बरसु घना मेरा मनु भीना ।
अम्रित बूद सुहानी हीअरै गुरि मोही मनु हरि रसि लीना ।।

गुरु अर्जन देव जी ने इसी भाव को पै पाइ मनाई सोइ जीउ वाणी के अन्तर्गत व्यक्त किया है ।

तेरै हुकमे सावणु आइआ ।
मै सत का हलु जोआइआ ।
नाउ बीजण लगा आस करि हरि बोहल बखस जमाइ जीउ।।

तुम्हारे ही आदेश से मुझे मानव जीवन मिला है । मै शुभ कर्मो का हल चला रहा हूॅ और अपने चित्त रूपी खेत मे नाम का बीज बो रहा हूॅ । हे प्रभु ! तुम्हारी कृपा रूपी अन्न की खेती खूब जमे ।

इस सम्बन्ध मे रवीन्द्र नाथ टेगोर का गीत दर्शनीय है ।

एबार तोर मरा गाडे बान एसेछे 'जय मा ब ले भासा तरी ।।
ओरे रे ओरे माझि कोथाय माझि प्राणपणे भाइ डाक दे आजि
तोरा सबाइ मिले बैठा ने रे खुले फेल् सब दडादडि ।।
दिने दिने बाडल देना ओ भाइ करलि ने केउ बेचा केना
हाते नाइ रे कडा कडि ।
घाटे बॉधा दिन गेल रे मुख देखाबि केमन क'रे
ओरे दे खुले दे पाल तुले दे या हय हबे बॉचि मरि ।।

गीत वितान स्वदेश (५) **रवीन्द्र नाथ टैगोर**

इस बार तुम्हारी सूखी हुई जल धारा मे बाढ आई है । जय मा कहकर नौका तैरा दो ।

हे माझी ! तू कहॉ है ? हे भाई ! आज मन से पुकार । तुम सब मिलकर डाड सभालो । सब रस्सा रस्सी खोल डालो । प्रतिदिन ऋण बढ रहा है । अरे भाई ! किसी ने बेचना खरीदना नही किया । हाथ मे एक कौडी भी नही है घाट पर नाव बन्धे बन्धे दिन चला गया । (प्रभु को) कैसे मुख दिखाओगे ।

पाल चढा दो जो होना है हो बचे या मरे ।

हरि सच्चे तखत रचाइआ सत सगत मेला ।
नानक निरभउ निरकार विच सिधा खेला ।
गुरू सिमर मनाई कालका खण्डे की वेला ।
पीओ पाहुल खण्ड धार हुइ जनम सुहेला ।
सगति कीनी खालसा मनमुखी दुहेला ।
वाहु वाहु गोविन्द सिघ आपे गुरु चेला ।

भाई गुरदास सिघ

बैसाखी पर्व

१५६७ गुरु अमर दास जी ने वैसाखी को सिक्ख धर्म के त्योहार के रूप मे मनाना आरम्भ किया ।

१६२७ गुरु हर गोविन्द जी ने ग्राम माडी मे सिक्ख धर्म का प्रचार किया दीक्षा देने वाले सिद्धूजाटो के निवास का ग्राम महेराज मे प्रबन्ध किया गया दीक्षा लेने वाले काला के भतीजे अनाथ बालक फूल को गुरू जी ने वर दिया जिससे उनके वशज पटियाला नाभा और जीद के शासक बने ।

१६६६ **गुरू गोविन्द सिह जी ने खालसा पन्थ का सृजन किया ।**

१७६५ सिक्खो का लाहौर पर कब्जा । खालसा पन्थ के सिक्को पर अकित –
देग उ तेग ओ फतह ओ नुसरत बे दरग
याफत अज नानक गुरु गोबिन्द सिघ
जरूरत मद की भूख शान्त करने को देग निर्बलो की रक्षा के लिए तलवार विजय और तत्काल सहायता पहुँचाने की शक्ति नानक तथा गुरु गोविन्द सिह से मिली है ।

१८०१ महाराजा रणजीत सिह का लाहौर के किले मे राज्यभिषेक । तीन दिन तक दीप माला । पहले दिन के सभी सिक्के गरीबो मे बाटे गये ।

१९१९ जलिया वाला बाग मे बलिदान से भारत मे ब्रिटिश शासन की सत्ता लडखडाई । महात्मा गाँधी के शब्दो मे प्लासी ने भारत मे ब्रिटिश साम्राज्य की नीव रखी और अमृतसर ने उसे हिला दिया ।

सिक्खी

उह किडडा बूटा ए ?
हर था जो पलदा ए -
आरे दे ददिआ ते रबी दीआ धारा ते
खैबर दिआ दरिआ विच सरसा दीआ लहरा ते
सतलुज दे कढे ते लखी दे जगल विच
रोडा विच रकडा विच बजरा विच झखडा विच
गडिआ विच मीहा विच सरहद दीआ नीहा विच
जित्थे वी ला दईए उत्थे ही पलदा ए
जितना इह छाग दईए उतना इह फलदा ए ।
उह किहडा बूटा ए ?
भुखिआ तरिहाइआ नू जो फल खवादा ए
थक्किआ ते टुटिआ नू छा विच सवादा ए ।
जिहडा वी शरन लवे उस ताई बचादा ए ।
जे झखड आ जावे जे न्हेरी आ जावे
अबदाली आ जावे कोई नादर आ जावे
मासूम गुटारा नू बेदोसीआ चिडीआ नू
बेलोसीआ घुगीआ नू कूजा दीआ डारा नू
इह तुरत छुपा लैदा इह आहलणे पा लैदा
ते राखा बण बहिदा
पैर इस दे धरती ते पर आप उचेरा ए ।
जित्थे दिल इस दा ए जित्थे सिर इस दा ए
उह था उचेरी ए उह खुल्ही हवा विच ए
उह पाक फजा विच ए उह खास खुदा विच ए
जित्थे न वैर कोई
जित्थे न गैर कोई

सावे पत्तर (१६३६)

प्रो मोहन सिह
(१६०५ १६७८)

वह कौन सा छोटा हरा और कोमल पेड है जो हर स्थान पर पनपता है ? (सिक्खी/खालसा पन्थ ही एक मात्र तरुवर है जो हर स्थान पर अपने सिदक/श्रद्धा पर दृढ रहता है) ।

भाई मतिदास जी आरे से चिराये जाने पर धर्म मे दृढ रहे । भाई तारु सिह ने केश मागे जाने पर प्रार्थना से बढकर खोपडी सहित दान दिया । खैबर दर्रा के पास नदी पार कर हरी सिह नलवा ने जमरोद के किले पर खालसा पन्थ के निशान को झुलाया । गुरु गोविन्द सिह जी ने चमकौर युद्ध के बाद बढी हुई सरसा नदी मे घोडे डाल दिये । अपने परिवार से अलग होकर उन्होने लक्खी जगल मे ककडो की शय्या को श्रेयस्कर माना उनके छोटे बच्चे सरहन्द की दीवारो मे चिनवा दिये गये । गुरु जी ने चार मुए तो क्या मुए जीवित कई हजार की धारणा से निश्चय कर अपनी जीत करौ का उद्घोष किया । पजाब के शासको ने जब सिक्खो का दमन किया (जैसे पेड की छॅटाई की जाती है) तो खालसा पन्थ नवीन शक्ति से पनप उठा –

मन्नू असाडी दातरी असी मन्नू दे सोए ।
जिऊॅ जिऊॅ मन्नू वढदा असी दूण सवाए होए ।

सिक्ख धर्म (खालसा पन्थ) एक ऐसा पेड है जो भूखे प्यासो को फल खिलाता है थके हारो को छाया और सरक्षण प्रदान करता है । जब पजाब नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणो से त्रस्त हुआ तब बहादुर खालसा सिपाहियो ने उस आन्धी और तूफान मे निर्दोष जनता की मासूम बच्चो की किशोर कन्याओ की रक्षा की अपने घोसले मे उन्हे चिडिया कबूतर और सारस पक्ति की भाति छिपा लिया ।

खालसा पन्थ के पादप की जडे पृथ्वी पर है पर इसका आदर्श ऊॅचा है । सत्सगति पाकर इसे अपने पराये का भेद भूल गया है । इसकी बुद्धि और हृदय सिमरन के द्वारा प्रभु मे लीन है प्रभु की ज्योति से अद्वैत होकर इसने घट घट मे एक को पहचान लिया है –

स्थावर जगम कीट पतग घट घट राम समाना रे ।

बन्दीवीर (बन्दा बहादुर)

पचनदीर तीरे वेणी पाकाइआ शिरे
देखिते देखिते गुरू मन्त्रे जागिआ उठेछे शिख
निर्मम निर्भीक
हाजार कण्ठे गुरूजीर जय ध्वनिया तुलेछे दिक।
सप्ताह काले सात शत प्राण नि शेष हये गेले
बन्दार कोले काजि दिल तुलि बन्दार एक छेले
कहिल 'इहारे बधिते हइवे निज हाते अवहेले
दिल तार कोले फेले
किशोर कुमार बान्धा बाहू तार बन्दार एक छेले
किछु न कहिल वाणी
बन्दा सुधीरो छोटो छेलेटिरे लइल वक्षे टानि
क्षणकालतरे माथार उपरे राखे दक्षिणपाणि
शुधु एक बार चुम्बिल तार राङा उष्णीषखानि।
तार परे धीरे कटिवास हते छुरिका खसाये आनि
बालकेर मुख चाहे
'गुरुजीर जय' काने काने कय रे पुत्र भय नाहि'।
नवीन वदने अभयकिरन ज्वलि उठे उत्साहि-
किशोर कण्ठे कॉपे सभातल बालक उठिल गाहि
'गुरुजीर जय किछु नाहि भय' बन्दार मुख चाहि।।
बन्दा तखन वाम बाहु पाश जडाइल तार गले
दक्षिण करे छेलेर वक्षे छुरि वसाइल बले
गुरुजीर जय कहिआ बालक लोटालो धरणी तले
सभा हल निस्तब्ध
बन्दार देह छिंडिल घातक सॉडाशि करिया दग्ध
स्थिर हये वीर मरिल न करि एकटि कातर शब्द
दर्शक जन मुदिल नयन सभा हल निस्तब्ध ।।

रवीन्द्र नाथ टैगोर

देखते ही देखते पॉच नदियो के किनारे सिर पर केश धारण कर गुरु मत्र से सिक्खवीर जाग उठे सब दिशाये निर्मम निर्भीक गुरु जी की जय की ध्वनि से गुञ्जरित हो उठीं ।

एक सप्ताह मे सात सौ सिक्खो का बन्दीघर खाली हो गया । बदा की गोद मे काजी ने एक सुन्दर बालक को सौप दिया और कहा ए बहादुर इस बालक का मस्तक अपने हाथो से उडा दे । यह बालक बन्दा का एक मात्र पुत्र था बन्दा ने उस किशोर बालक को अपनी छाती से लगा लिया ।

बन्दा के मुख से एक भी शब्द नहीं निकला उसने धीरे खींच कर बालक को कस के वक्ष से लगाया और एक क्षण के लिए पिता का अभयदाता हाथ माथे पर रख दिया । केवल एक बार निहार कर उसकी रगीन पगडी चूम ली और फिर कटि मे बन्धी दारुण कृपाण सॅभाल ली ।

फिर शिशु के दुधमुहे मुख की ओर देखकर कान मे बोला वाहे गुरु जी की जय बेटा नहीं है भय । नवीन किशोर मुख पर अभय किरणे तत्काल चमक उठी बालक बोला जय वाहे गुरु जी की जय नहीं कुछ भय ।

बाई भुजा मे कस कर बन्दा ने उसे गले लगाया फिर दाहिने हाथ मे लेकर दुलारे बालक के कलेजे मे कृपाण भोक दी । जय वाहे गुरु जी की जय पुकारा लाल ने फिर निष्प्राण धरती पर लोट गया। सारी सभा स्तब्ध वाक्य विहीन थी ।

और जल्लाद ने अविचिलत वीर बन्दा को जलती सण्डासी से जला डाला । बन्दा शान्त रहा और एक भी कातर शब्द नहीं बोला।

व्याकुल दर्शको ने नेत्र मूँद लिये सभा निस्तब्ध थी ।

प्रार्थनातीत दान

पाठानेर यवे बाधिया आनिल बन्दी शिखेर दल
सुहिदगञ्जे रक्तवरण हइल धरणी तल ।
नवाब कहिल शुन तरू सि० तोमारे क्षमिते चाइ ।
तरू सि० कहे - मोरे केन तव एत अवहेला भाइ ।
नवाब कहिल महावीर तुमि तोमारे न करि क्रोध
वेनीटि काटिये दिये याउ मोरे ए शुधु अनुरोध
तरू सि० कहे - करुणा तोमार हृदय रहिल गॉथा
या चेयेछ तार किछु वेशि दिव वेणीर सगे माथा

कथा **रवीन्द्र नाथ टैगोर**

जब पठान बन्दी–सिक्खो के दल को बान्ध कर लाये तो (लाहौर के किले) शहीद गज की धरती रक्त से लाल हो गयी । नवाब (जकरीआ खा) ने कहा तारू सिह सुना क्या तुम क्षमा चाहते हो ? तारू सिह ने कहा मैने क्या गलती की है जिसकी क्षमा चाहू ।

नवाब ने तारू सिह से कहा हे शूरवीर रोष मत करो केवल अपने केश काट कर देते जाओ मेरा इतना ही अनुरोध है । तारू सिह ने कहा तुम्हारे हृदय मे करुणा बनी रहे जो कुछ तुम चाहते हो उससे मै अधिक देना चाहता हू आप केश के साथ मेरी खोपडी (माथा) भी ले लीजिए ।

भाई तारू सिह माझे के पूल्हे गाव का निवासी था उस पर सिक्खो को शरण देने का आरोप था । तारू सिह को १ जुलाई १७४५ को खोपडी उतारी गयी तथा शहीद किया गया ।

सिक्ख धर्म के अन्य शहीदो मे श्री गुरूतेग बहादुर जी की शहीदी से एक दिन पहले दिनाक १०–११–१६७५ को भाई मती दास जी को आरे से चीरा गया तथा भाई दयाला जी को देग मे उबाला गया । सिक्ख धर्म के वृद्ध विद्वान भाई मनी सिह को १७३६ मे शरीर का अग–अग काट कर शहीद किया गया तथा उनके साथी गुलजार सिह की खाल उतारी गयी ।

भारतीय गणतत्र की स्वर्ण जयती २६ जनवरी २००० के

अवसर को समर्पित

महान वट वृक्ष

મહા-વડ

જટાજટિલ જીર્ણશીર્ણવપુ ભવ્ય આ ભારત,
મહા-વડ અડોલ, કે યુગથપાટ ખાતો ખડો.
હશે થડ ક્યુ, કઈ જ વડવાઈઓ ? રાફડા
અઘોરરવ ફૂફવે ! વિકટદષ્ટ્ર પ્રાણી કઈ
પરસ્પર પ્રતિ શુ હિસ્ર ધસતા ? છળી ઠોકતાં
ધરા પર ખરી, હણાય પશુ, રાંક જીવાત કે
પિલાય, જનમે-શમે. થર પરે થરો કારમા
ઉધેઈ રચતી રમે સૂકલ મૂળજાળા ગ્રસી.

તથાપિ ચઢતો અહો કહીંયથી જ ઉત્રીંરસ
પ્રફુલ્લ કરી ડાળડાળ હસતો કુપેરો પરે,
વરેણ્ય સવિતા તણા કિરણમર્ગ આમ ત્રતો,
વિહગકુલ પર્ણપુજ મહીં જે લપ્યા તેહને
અન ત નભગુ જતી ઋતઋચાથી ટહૌકાવતો.
અખ ડ ધૃતિવ ત ભારત શ્વસ ત આ શાશ્વત.

૧-૮-૧૯૫૮

जटाजटिल जीर्णशीर्णवपु भव्य आ भारत
महा वड अडोल कै युगथ पाट बातो बडो ।
हशे थड कयु कई वडवाईओ? राफडा
अघोर रव फूफव ! विकटदष्ट्र प्राणी कई
परस्पर प्रति शु हिस्र धसता ? छळी ठोकता
धरा पर खरी हणाय पशु राक जीवात कै
पिलाय जनमे शमे थर परे थरोकार मा
उधेई रचती रमे सुकल मूळजळा ग्रसी ।
तथापि चढतो अहो कहीय थी जा उर्वी रस
प्रफुल्ल करी डाळ डाळ हसतो कुपेरो परे
वरेण्य सविता तणा किरण मर्ग आमन्त्रतो
विहग कुल पर्ण पुञ्ज मही जे लप्या तेहने
अनत नभी गुजती ऋचाथी टहौकावतो
अखण्ड धृत वन्त भारत श्वसत आ शाश्वत ।।

कविता समग्र

(उमा शकर जोशी)

भारत एक स्थिर भव्य जटा जाल को धारण किये जीर्ण शीर्ण शरीर वाला महान बरगद है जो समय के थपेडो के बीच सीधा खडा है । इसका तना कौन सा है ? कितनी शाखाये तनो के रूप मे है ? इसकी छाया तले दीमक पनप रहे हैं साप फुफकार रहे हैं जगली जानवरो की मारकाट पराकाष्ठा पर है । बडे जानवरो के पैरो तले छोटे जीव कुचल जाने से मिटटी मे मिल रहे है । दीमक इसकी मूल जड को चाट रही है ।

किन्तु फिर भी जीव रस इसकी आखिरी टहनियो तक पहुॅचता है जिससे वे नई कोपलो से मुस्कराने लगती है । पेड की डालियो पर सूर्य की किरणे चिडियो को आमत्रित करती है । सत्य की अपनी ही ध्वनि से अनन्त नभ गूज उठता है । आश्वस्त जीवन्त और धैर्यवान भारत सनातन रूप से खडा है ।

लवु पापु दुइ राजा महता कूडु होआ सिकदारु ।
कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ।।
अधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ।
गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ।।
उचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु ।
मूरख पडित हिकमति हुजति सजै करहि पिआरु ।
धरमी धरमु करहि गावावहि मगहि मोख दुआरु ।
जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु ।।
सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै ।
पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ।।

वार राग आसा सलोकु **गुरु नानक देव**

पाप राजा और लोभ उसका मत्री है मिथ्या व्यवहार उसकी टकसाल का अधिकारी है जो झूठ के सिक्के चलाता है । काम सहायक है जिससे परामर्श किया जाता है ।

ज्ञान से रहित प्रजा अन्धी है और मुर्दे की तरह चुपचाप अन्याय सहन करती है । ज्ञानी कहलाने वाले (कलाकार) रास नृत्य करते बाजे बजाते है और शरीर का श्रृगार करते है ऊँची आवाजो मे वाद विवाद करते है अथवा धर्म योद्धाओ की कथाये गाते है ।

पढे लिखे मूर्ख तर्क वितर्क करते है उनकी रूचि धन सग्रह हैं । धार्मिक व्यक्ति धर्म कमाते हैं किन्तु मुक्ति की स्वार्थमयी लालसा से वे धर्म के पुण्य प्रभाव से वचित है यती कहलाने वाले जीवन युक्ति को नहीं जानते वे गृहस्थी छोडकर सन्यासी बन जाते है ।

सब अपने अपने को पूर्ण समझते है कोई अपने को कम नहीं समझता किन्तु मनुष्य का जीवन तभी सही तोल पर स्वीकार होगा जब तराजू के पिछले पलडे पर प्रभु स्वीकृति के सम्मान के बाट रखे जावेगे गुरु नानक जी कहते हैं यही सही तोल होगी ।

स्वातन्त्रय न्हय

प्राणाक क्षय बुद्धीक भय फाल्याक जय कालचीच वय ।
आयला थय स्वातन्त्र्य ते स्वातन्त्र्य न्हय स्वातन्त्र्य न्हय ।।

जे घराचे खणपि वाते
तेच जय सन्मान्य दाते
धर्माथ जय दारात ताच्या सज्जनार्चाय लागता लय

वाट मारे चोर खुनये
जय प्रजेचे मुख्य थेलये
सत्ताय जय ताच्या भयान मारता मिठा नीती निलेय

पाडसा वैले कुवाले
काल धवशे आज सावले
जय सदा खुबलावन भौसा वहो ताखातीर धालती शवय

घाण स्वार्था जय चे बरपी
वाच तल्याचे त्राण चिरपी
दिवक जल लटक्या अधर्मा काही उजल उत्राकलय

पेच सामको भौस जय चो
फोव सो कोणेय काण्डचो
पट्टेल्याचे पाय चाट्टा पिडटल्याचो गायता जय

आप जयच्या सगले भष्टे
वद्य पर क्यालेच उष्टे
हुटकेती ताच्या भितोडे मेलटा ती उखलुक तलय

पोट ही जय एक निष्ठा
त्यारा कष्टाची कुचेष्टा
जीव आसल्यार खाव मिकेच होच जय च दिग्विजय
आयला थय स्वातन्त्र्य ते स्वातन्त्र्य स्वातन्त्र्य न्हय ।

बी बी बोरकर

अगर स्वतन्त्रता ऐसे देश मे आती है जहॉ प्राणो का धीरे–धीरे क्षय होता है जहॉ आने वाला कल बीते कल सा मृत है । बुद्धि भय से ग्रस्त है तब कोई स्वतत्रता नही है कोई स्वतत्रता नही है ।

जहॉ घर से सेध लगाने वालो को उपकार कर्ता का सम्मान मिलता है। जहॉ धर्म के नाम पर सज्जन पुरुष विनाश को प्राप्त होते है ।

जहॉ बटमार और चोर जनता के मुख्य नेता बन जाते हैं तथा उनके डर से अपनी नीति कानून और अनुशासन से सत्ता त्रस्त रहती है ।

जहॉ कपटी बाडे की सीमा पर बैठ कल उज्ज्वल और आज काले दिखाई देते हैं ।

जहॉ वोट प्राप्त करने को जनता से ऊॅचे–ऊॅचे नारो द्वारा सहयोग मागा जाता है ।

जहॉ साहित्यकार स्वार्थान्ध लोगो का जय जयकार करते हैं और पाठको की शक्ति चूसते है वे निर्लज्जता पूर्वक मुलम्मा चढे शब्दो द्वारा अनीति का समर्थन करते हैं ।

जहॉ निर्धन दीन हीन जन धान की तरह कूटे और पीटे जाते हैं हर एक व्यक्ति उन्हे पावे तले कुचलता है जो उनको प्रताडित करता है उसके पाव चूमते है । उत्पीडन करने वालो का जय जय गान करते है । अपनी स्वदेशी वस्तु को भ्रष्ट मानते है । पराई विदेशी जूठन की पूजा करते है । अपनी ओर फैके गये तुच्छ उपहार को उत्कट इच्छा से लालच से गोद मे रख लेते है ।

जहॉ सिर्फ पेट भरना ही एक मात्र निष्ठा है तथा त्याग और कठिन परिश्रम का मजाक उडाया जाता है ।

जहॉ भिखारियो के टुकडो के सहारे पलना उपलब्धि और विजय है अगर वहॉ स्वतन्त्रता आती है तो कोई स्वतन्त्रता नहीं है बिल्कुल कोई स्वतन्त्रता नहीं है।

सत्यमेव जयते नानृत
सत्येन पन्था विततो देवयान ।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा
यत्र तत् सत्यस्य परम निधानम्

मुण्डकोपनिषद ३ १ ६

सत्य की ही विजय होती है झूठ की नही । परम देव परमात्मा को प्राप्त करने का मार्ग सत्य से ही परिपूर्ण है । जिनकी भोग वासना नष्ट हो गयी है ऐसे पूर्णकाम ऋषि लोग सत्य के परम आधार पर ब्रह्म परमात्मा के धाम पहुॅचते है ।

आता तीख होउनी मवाल । जैसे जातीचें मुकळ ।
का तेज परी शीतळ । शशाकाचे ।। ११५
शके दाविताचि रोगु फेडू । आणि जिभे तरि नव्हे कडू
ते वोखद नाही मा घडु । उपमा कैची ।। ११६

ज्ञानेश्वरी

मोगरे की कली जैसे बहुत छोटी होने पर कोमल होती है अथवा चन्द्रमा का प्रकाश जैसे तेजस्वी होने पर भी शीतल होता है ठीक उसी प्रकार जो भाषण सूक्ष्म और तेजस्वी होने पर भी कोमल और शीतल होता है वही सत्य है ।

जब ऐसी वस्तु कहीं न मिलती हो जिसके देखने से ही रोग नष्ट हो जाता है जो खाने से कडवी न लगे तो फिर ऐसी वस्तु जहॉ से मिल सकती है उसके साथ सत्य की उपमा ठीक–ठीक दी जा सकती है ।

नुडि द'ड मुत्तिन हारदतिरबेकु ।
नुडि द ड माणिक्यद दीप्तियतिरबेकु ।
नुडि द'ड स्फटिकद सलायकयतिरबेकु ।
नुडि द'ड लिग मेच्चि अहुदहुन बेकु ।

नुडियाळगागि नडयदिद्द ड
कूडल सगम देव नतालि वनय्या ?

वासव वचन

यदि कुछ बोलना है तो ऐसा जैसे माला के धागे मे मोती हो यदि कुछ बोलना है तो ऐसा जैसे माणिक्य की आभा मे दीप्त होती है । यदि कुछ बोलना है तो ऐसा जैसे स्फटिक का प्रकाश नीले नभ मे चमके यदि आप बोले तो प्रभु यह कहे कि यह बिल्कुल सत्य है। किन्तु यदि आपका कार्य वचन का विश्वासघात करता है तो क्या भगवान कुण्डल सगम देव आपको बचा सकते है ।

नानक आखै रे मना सुणीऐ सिख सही
लेखा रबु मगेसीआ बैठा कढि वही ।
तलबा पउसनि आकीआ बाकी जिना रही ।
अजराईलु फरेसता होसी आइ तई ।
आवणु जाणु न सुझई भीडी गली फही ।
कूड निखुटे नानका ओडकि सचि रही ।।

वार राग राम रामकली सलोकु **गुरू नानक/६५३**

गुरू नानक कहते है कि हे मन सही शिक्षा सुनो । भगवान जीवन के कार्यो का हिसाब लेखा बही (पुस्तक) निकाल कर मागेगा। जिनके जीवन मे झूठे कार्यो का बकाया होगा उनको दडित किया जावेगा । यमदूत (अजराईल) दोषी जीवो के पीछे लगेगा उन्हे आना जाना नहीं सूझेगा वे तग गली मे फस जावेगे । गुरू नानक कहते है कि झूठ का नाश होता है अन्तत सत्य ही मे बचाव है ।

सहृदय सामनस्यमविद्वेष कृणोमि व
अन्यो ऽन्यमभि नवत वत्स जातमिवाघ्न्या । १
समानी प्रपा सह वोऽन्नभाग
समाने योक्त्रे सहवो युनज्मि ।
साम्यञ्चोऽग्नि सपर्यतारा
नाभिमिवाभृत ।।६।।

अथर्व वेद ३/३०

स्नेह भावना युक्त द्वेष भावो से विरहत ।
मै करता हूँ तुम सबको सम सौमनस्य चित ।
वत्स ओर होती धावित ज्यो गो ममता से ।
आकर्षित तुम रहो परस्पर त्यो समता से ।
हो पानीय समान अन्न भी रहे एक नित ।
एक सूत्र मे तुमको मै करता समयोजित ।
चक्र नाभि सलग्न अरे ज्यो रहते अनगिन ।
वैसे ही तुम करो अग्नि का मिल अभिनन्दन ।।

(महादेवी वर्मा/सप्तपर्णा)

एदुब्रेल्ल विलस हस्त बपनसेयु
नदी कोटियु वीड बोदिक चेडु
स्वीय डोकडु विडिन चेडु कदा पनि वल्गि ।

वेमना

पॉच उगलियो के सहयोग से हाथ काम करता है । एक भी छूटजावे या असहयोग कर बैठे तो उसका सौन्दर्य नष्ट हो जाता है एक भी स्वीय अलग हो जाने से लोगो की व्यवहारिक शक्ति नष्ट हो जाती है । अत सब कुछ त्याग कर एक मत की रक्षा करनी चाहिए।

अद्वैत तानल्लो नमुद कम्मिञ्ञप्पाल पिरवि ।
ताट्ट द्वेषर नाम अभेद नाम अनहतर नाम ।।

वल्ल ठोल

अद्वैत सिद्धान्त ही हमारे लिए मा का दूध है जन्म से ही हम द्वेष बुद्धि भेद बुद्धि और अहम से रहित है ।

एक सूत्रे बॉधियाछि सहस्रटि मन
एक कार्ये सॅपियाछि सहस्र जीवन

वन्दे मातरम

आसुक सहस्र बाधा बाधुक प्रलय
आमरा सहस्र प्राण रहिब निर्भय-

वन्दे मातरम

आमरा डराइब ना झटिका झञ्झाय
अयुत तरग वक्षे सहिब हेलाय ।
टुटे तो टुटक एइ नश्वर जीवन
तबु न छिंडिबे कभु ए दृढ बन्धन

वन्दे मातरम

रवीन्द्र नाथ ठाकुर

एक सूत्र मे हमने सहस्रो मन बान्धे है एक कार्य मे हमने सहस्रो जीवन सौपे है । सहस्र बाधाये आये प्रलय मच जावे हमारे सहस्र प्राण निर्भय रहेगे । वन्दे मातरम ।

हम लोग आधी तूफान से नही डरेगे । हजारो तरगो का टकराव छाती पर सहे गे । यह नश्वर जीवन टूटे तो टूटे तो भी यह दृढ बन्धन नही टूटेगा । वन्दे मातरम ।

矢勤矢勇	Be earnest and brave
必信必忠	Your country to save
一心一德	One heart one soul
貫徹始終	One mind one goal!

सत्यमेव जयते नानृत

सत्येन पन्था विततो देवयान ।

येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा

यत्र तत् सत्यस्य परम निधानम्

मुण्डकोपनिषद ३ १ ६

सत्य की ही विजय होती है झूठ की नही । परम देव परमात्मा को प्राप्त करने का मार्ग सत्य से ही परिपूर्ण है । जिनकी भोग वासना नष्ट हो गयी है ऐसे पूर्णकाम ऋषि लोग सत्य के परम आधार पर ब्रह्म परमात्मा के धाम पहुँचते है ।

आता तीख होउनी मवाल । जैसे जातीचें मुकळ ।
का तेज परी शीतळ । शशाकाचे ।। ११५
शके दाविताचि रोगु फेडू । आणि जिभे तरि नव्हे कडू
ते वोखद नाही मा घडु । उपमा कैची ।। ११६

ज्ञानेश्वरी

मोगरे की कली जैसे बहुत छोटी होने पर कोमल होती है अथवा चन्द्रमा का प्रकाश जैसे तेजस्वी होने पर भी शीतल होता है ठीक उसी प्रकार जो भाषण सूक्ष्म और तेजस्वी होने पर भी कोमल और शीतल होता है वही सत्य है ।

जब ऐसी वस्तु कहीं न मिलती हो जिसके देखने से ही रोग नष्ट हो जाता है जो खाने से कडवी न लगे तो फिर ऐसी वस्तु जहॉ से मिल सकती है उसके साथ सत्य की उपमा ठीक–ठीक दी जा सकती है ।

नुडि द'ड मुत्तिन हारदतिरबेकु ।
नुडि द'ड माणिक्यद दीप्तियतिरबेकु ।
नुडि द'ड स्फटिकद सलायकयतिरबेकु ।
नुडि द'ड लिग मेच्चि अहुदहुन बेकु ।

नुडियाळगागि नडयदिद्द'ड,
कूडल सगम देव नतालि वनय्या ?

वासव वचन

यदि कुछ बोलना है तो ऐसा जैसे माला के धागे मे मोती हो यदि कुछ बोलना है तो ऐसा जैसे माणिक्य की आभा मे दीप्त होती है । यदि कुछ बोलना है तो ऐसा जैसे स्फटिक का प्रकाश नीले नभ मे चमके यदि आप बोले तो प्रभु यह कहे कि यह बिल्कुल सत्य है। किन्तु यदि आपका कार्य वचन का विश्वासघात करता है तो क्या भगवान कुण्डल सगम देव आपको बचा सकते है ।

नानक आखै रे मना सुणीऐ सिख सही
लेखा रबु मगेसीआ बैठा कढि वही ।
तलबा पउसनि आकीआ बाकी जिना रही ।
अजराईलु फरेसता होसी आइ तई ।
आवणु जाणु न सुझई भीडी गली फही ।
कूड निखुटे नानका ओडकि सचि रही ।।

वार राग राम रामकली सलोकु **गुरू नानक/६५३**

गुरू नानक कहते है कि हे मन सही शिक्षा सुनो । भगवान जीवन के कार्यो का हिसाब लेखा बही (पुस्तक) निकाल कर मागेगा। जिनके जीवन मे झूठे कार्यो का बकाया होगा उनको दडित किया जावेगा । यमदूत (अजराईल) दोषी जीवो के पीछे लगेगा उन्हे आना जाना नहीं सूझेगा वे तग गली मे फस जावेगे । गुरू नानक कहते है कि झूठ का नाश होता है अन्तत सत्य ही मे बचाव है ।

सहृदय सामनस्यमविद्वेष कृणोमि व
अन्यो ऽन्यमभि नवत वत्स जातमिवाघ्न्या । १
समानी प्रपा सह वोऽन्नभाग
समाने योक्त्रे सहवो युनज्मि ।
साम्यञ्चोऽग्नि सपर्यतारा
नाभिमिवाभृत ।।६।।

अथर्व वेद ३/३०

स्नेह भावना युक्त द्वेष भावो से विरहत ।
मै करता हूँ तुम सबको सम सौमनस्य चित ।
वत्स ओर होती धावित ज्यो गो ममता से ।
आकर्षित तुम रहो परस्पर त्यो समता से ।
हो पानीय समान अन्न भी रहे एक नित ।
एक सूत्र मे तुमको मै करता समयोजित ।
चक्र नाभि सलग्न अरे ज्यो रहते अनगिन ।
वैसे ही तुम करो अग्नि का मिल अभिनन्दन ।।

(महादेवी वर्मा/सप्तपर्णा)

एदुब्रेल्ल विलस हस्त बपनसेयु
नदी कोटियु वीड बोदिक चेडु
स्वीय डोकडु विडिन चेडु कदा पनि वल्गि ।

वेमना

पॉच उगलियो के सहयोग से हाथ काम करता है । एक भी छूटजावे या असहयोग कर बैठे तो उसका सौन्दर्य नष्ट हो जाता है एक भी स्वीय अलग हो जाने से लोगो की व्यवहारिक शक्ति नष्ट हो जाती है ।अत सब कुछ त्याग कर एक मत की रक्षा करनी चाहिए।

अद्वैत तानल्लो नमुद कम्मिञ्ञप्पाल पिरवि ।
ताट्ट द्वेषर नाम अभेद नाम अनहतर नाम ।।

वल्ल ठोल

अद्वैत सिद्धान्त ही हमारे लिए मा का दूध है जन्म से ही हम द्वेष बुद्धि भेद बुद्धि और अहम से रहित है ।

एक सूत्रे बॉधियाछि सहस्रटि मन
एक कार्ये सॅपियाछि सहस्र जीवन

वन्दे मातरम

आसुक सहस्र बाधा बाधुक प्रलय
आमरा सहस्र प्राण रहिब निर्भय-

वन्दे मातरम

आमरा डराइब ना झटिका झञ्झाय
अयुत तरग वक्षे सहिब हेलाय ।
टुटे तो टुटक एइ नश्वर जीवन,
तबु न छिंडिबे कभु ए दृढ बन्धन -

वन्दे मातरम

रवीन्द्र नाथ ठाकुर

एक सूत्र मे हमने सहस्रो मन बान्धे है एक कार्य मे हमने सहस्रो जीवन सौपे है । सहस्र बाधाये आये प्रलय मच जावे हमारे सहस्र प्राण निर्भय रहेगे । वन्दे मातरम ।

हम लोग आधी तूफान से नही डरेगे । हजारो तरगो का टकराव छाती पर सहे गे । यह नश्वर जीवन टूटे तो टूटे तो भी यह दृढ बन्धन नही टूटेगा । वन्दे मातरम ।

矢勤矢勇	Be earnest and brave
必信必忠	Your country to save
一心一德	One heart one soul
[illegible]	One mind one goal!

पूरी धरती
पौ फुटे सूरज की भोर
सूरज की किरने कर गई सरा बोर ।
लेकिन फिर जमीन आसमान के बीच
किसी गहन सकट सा
बादल का एक टुकडा
आकर छेक लेता है प्रकाश
दोपहर तक ढका है आकाश ।
हालाकि पछिआ हवा बह रही है ।
लेकिन वेग उतना नहीं है
कि बिखेर सके उसको ।
सूर्य दर्शन को तरसते
सूरज मुखी के फूलो से क्यारी तो भरी है
लेकिन सूरज की किरणे चाहते हुए भी
पहुच नहीं पा रही है उन तक ।

बा जुई (चीनी कवि आठवीं शताब्दि)

यहा आओ और चारो ओर देखो
क्या तुम नहीं देखते कि कोहरा अभी साफ नहीं हुआ है
क्या प्रकाश का टुकडा कहीं थमा हुआ है
क्या धुन्ध इस को भगाने के चक्कर मे है ।
यह सत्य है कि बहुत से फूल खिल चुके है
तथा हर तरफ से हवा मे सुगन्ध के झोके आ रहे है ।
कई तरह के रग भी है
किन्तु वे सब आभाहीन और फीके है
चिडिया चहचहा रही है
किन्तु उनके स्वर धीमे है और सुनाई नहीं दे रहे है ।

दियिव नजर अज (शिहली कुल) दीना नाथ नादिम

बडे नाज से आज उभरा है सूरज
हिमाला के ऊचे कलस जगमगाए ।
पहाडो ने चश्मो को सोना बनाया
नये बल लिये जोर उन को सिखाए ।
लिबासे जरी आबशारो ने पाया
नशे मई जमीनो पै छींटे उडाए ।
घने ऊचे ऊचे दरख्तो का मन्जर
यह है आज आबे जर में नहाए ।

मगर इन दरख्तो के साये मे ए दिल
हजारो बरस के ये ठिठरे से पौधे
यह है आज भी सरो हाल से बे दम
यह है आज भी अपने सर को झुकाए

अरे ओ नई शान के मेरे सूरज
तेरे आब मे और भी ताब आए ।
तेरे पास ऐसी भी कोई किरन है
जो ऐसे दरख्तो मे भी राह पाए ।
जो ठिठुरे हुए को जो सिमटे हुए को
हरारत भी बख्शे गले भी लगाए ।।

मुईनुद्दीन जज्बी

अगर मेरे पास हजारो हजारो ऐसे बडे महल होते
जिसमे दुनिया के सब गरीब शरण लेकर
आधी और वर्षा के थपेडो से राहत पाते ।
आह ! अगर ऐसा भवन मेरी निगाह मे आ जावे
चाहे मेरी झोपडी गिरकर बर्फ मे दब जाये
तो यह मेरी सुखदायी मौत होगी

टू फू (चीनी कवि आठवी शताब्दी)

মগল কলশ

অপ্রমত্ত

যে ভক্তি তোমারে লয়ে ধৈর্য নাহি মানে,
মুহূর্তে বিহ্বল হয় নৃত্যগীতগানে
ভাবোন্মাদমত্ততায়, সেই জ্ঞানহারা
উদ্‌ভ্রান্ত উচ্ছলফেন ভক্তিমদধারা
নাহি চাহি নাথ ॥

দাও ভক্তি, শান্তিরস,
স্নিগ্ধ সুধা পূর্ণ করি মঙ্গলকলস
সংসারভবনদ্বারে। যে ভক্তি-অমৃত
সমস্ত জীবনে মোর হইবে বিস্তৃত
নিগূঢ় গভীর— সর্ব কর্মে দিবে বল,
ব্যর্থ শুভচেষ্টারেও করিবে সফল
আনন্দে কল্যাণে। সর্ব প্রেমে দিবে তৃপ্তি,
সর্ব দুঃখে দিবে ক্ষেম, সর্ব সুখে দীপ্তি
দাহহীন।

সম্বরিয়া ভাব-অশ্রুনীর
চিত্ত রবে পরিপূর্ণ, অমত্ত, গম্ভীর ॥

जे भक्ति तोमारे लये धैर्य नाहि माने
महूर्ते विह्वल हय नृत्य गीत गाने
भावोन्मादमत्तताय सेइ ज्ञान हारा
उद्भ्रान्त उच्छलफेन भक्तिमदधारा
नाहि चाहि नाथ ।
दाउ भक्ति शान्ति रस
स्निग्ध सुधा पूर्ण करि मगलकलस
ससार भवन द्वारे । जे भक्ति-अमृत
समस्त जीवने मोर हइबे विस्तृत
निगूढ गभीर सर्व कर्मे दिबे बल
व्यर्थ शुभचेष्टारेओ करिबे सफल
आनन्दे कल्याणे । सर्व प्रेमे दिवे तृप्ति
सर्व दु खे दिवे क्षेम सर्व सुखे दीप्ति
दाह हीन । सम्वरिया भाव-अश्रुनीर
चित्त रवे परिपूर्ण अमत्त गम्भीर ।।

नैवेद्य — रवीन्द्र नाथ टैगोर

हे प्रभु ! मै ऐसी भक्ति की कामना नही करता जो तुमको पाकर धैर्य खो देती है और क्षण भर मे नृत्य सगीत से विह्वल कर देती है जिस भक्ति का अज्ञात भावो के उन्माद से प्रवाह फेन से पूर्ण उफनती नदी की भाति होता है ।

हे प्रभु ! मुझे वह शान्तिरस–मय भक्ति दीजिए जिसका सरस अमृत से परिपूर्ण मगल कलश इस ससार भवन मे शोभायमान हो । ऐसी भक्ति का अमृत रस मेरे पूरे जीवन मे फैल जावे मेरे निगूढ गभीर और सार कर्मो मे बल दे मेरे विफल शुभ कार्य भी फल आनन्द और कल्याण से युक्त हो । प्रेम मे तृप्ति सुख मे उज्ज्वल ताप रहित प्रकाश और दु ख मे क्षेम हो ।

हे प्रभु ! ऐसी भक्ति भाव विह्वल अश्रुओ का निवारण कर मेरे हृदय को परिपूर्ण गम्भीर और समरस (अप्रमत्त) कर देगी ।

यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ।
हका कबीर करीम तू बे ऐब परवदगार ।। १ ।।
दुनिआ मकामे फानी तहकीक दिल दानी ।
मम सर मूइ अजराईल गिरफतह दिल हेचि न दानी ।। रहाउ
जन पिसर पदर बिरादरा कस नेस दसतगीर ।।
आखिर बिअफतम कस न दारद चू सबद तकबीर ।। २ ।।
सब रोज गसतम दर हवा करदेम बदी खिआल ।
गाहे न नेकी कार करदम मम ई चिनी अहवाल ।। ३ ।।
बद बखत हम चु बखील गाफिल वे नजर बेबाक
नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकरा पा खाक ।। ४ ।।

(राग तिलग सबद १) गुरू नानक/७२१

हे करतार । एक प्रार्थना तेरे सामने करता हूँ, ध्यान से सुन ।

हे सत्स्वरूप । तू बडा है कृपालु है तू दोष रहित है पालन करने वाला है ।

यह जो ससार की स्थिति है वह नाश रूप है निश्चय करके यह हृदय मे जान लिया है । मेरे सिर के बाल अजराईल फरिश्ते ने पकडे है परन्तु मेरे मन ने कुछ नहीं जाना । पत्नी पुत्र पिता भाई किसी ने भी हाथ नही पकडना । अन्त मे जब मेरा गिरना होगा (मृत्यु होगी) और दफनाने की नमाज पढने का समय होगा तो कोई बचाने वाला नहीं होगा ।

मेरे रात दिन वासना और बुरे कर्मो के सकल्प करते बीतते है । मेरी ऐसी दशा है कि मैने कभी नेकी नहीं की । ऐसा ही मै बुरे भाग्य वाला प्रमादी अदूरदर्शी और निडर हूँ ।
गुरू नानक कहते है मै तेरा दास हू, तेरे दासो से चरण धूलि मागता

सबद (उर्दू लिपि मे)

سبد

یک عرض گُفتم پیش تو در گوش کُن کرتار
حقا کبیر کریم تو بے عیب پرودگار

دُنیا مقامِ فانی۔ تحقیق دل دانی
مم سر موئے عزرائیل گرفتہ دل ہیچ ندانی

زن۔ پسر پدر برادراں کس نیست دستگیر
آخر بیفتم کس ندارد۔ چو شود تکبیر

شب روز گشتم در ہوا۔ کردیم بدی خیال
گاہے نہ نیکی کار کردم۔ مم ایں چُنیں احوال

بد بخت ہمچو بخیل غافل بے نظر بے باک
نانک بگوید جن تُرا۔ تیرے چاکراں پا خاک

شری گرو گرنتھ صاحب
راگ تلنگ ۷۲۱

گورو نانک دیو جی

हवाए बदगी आवुरद दर वजूद मरा ।
वगरनह जौकि चुनी आमदन न बूद मरा ।। १ ।।
खुश अस्त उमर कि दर यादि बिगुजरद वरना
चि हासिल अस्त अजी गुबदि कबूद मरा ।। २ ।।
दर आ जमा कि निआई ब याद मे मीरम ।
बगैर याद तो जी जीसतन चि सूद मरा ।। ३ ।।
फिदा अस्त जानो दिलि मन ब खाकि मुकद्दमि पाक
हर आ कसे कि बसूए तो रह नमूद मरा।। ४ ।।
न-बूद हेच निशाहा जि आसमानो जमी
कि शौकि रूए तो आवुरद दर सजूद मरा ।। ५ ।।
बगैर यदि तो गोइआ नमे तवानम जीस्त ।
बसूए दोसत रिहाई दिहद जूद मरा ।। ६ ।।

दीवान गोया गजल १ **भाई नन्द लाल जी**

हे प्रभु ! तेरी भक्ति की लालसा ही मुझे इस शरीर मे लाई नहीं तो मुझे ऐसे शरीर धारण करने का चाव नहीं था ।

आयु वही सफल है जो नाम स्मरण मे बीते नहीं तो इस नीले आकाश से मुझे क्या लाभ है ।

हे प्रियतम ! जिस समय तुम याद नहीं आते मै मर जाता हूँ क्योकि तेरी याद के बिना इस जीवन का मुझे कोई लाभ नहीं ।

मेरी जान और दिल उस की चरण धूलि पर कुरबान है जो कोई मुझे तेरे पास जाने का राह दिखाता है ।

धरती और आकाश रचना का कोई निशान नहीं था जब तेरे दर्शन का आकर्षण मुझे सजदे मे ले आया ।

तेरे नाम स्मरण के बिना गोया (कवि नन्द लाल) जी नहीं सकता । मुझे माया के बन्धन से मुक्त किया जावे ।

गजल (उर्दू लिपि मे)

غزل

ہوائے بندگی آورد در وجود مرا
وگرنہ ذوقِ چنیں آمدن نبود مرا

خوش است عمر کہ در یاد بگذرد ورنہ
چہ حاصل است ازیں گنبد کبود مرا

در آں زماں کہ نیائی بیادِ مے میرم
بغیر یاد تو ذی زیستن چہ سود مرا

فدا است جاں و دل من بخاکِ مقدم پاک
ہر آں کسے کہ بسوئے تو رہِ نمود مرا

نبود ہیچ نشاں ہا ذی آسماں و زمیں
کہ شوق روئے تو آورد در سجود مرا

بغیر یاد تو گویا ہے تو ام زیست
بسوئے دوست رہائی دہند زود مرا

دیواں گویا غزل۔۱ بھائی نندلال

हम धनवत भागठ सच नाइ ।
हरिगुण गावह सहजि सुभाइ ।। १ ।। रहाउ
पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ।
ता मेरै मनि भइआ निधाना ।। १ ।।
रतन लाल जा का कछु न मोलु ।
भरे भडार अखूट अतोल ।। २ ।।
खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ।
तोटि न आवै वधदो जाई ।। ३ ।।
कहु नानकु जिसु मसतकि लेखु लिखाइ ।
सु एतु खजानै लइआ रलाइ ।। ४ ।।
गउडी/सबद १०० **गुरु अर्जन देव/१८५**

जब मैने गुरुओ की वाणी का भण्डार खोलकर देखा तब मेरे मन मे अत्मिक आनन्द का भण्डार भर गया ।

ज्यो ज्यो हम परमात्मा के गुण मिलकर गाते हैं । सत्य स्वरूप प्रभु के नाम के प्रभाव से हम धनी बनते जा रहे है सौभाग्यशाली बनते जा रहे हैं आत्मिक स्थिरता मे टिके रहते है प्रेम मे मग्न रहते है ।

इस खजाने मे परमात्मा की गुण स्तुति के अमूल्य रत्न भरे पडे है जो अक्षय है जो अतुल है ।

हे भाई ! जो मनुष्य सत्सग मे एकचित होकर इन खजानो को इस्तेमाल करते है दूसरो को भी बाटते है उनके पास इस खजाने की कमी नहीं होती बल्कि इस प्रकार वह अधिकाधिक बढता है ।

पर हे नानक ! कह – जिस मनुष्य के माथे पर परमात्मा का कृपा लेख लिखा होता है वही इस गुण स्तुति के खजाने मे साझी बनाया जाता है ।

भावलोक (वलवला)

जिन्हा उचिआईआ उतो 'बुद्धी खभ साड ढठी
मल्लो मल्ली ओथे दिल मारदा उडारीआ
पयाले अणडिठे नाल बुल्ह लग जाण ओथे
रस ते सरूर चढे झूमा आउण पयारीआ ।
गयानी सानू होडदा ते वहिमी ढोला आखदा ए
मारे गये जिन्हा लाईआ बुद्धो पार तारीआ ।
बैठ रे गिआनी ! बुद्धी मण्डले दी कैद विच
वलवले दे देश साडीआ लग्ग गईआ यारीआ ।।

बिजलीआ दे हार **भाई वीर सिह**

जिस ऊचाई से बुद्धि पख जला कर धरती पर आ गिरी मेरा मन बरबस वहा पहुँचने के लिए व्याकुल है । वहा किसी अदृश्य प्याले को मेरे ओठ छू ले गे तो मै रस विभोर हो झूमने लगू गा ।।

ज्ञान का दावेदार मेरा मार्ग रोक कर खडा होकर हो गया है और अन्ध विश्वासी कहता है – जो बुद्धि से परे पहुँचने का प्रयास करते है वही गिरते है ।

ज्ञान के दावेदारो ! तुम बुद्धि की कैद मे जकडे रहो मैने तो भाव लोक से मित्रता गाठ ली है ।

मगल कलश प्रवेश चयन क्रम

मंगल कलश

ससार मे मानव जीवन प्रभु के द्वारा हमे सौपी गई एक पावन धरोहर ह। (३१ ३२) इस को दूसरे शब्दो मे इस प्रकार कह सकते है कि मानव जीवन श्वासो की पूजी है जिस से व्यापार करने के लिए हमारे शाहूकार (प्रभु) न हम इस ससार मे भेजा है। हम उस प्रभु के वणजार है। (३८) मानव जीवन का साथक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम इस के उद्देश्य को पहचान। वणजारे के रुपक की भाषा मे हमे ससार मे अपनी सामग्री सभाल कर लनो चाहिए (३५) खोटे और खरे की पहचान करना सीखना चाहिए। विषयो की मिठास हमे अपनी ओर आकर्षित करती है (२६ २७) उनके आकषण म आकर हमे वास्तविक धन को नही भूलना चाहिए। (२८) वास्तविक धन सत्स्वरूप परमात्मा है।(३४) यह परम सत्ता है चैतन्य स्वरूप है जो हमारे अन्दर आत्मा या ज्योति के रुप मे विद्यमान है इसी को नाम कहा गया है। नाम रत्न की हृदय मे पहचान ही प्रभु साक्षात्कार है। प्रभु एक गुप्त हीरे के रुप मे हमारे मन म स्थित है। (८६–६७) मन पर विकारो की मैल हाने से वह ओझल हो गया हे।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब हमे वह दिशा बताता है जिससे हम अहकार और विकारमय जीवन त्याग कर नाम भक्ति के द्वारा सत्स्वरूप प्रभु से जुड सकते हे। मगल कलश मे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से १७४ अशो का चयन किया गया हे इसमे १०३ सबद ६ अष्टपदी १५ छन्द ३४ श्लोक ५ पउडी और ८ अन्य छन्द है।

मगल कलश मे प्रभु साक्षात्कार के विषय को नाम भक्ति खण्ड मे रखा गया है। मनुष्य का मन शरीर ओर आत्मा के बीच मे दुभाषिया है। अपने निम्न स्वरूप मे मन विषयो मे लीन होकर पाच विकारो स ग्रस्त है किन्तु उन्मन अवस्था मे मन ज्योति स्वरूप होता हे। नाम भक्ति के आरम्भ के ३६ सबदो (अशो) मे विकारो के त्याग के सोपान को दिया गया है उसी मे मानव जीवन के महत्त्व आर नाम धन की महिमा का वर्णन है।

साधना का द्वितीय सोपान सतिगुरु के मिलन से आरम्भ होता है। सतिगुरु से राम नाम का मन्त्र मिलता है। सत्सगति से दूसरो को देखकर उपजने वाली ईर्ष्या (ताति पराई) नष्ट हो जाती हे (४५) और सभी हमारे मित्र हो जाते हे। (४६) गुरु का उपदेश ग्रहण कर मनुष्य सुख दुख के द्वन्द्व से ऊपर जीवन मुक्त हो जाता है।

गुरु की कृपा के बाद प्रभु प्रीति और प्रभु सिफ्त सलाह का तृतीय सोपान है। गुरुवाणी मे प्रभु मिलन मे गुरु के सहायक होने के कारण गुरु के प्रति भी अनन्य भक्ति और श्रद्धा का वर्णन मिलता है (५८) प्रभु प्रीति सम्बन्धी भक्तो और सतो के सबद समान प्रतीको के माध्यम से व्यक्त हुए है। (६१–६४) इसी सोपान मे अकथ्य प्रभु की स्तुति के सबद चयनित किये गये है एक नूर ते सब जग उपजिआ और सभै घट राम बोले मानव मात्र को एक प्रेम के बन्धन मे बाधने म सहायक है। प्रभु स्तुति के पदो का सौन्दर्य गुरु ग्रन्थ साहिब के काव्य और सगीत सौन्दर्य का चूडान्त निदर्शन है।

साधना के अन्तिम सोपान मे प्रभु साक्षात्कार मन की पहचान से लेकर लालु रगीला सहजे पाइओ तक दर्शाया गया है। सबदो के अतिरिक्त श्लोको और छन्दो स भी आध्यात्मिक रहस्य का प्रकटीकरण हुआ है जिसे सबदो के बाद रखा गया ह। (६६–१११)

नाम भक्ति के चिन्तन प्रधान द्वितीय खण्ड से पूर्व प्रथम खण्ड मे परिचय के रुप मे प्रभु स्तुति और विशेष अवसरो पर पढे जाने वाले सबदो (अशो) को दिया गया है (I–XXIV) तथा तृतीय खण्ड मे विनय सम्बन्धी सरल गेय सबदो को चयनित किया गया है। (वि १–२५)

गुरुवाणी चयन के सबदो मे अर्थ के साथ कुछ टिप्पणियॉ अनुशीलन और भाव साम्य के रुप मे दी गई हे। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की नाम भक्ति और दर्शन का प्रभाव अन्य प्रादेशिक भाषाओ पर पडा जिस के विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता ह। इस प्रकार के अध्ययन से गुरु ग्रन्थ साहिब के सन्देश का प्रसार व्यापक रुप स भारत के सभी प्रदेशो मे हो सकगा। भावसाम्य मे उद्धृत पदो की तालिका सबद सूची के अन्त मे दी गई है।

गुरुवाणी की पृष्ठ भूमि जानने के लिए सिख धर्म के परिचय और दृष्टिकोण का समझना आवश्यक हे। चयन के पूर्व सिख धर्म परिचय गुरु ग्रन्थ चिन्तन गुरु ग्रन्थ मे राग और छन्द तथा शब्द ओर पउडी विषयो का विवेचन किया गया ह आर अन्त मे रचयिता परिचय दिया गया है।

इस समय खालसा पथ के सृजन का तीन सौ वर्षीय दिवस १३ ४ ९९ को मनाया जाने वाला है इस सन्दभ मे गुरु गोविन्द सिह जी के दशम ग्रन्थ की परिचयात्मक जानकारी उनके लोकप्रिय कवित्त सवैयो सहित दी गई है।

गुरुवाणी के अनुसार पूरा मानव जीवन ही एक मगल अवसर है अत गुरु ग्रन्थ साहिब को सच्चा पथ प्रदशक मानकर गुरुवाणी से नाम भक्ति के इस मगल कलश को सजाया गया है। नाम भक्ति का यह **मगल कलश** गुरुओ की शान्तिमयी अमृत वाणी से परिपूण है। कविवर रवीन्द्र भगवान से प्रार्थना करते हुए कहते है– हे नाथ! मुझे ऐसी भक्ति नही चाहिए जो तुम को ग्रहण कर धैर्य भुला देती हे और नृत्य तथा सगीत से क्षण भर मे विह्ल कर देती हे। मुझे ऐसी भक्ति दीजिए जिसस सभी कर्मो मे बल मिले प्रेम मे तृप्ति मिले दुखो मे क्षेम और सुख मे शीतल प्रकाश मिले। ऐसी भक्ति का मगल कलश मेरे ससार भवन के द्वार पर सुशोभित हो–

दाओ भक्ति शान्त रस
स्निग्ध सुधा पूर्ण करि **मगल कलश**
ससार भवन द्वारे।

मगल कलश मे जीवन दान दने वाले नाम अमृत का भण्डार है। जाति धर्म के भेद भाव स अलग ससार की इस भीषण गर्मी मे जहा पसीना आर आसुओ के अलावा कही पानी नही बचा है यह एक प्याऊ (पाणपोई) है। मराठी कवि यशवन्त दिनकर पेण्ढरकर के शब्दो मे आदि काल मे जो कवि हो गये उनसे उत्स्फूर्त रसो की सिन्धु गगा बही है। उसमे से कावडियो से ढो ढा कर कुछ यहा लाया गया है। पथिको की सेवा मे वही अब ठण्डा पानी बन गया है वह दिव्य रस मिट्टी के घडो मे सञ्चित कर रखा हे यही मेरा अनूठा पन हे–

आद्या जे कोणी कवि तत्स्फूर्तीच्या ज्या सिन्धु गगा।
आणिल्या वाहून खादी कावडी त्यातील काही।।
पान्थ सेवा साधनी हे व्हावयात गार पाणी।
मृतिकेचे मात्र माझे कुम्भ झग ही माझी नवाइ।।

गुरु वाणी का सम्बन्ध लौकिक प्यास से नही हे। साधक भक्त (गुरमुख) प्रभु से अन्य कोइ वस्तु न माग कर प्रभु के सत्स्वरूप नाम अमृत की याचना करते हे जिसके बाद ओर किसी चीज के मागने की आवश्यकता नही रहती।

विणु तुधु होरु जि मगणा सिरि दुखा कै दुख।
देहि नामु सतोखीआ उतरै मन की भुख।।

(गुरु अजन दव/६५७)

झूठ कैसे नाश हो और सत्य कैसे प्राप्त हो –

सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ।
कूड की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ।।
सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु।
नाउ सुणि मनु रहसीऐ पाए मोख दुआरु।।
सचु ता परु जाणीऐ जा जुगाति जाणै जीउ।
धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ।।
सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ।
दइआ जाणे जीअ की किछु पुन्नु दानु करेइ।।
सचु ता परु जाणीए जा आतम तीरथि करे निवासु।
सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु।।
सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ।
नानकु वखाणे बनती जिन सचु पलै होइ।।

(आसा दीवार सलोक) गुरु नानक/४६८

सत्य तभी पहचाना जाता हे अगर सत्य स्वरूप प्रभु जीव के हृदय मे टिक जावे। तब झूठ की मैल उतर जाती है और जीव अपने मन को धोकर साफ कर लेता है। सत्य की सूझ तब होती है अगर जीव सच्चे प्रभु से प्यार करे प्रभु से इतना प्रम हो कि प्रभु का नाम सुन कर मन प्रफुल्लित हो जावे तभी वह मुक्ति को प्राप्त करेगा। सत्य से तभी साक्षात्कार होता है अगर जीव को आत्मा के जीवन की युक्ति का पता हो। शरीर रुपी धरती को साध कर (जोत कर) उस मे वह प्रभु (कता) के नाम का बीज बोवे। सत्य की सूझ तभी होती है अगर जीव सच्चे गुरू की शिक्षा प्राप्त करे। जीवो पर दया करना जानता हो और कुछ पुण्य दान भी करे। सत्य की सूझ तब होती है अगर मनुष्य अपने आत्मा रुप तीर्थ मे स्नान करे सतिगुरु की शिक्षा लेकर आत्म तीर्थ मे अपना टिकाणा (निवास) बना कर स्थिर रहे।

सत्य सभी रोगो का इलाज है। यह पाप रुप रोगो को धो कर मन से निकाल देता है। नानक (सत्य की प्राप्ति के लिए) उन लोगो से बिनती करता है जिन की गाठ मे सत्य है।

कुलदीप सिह

मगल कलश

गुरु वाणी

चयन व्याख्या अनुशीलन एव भाव साम्य

परिशिष्ट

गुरुवाणी चयन

खण्ड द्वितीय-नाम भक्ति **६२ २३५**

प्रथम सोपान

(क) मन

(ख) प्रेरणा (द्वन्द्व)

तृतीय सोपान

(क) प्रीति

(ख) सिफत सालाह

चतुर्थ सोपान

विनय-खण्ड

सदर्भ ग्रन्थ सूची

हिन्दी

१	आदि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब (चार भाग)	डा मनमोहन सहगल
२	दशम ग्रन्थ (चार भाग)	डा जोध सिह
३	जीवन चरित्र गुरु नानक देव	डा त्रिलोचन सिह
४	नानक वाणी (चयन)	भाई जोध सिह
५	कवित्त सवैये भाई गुरदास	शिरोमणी गुरद्वारा प्रबन्धक कमेटी अमृतसर

गुरमुखी लिपि (पजाबी) -

१	श्री गुरु ग्रन्थ साहिब	शिरोमणि गुरद्वारा प्रबन्धक कमेटी अमृतसर
२	श्री गुरु ग्रन्थ दर्पण (दस भाग)	प्रो साहिब सिह
३	सन्थ्या श्री गुरु ग्रन्थ साहिब (सात भाग)	भाई वीर सिह
४	श्री गुरु ग्रन्थ कोश (दो भाग)	भाई वीर सिह
५	कवित्त भाई गुरदास (दूसरा स्कन्ध)	भाई वीर सिह
६	गुरबाणी विआकरण	प्रो साहिब सिह
७	साची प्रीति (गजल)	भाई नन्द लाल
८	सिख धर्म दर्शन	शारदूल सिह कवीशर
९	जनम साखी परम्परा	किरपाल सिह
१०	सिक्ख इतिहास (१४६९–१६७५)	गडा सिह
११	जिन के चोले रतडे	पूरन सिह
१२	दस गुरु दर्शन	पूरन सिह
१३–१४	सिख इतिहास	(दो भाग) शिरोमणी गुरद्वारा प्रबन्धक कमेटी अमृतसर
१५	प्रमुख सिक्ख शखसीअता	शिरोमणी गुरद्वारा प्रबन्धक कमेटी अमृतसर

हिन्दी, पजाबी, अग्रेजी -

१	गुरु ग्रन्थ रत्नावली डा तारन सिह	पजाबी यूनीवर्सीटी पटियाला

अध्याय—१

सिक्ख धर्म – एक परिचय

गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी का अध्ययन करने से पूर्व सिक्ख धर्म के केन्द्रीय आर आधार भूत सिद्धान्तो को स्पष्ट रुप स समझना आवश्यक है। गुरु नानक देव जी को धम स्थापना की प्रेरणा प्रभु से प्राप्त हुई परमात्मा ही उनके गुरु थे। जन्म साखी मे दिय गये विवरण के अनुसार वे सुलतान पुर लोधी (वर्तमान जिला कपूरथला पजाब) म व्यास की सहायक नदी वेई मे स्नान करने गये तब उसमे अलोप हो गये। तीन दिन तक उनका पता नही चला। चौथे दिन वे प्रकट हुए। इस अवधि म प्रभु के ध्यान मे अन्तरलीन होने से उनको गुरु मन्त्र प्राप्त हो गया। गुरु ग्रन्थ साहब मे राग माझ की वार की पउडी २७ मे गुरु नानक देव जी ने अपने को परमात्मा का चारण बताया है। प्रभु ने उन्हे अपने दरबार मे बुलाया तथा गुण स्तुति का सच्चा वस्त्र प्रदान किया। सत्य रुप प्रभु की स्तुति करके उन्होने प्रभु को प्राप्त किया।

इस प्रकार १४६६ ई० म प्रभु के द्वारा गुरु नानक जी को प्रभु स्तुति का गुरु मन्त्र प्राप्त हुआ जो सिक्ख धर्म का मूल मन्त्र है। मूल मन्त्र निम्न प्रकार हे–

१ ओ सतिनाम करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सेभ गुर प्रसादि।

इस मन्त्र का उपयोग गुरु ग्रन्थ साहिब मे वस्तु निर्देशक मगलाचरण के रुप मे किया गया है। सरल भाषा मे इस का अर्थ इस प्रकार है–

परम तत्त्व जिस का वाचक ओम है केवल एक है।
सदा सत्य रहने वाला उस का नाम है।
वह सृष्टि की रचना करने वाला और उसमे व्यापक है।
वह बिना भय हे। उसका किसी से वैर नही।
उसका स्वरूप समय के प्रभाव से रहित है।
वह जन्म नही लेता। स्वत प्रकाश है।
उसका साक्षात्कार गुरु की कृपा से होता है।

मूल मन्त्र के आरम्भ मे प्रयोग किया गया एक सख्या वाचक शब्द यहा पर विशेषण न होकर सज्ञा के रुप मे है। सिक्ख धर्म का केन्द्रीय सिद्धान्त प्रभु के एकत्व पर आधारित है–

(आअकार/६२६)

ओकार से सृजन के सम्बन्ध मे कबीर का एक सबद हे जिसका अनुवाद कविवर रवीन्द्र द्वारा किया गया हे। मूल सबद की दो पक्तिया निम्न है–

ओकार सबै कोई सिरजै राग स्वरुपी अग।

निराकार निर्गुन अबिनासी कर वाही को सग।।

(कबीर/२६)

मूल मन्त्र मे प्रभु के नाम सतिनाम से आरम्भ होते हे सतिनाम प्रभु का व्यक्तिवाचक नाम हे जबकि अन्य नाम करता पुरखु निरभउ निरवेरु अकाल मूरति अजूनी सैभ आदि गुणवाचक नाम है। प्रभु के इन गुणवाचक नामो के जाप से हमारे अन्दर भी इन गुणो का सञ्चार होता है निरभउ ओर निरवेर की कल्पना हमे बल प्रदान करती है।

जीवात्मा की छ सीमाए हे वह माया (परिवतन) कला (सृजन) विद्या (ज्ञान) राग (इच्छा) काल (समय) नियति (दिशा स्थान) की सीमाओ से घिरा है। जबकि परमात्मा मे माया पर अधिकार (परमेश्वरत्व) सृजन पर अधिकार (सर्वकृतत्व) ज्ञान पर अधिकार (सर्वज्ञत्व) इच्छाओ पर अधिकार (पूर्णत्व) समय से अतीत या परे नित्यत्व तथा स्थान या क्षेत्र की सीमा स रहित (व्यापकत्व) के गुण है। प्रभु इन छ गुणो का स्वामी है जबकि जीव को यह छ गुण कमजोर करते है।

(ललद्यद–वाख/१२६)

निराकार प्रभु के गुण कथन को दूसरे प्रकार से आठ लक्षणो से युक्त कहा गया हे। यह गुण है स्वयमाधार निर्मल विवेकमय ज्ञानमय निस्पृह अनन्त करुणामय सर्वशक्तिमान आर चिदानन्द। भक्तवर तिरुवल्लुवर के अनुसार जिस व्यक्ति का सिर इन आठो लक्षणो से युक्त भगवान के चरणो मे नही झुकता वह निष्क्रिय निर्जीव पुतलियो के समान केवल नाम मात्र का सिर हे।

(तिरुककुरुल/कडवुल वाळततु) (इश वन्दना – ६)

सिक्ख धम मे एकेश्वरवाद की धरणा मे मूर्तिपूजा का स्थान नही है। महान यश वाले प्रभु की प्रतिमा नही हे इस का उदघोष यजुर्वेद म पहले ही किया गया था–

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद यश। (३२/३)

गुरु ग्रन्थ साहिब मे इस सम्बन्ध मे कबीर के दो सलोकु है–

कबीर ठाकुरु पूजहि मोलि ले मन हठि तीरथ जाहि।
देखा देखी स्वागु धरि भूले भटका खाहि।।१३५।।
कबीर पाहनु परमेसरु कीआ पूजे सभु ससारु।
इस भरवासे जो रहे बूडे काली धार।।१३६।।

(सलोक कबीर/१३७१)

कबीर के ही राग भैरउ मे दिये एक सबद मे मूर्ति पूजा छोडकर अतरि देउ को पहचानने का उपदेश दिया गया है। (राग भैरउ सबद – १२) गुरु अर्जन देव जी ने इस की व्याख्या राग सूही मे घर महि ठाकुरु नदरि न आवै गल महि पाहणु लै लटकावै (सबद – ६ पृष्ठ – ७३८) शीर्षक सबद मे की है। सजीव पुष्पो को तोडकर निर्जीव पत्थर पर चढाया जाना कहा की बुद्धिमानी है राग आसा मे कबीर सही मार्ग को भूली मालिन को सम्बोधित करते है –

पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ।
जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ।।

(राग आसा/४७६)

मूर्ति पूजा को गुरु गोविन्द सिह जी ने भी अपने दशम ग्रन्थ मे फोकट धर्म और झूठी क्रिया (कूर क्रिआ) कहा है जिससे निराकार प्रभु (स्री भगवान) का भेद ज्ञात नही होता।

गुरु गोविन्द सिह जी ने द्वारा खालसा पन्थ का सृजन ३० ३ १६९९ को किया गया जिसके आधार पर सिक्ख धर्म के अनुयायी मे चार मान्यताएँ आवश्यक है –

(१) वह एक अकाल पुरख म विश्वास रखे।

(२) वह गुरु नानक देव जी से गुरु गोबिन्द सिघ जी तक दस गुरुओ पर निश्चय रखे।

(३) वह गुरु ग्रन्थ साहिब की बाणी और शिक्षा को ग्रहण करे।

(४) वह दशम गुरु द्वारा दीक्षा के स्वरूप को ग्रहण करे और उसकी रहत मयादा उसी प्रकार हो।

अकाल पुरखु या वाहिगुरु की चचा मूल मन्त्र मे की गई है। क्रमाक २–३ गुरु और शब्द का स्वरूप एक ही है तथा क्रमाक ४ सिख को सत सिपाही का रुप प्रदान कर गुरु परिवार से जोडता है। दीक्षा के समय पाच **बाणिओ का** –

करते हुए लोहे के बाटे (बर्तन) मे जल और बताशे से पाहुल (पाथेय) तैयार किया जाता है जिस को पाच प्यारे तैयार करते है। उन्ही के द्वारा इस पाहुल या अमृत का पान कराया जाता है अत दीक्षा को अमृत पान की सज्ञा दी जाती है।

खालसा और अमृतपान इन दोनो शब्दो का प्रयोग सन्त काव्य मे सामान्य रुप मे मिलता है। कबीर के अनुसार जो व्यक्ति कर्मकाण्ड छोडकर प्रेम भक्ति का मार्ग अपनाता है वही खालसा है –

कहु कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी

(राग सोरठि/६५४)

गुरु गोविन्द सिह जी ने भी कमकाण्ड को छोडकर प्रेम के द्वारा ही प्रभु प्राप्ति का एक मात्र मार्ग बताया है। अमृतपान करते समय पढे जाने वाले १० सरस सवेयो मे इस पर प्रकाश डाला गया है –

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूद कै बैठि रहिओ बक धिआन लगाइओ।
न्हात फिरिओ लीए सात समुद्रनि लोक गइओ परलोक गवाइओ।।
बास किओ बिखिआन सो बैठ के ऐसे ही ऐसे सु बैस बिताइओ।
साचु कहो सुनि लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ।।

(दशम ग्रन्थ – अकाल उसतत – ६/२६)

एक अनित्य प्रभु के स्मरण की चर्चा विद्वान सत कवि सुन्दर दास करते हुए कहते है कि नाम साधना मे प्रभु कीर्तन ही अमृत पान करना है। अमृत पान के बाद विषपान करना कौन पसन्द करेगा –

होहि अनित्य भजै भगवन्तहि और कछू उर मे नहि राखै।
देवी औ देव जहा लग है डर के तिन सो कहि दीन न भाखै।।
योगहु यज्ञ व्रतादि क्रिया तिनको तो नही स्वप्ने अभिलाखै।
सुन्दर अमृतपान कियो तब तो कहि कौन हलाहल चाखै।।

सुन्दर विलास(पतिव्रता अग)

गुरु गोविन्द सिह जी ने दशम ग्रन्थ मे तैतीस सवैयो मे खालसा की परिभाषा दी है –

जागति जोति जपै निस बासुर एक बिना मन नैक न आनै।
पूरन प्रेम प्रतीत सजै व्रत गौर मडही मट भूल न मानै।।

तीरथ दान दया तप सजम एक बिना नहि एक पछानै।

पूरन जोत जगै घट मै तब खालस ताहि नखालस जानै।।

इस प्रकार सिक्ख धर्म मे तरह तरह के अन्ध विश्वास बहुदेव वाद मूर्ति पूजा और अवतार वाद की धारणा का खण्डन किया गया है। सिक्ख गुरुओ ने मानव भाई चारे का सन्देश दिया किन्तु ऊचे और सच्चे जीवन के लिए अपने अनुयायिओ के गुर सिख मीत चलहु गुर चाली को दृढता से अपनाने का उपदेश दिया। श्रेय का मार्ग या सिक्ख धर्म का मार्ग खण्डेधार तलवार पर चलना है। उस समय कर्मकाण्ड के प्रति निधि के रुप मे बिप्र शब्द का प्रयोग होता था। जब तक खालसा कर्मकाण्ड और अन्ध विश्वास से अलग रहकर निर्मल जीवन व्यतीत करेगा तभी तक उसकी आत्मा प्रभु की ज्योति से प्रकाशित होगी। अगर वह पुन अन्ध विश्वास की भूल भुलैयो मे लौटगा तो प्रभु या गुरु क विश्वास को खो देगा।

जब लग खालसा रहे निआरा। तब लग तेज देहु मे सारा।।

जब एह गहि विप्रन की रीति। मै न करउ इन की परतीत।।

सिक्ख धर्म के विद्वान डा० धरमानत सिघ जी ने गुरमति के सात केन्द्रीय और सात उपकेन्द्रीय सिद्धान्तो का वर्णन किया है जिन से गुरमति का उदात्त स्वरूप स्पष्ट होता है।

केन्द्रीय सिद्धान्त – १ नाम जपणा (नाम जप) २ वाहि गुरू का भाणा मानना ३ वण्ड छकणा (बाट कर खाना) ४ देख कर अणडिठ करना (दोष देखते हुए ऐसा व्यवहार करना जैसे न देखा हो) ५ सरबत्त का भला ६ सहज प्राप्ति का आनन्द माणना (प्रफुल्लित रहना) ७ सदा चढती कला मे रहना।

उपकेन्द्रीय सिद्धान्त – उक्त सिद्धान्तो के साधन स्वरूप है –

१ सत्सग करना २ सयमित जीवन ३ गुप्त प्रकट सेवा ४ पराये हक को पहचानना ५ दसा नवा (दस नाखून–परिश्रम) की कमाई ६ गुरमति का प्रचार ७ भ्रम और भय से रहित निहकेवल (निष्काम) वृत्ति से विचरण करना।

सिक्ख धर्म की प्रार्थना (अरदास) के अन्तिम स्वस्ति वचन मे सर्वे भवन्तु सुखिन की इच्छा मात्र नही अपितु उस के प्राप्ति साधन प्रभु कृपा और उस की रजा मे राजी रहने का उदघोष है –

नानक नाम चढदी कला तेरे भाणे सरबत का भला।

अध्याय–२

गुरु ग्रन्थ – चिन्तन

गुरु ग्रन्थ साहिब के रचयिता अनुभव सिद्ध सत्य के गायक थे। उनकी साधना पद्धति उनके स्वतन्त्र और मोलिक चिन्तन का परिणाम थी। गुरु ग्रन्थ साहिब मे परमात्मा या परब्रह्म को वाहिगुरु कहा गया है। परमात्मा के स्मरण के लिए किसी विशेष नाम के प्रति कोइ आग्रह नही है उसे राम हरि गोविन्द या अलह किसी भी नाम से स्मरण किया जा सकता है। परमात्मा एक है और सत्स्वरूप है वह सभी मे व्याप्त है और सभी के घट घट मे समाया हुआ है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उस की आरती कर रहा है। परमात्मा का दर आश्चर्यमय है जहा सभी उसका गुणगान कर रहे है।(८५) वह सृजनहार देनहार और सहार करता (सद्दणहार बुलानेवाला) तीनो स्वय ही है उसी का यशगान करना चाहिए।(वि० २३)

वाहिगुरु निरकार है सृष्टि की रचना उसी के स्फुरण अथवा हुकुम का परिणाम है। सृष्टि की रचना वह अपनी स्वतन्त्र एकता से करता है। सृष्टि रचना से पूव वाहिगुरु शून्य समाधि के रुप मे था। सुन्न (शून्य) से अभिप्राय शक्तिमान और उसकी शक्ति की अभेद अवस्था से है। वह बौद्ध दार्शनिको का शून्य नही है। गुरु ग्रन्थ साहिब मे शिव के साथ शक्ति की अलग से कल्पना नही की गई है वाहिगुरु स्वय मात्र स्फुरण नही अपितु सवित्सागर है। जगत रचने की इच्छा (उन्मीलन) और सहार की इच्छा उसकी महामाया है जिस का अलग कोइ अस्तित्व नही है। परमात्मा निर्गुण और सगुण दो छोरो के बीच केलि कर रहा है–

ईधै निरगुन ऊधै सरगुन केल करत बिचि सुआमी मेरा

(राग बिलावल)

जीवात्मा भी परमात्मा का रुप है वह अपने को भूले रहता है अत उसे अपना मूल स्वरूप पहचानने की आवश्यकता है। जीवात्मा को नारी रुप मे माना गया है ससार जीवात्मा का मायका (पितृगृह या पेइआ) है जहा से उसे सुसराल (श्वसुर गृह–साहुरे) जाना है गुणो के उपार्जन से जीवात्मा का सन्मान होगा अन्यथा प्रियतम के दरबार मे उसे रोना पडेगा।

जीवात्मा परमात्मा का अश है किन्तु इस मे सर्वशक्तिमान सर्वव्यापक होने का

गुण नही है। यह स्थूल तत्त्वो से आवृत है और समय और स्थान की दृष्टि से टिकाव की स्थिति मे नही रहता है। जीवात्मा और हरि के बीच अहकार का परदा हे जो इसको हरि मिलन से रोकता है।

गुरुवाणी मे सृष्टि के लिए जगत और ससार दो शब्दो का प्रयोग हुआ है– जगत परमात्मा का शरीर होने के कारण सत्य है इहु जगु सचे की है कोठडी सचे का विचि वास । गुरु ग्रन्थ साहिब के अनुसार चित्त जीव और अचित्त जड सृष्टि दोनो की गणना जगत मे होती है। सृष्टि रचना के लिए परमात्मा को बाहर से किसी वस्तु की आवश्यकता नही पडती। वह स्वय ही इस का निमित्त (बनाने वाला) और स्वय ही उपादान (सामग्री) है।

ससार की कल्पना जगत से भिन्न है। ससार जीव के विचारो की उत्पत्ति है वह अनित्त्य है और सपने के समान है। ससार जीव का मायका है जहा जीव थोडे दिन रहकर चला जावेगा। जगत ओर ससार की कल्पना वल्लभाचार्य के शुद्धाद्वैत से मिलती है जिसके अनुसार जगत परमात्मा का विद्या माया का स्वरूप है जिसका अवसान परमात्मा मे ही होता है। ससार जीव की अविद्या माया का अहन्ता भाव (हउमै रुप) है।

परमात्मा को पाने का सब से उत्तम मार्ग है प्रेम भक्ति– जो तउ प्रेम खेलण का चाउ सिरु धरि तली गली मोरी आउ। गुरु ग्रन्थ साहिब मे परमात्मा को निराकार माना गया है किन्तु जगत मे व्यापक हाने के कारण वह सगुण भी है।

जीव के परमात्मा के प्रति प्रेम की साहित्य मे चार प्रकार से अभिव्यक्ति होती है प्रथम धारणा के अनुसार प्रभु के प्रति प्रेम मानव के प्रति प्रेम से भिन्न कोटि का है और उस की मानवीय सम्बन्धो से तुलना नही की जा सकती। प्रभु के प्रति इस प्रका" के प्रेम का वर्णन ईसाई धर्म मे हुआ है। द्वितीय धारणा के अनुसार प्रभु के प्रति प्रेम मानव प्रेम से भिन्न कोटि का तो है किन्तु उसकी अभिव्यक्ति के लिए मानव सम्बन्धो का सहारा लिया जा सकता है– गुरु ग्रन्थ साहिब मे इसी पद्धति का अनुसरण किया गया है इस मे जीवात्मा को सुहागिन या धन कहा गया है और परमात्मा को साजन या पिर कहा गया है दाम्पत्य प्रेम के यह प्रतीक छन्दो मे विशेष रुप से प्रयोग हुए है।

परमात्मा के प्रति प्रेम के अन्य वर्ग के साहित्य मे प्रभु प्रेम को मानव प्रेम के समतुल्य मानकर भक्त अपने राग की अभिव्यक्ति करता है। इस प्रकार की

रचनाओ मे आराध्य की प्रेम लीलाओ की चचा होती है। हिन्दी मे मीराबाइ और सूरदास के पद इसी वर्ग मे आते है। इस वग की एक अन्य श्रेणी मे नर नारी के आकषण के माध्यम से प्रभु प्रेम तक पहुचा जा सकता हे। इस प्रकार की रचनाये उडीसा के सखी सम्प्रदाय के साहित्य मे उपलब्ध है।

गुरु ग्रन्थ साहिब मे प्रेम नाम भक्ति का आधार है अत वीआहु होआ मेरे बाबोला के बाद अविनाशी वर प्राप्ति का वर्णन किया गया है अथवा किरण के ज्योति मे मिलने और बून्द के सागर मे मिलकर जल का जलु हुआ राम का दर्शन होता है। प्रेम का आदर्श जल और कमल मछली आर नीर चातक और ग्वाति बून्द दूध और जल चकवी और सूर्य के समान समर्पण और त्याग की माग करता है। भक्त नामदेव भी इसी आदर्श प्रेम की कामना आराध्य विट्ठल के लिए करते है। भक्त रविदास प्रभु से अपन सम्बन्धो की व्याख्या करते हुए प्रेम निर्वाह का प्रण करते है माधवे तुम न तोरहु तो हम न तोरहि। रविदास को यह भरोसा है कि भगवान उनसे तोड नही सकते क्योकि भक्त का भगवान के प्रति प्रेम का बन्धन भगवान को मजबूती से भक्त के साथ बान्धे हुए है। भक्त तो भगवान से भक्ति या आराधना करके मोह के बन्धन से छूट जावेगा किन्तु भगवान के लिए प्रेम बन्धन तोडना बहुत कठिन है। सन्त परमानन्द ने भी अनपावनी प्रेम भक्ति की प्रार्थना की है। प्रभु की शरण मे आने पर सब कुछ अच्छा लगता है और सभी सुखो की प्राप्ति होती है। प्रभु के आनन्दमय प्रेम की दशा वर्णनातीत है।

दाम्पत्य भाव मे जीवात्मा अपने ठाकुर की चेरी है।(५६) उस मे आलस्य और प्रमाद भी है सोइ रही प्रभु खबरि न जानी । जीवात्मा नैतिक गुणो के धारण करने से प्रभु की प्रिया बन सकती है। अच्छा आचरण करने पर प्रियतम दर्शन अवश्य होगा। आत्मिक उत्थान के चार सोपान ससार से आसक्ति त्याग के चार चरणो मे वर्णित है।(१०४) राग सूही मे मिलन अवस्था के आनन्द का वर्णन है।(१०३)

परमात्मा की भक्ति मे नाम का विशेष महत्त्व है। ससार मे अमृत वस्तु केवल एक है दूसरी नही यह अमृत हरि का नाम है यह अमृत मन मे ही है जिनके भाग्य मे है वही इसका पान करते है। जिस प्रकार लकडी पत्थर आदि मे अग्नि दिखाई नही देती परन्तु खास तरीके से उसको उत्पन्न किया जाता है उसी प्रकार नाम रस शरीर के अन्दर लुप्त है जो गुरमत विधि से प्रकट होता है। गुरु

का नाम सभी विष निकालने मे समर्थ है। गुरु बाणी मे अमृत रस है गुरमत का अनुसरण करने से नाम रस की प्राप्ति होती है।

गुरमत मे नाम और सत अभेद है नाम से अभिप्राय सत स्वरूप परमात्मा से है जो सब मे ओत प्रोत है नाम के धारे सगले जन्त । परमेश्वर के नाम से अभिप्राय उसके नाम का गुणो का ध्यान करके अभ्यास करने से है जिससे अन्त करण की शुद्धि और नाम की प्राप्ति होती है जिह्वा के उच्चारण से लेकर नामी की अभेदता तक पूरे अभ्यास को नाम कहा जाता है (श्री गुरु ग्रन्थ काश भाइ वीर सिह जी)।

नाम की कमाई परमात्मा की उस स्थिति मे सदैव निवास है। इसके लिए आचरण की शुद्धता आवश्यक है। परमात्मा सभी गुणो का पारखी है। उसकी कृपा के लिए ठोस नैतिक जीवन की आवश्यकता है। प्रभु की प्रसन्नता के उच्च आदर्श की प्राप्ति के लिए किये गये सभी प्रयत्न नाम कहलाते है। इस प्रकार नाम जीभ से परमात्मा का नाम रटना नही हे अपितु उसके साक्षात्कार से आदर्श जीवन व्यतीत करना है। निराकार से तादात्म्य नाम से ही होता है जो साधना की दृष्टि से एक ऊचा स्तर है।

गुरु ग्रन्थ साहिब मे प्रभु प्रेम (भक्ति) का बीज नाम हे और उसका फल सहजि है इस प्रकार नाम भक्ति और सहजि एक दूसरे से सम्बद्ध है। सहज से अभिप्राय आत्मा की उस अवस्था से है जब वह माया के प्रभाव से मुक्त होकर अपने वास्तविक स्वभाव मे प्रकाशित होती है। इस प्रकार सहज सत रज और तम से ऊपर की चतुर्थ अवस्था है। गुरुओ के अनुसार सहज अवस्था मोक्ष पद जीवन्मुक्त अवस्था निर्वाण पद की परिचायक है। सिद्धो की सहज योग की विचार धारा का खण्डन गुरु बाणी मे किया गया है।

सहज की प्राप्ति मे सदगुरु सहायक होते है।वे सशय (सहसा) निवारण से हृदय मे रखे रत्न से पहचान करा देते है। सहज के लिए मन की निर्मलता और सत्सग आवश्यक है। सत्सग से चित्त वृत्ति शान्त होती है तथा मन सहज समाधि मे स्थित हो जाता है। नित्य कर्म करते हुए भी मन प्रभु मे लगा रहने से सहज आनन्द की प्राप्ति होती है। हे जीव! तू सहज रुप से कमाते हुए और उद्यम करते हुए प्रभु का ध्यान कर इस से तेरा प्रभु से मिलन होगा और तेरी चिन्ता का नाश होगा।

उदमु करेदिआ जीउ तू कमावदिआ सुख भुञ्चु।
धिआइदिया तू प्रभू मिलु नानक उतरी चित।
(राग गूजरी वार) (गुरु अर्जन देव/५२२)

गुरु नानक देव जी ने काम और अध्यात्म के सघर्ष से निकल कर सहज मार्ग का प्रतिपादन किया। नारी को उचित सम्मान देते हुए नारी की भत्सना करने वालो से असहमति व्यक्त की। आत्म विकास का सम्बन्ध समाज से जोडा। व्यक्तिगत नाम सिमरन की अपेक्षा सत्सग मे हरि कीर्तन को महत्त्व दिया। सिमरन के साथ सेवा भी अनिवार्य है। निरजन के साथ चित्त जोड कर कठिन परिश्रम की कमाई और उसमे से निर्धन सेवा मे व्यय यही जीवन मे जाग की जुगति (युक्ति) या मार्ग है।

विचि दूनीआ सेव कमाइऐ ता दरगह बैसणु पाइऐ ।
(सिरी राग/२६)

गुरु ग्रन्थ साहिब मे राग और छन्द

गुरु ग्रन्थ साहिब मे सम्पूर्ण वाणी १४३० पृष्ठो मे है। इस के वर्गीकरण के तीन आधार है राग रचयिता और छन्द। गुरु अर्जन देव जी ने वाणी का रागो मे विभाजन किया है जिनकी कुल सख्या ३१ है। रागो मे वाणी का क्रम छन्दो से है। फिर छन्दो मे वाणी रचयिताओ के क्रम मे रखी गई है। इस प्रकार राग को वर्गीकरण का मूल आधार माना गया है। रागो मे छन्दो की व्यवस्था दूसरा आधार है और छन्दो मे छ गुरुओ की रचना तीसरा आधार है।

गुरु ग्रन्थ साहिब मे सगीत (राग) और कविता का समन्वय है जिससे पाठक (साधक) की बुद्धि और हृदय दोनो एक साथ रसमय होकर आनन्दमय हो सके। गुरु ग्रन्थ साहिब मे सगीत के तीन अगो मे राग और वाद्य को अपनाया गया है और नृत्य को छोड दिया गया है। इस प्रकार ६ बडे रागो मे केवल श्री और भेरउ राग को सम्मिलित किया गया है तथा दीपक हिण्डोल मेघ और मालकौस का सीधा उपयोग नही किया गया क्योकि इनका सम्बन्ध भावो के तीव्र उन्माद से है। गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्त मे पारम्परिक राग माला दी गई है जिस मे छ रागो तीस रागनियो और ४८ राग पुत्रो का उल्लेख है। गुरु ग्रन्थ साहिब मे उन मे से केवल दो रागो ११ रागनियो और ६ राग पुत्रो का उपयोग किया गया है। इस प्रकार गुरु ग्रन्थ साहिब के ३१ रागो मे २२ राग रागमाला सूची से है शेष राग देशी अथवा मिश्रित है।

आदि ग्रन्थ मे रागो का क्रम इस प्रकार रखा गया है कि पूरा ग्रन्थ एक ही रहस्यात्मक अनुभव या भगवत साक्षात्कार का प्रकटीकरण प्रतीत होता है। प्रत्येक राग भगवत साक्षात्कार की इस मजिल की एक कडी है जो परमात्मा की सिफ्त सालाह के द्वारा साधक को आत्मिक विकास की मजिल पर एक निश्चित बिन्दु तक ले जाता है। फिर अगला राग कुछ और शाश्वत मूल्यो की व्याख्या करके उससे ओर आगे ऊचे धरातल पर पहुचा देता है। साधक का हृदय राग मे तल्लीन होकर गुरुओ के अध्यात्मिक रस से एक रस हो जाता है। वह अह त्याग की मजिलो से गुजरता हुआ परमात्मा से एक रुप हो जाता है।

समय के अनुसार आदि ग्रन्थ का आरम्भ सन्ध्या के समय गाये जाने वाले सिरी (श्री) राग से होता है जब कि साधक के मन मे सन्ध्या का धूमिल प्रकाश होता है। सिरी राग का आरम्भिक सबद साधक को महल और मोहिनी तथा सिध (ज्ञान) एव सुलतान (प्रभुता) के नशे मे प्रभु को न भूलने को सचेत करता

है। (२८) पूर्वार्द्ध मे १३ राग है जिनमे सिरी राग का वर्चस्व है। गुरु ग्रन्थ साहिब का सबसे विस्तृत राग गउडी भी सिरी राग की रागिनी है। पूर्वार्द्ध मे १३ रागो का क्रम निम्न प्रकार है– सिरी माझ गउडी आसा गूजरी देवगन्धारी विहागडा• वडहस सोरठि धनासरी जैतसिरी टोडी और वैराडी।

राग आसा मे प्रभु के दर के दर्शन होते है। (८५) राग सोरठि मे गुरु की कृपा होती है। (४७) राग धनासरी मे ब्रह्माण्ड द्वारा प्रभु की आरती का चित्र है।(८४) इस प्रकार सिरी राग के बाद प्रत्येक राग लोक भाषा के प्रतीको के माध्यम से वियोग और चिन्तन के कई चित्र प्रस्तुत करते है। साधक पूर्वार्द्ध की समाप्ति पर बैराडी राग मे विश्राम की एक अवस्था मे पहुच जाता है। बैराडी राग का रुप है गहने से लदे होना तब जिज्ञासु की झोली मे गुरु की बरकत पडती है। जीवात्मा हरि नाम की मजिल पा कर हरि जस गाने की स्थिति मे पहुच जाती है –

सत जना मिलि हरि जस गाइओ।
कोटि जनम के दुख गवाइओ।।१।।
जो चाहत सोई मनि पाइओ।
करि किरपा हरि नामु दिवाइओ।। रहाउ।।
सरब सूख हरि नाम वडाई।
गुर प्रसादि नानक मति पाई।।२।।

उत्तरार्द्ध मे प्रेम भक्ति की मजिल आरम्भ होती है। राग तिलग मे फारसी भाषा के नए स्वर से करतार से प्रार्थना की गई है। अगले राग सूही मे जीवात्मा के सोहागिन रुप मे प्रभु मिलन के चित्र है। प्रेम भक्ति मे माया को हटाकर प्रेम से जीवन सराबोर करने का सन्देश है (२१) –

जिन के चाले रतडे पिआरे कन्त तिना के पास।

राग रामकली मे अनन्दु मे सतिगुरु के मिलन का आनन्द है। तुखारी और बसन्त राग मे छन्दो और सबदो के माध्यम से प्रकृति और मानव एकाकार हो गए है। राग बसन्त मे सब रोग शोक मिट गए हे करम (प्रभु कृपा) का पेड विकसित हो गया है शाखा हरी हो गई है धर्म का फूल खिल गया है और ज्ञान का फल लग गया है। प्रभु प्राप्ति के पत्ते है अहकार रहित स्थिति घनी छाया है।

गुरु ग्रन्थ साहिब मे राग और छन्द

गुरु ग्रन्थ साहिब मे सम्पूर्ण वाणी १४३० पृष्ठो मे है। इस के वर्गीकरण के तीन आधार है राग रचयिता और छन्द। गुरु अर्जन देव जी ने वाणी का रागो मे विभाजन किया है जिनकी कुल सख्या ३१ है। रागो मे वाणी का क्रम छन्दो से है। फिर छन्दो मे वाणी रचयिताओ के क्रम मे रखी गई है। इस प्रकार राग को वर्गीकरण का मूल आधार माना गया है। रागो मे छन्दो की व्यवस्था दूसरा आधार है और छन्दो मे छ गुरुओ की रचना तीसरा आधार है।

गुरु ग्रन्थ साहिब मे सगीत (राग) और कविता का समन्वय है जिससे पाठक (साधक) की बुद्धि और हृदय दोनो एक साथ रसमय होकर आनन्दमय हो सके। गुरु ग्रन्थ साहिब मे सगीत के तीन अगो मे राग और वाद्य को अपनाया गया है और नृत्य को छोड दिया गया है। इस प्रकार ६ बडे रागो मे केवल श्री और भैरउ राग को सम्मिलित किया गया है तथा दीपक हिण्डोल मेघ और मालकौस का सीधा उपयोग नही किया गया क्योकि इनका सम्बन्ध भावो के तीव्र उन्माद से है। गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्त मे पारम्परिक राग माला दी गई है जिस म छ रागो तीस रागनियो और ४८ राग पुत्रो का उल्लेख है। गुरु ग्रन्थ साहिब मे उन मे से केवल दो रागो ११ रागनियो और ६ राग पुत्रो का उपयोग किया गया है। इस प्रकार गुरु ग्रन्थ साहिब के ३१ रागो मे २२ राग रागमाला सूची से हे शेष राग देशी अथवा मिश्रित है।

आदि ग्रन्थ मे रागो का क्रम इस प्रकार रखा गया है कि पूरा ग्रन्थ एक ही रहस्यात्मक अनुभव या भगवत साक्षात्कार का प्रकटीकरण प्रतीत होता है। प्रत्येक राग भगवत साक्षात्कार की इस मजिल की एक कडी है जो परमात्मा की सिफ्त सालाह के द्वारा साधक को आत्मिक विकास की मजिल पर एक निश्चित बिन्दु तक ले जाता है। फिर अगला राग कुछ और शाश्वत मूल्यो की व्याख्या करके उससे ओर आगे ऊचे धरातल पर पहुचा देता है। साधक का हृदय राग मे तल्लीन हाकर गुरुओ के अध्यात्मिक रस से एक रस हो जाता है। वह अह त्याग की मजिलो से गुजरता हुआ परमात्मा से एक रुप हो जाता है।

समय के अनुसार आदि ग्रन्थ का आरम्भ सन्ध्या के समय गाये जाने वाले सिरी (श्री) राग से होता है जब कि साधक के मन मे सन्ध्या का धूमिल प्रकाश होता है। सिरी राग का आरम्भिक सबद साधक को महल और मोहिनी तथा सिध (ज्ञान) एव सुलतान (प्रभुता) के नशे मे प्रभु को न भूलने को सचेत करता

है। (२८) पूर्वार्द्ध मे १३ राग है जिनमे सिरी राग का वर्चस्व है। गुरु ग्रन्थ साहिब का सबसे विस्तृत राग गउडी भी सिरी राग की रागिनी है। पूर्वार्द्ध मे १३ रागो का क्रम निम्न प्रकार है– सिरी माझ गउडी आसा गूजरी देवगन्धारी विहागडा• वडहस सोरठि धनासरी जैतसिरी टोडी और वैराडी।

राग आसा मे प्रभु के दर के दर्शन होते है। (८५) राग सोरठि मे गुरु की कृपा होती है। (४७) राग धनासरी मे ब्रह्माण्ड द्वारा प्रभु की आरती का चित्र है।(८४) इस प्रकार सिरी राग के बाद प्रत्येक राग लोक भाषा के प्रतीको के माध्यम से वियोग और चिन्तन के कई चित्र प्रस्तुत करते है। साधक पूर्वार्द्ध की समाप्ति पर बैराडी राग मे विश्राम की एक अवस्था मे पहुच जाता है। बैराडी राग का रुप है गहने से लदे होना तब जिज्ञासु की झोली मे गुरु की बरकत पडती है। जीवात्मा हरि नाम की मजिल पा कर हरि जस गाने की स्थिति मे पहुच जाती है –

सत जना मिलि हरि जस गाइओ।
कोटि जनम के दुख गवाइओ।।१।।
जो चाहत सोई मनि पाइओ।
करि किरपा हरि नामु दिवाइओ।। रहाउ।।
सरब सूख हरि नाम वडाई।
गुर प्रसादि नानक मति पाई।।२।।

उत्तरार्द्ध मे प्रेम भक्ति की मजिल आरम्भ होती है। राग तिलग मे फारसी भाषा के नए स्वर से करतार से प्रार्थना की गइ है। अगले राग सूही मे जीवात्मा के सोहागिन रुप मे प्रभु मिलन के चित्र है। प्रेम भक्ति मे माया को हटाकर प्रेम से जीवन सराबोर करने का सन्देश है (२१) –

जिन के चोले रतडे पिआरे कन्त तिना के पास।

राग रामकली मे अनन्दु मे सतिगुरु के मिलन का आनन्द है। तुखारी और बसन्त राग मे छन्दो और सबदो के माध्यम से प्रकृति और मानव एकाकार हो गए है। राग बसन्त म सब रोग शोक मिट गए है करम (प्रभु कृपा) का पेड विकसित हो गया है शाखा हरी हो गई है धर्म का फूल खिल गया हे और ज्ञान का फल लग गया है। प्रभु प्राप्ति के पत्ते है अहकार रहित स्थिति घनी छाया है।

करम पेडु साखा हरी धरमु फुलु फलु गिआनु।
पत परापति छाव घणी चूका मन अभिमानु।।

राग बसन्त मे चारो ओर उल्लास छा गया है। वातावरण मे उत्साह की नवीन लहर है। मलार मे शीतल पवन बहती है गुरु उपदेश की मेघ के रुप मे अमृत वर्षा होती है जिस से जीवात्मा हरि रस मे लीन होती है।

अम्रित बूद सुहानी हीअरै गुरि मोही मनु हरि रसि लीना।

साधना के अन्त मे प्रभु की बख्शिश से प्रभात हो गई। सभी जीवो मे परमात्मा का प्रकाश अनुभव होता है एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मन्दे।। (७३) आदर्श मानव सत्य स्वरूप परमात्मा मे लीन हो जाते है। माया से उलटकर उन की पाच ज्ञानेन्द्रिया मन और बुद्धि निर्मल आचरण से भर जाते है इस प्रकार वे प्रभु से एकाकार हो जाते है। राग प्रभाती मे गुरु नानक जी के अन्तिम सबद और अन्तिम अष्ट पदी पक्तियो मे ऐसे निर्मल पुरुषो का वर्णन है। गुरु नानक सत्य मे लीन ऐसे महापुरुषो के चरण धोना अपना सौभाग्य समझते है। राग जैजावन्ती आदश मानव जय के साथ अपने स्वरूप को प्राप्त करता हे। इस मे नवम गुरु के चार सबद है जो साधक को अन्तिम चेतावनी के रुप मे है। नाम साधना की निर्मल ज्योति को कही माया की पवन प्रभावित न करे इसी विचार से इन्हे अन्त मे रखा गया प्रतीत होता है।

उत्तरार्द्ध मे प्रयुक्त १८ (अठारह) राग क्रम से इस प्रकार है तिलग सूही बिलावलु गोण्ड राम कली नट नारायण मालीगउडा मारु तुखारी कदारा भैरउ बसन्त सारग मलार कानडा कलिआनु प्रभाती ओर जजावन्ती।

रागो की दृष्टि से गुरु नानक देव और गुरु अमर दास जी की वाणी एक वग मे है जो क्रमश १९ और १७ रागो मे है। गुरु राम दास जी ओर गुरु अर्जन देव जी की वाणी दूसरे वर्ग मे है जो क्रमश २६ ओर ३० रागा क अन्तर्गत हे। रागो के अन्तर्गत कुल वाणी १३३८ पृष्ठो मे है जिस का ६००० भाग उन १७ रागो का है जिनमे गुरु नानक देव जी एव गुरु अमर दास जी की वाणी सम्मिलित हे विस्तार के क्रम से इन १७ रागो के नाम निम्न प्रकार है– गउडी आसा मारु रामकली सिरी सूही सोरठ बिलावलु सारग माझ भैरउ मलार गूजरी वडहस धनासरी बसत और प्रभाती। गुरु नानक देव जी की बाणी उक्त १७ रागो के अतिरिक्त राग तिलग तथा राग तुखारी मे भी है।

रागो मे गेय पद को सबद की सज्ञा दी गई है। राग की तीन अवस्था मानी गई है– नाद लय और सबद। राग की सब से उच्च अवस्था नाद या ध्वनि है दूसरी अवस्था लय या ताल हे और तीसरी अवस्था सबदो म प्रकट होने की है। गुरु ग्रन्थ साहिब मे राग की इन तीन अवस्थाओ की एक बन्दिश (समन्वय) की गई है जिससे बुद्धि और हृदय दोनो प्रभावित होते है।

सगीतज्ञो के अनुसार सबद या प्रबन्धम मे पाच अग होते है जिनको उदग्रह मेलापक ध्रुव अन्तरा और आभोग कहत है।

उद्ग्रह मे विषय का उत्थान किया जाता है। मेलापक मे लिये गये विषय को ध्रुव या टेक से मिलाया जाता है। ध्रुव या टेक स्थायी भाव रखती है और उसे बार बार दोहराया जाता है। अन्तरा मे विषय का विस्तार होता है आभोग पूरी रचना का परिचायक है उसी मे रचयिता का नाम भी होता है। हिन्दी मे गेय पदो के चार अगो का क्रम स्थायी अन्तरा सचारी और आभोग कहा जा सकता है।

गुरु ग्रन्थ साहिब मे सबदो मे चार अग है इस मे आरम्भ मे उदग्रह या सामान्य कथन है स्थायी या ध्रुपद के लिए रहाउ शब्द का प्रयोग किया गया है फिर अन्तरा मे दृष्टान्त है और आभोग मे विचार का साराश है। सबद मे रहाउ का विशेष स्थान है। गुरु ग्रन्थ साहिब मे सबदो के तीन रुप है दुपदे चौपदे और अष्टपदी। इनमे चौपदे पद मे राग और विचार का सन्तुलन है। दुपदो मे टेक अन्तरा और आभोग है। चौपदो मे उदग्राह रहाउ अन्तरा और आभोग चारो अग है। अष्टपदियो मे अन्तरा मे कुछ मे केवल एक ही भाव का विस्तार है और कुछ मे दो या तीन विषयो को लिया गया है।

रागो मे पहले सबदो को ही रचयिता क्रम से दिया गया है प्रत्येक गुरु ने अपना नाम नानक ही दिया है अत सबदो के आरम्भ मे सबद किस गुरु द्वारा रचित है यह दर्शाने के लिए महला १ महला २ या महला ३ आदि अकित है। इस प्रकार गुरु नानक देव जी के सबद पहले दिये गये है और उन पर महला पहला दिया है गुरु अगद देव जी के सबद नही है इसलिए फिर गुरु अमर दास जी के सबद महला ३ मे दिये गये है। महला का अकन सख्या मे है किन्तु उसे पहला दूसरा या तीसरा के रुप मे पढते है।

गुरु ग्रन्थ साहिब मे अष्टपदियो को अलग इकाई मान कर सबदो के बाद दिया गया है। अष्टपदिया विचार प्रधान है नाम महिमा सहज योग और भगवत प्रेम अष्टपदियो का मुख्य विषय है। गुरु ग्रन्थ साहिब मे गुरुओ द्वारा रचित

अष्टपदियो की सख्या ३१० है जिनमे ११६ गुरु नानक देव जी द्वारा रचित है।

अष्टपदी मे यह आवश्यक नही कि आठ ही पद हो। गुरु अमरदास जी द्वारा रचित राग सूही मे एक अष्टपदी मे दो पक्तियो के ३४ पद है इस प्रकार यह अष्टपदी लगभग दो पृष्ठो मे एक स्वतन्त्र वाणी के रुप मे है। गुरु राम दास जी की राग सूही मे एक अष्टपदी मे एक पक्ति के ३२ पद है। इस अष्टपदी मे ५ इकाई है प्रथम चार मे छ छ पक्ति के बाद और अन्तिम मे आठ पक्ति के बाद नानक शब्द का प्रयोग हुआ है। इस अष्टपदी मे गुरु दर्शन की उत्कण्ठा का सुन्दर चित्रण पजाबी भाषा मे है। (५८)

अष्टपदी के पदो मे पक्तियो का आकार और सख्या भी अलग अलग है। यदि पक्ति मे दोहे के समान २४ या अधिक मात्रा है तो अष्टपदियो के प्रत्येक पद दो या तीन पक्ति है अपवाद स्वरूप पक्ति की सख्या एक या चार भी है। यदि पक्ति मे चौपाई के समान १६ मात्रा है तो पक्तियो मे प्राय चार चरण है। कुछ अष्टपदी के पदो मे २ या तीन चरण है। चौपाई के समान चरण वाली अष्टपदी प्राय सरल भाषा मे राग गउडी और राग भैरउ मे हैं जबकि दोहे के समान मात्रा की अष्टपदी सिरी राग या सोरठि राग मे है और उन की भाषा पजाबी है। राग माझ मे दो छोटी पक्ति और एक बडी पक्ति के तीन पक्ति के पदो की अष्टपदिया एक अलग रुप मे है। राग माझ की अष्टपदियो का मुख्य विषय इस ससार को जीवात्मा का पितृ लोक और परलोक को श्वसुर लोक मान कर शुभ कार्य करना है। राग माझ की ३६ अष्टपदी मे से ३३ अष्टपदी गुरु अमरदास जी द्वारा रचित है।

राग माझ की अष्टपदियो की शैली को राग मारु के सोलहे छन्द मे अपनाया गया है। सोल्हे केवल इसी राग मे है। सोलहे मे सृष्टि रचना और प्रभु के अकथ्य रुप का वर्णन विशेष रुप से किया गया है।

सबदो और अष्टपदी के बाद रागमयी वाणी मे सगीत की दृष्टि से छन्दो का विशेष महत्त्व है। छन्द एक प्रकार के लोकगीत है जिनका उपयोग गुरुओ ने जीवात्मा के उदबोधन के लिए किया है। छन्दो के तीन विशिष्ट रुप पहरे अलाहुणिआ और घोडीआ है। पहरे मे मानव जीवन की चार अवस्थाओ की तुलना दिन के चार प्रहरो से कर के भक्ति के लिए सचेत किया जाता है। अलाहुणिया मृत्यु के समय के शोक गीत है। गुरुओ ने राग वडहस मे अलाहुणियो को एक आध्यात्मिक रग दिया है। घोडिया शादी के समय का मगल गीत है जो दूल्हे के घोडी पर सवारी के समय गाया जाता है। गुरुओ ने

मानव शरीर को घोडी मान कर मन द्वारा इस के नियन्त्रण को घोडिओ का विषय बनाया है। गुरु ग्रन्थ साहिब मे ४ पहरे ६ अलाहुणिआ और दो घोडियॉ को मिला कर कुल छन्द सख्या १६१ हैं। इनमे से राग आसा राग सूही और राग वडहस मे छन्द सख्या ६० है शेष ७१ छद ११ रागो मे है।

छन्दो मे प्राय चार या पच पद होते है। प्रत्येक पद की पाच या छ पक्तियो मे लयात्मक प्रवाह होता है। दूसरी पक्ति के आधे भाग को तीसरी पक्ति मे दोहराया जाता है और अन्तिम पक्ति मे पहली पक्ति के आधे भाग को दोहरा कर पुष्टि की जाती है। छन्दो की इस योजना से सगीत के प्रभाव मे वृद्धि होती है। छन्दो मे एक भाव का क्रमिक विकास होता है जैसे जीवात्मा परमात्मा के मिलन का छन्द पहरे आदि अथवा अलग अलग दृष्टातो से विषय समझाया जाता है जैसे हिरण भ्रमर और मन के प्रतीक का छन्द।

चार से अधिक पदो वाले छन्दो मे राग तुखारी मे अकित गुरु नानक देव जी का बारह माहा का छन्द उल्लेखनीय है जिस मे १७ पद है इसी प्रकार राग आसा मे गुरु अमर दास जी के मन को सम्बोधित छन्द मे १० पद है। यह छन्द यजुर्वेद के सूक्त मेरा मन शुभ सकल्प वाला हो को नये सन्दर्भ और नये स्वरूप मे प्रस्तुत करता है।

गुरमत मे सगीत से अभिप्राय प्रभु कीर्तन या हरि कीर्ति से है। यदि पाच ज्ञानेन्द्रियो मन और बुद्धि इन सात स्वरो को मिला कर आलाप किया जावे और ऐसा कीर्तन एक क्षण भी हो जावे तो जन्म जन्मान्तरो के बन्धन टूट जाते हैं—

निरबाण कीरतनु गावहु करते का
निमख सिमरत जितु छूटै।

(राग सूही) (गुरु अर्जन देव/७४७)

आध्यात्मिक सगीत से प्राप्त एकाग्रता से साधक सहज अवस्था को प्राप्त कर लेता है।

रागि नादि सबदि सोहणे जा लागे सहजि धिआन।।

(गुरु अमर दास जी)

सलोकु और पउडी

गुरु ग्रन्थ साहिब मे सबद और छन्दो का परिचय राग विवेचन के अन्तर्गत दिया गया है। अब नीति परक छन्दो सलोकु और पउडी के अन्तर्गत वाणी का विवरण गेय छन्दो से अलग दिया जा रहा है।

वार पजाबी भाषा मे लोक गीत है जो पउडी छन्द मे लिखी जाती है। गुरु ग्रन्थ साहिब मे वार का उपयोग राजाओ के यशगान की अपेक्षा परमात्मा के गुण गान के लिए किया गया है। गुरु ग्रन्थ साहिब मे कुल २२ वार रचनाये है जो महत्त्वपूर्ण रागो मे सकलित है। आरम्भ मे वार मे केवल पउडी छन्द ही थे किन्तु गुरु अर्जन देव जी ने प्रत्येक पउडी के साथ भाव साम्य रखते हुए एक दो श्लोक भी सम्बद्ध कर दिये। इस प्रकार वारो की ४६० पउडी छन्दो के साथ ६६२ श्लोक सम्बद्ध है। २२ मे से २० वारो के साथ श्लोक है राग बसन्त मे एक वार मे मात्र ३ पउडी है तथा राग रामकली मे सत्ता बलवण्ड की वार मे ८ पउडी है इनके साथ श्लोक नही दिये गये है।

गुरु नानक देव जी द्वारा रचित ३ वारे (राग आसा माझ और मलार मे) है। गुरु अमर दास जी की ४ वारे (राग गूजरी सूही रामकली और मारु मे) है। गुरु राम दास जी की ८ वारे (राग सिरी गउडी गूजरी बिहागडा सोरठ वडहस बिलावल और सारग राग म) है। गुरु अर्जन देव जी की वारे (राग गउडी गूजरी जैतसिरी रामकली मारु और वसन्त राग मे) है। गुरु ग्रन्थ साहिब की सभी वारो मे आसा राग मे सकलित गुरु नानक देव जी द्वारा रचित वार का विशेष महत्त्व है। इस वार मे २४ पउडी और ५६ श्लोक है। श्लोको मे ४४ श्लोक गुरु नानक देव जी के तथा शेष १५ श्लोक श्री गुरु अगद देव जी के है। इस की २४ पउडियो के साथ भाव समानता के सबदो का गायन होता है। राग आसा मे ही गुरु राम दास जी के द्वारा उच्चारित छ छन्दो के २४ पदो के प्रत्येक पउडी के साथ एक एक पद को पढकर दैवीय प्रेम के सगीत की अदभुत धारा तरगित की जाती है।

वारो के अतिरिक्त पउडी छन्द का उपयोग कुछ लम्बी रचनाओ मे हुआ है जिन मे राग रामकली मे सकलित ॐकार तथा सिद्धगोसट है। ॐकार वाणी वर्णमाला क्रम मे पउडी छन्द मे है। सिद्धगोसट वाणी प्रश्नोत्तर शैली मे सिद्धो से नाम साधना पर हुई गोष्ठी के रुप मे है। इस मे गुरुमुख (आदर्श पुरुष) के लक्षण भी दिये गये है।

राग रामकली मे ही तीसरे गुरु अमर दास जी की वाणी अनदु है। इस की प्रत्येक पउडी मे प्रथम पक्ति के उत्तरार्ध को दूसरी पक्ति मे दुहराया गया है और अतिम पक्ति मे प्रथम पक्ति की पुष्टि की गई है। इस वाणी की ४० पउडियो मे गुरमत दर्शन का सार सक्षेप समा गया है। प्रभु मिलन का आनन्द सतिगुरु की प्राप्ति गुरुवाणी की महत्ता नाम साधना की विधि मन प्रबोध सहज स्थिति प्रत्येक विषय को बहुत ही प्रवाहमय ढग से इस वाणी मे स्पर्श किया गया है। इस वाणी की ४०वी पउडी मे वाणी की प्रशस्ति मात्र नही बल्कि साधक की निष्ठा का अह्वान हे जिसको प्रभु की प्राप्ति हो गई है और सभी दुख दूर हो गये है।

राग गउडी मे गुरु अर्जन देव जी द्वारा रचित बावन अखरी की रचना भी पउडी छन्द मे है। इस वाणी के आरम्भ और अन्त मे गुरदेव वन्दना का श्लोक है तब ५५ पउडी मे ५२ अखरी बाणी है। प्रत्येक पउडी के साथ साथ एक एक श्लोक भी हे श्लोक के भाव की व्याख्या पउडी मे की गई है।

राग माझ मे गुरु अर्जन देव जी के द्वारा रचित बारह माहा वाणी मे १० पक्ति के पउडी छन्द का प्रयोग हुआ है। पहली पउडी मे नाम के द्वारा प्रभु मिलन की याचना हे। फिर १२ पउडी मे महीनो के क्रम से प्रभु के विरह मे जीवात्मा की दशा का वर्णन है। ऋतु परिवर्तन के साथ जीवात्मा की दशा भी बदलती है। असाढ के तपने के बाद सावन मे हरि नाम बून्द की तृष्णा उत्पन्न होती है जो भादो के भुलावे मे खो जाती है आश्विन मे पुन उत्कण्ठा जाग्रत होती है। कार्तिक मे शुभ कर्मो का योग होता है जिससे प्रभु से समीपता बढती है। जीवात्मा नारायण की शरण ले कर प्रभु कृपा प्राप्त करती हे। अन्त मे प्रभु की प्रेम भक्ति से उस का जीवन सफल हो जाता है।

गुरु ग्रन्थ साहिब मे सबदो के बाद श्लोको की सख्या सबसे अधिक है राग वाणी मे श्लोक पउडी छन्दो के साथ दिये गये है। गुरु अगद देव जी सम्पूर्ण वाणी ६२ श्लोक है जो पउडी छदो के साथ दिये गये है। अन्य गुरुओ मे गुरु नानक देव जी अमर दास जी रामदास और अर्जन देव जी के श्लोक वारो के साथ दिये गये है तथा जो श्लोक बच गये है वे वारा ते वधीक शीर्षक अन्तर्गत राग वाणी के बाद दिये गये है। गुरु अर्जन देव जी के द्वारा सस्कृत मे रचित सहसक्रिती सलोकु तथा प्राकृत मे रचित गाथा भी राग वाणी के बाद सकलित है सहसक्रिती और गाथा के बाद कबीर और फरीद के श्लोक उसी खण्ड मे अकित है। सबसे अन्त मे वारा ते वधीक के अन्तर्गत नवम गुरु तेग बहादुर जी के श्लोक अकित है।

गुरु ग्रन्थ साहिब मे श्लोको की कुल सख्या लगभग २ सतसई के है। उनमे से आधे श्लोक २ पक्ति के है और आधे से कुछ अधिक दो से अधिक पक्ति मे है। इन श्लोको को ३ भागो मे बॉट सकते है दो पक्ति के श्लोक एक उक्ति के रूप मे हैं। दो से अधिक पक्तियो के कुछ श्लोको मे एक ही विषय का सामान्य कथन है और कुछ श्लोको मे चौपाई के मात्रिक छन्द को लेकर उक्ति वैचित्र्य से विषय निरूपण है। राग रामकली मे चौपाई शैली के श्लोक मे कर्मकाण्ड की अपेक्षा शुभ कर्मो पर बल दिये जाने सम्बन्धी श्लोक पाच चौपाई छन्दो मे है। राग माझ मे भगवान के दरबार मे नाम सिमरन से सम्बन्ध जुडता है सिफती गढ पवे ससार के समकक्ष आठ नौ सासारिक उदाहरण रखे गये है इस श्लोक मे १४ चरण या ७ अर्धाली है। राग मलार के एक श्लोक के आठ चरणो मे सूत्र रुप मे पूरी रहस्यात्मक अनुभूति सूत्र रुप मे दी गई है 'अजर जरै त नउ कुल बन्धु यदि आत्म रस का भोग कर सके तो बहिर्मुखी वृत्तियो बन्द होती है। राग रामकली मे नानक दुखीआ सभ ससार श्लोक मे २२ चरण है।

गुरु अगद देव जी के दो पक्ति के श्लोक समास शैली मे है कुछ श्लोक विषय निरुपण के लिए दो से अधिक पक्ति मे है। गुरु अगद देव जी का श्लोक इहु जग सचे की है कोठडी सचे का विचि वासु विशेष प्रसिद्ध है।

गुरु अमरदास जी के श्लोको की सख्या ४०० से अधिक है उनके अधिकाश श्लोक दो से अधिक पक्ति के है। उन के सती प्रथा त्याग सम्बन्धी श्लोक भावपूण है।

गुरु राम दास जी ने गुरु महिमा और सिख आचरण पर अच्छे श्लोक लिखे हे। गुरु सतिगुरु का जो सिख अखाए मे एक सबद की भाति गरसिख के आचरण का विवेचन मिलता है।

गुरु अर्जन देव जी के श्लोको मे भाषा और भावो की विविधता है उन्होने अपने एक श्लोक को राग मारु के आरम्भ मे दिया है। इसी प्रकार जपु जी के आरभिक श्लोक को सुखमनी वाणी मे उपयोग किया है।

गुरु तेग बहादुर जी के ५८ श्लोक सरल ब्रजभाषा मे वैराग्यमयी भावना से पूर्ण है। उन्होने अपने श्लोको मे ज्ञानी पुरुष के लक्षण बहुत ही सरल और मार्मिक रुप मे दिये है।

———

मगल-कलश

प्रथम खण्ड – परिचय

(१) प्रभुस्तुति

I

आदि पूरन मधि पूरन अति पूरन परमेसुरह।
सिमरन्ति सन्त सरबत्र रमण नानक अघनासन जगदीसुरह।।

(वार राग जैतसरी सलोकु – I) (गुरु अर्जन देव/७०५)

सन्त जन उस सर्व व्यापक प्रभु का स्मरण करते है जो सर्वत्र व्यापक है। वह प्रभु जगत के आदि से मौजूद है अब भी सर्वव्यापक है और अन्त मे भी सर्व व्यापक रहेगा।

अनुशीलन -

गुरु ग्रन्थ साहिब मे प्रभु के निराकार स्वरूप का वर्णन है तथा परमात्मा के किसी नाम के प्रति आग्रह नही है। निराकार रुप मे प्रभु का सत्य गुरु तथा पूर्ण माना गया है। मुख्य वाणिओ के आरम्भ मे स्तुति श्लोक दिये गये है। गुरु ग्रन्थ साहिब की प्रथम वाणी जपु जी मे प्रभु के सत्य रुप का वर्णन है–

आदि सचु जुगादि सचु। है भी सचु नानक होसी भी सचु।

वह प्रभु (वाहि गुरु) ही एक मात्र सत्य स्वरूप है जब कुछ नही था तब भी उस की सत्ता थी। प्रत्येक युग के आरम्भ मे भी वह सत्य था आज भी वही है। भविष्य मे भी उसी की सत्ता स्थिर रहेगी।

राग गउडी मे गुरु अर्जन देव जी की वाणी सुखमनी मे परमात्मा की गुरु नाम से स्तुति की गई है–

आदि गुरए नमह। जुगादि गुरए नमह।
सति गुरए नमह। स्री गुर देवए नमह।।

(सुखमनी/२६२)

उक्त श्लोक मे गुरु के साथ आदि और जुगादि विशेषण का उपयोग जपु जी के अनुसार है। गुरु के रुप मे प्रभु के गुण प्रदर्शित करने के लिए सतिगुरु और श्री गुरु कहा है। गुरु अर्जन देव जी ने जपु जी के श्लोक को सुखमनी मे १७वे क्रमाक पर दिया है। सभवत राग की दृष्टि से है भी सचु होसी भी सचु को है भि सचु होसी भि सचु पाठ रखा गया है।

प्रस्तुत श्लाक मे प्रभु के पूर्ण रुप का वर्णन है। उपनिषदो के आरम्भ मे शान्ति पाठ के रुप मे प्रभु स्तुति दी गई है। बृहदारण्यक उपनिषद मे पूर्ण ब्रह्म का वर्णन किया गया है। [अध्याय–५ ब्राह्मण–१] जिस के आरम्भ मे प्रभु स्तुति का श्लोक निम्न प्रकार हे–

ॐ पूर्णमद पूर्णमिद पूर्णात पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

निराकार प्रभु (परब्रह्म) पूर्ण है और उस परब्रह्म से उत्पन्न यह जगत भी उसी पर ब्रह्म से पूर्ण है। यह कार्यात्मक जगत उस कारणाात्मक ब्रह्म पूर्ण स ही उत्पन्न होता है। उस पर ब्रह्म (पूण) से पूर्ण (जगत) निकाल लेने पर भी पूर्ण ही शेष रहता है।

गुरु अजन देव जी ने अपनी वाणी राग जेतसरी की वार मे प्रत्येक पउडी के साथ सहसक्रिती (सस्कृत) श्लोक दिये है। चयनित श्लोक उसी मे प्रथम श्लोक है। इस मे प्रभु के सर्वव्यापक पूर्ण रुप का वर्णन है। गुरु अर्जन देव जी ने प्रभु क पूण होने की धारणा को महत्त्व दिया है तथा गुरु नानक देव जी की वाणी मे श्लोको के अन्त मे इसी भाव का श्लोक सकलित किया है–

पूरे का कीआ सभ किछु पूरा घटि वधि किछु नाही।
नानक गुरुमुखि ऐसा जाणै पूरे माहि समाही।।३३।।

(सलोक वारा त वधीक/१४१२)

इस सलोक (दोहे) की प्रथम पक्ति मे सस्कृत श्लाक के भाव को सहज सरल रुप मे दिया गया है। दूसरी पक्ति गुरुमुख (भक्त) का प्रभु मे समाकर एक हो जाना गुरु जी के मौलिक चिन्तन का योगदान है।

II

न सख न चक्र न गदा न सिआम। अस्चरज रुप रहत जनम।
नेति नेति कथति बेदा। ऊचमूच अपार गोबिन्दह।
बसति साध रिदय अचुत। बुझति नानक बडभागीअह।।

(गुरू अजन दव/१३५६) (II) सलोक वारा त वधीक १३५६

परमात्मा शख चक्र गदा या श्याम वर्ण मे नही है। वह आश्चर्य रूप और योनि रहित है। वेदो ने उसे नेति नेति कहा है वह अपार तथा ऊचे से ऊचा है।

वह साधू जन के हृदय मे अच्युत रुप से विराजता है। गुरु नानक देव जी के -ु - कोई भाग्यशाली ही उसे जान पाता है।

अनुशीलन -

निराकार इष्ट को अवतार की कल्पना से अलग करने के लिए यह स्पष्ट किया गया है कि प्रभु विष्णु के रुप म शख चक्र गदा आर पदम रखने वाला नही हे वह विष्णु के अवतार रुप मे कृष्ण के समान रग वाला भी नही है। अगर हम उस गोविन्द कहते है तो वह ऊचे से ऊचा है।

गुरु अजन देव जी ने रागो के अन्तर्गत वाणी के अन्त मे गुरु ग्रन्थ साहिब के मगल रुप के चार श्लोको को एक स्वतन्त्र खण्ड मे गुरुमन्त्र को पूर्ण रुप मे देते हुए सकलित किया है। यद्यपि इस खण्ड के शीर्षक मे श्लोको के आरम्भ मे गुरु नानक (महला १) का सन्दर्भ है किन्तु इन मे प्रथम श्लोक गुरु नानक देव जी का हे और शष तीन गुरु अगद देव जी के है। गुरु अगद देव जी निरकार प्रभु को कृष्ण ओर वासुदेव के रुप मे सम्बोधित करते हुए स्पष्ट करते है—

यदि हम निराकार प्रभु को कृष्ण कहते हे तो वह देवताओ का मूल देवता है। यदि हम उसे वासुदेव कहे तो वह उस के अन्दर स्थित आत्मा है। यदि काई यह भेद जानता हो यही उस के लिए परम सत्य है। गुरु नानक कहते है वे उस के दास बन जावेगे क्योकि वह मनुष्य निर्लिप्त हरि रुप होगा।

एक क्रिस्न सरब देवा देवा देव त आतमह।
आत्म स्री बास्व देवस्य जे कोई जानसि भेव।
नानक ता को दासु है सोई निरजन देव।।

(सलाक सहसक्रिती/१३५३)

III

हे अचुत हे पारब्रहम अबिनासी अघनास।
हे पूरन हे सरबमै दु ख भजन गुणतास।
हे सगी हे निरकार हे निरगुण सभ टेक।
हे गोबिन्द हे गुण निधान जा कै सदा बिबेक।
हे अपरपर हरि हरे हहि भी होवन हार।
हे सतह कै सदा सगि निधारा आधार।
हे ठाकुर हउ दासरो मै निरगुन गुनु नही कोइ।

नानक दीजै नाम दानु राखउ हीऐ परोइ।।

बावन अखरी (राम गउडी)/पउडी ५५ गुरू अर्जन देव/२६१

हे सदा अटल हे पार ब्रह्म हे नाश रहित हे पापो के नाश करता हे पूर्ण प्रभु हे सर्व व्यापक हे दुखो का नाश करने वाले हे गुणो के भण्डार हे सब के सहायक हे आकार रहित हे तीनो गुणो से अतीत तुम सब का सहारा हो। हे पृथ्वी को जानने वाले हे गुणो के निधान तुम मे सदा विवेक है।

हे परे से परे हे पाप हरने वाले तुम हो भी और आगे भी होगे। हे सन्तो के सगी तुम बिना सहारा वालो का सहारा हो। हे स्वामी! मै दास हू, मुझ मे कोई गुण नही है। मुझे नाम का दान दीजिए जिसे मै हृदय मे पिरोकर रखू, यही गुरु नानक देव जी की प्रार्थना है।

सदर्भ -

राग गउडी मे गुरु अर्जन देव जी ने बावन अखरी मे ओअ सिद्धाय सस्कृत स्वर तथा गुरुमुखी वर्णमाला के क्रम मे ५५ पउडी की रचना की है जिस के आरम्भ और अन्त मे गुर देव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा श्लोक पढने का निर्देश है।

बावन अखरी बाणी मे निराकार प्रभु की स्तुति मे यह अन्तिम पउडी है। इस मे गुरु अर्जन देव जी के द्वारा रचित उक्त दो चयनित श्लोको के भाव का स्पष्टीकरण हो जाता है। गुरु अर्जुन देव जी इस पउडी मे अपने ठाकुर से नाम की याचना करते है।

IV

प्रभ दातउ दातार परियउ जाचकु इकु सरना।
मिलै दानु सन्त रेन जेहि लगि भउजलु तरना।
बिनति करउ अरदासि सुनहु जे ठाकुर भावै।
देहु दरस मनि चाउ भगति इहु मनु ठहरावै।
बलिओ चरागु अध्यार महि सभ कलि उधरी इक नाम धरम।
प्रगटु सगल हरि भवन महि जनु नानकु गुरु पारब्रहम।।

सवैये स्री मुख वाक्य – ६ गुरू अर्जन देव जी/१३८६

हे प्रभु! तुम दाताओ के भी दाता हो। मै याचक रुप मे तुम्हारी शरण मे पडा हू। मुझे सन्तो की चरण धूलि दीजिए जिस के सहारे मै यह भव सागर पार कर

सकू। मै विनती करता हू अगर तुम्हे अच्छा लगता है तो मेरा प्रार्थना सुनते हो। हे प्रभु! मेरा मन तुम्हारे दर्शन के चाव से पूर्ण है। मुझे अपनी पावन भक्ति दीजिए जिस मे मेरा मन स्थिर हो जावे।

हे प्रभु तुम्हारा नाम अन्धेरे मे दीपक के समान है जिसे प्राप्त कर के कलियुग के सभी जीवो का उद्धार हुआ है। गुरु नानक कहते है कि हे पर ब्रह्म तुम तीनो लोको मे गुरु क द्वारा प्रकट होते हो।

अनुशीलन -

गुरु ग्रन्थ साहिब मे राग वाणी क बाद एक स्वतन्त्र खण्ड मे पूर्ण गुरु मन्त्र के बाद १४३ सवैये (जिन मे छप्पय सवैया व सोरठा छन्द सम्मिलित है) दिये गये है। इन मे प्रथम २० सवेये (छप्पय आदि) श्री गुरु अर्जन देव जी के है जिन पर सवैये श्री मुख वाक्य महला ५ शीषक है जिस का अर्थ यह हे कि यह सवैये गुरु अर्जन देव जी के द्वारा प्रभु स्तुति मे कहे गये है।

चयनित छप्पय मे प्रभु नाम की तुलना अन्धेरे मे दीपक के प्रकाश स की गई है जिसे पाकर कलिकाल की जनता का उद्धार हुआ है। भाई गुरदास जी ने गुरु नानक देव जी मे निरकार ज्योति के प्रकाश का सुन्दर वर्णन किया है। सतिगुरु नानक का दातार प्रभु ने धर्म रुपी बैल की पुकार सुनकर ससार मे भेजा और नानक ने सतिनाम के मन्त्र के द्वारा कलि युग मे मनुष्यो का उद्धार किया। उन के प्रकट होने से धुन्ध मिट गई और चारो ओर प्रकाश फैल गया।

सतिगुरु नानक प्रगटिआ मिटी धुन्ध जग चानण होइआ

-----

(२) स्तुति गुरू साहिबान

गुरू नानक स्तुति

V

राजु जोगु माणिओ बसिओ निरवैरु रिदन्तरि।।
स्रिसटि सगल उधरी नामि ले तरिओ निरन्तरि।।
गुण गावहि सनकादि आदि जनकादि जुगह लगि।
धन्नि धन्नि गुरु धन्नि जनमु सकयथु भलौ जगि।।
पाताल पुरी जैकार धुनि कबि जन कल वखाणिओ।
हरि नाम रसिक नानक गुर राजु जोगु तै माणिओ।।

(सवइए महल पहल क – ६) भट कलसहार/१३६०

गुरु नानक देव जी ने राज योग अपनाया है। उन के हृदय मे स्वय निर्वेर प्रभु निवास करते है। उन्होने निरन्तर नाम जप कर स्वय मोक्ष पाया है और सम्पूर्ण सृष्टि को भी तार लिया है। ब्रह्म के पुत्र सनक सनन्दन सनातन और सनत्कुमार तथा राजर्षि जनक आदि युग युग से गुरु नानक का गुण गाते है। वह गुरु नानक धन्य है जगत मे उस जन्म लेना सफल हे।

कवि कल कहता हे कि हे गुरु नानक! पाताल पुरी से भी तुम्हारी जय जय कार हो रही हे। तुम हरि नाम रसिक और राज योग को अपनाने वाले हो।

सदर्भ -

गुरु अजन देव जी २० सवैयो को छोड कर शेष १२३ सवेये भटो के है जिन मे से ५४ सवेये भट कलसहार के द्वारा रचित हे। कलसहार के द्वारा गुरु नानक देव जी की प्रशस्ति मे १० सवैये कहे गये हे। प्रस्तुत छप्पय मे गुरु नानक देव जी के उपदेश को राज याग की सज्ञा दी गई हे। भटो ने गुरु प्रशस्ति मे हिन्दू मिथिका का सहारा लिया हे किन्तु उन का अभिप्राय अवतारवाद का समर्थन नही है।

गुरू अगद स्तुति

VI

अमिअ द्रिसटि सुभ करै हरै अघ पाप सकल मल।
काम क्रोध अरु लोभ मोह वसि करै सभै बल।
सदा सुखु मनि वसै दुखु ससारहि खोवै।
गुरु नवनिधि दरियाउ जनम हम कालख धोवै।
सु कहु टल गुरु सेवीऐ अहिनिसि सहजि सुभाइ।
दरसनि परसिऐ गुरू कै जनम मरण दुखु जाइ।।

(सवइए महल दूजे के – १०) भट कलसहार/१३६२

गुरु अगद की अमृत मयी दृष्टि सब का कल्याण करने वाली है वह सब पापो का मल दूर कर देती है। गुरु अगद देव जी ने अपने निर्मल चरित्र के बल से काम क्रोध लोभ मोह आदि को वश मे कर रखा है। उन के मन मे सदा सुख बसता है। वे ससार के दु खो को दूर करते है। गुरु अगद नौ निधियो के दरिया है। उन के उपदश अमृत का पान कर हम अपने जीवन की कालिमा धो लेते है। कवि टल (कलसहार) कहता है कि दिन रात सहज अवस्था मे गुरु की सेवा करो। उन के दर्शन और स्पर्श से जन्म मरण के दु खो से छुटकारा मिल जाता है।

सदर्भ -

भट कलसहार ने अपने सवैयो (छप्पय) मे प्रथम पाचो गुरुओ की प्रशस्ति की है जिसमे गुरु नानक ओर गुरु अगद देव जी की प्रशस्ति अन्य किसी भट ने नही की। प्रस्तुत छप्पय मे कलसहार ने अपना उपनाम टल प्रयोग किया है। इस छप्पय मे गुरु अगद दव जी के दर्शन और स्पर्श से जन्म मरण के दु खो के नाश होन का वर्णन है। गुरु ग्रन्थ साहिब को गुरु गोविन्द सिह जी ने गुरु पदवी दी। आज कल इस छप्पय की अन्तिम दो पक्तियो का गायन गुरु ग्रन्थ साहिब पर से रुमाल हटा कर शब्द रुप गुरु के दर्शन के सन्दर्भ मे किया जाता है। गुरु अगद देव जी की स्तुति से सम्बन्धित राइ वलवण्ड की वार की दो पक्तियो का भी भाव साम्य होने से उच्चारण किया जाता है।

होवै सिफति खसम दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ
तुधु डिठै सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ।।

गुरु अमर दास स्तुति

VII

रहिओ सन्त हउ टोलि साध बहुतेरे डिठे।
सनिआसी तपसीअह मुखहु ए पण्डित मिठे।।
बरसु एकु हउ फिरिओ किनै नहु परचउ लायउ।
कहतिअह कहती सुणी रहत को खुसी न आयउ।।
हरि नामु छोडि दूजै लगे तिन्ह के गुण हउ किआ कहउ।
गुरु दयि मिलायउ भिखिआ जिव तू रखहि तिव रहउ।।

(सवइए महल तीजे क – २०) भट भीखा १३६५

मै सच्चे सन्त की खोज करता रहा हू। अनेक साधु सन्यासी तपस्वी मेने देख हे। मीठी मीठी बाते करने वाले पण्डित भी देखे हे। एक वष तक मै खोज मे भटकता रहा हू किसी मे मुझ विश्वास नही दिलाया। कहने सुनने वाले अनेक देखे किन्तु किसी की रहनी देख कर मुझे खुशी नही हुई। जो स्वय हरि नाम छाड कर द्वैत भाव मे लगे है मै उन के गुण क्या बताऊँ। अब भीखा को सच्चा गुरु मिल गया ह वह जेसे रखे मै वैसे रहूगा।।

सदर्भ -

यह छप्पय भटो मे सब से ज्येष्ठ भट भिक्खा द्वारा रचित है। भिक्खा गुरु अमरदास जी के दरबार मे गोविन्दवाल मे उपस्थित हुआ। उसने अपने बच्चो और पुत्रो का गुरु घर से परिचय कराया। भिक्खा के कुल दो सवैया/छप्पय उपलब्ध है जो गुरु अमरदास की स्तुति मे है।

गुरु राम दास स्तुति

VIII

हम अवगुणि भरे एकु गुणु नाही अम्रितु छाडि बिखै बिखु खाई।
माया माह भरम पै भूले सुत दारा सिउ प्रीति लगाई।।
इकु उतम पथु सुनिउ गुर सगति तिह मिलत जम त्रास मिटाई।
इक अरदासि भाट कीरति की गुर रामदास राखहु सरणाई।।

(सवइए महले चउथे के – ५८) भट कीरत/१४०६

हे गुरु राम दास हम अवगुणो से भरे है हम मे एक भी गुण नही है। हम नाम अमृत को छोड कर विषयो का विष खा रहे है। मोह माया भ्रम मे भूले पडे हैं पुत्र पत्नी आदि मे प्रीति लगा रखी है। सुना है कि गुरु की सगति का मार्ग ही उत्तम है उससे भेट हो जाने पर यम दूत का भय नष्ट हो जाता है। कीरत भाट की एक प्रार्थना है हे गुरु राम दास मुझे अपनी शरण मे रखो।

अनुशीलन -

भट कीरत के द्वारा तीसरे और चौथे गुरु की प्रशस्ति मे चार चार सवैयो की रचना की गई है। प्रस्तुत सवैया चतुर्थ गुरु राम दास की प्रशस्ति मे कहा गया बहुत ही लोकप्रिय सवैया है। इस सवैये मे कीरत ने अपनी अवगुण मयी अवस्था का वर्णन किया है और गुरु रामदास जी की शरण मे उन के द्वारा बताए गए पन्थ पर चलने की जिज्ञासा व्यक्त की है।

यह उत्तम पन्थ प्रभु के हुकुम को पहचान कर उस पर चलने का है। गुरु नानक देव जी ने राग गउडी के एक सबद की अन्तिम चार पक्तियो मे अपने अवगुणो का वर्णन निम्न प्रकार किया है –

जेता समुदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे।
दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे।।
जीअडा अगनि बराबर तपै भीतरि वगै काती।
प्रणवति नानकु हुकमु पछाणै सुखु होवै दिनु राती।।

(राग गउडी – सबद – १६) (गुरु नानक/१५६)

हे मेरे साहिब! जैसे अतुलित पानी से समुद्र भरा हुआ है उसी प्रकार हम जीवो मे अनगनित अवगुण है तू आप ही दया कर कृपा कर। मेरी देह आग

के समान तप रही है मेरे भीतर तृष्णा की छुरी चल रही है। गुरु नानक देव प्रार्थना करते है कि जो मनुष्य परमात्मा के हुकुम को समझ लेता है उस के भीतर रात दिन आत्मिक आनन्द बना रहता है।

गुरु अर्जन देव स्तुति

IX

जब लउ नहीं भाग लिलार उदै तब लउ भ्रमते फिरते बहु धायउ।
कलि घोर समुद्र मै बूडत थे कबहू मिटिहै नही रे पछुतायउ।।
ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ अवतारु बनायउ।
जप्यउ जिन्ह अर्जन देव गुरू फिरि सकट जोनि गरभ न आयउ।।

(सवईए महले पजवे के – १८) भट मथुरा/१४०६

जब तक मस्तक पर भाग्य लेख उदित नही थे तब तक हम इधर उधर भटकते और भागते फिरते थे कलि युग के भयानक सागर मे डूब रहे थे और सदा पछताया करते थे। किन्तु मथुरा कवि कहता है कि अब सचा विचार यह है कि ससार को तारने के लिए परमात्मा ने ही गुरु अर्जन को अवतार दिया है। जिन्होने गुरु अर्जन देव जी का नाम जपा है वे पुन गर्भ योनि मे नही आये।

सदर्भ -

भट मथुरा ने चोथे और पाचवे गुरु की प्रशस्ति मे ७–७ सवैयो की रचना की है। प्रस्तुत सवैये मे गुरु अजन देव जी की प्रशस्ति है गुरु अर्जन देव जी की कुशाग्र बुद्धि के देखकर उन के नाना गुरु अमर दास जी ने उन्हे वरदान दिया था– दुहिता बाणी का बाहिता मेरा यह नाती बाणी का जहाज होगा। गुरु अर्जन देव जी की शब्द वाणी वास्तव मे नाम का जहाज है जिस की सहायता से ससार सागर को तैर जावेगे।।

——————

(३) गुरू स्थान-महात्म्य

X

जिथै जाइ बहै मेरा सति गुरू सो थानु सुहावा राम राजे।
गुर सिखीं सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा।
गुर सिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा।
जिन्ह नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा।

(राग आसा छन्द २/१६) गुरु रामदास जी/४५०

हे भाई! जिस स्थान पर प्यारा प्रभु (सतिगुरु) जा बैठता है वह स्थान सुन्दर बन जाता है गुरु सिख उस स्थान को ढूढ लेते है और उस की धूल को अपने मस्तक पर लगाते है। जो गुर सिख परमात्मा का नाम स्मरण करते है उन की मेहनत परमात्मा के द्वार पर स्वीकृत हो जाती है। नानक का कथन है कि जो मनुष्य अपने हृदय मे गुरु का आदर सत्कार करते है परमात्मा जगत मे उन का आदर सत्कार कराता है।

सदर्भ -

सिख धर्म मे गुरुओ से सम्बन्धित स्थानो का विशेष महत्त्व है। गुरु ग्रन्थ जी मानिओ परगट गुरा की देह के अनुसार गुरु ग्रन्थ साहिब को शब्द गुरु माना जाता है। गुरु राम दास जी के छन्द की इन पक्तियो का उच्चारण जब गुरु ग्रन्थ साहिब को प्रकाश स्थान से रात्रि के समय सोहिला पढने के बाद सुखासन पर विराजमान किया जाता है तब पढा जाता है।

XI

डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ।
बधोहु पुरखि बिधातै ता तू सोहिआ।
वसदी सघन अपार अनूप रामदास पुर।
हरिहा! नानक कसमल जाहि नाइऐ रामदास सर।।

(फुनहे – १०) गुरु अर्जन दव/१३६२

मैने सब स्थान देखे है हे प्रियतम! जहा तुम बसे हो उस स्थान सा दूसरा कोई स्थान नही है। तुम्हे स्वय कर्ता पुरुष ने बनाया है इसी लिए तू शोभायमान है। इस अनूप नगर राम दासपुर (अमृतसर) मे घनी आबादी है। हे हरि तुम्हारे द्वारा निर्मित सरोवर (राम दास सर) मे नहाने से सब पाप धुल जाते है।

(४) राम दास सरोवर

XIII

राम दास सरोवरि नाते। सभि उतरे पाप कमाते।

निरमल होए करि इसनाना। गुरि पूरै कीने दाना।।१।।

सभि कुसल खेम प्रभि धारे।

सही सलामति सभि थोक उबारे।।

गुर का सबदु वीचारे।। रहाउ।।

साधसगि मलु लाथी। पार ब्रह्मु भइओ साथी।

नानक नामु धिआइआ। आदि पुरख प्रभु पाइआ।।२।।

(राग सोरठि सबद – ६५) गुरु अर्जन देव जी/६२५

जो मनुष्य सत्सगति मे स्नान करते हैं उन के पूर्वकृत पाप दूर हो जाते है। हरि के नाम रुपी जल मे स्नान कर के वे सदाचारी हो जाते है। परन्तु यह कृपा पूर्ण गुरु द्वारा ही होती है।

हे भाई! जिस मनुष्य ने गुरु के ज्ञान का आश्रय ले कर आत्मिक जीवन के सारे गुण पूर्ण रुपेण ग्रहण कर लिये है प्रभु उन के भीतर समस्त सुख पैदा कर देता है।

हे भाई! सत्सगति मे रहने से विकारो का मैल दूर हो जाता है सत्सगति के प्रभाव से परमात्मा सहायक बन जाता है। हे नानक! जिस मनुष्य ने प्रभु का स्मरण किया उस ने उस प्रभु को पा लिया जो सब का आदि है और जो सर्वव्यापक है।

अनुशीलन -

राम दास सरोवर का निर्माण गुरु राम दास द्वारा १५७७ मे आरम्भ करवाया। इसे गहरा कराने और फर्श पक्का कराने का कार्य गुरु अर्जन देव के द्वारा १५८६ मे किया गया। सिख धर्म मे कर्मकाण्ड पर बल नही है। सरोवर का अर्थ भी लाक्षणिक रूप से सत्सग या नाम स्मरण किया जाता है। केन्द्रीय धार्मिक स्थान हरि मन्दिर के चारो ओर बने सरोवर मे देह शुद्धि के साथ चित्तशुद्धि भी होती है। गुरु अर्जन देव जी के इन दोनो सबदो (XIII XIV) को श्री हरि मन्दिर साहिब की दर्शनी ड्योढी के प्रवेश द्वार पर अकित किया गया है।

XIV

विचि करता पुरखु खलोआ। वालु न विगा होआ।।
मजनु गुर आदा रासे। जपि हरि हरि किलविख नासे।।१।।
सन्तहु रामदास सरोवरु नीका।
जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जी का।। रहाउ।।
जैजैकारु जगु गावै। मन चिन्दिअडे फल पावै।।
सही सलामति नाइ आए। अपणा प्रभू धिआए।।२।।
सन्त सरोवर नावै। सो जनु परम गति पावै।
मरै न आवै जाई। हरि हरि नामु धिआई।।३।।
इहु ब्रहम बिचारु सु जानै। जिसु दइआलु होइ भगवानै।
बाबा नानक प्रभ सरणाई। सभ चिन्ता गणत मिटाई।।४।।

(राग सोरठि – सबद – ५७) गुरु अर्जन देव जी/६२३

जिस मनुष्य का आत्मिक स्नान गुरु ने पूर्ण कर दिया अर्थात सत्सगति से जिस का हृदय निर्मल हो गया वह हमेशा परमात्मा का नाम जप जप कर समस्त पापो से मुक्त हो जाता है। सारे जगत का सृजन हार स्वय उस की सहायता करता है और उसे तनिक भी नुकसान नही होता।

हे सन्तो! सत्सगति सरोवर सुन्दर है। जो मनुष्य इसमे आत्मिक स्नान करता है उस की आत्मा को विकारो से छुटकारा मिल जाता है। वह अपने साथ अपने वश का भी उद्धार कर लेता है।

हे भाई! जो मनुष्य सत्सगति मे रह कर अपने प्रभु की आराधना करता है वह मनुष्य इस सरोवर मे स्नान कर अपनी आत्मिक पूजी को पूर्ण रुपेण बचा लेता हे। सारा जगत उस की प्रशसा के गीत गाता है और वह मनुष्य मनोवाछित फल प्राप्त कर लेता है।

मनुष्य सत्सग के सरोवर मे स्नान कर परम गति प्राप्त कर लेता है। परमात्मा का नाम स्मरण करते रहने से वह जन्म मरण के चक्कर मे नही पडता।

हे भाई! परमात्मा के साथ ऐक्य की इस भावना को वही मनुष्य समझता है जिस पर प्रभु स्वय कृपालु होता है। गुरु नानक का कथन है जो व्यक्ति प्रभु शरण लेता है उसकी हर प्रकार की चिन्ता दूर हो जाती है।

(५) गुर समानि तीरथु नही कोइ

XV

अम्रितु नीरु गिआनि मन मजनु अठसठि तीरथ सगि गहै।
गुर उपदेसि जवाहर माणक सेवे सिखु सुो खोजि लहै।।१।।
गुर समानि तीरथु नही कोइ।
सरु सन्तोखु तासु गुरु होइ।। रहाउ।।
गुरु दरीआउ सदा जलु निरमलु मिलिआ दुरमति मैलु हरै।।
सतिगुरि पाइऐ पूरा नावणु पसू परेतहु देव करै।।२।।
रता सचि नामि तल हीअलु सो गुरु परमलु कहीऐ।
जाकी वासु बनासपति सउरै तासु चरण लिव रहीऐ।।३।।
गुरमुखि जीअ प्रान उपजहि गुरमुखि सिव घरि जाईऐ।
गुरमुखि नानक सचि समाईऐ गुरमुखि निज पदु पाइऐ।।४।।

(राग प्रभाती सबद – ६) गुरु नानक/१३२८–२६

गुरु के समान कोई तीर्थ नही है। वह गुरु सन्तोष का सरोवर है।। रहाउ।।

ज्ञान द्वारा नाम अमृत रूपी जल प्राप्त होता है। मन उसमे स्नान करके अडसठ तीर्थो को ग्रहण कर लेता है। गुरु क उपदेश मे अनेक अमूल्य रत्न जवाहर मौजूद है। जो कोई भी शिष्य खोज सकता है।।१।।

गुरु निर्मल जल की नदी है जो भी उससे मिलता है वह उसकी दुर्मति धो डालता है। सच्चा गुरु मिले तो हमारा तीर्थ स्नान हो वह तो पशु प्रेत को भी देवत्व प्रदान करने मे समर्थ है।।२।।

जो सतगुरु गहराई तक सत्य नाम मे डूबा होता है वह चन्दन रूप होता है। उसकी सुगन्धि से निकट की सभी वनस्पति सुगन्धित हो जाती हे। हमे भी उसी की शरण मे रहना चाहिए।।३।।

गुरु की ओर उन्मुख मनुष्यो को जीवनदान मिलता है तथा सुख और कल्याण का घर नसीब होता है। गुरु नानक कहते है कि गुरु के द्वारा ही जीव सत्य स्वरूप परमात्मा मे समा जाता है और गुरु से ही निजी स्वरूप प्राप्त होता है।।४।।

भाव साम्य -

गुरु के समान कोई तीर्थ नही है क्योकि उसी के उपदेशामृत से सब विकार

सदर्भ -

गुरु वाणी की यह पक्तिया गुरु अर्जन देव जी द्वारा रचित फुनहे (पुन=जिस वाणी के छन्दो मे एक शब्द बार बार दुहराया जावे) छन्द मे है। इन मे सिख धर्म के केन्द्रीय धार्मिक नगर श्री अमृतसर जी की शोभा का वर्णन है।

अमृतसर नगर की स्थापना १५७७ मे श्री गुरु राम दास जी ने की उन्होने परगणा झबाल के ग्राम सुलतान विण्ड तुग गुमटाला चाटी विण्ड तथा गिलवाली की ५०० बीघा जमीन ७०० अकबरी रुपये भुगतान कर प्राप्त की। गुरु रामदास जी ने सरोवर निर्माण कराया और वर्तमान गुरु का बाजार स्थान पर ५२ तरह के शिल्पकारो को बसाया।

XII

हरि जपे हरि मदरु साजिआ सन्त भगत गुण गावहि राम।
सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सगले पाप तजावहि राम।
हरि गुण गाइ परम पदु पाइआ प्रभ की ऊतम बाणी।
सहज कथा प्रभ की अति मीठी कथी अकथ कहाणी।
भला सजोगु मूरतु पलु साचा अबिचल नीव रखाई।
जन नानक प्रभ भए दइआला सरब कला बणि आई।।

(राग सूही छन्द १/७) गुरु अजन देव/७८१

हरि नाम जपने के लिए यह हरि मन्दिर बनाया गया है जिस मे सन्त और भक्त लोग प्रभु का गुण गान करते है। अपने परमात्मा का निरन्तर स्मरण करते हुए सब पापो का नाश करते है। हरि की वाणी ऐसी उत्तम है कि इस के द्वारा परमात्मा का गुण गा कर मुक्ति मिलती है। परमात्मा की सहज अवस्था प्राप्त करन वाली वाणी बडी मीठी और वणनातीत है। वह समय वह अवसर बहुत उत्तम था जब इस मन्दिर की अमर नीव रखी गयी। दास नानक का कहना है कि जब प्रभु की दया होती है ता सब विधिया सफल हो जाती है।

टिप्पणी -

सिख धर्म के प्रभु कीर्ति गायन केन्द्रीय स्थान हरि मदिर साहब का निर्माण १५८६ मे किया गया। इस का शिलान्यास सूफी मुसलमान फकीर मिया मीर ने किया। १५ अगस्त १६०४ (भादो सुदी एक १६६१ स०) को गुरु ग्रन्थ साहिब को हरि मदिर साहिब मे सुशोभित किया गया।

(४) राम दास सरोवर

XIII

राम दास सरोवरि नाते। सभि उतरे पाप कमाते।

निरमल होए करि इसनाना। गुरि पूरै कीने दाना।।१।।

सभि कुसल खेम प्रभि धारे।

सही सलामति सभि थोक उबारे।।

गुर का सबदु वीचारे।। रहाउ।।

साधसगि मलु लाथी। पार ब्रह्मु भइओ साथी।

नानक नामु धिआइआ। आदि पुरख प्रभु पाइआ।।२।।

(राग सोरठि सबद – ६५) गुरु अर्जन देव जी/६२५

जो मनुष्य सत्सगति मे स्नान करते है उन के पूर्वकृत पाप दूर हो जाते है। हरि के नाम रुपी जल मे स्नान कर के वे सदाचारी हो जाते है। परन्तु यह कृपा पूर्ण गुरु द्वारा ही होती है।

हे भाई! जिस मनुष्य ने गुरु के ज्ञान का आश्रय ले कर आत्मिक जीवन के सारे गुण पूर्ण रुपेण ग्रहण कर लिये है प्रभु उन के भीतर समस्त सुख पैदा कर देता है।

हे भाई! सत्सगति मे रहने से विकारो का मैल दूर हो जाता है सत्सगति के प्रभाव से परमात्मा सहायक बन जाता है। हे नानक! जिस मनुष्य ने प्रभु का स्मरण किया उस ने उस प्रभु को पा लिया जो सब का आदि है और जो सर्वव्यापक है।

अनुशीलन -

राम दास सरोवर का निर्माण गुरु राम दास द्वारा १५७७ मे आरम्भ करवाया। इसे गहरा कराने और फर्श पक्का कराने का कार्य गुरु अर्जन देव के द्वारा १५८६ मे किया गया। सिख धर्म मे कर्मकाण्ड पर बल नही है। सरोवर का अर्थ भी लाक्षणिक रूप से सत्सग या नाम स्मरण किया जाता है। केन्द्रीय धार्मिक स्थान हरि मन्दिर के चारो ओर बने सरोवर मे देह शुद्धि के साथ चित्तशुद्धि भी होती है। गुरु अर्जन देव जी के इन दोनो सबदो (XIII XIV) को श्री हरि मन्दिर साहिब की दर्शनी ड्योढी के प्रवेश द्वार पर अकित किया गया है।

XIV

विचि करता पुरखु खलोआ। वालु न विगा होआ।।
मजनु गुर आदा रासे। जपि हरि हरि किलविख नासे।।१।।
सन्तहु रामदास सरोवरु नीका।
जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जी का।। रहाउ।।
जैजैकारु जगु गावै। मन चिन्दिअडे फल पावै।।
सही सलामति नाइ आए। अपणा प्रभू धिआए।।२।।
सन्त सरोवर नावै। सो जनु परम गति पावै।
मरै न आवै जाई। हरि हरि नामु धिआई।।३।।
इहु ब्रहम बिचारु सु जानै। जिसु दइआलु होइ भगवानै।
बाबा नानक प्रभ सरणाई। सभ चिन्ता गणत मिटाई।।४।।

(राग सोरठि – सबद – ५७) गुरु अर्जन देव जी/६२३

जिस मनुष्य का आत्मिक स्नान गुरु ने पूर्ण कर दिया अर्थात सत्सगति से जिस का हृदय निर्मल हो गया वह हमेशा परमात्मा का नाम जप जप कर समस्त पापो से मुक्त हो जाता है। सारे जगत का सृजन हार स्वय उस की सहायता करता है और उसे तनिक भी नुकसान नही होता।

हे सन्तो! सत्सगति सरोवर सुन्दर है। जो मनुष्य इसमे आत्मिक स्नान करता है उस की आत्मा को विकारो से छुटकारा मिल जाता है। वह अपने साथ अपने वश का भी उद्धार कर लेता है।

हे भाई! जो मनुष्य सत्सगति मे रह कर अपने प्रभु की आराधना करता है वह मनुष्य इस सरोवर मे स्नान कर अपनी आत्मिक पूजी को पूर्ण रुपेण बचा लेता हे। सारा जगत उस की प्रशसा के गीत गाता है और वह मनुष्य मनोवाछित फल प्राप्त कर लेता है।

मनुष्य सत्सग के सरोवर मे स्नान कर परम गति प्राप्त कर लेता है। परमात्मा का नाम स्मरण करते रहने से वह जन्म मरण के चक्कर मे नही पडता।

हे भाई! परमात्मा के साथ ऐक्य की इस भावना को वही मनुष्य समझता है जिस पर प्रभु स्वय कृपालु होता है। गुरु नानक का कथन है जो व्यक्ति प्रभु शरण लेता है उसकी हर प्रकार की चिन्ता दूर हो जाती है।

(५) गुर समानि तीरथु नही कोइ

XV

अम्रितु नीरु गिआनि मन मजनु अठसठि तीरथ सगि गहै।
गुर उपदेसि जवाहर माणक सेवे सिखु सुो खोजि लहै।।१।।
गुर समानि तीरथु नही कोइ।
सरु सन्तोखु तासु गुरु होइ।। रहाउ।।
गुरु दरीआउ सदा जलु निरमलु मिलिआ दुरमति मैलु हरै।।
सतिगुरि पाइऐ पूरा नावणु पसू परेतहु देव करै।।२।।
रता सचि नामि तल हीअलु सो गुरु परमलु कहीऐ।
जाकी वासु बनासपति सउरै तासु चरण लिव रहीऐ।।३।।
गुरमुखि जीअ प्रान उपजहि गुरमुखि सिव घरि जाईऐ।
गुरमुखि नानक सचि समाईऐ गुरमुखि निज पदु पाइऐ।।४।।

(राग प्रभाती सबद – ६) गुरु नानक/१३२८–२६

गुरु के समान कोई तीर्थ नही है। वह गुरु सन्तोष का सरोवर है।। रहाउ।।

ज्ञान द्वारा नाम अमृत रूपी जल प्राप्त होता है। मन उसमे स्नान करके अडसठ तीर्थो को ग्रहण कर लेता है। गुरु के उपदेश मे अनेक अमूल्य रत्न जवाहर मौजूद है। जो कोई भी शिष्य खोज सकता है।।१।।

गुरु निर्मल जल की नदी है जो भी उससे मिलता है वह उसकी दुर्मति धो डालता है। सच्चा गुरु मिले तो हमारा तीर्थ स्नान हो वह तो पशु प्रेत को भी देवत्व प्रदान करने मे समर्थ है।।२।।

जो सतगुरु गहराई तक सत्य नाम मे डूबा होता है वह चन्दन रूप होता है। उसकी सुगन्धि से निकट की सभी वनस्पति सुगन्धित हो जाती है। हमे भी उसी की शरण मे रहना चाहिए।।३।।

गुरु की ओर उन्मुख मनुष्यो को जीवनदान मिलता है तथा सुख और कल्याण का घर नसीब होता है। गुरु नानक कहते है कि गुरु के द्वारा ही जीव सत्य स्वरूप परमात्मा मे समा जाता है और गुरु से ही निजी स्वरूप प्राप्त होता है।।४।।

भाव साम्य -

गुरु के समान कोई तीर्थ नही है क्योकि उसी के उपदेशामृत से सब विकार

दूर होते है। भक्त कवि सूरदास ने गुरु नानक देव जी के भावो का अनुकरण करके सन्त के लक्षणो की व्याख्या की है। सन्त मे गुरु के लक्षणो के साथ गुरुसिख के लक्षण भी है। जो खुद भी नाम जाप करता है और दूसरो को भी कराता हे –

जा दिन सत पाहुने आवत।
तीरथ कोटि सनान करे फल जैसो दरसन पावत।।
नयो नेह दिन दिन उन के प्रति चरन कमल चित लावत।
मन वच कर्म और नहि जानत सुमिरत और सुमिरावत।।
मिथ्या वाद उपाधि रहित है विमल विमल जस गावत।
बन्धन कर्म कठिन जे पहिले सोऊ काट बहावत।।
सगति रहे साधु की अनुदिन भव दुख दूरि नसावत।
सूर दास सगति करि तिन की जे हरि सुरति करावत।।
राग केदारौ/सूर विनय पत्रिका सूरदास/२८०

जिस दिन सत हमारे अतिथि बन कर आते है उन का दर्शन पा कर हमे करोडो तीर्थो के स्नान का फल मिलता है। उन के चरण कमल मे चित लगाने से प्रतिदिन प्रभु के प्रति नये प्रेम का उन्मेष होता है। मन वचन और कर्म मे और कुछ ध्यान नही रहता। वे प्रभु का स्मरण करते है और दूसरो से कराते हे। वे झूठे वाद और उपाधियो से रहित होते है और प्रभु के निर्मल यश का गायन करते है। पूर्व जन्म के सस्कार के कठिन बन्धनो को भी तोड कर बहा देते है। प्रतिदिन साधु की सगति करनी चाहिए। सत्सगति से सभी सासारिक कष्ट दूर हो जाते है। सूरदास कहते है कि तू भी उन सन्तो का सत्सग कर जो प्रभु की सुरति मे लीन कर देते है।

टिप्पणी -

इस सबद मे सेवे सिखु सुो खोजि लहे मे स पर ओ और उ की दो मात्रा है जिन मे ओ की मात्रा शब्द के मूल रूप की है और दूसरी उ की मात्रा राग के अनुसार उच्चारण की है। वर्तमान चयन मे अन्य उदाहरण है –

भजहु गुोबिन्द भूलि मत जाहु (३१) बिसरी लाज लुोकानी (५६)
ओुइ सुख का सिउ बरन सुनावत (६६) अनदिनुो मोहि आही पिआसा (८४)
तब ओुहु भिन्न द्रिसटो (६८)।

(६) गुरु वाणी कीर्तन

XVI

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी।
बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी।
जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी।
पीवहु अम्रितु सदा रहहु हरि रगि जपिहु सारिगपाणी।
कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी।।

(अनदु राग रामकली – २३) गुरु अमर दास जी/६२०

(अगर आप अ।नन्द के अभिलाषी हे तो) ह सच्चे गुरु के प्यारे सिखो! आओ ओर गुरु की सच्ची वाणी का कीर्तन करो।

केवल गुरु की वाणी का ही विचार और कीतन करो। गुरु की बाणी ही ससार की वाणिओ मे महान है।

जिन पर परमात्मा की कृपा (नदर) होती है उन्ही के हृदय मे गुरु बाणी का निवास होता हे।

गुरुवाणी का विचार अमृत पीने के समान हे (यह वाणी मनुष्य मे मिठास पवित्रता और ठण्डक उत्पन्न करती है) बाणी का विचार मनुष्य को प्रभु रग और प्रेम मे लीन रखता है और मनुष्य को सारी सृष्टि के मालक के स्मरण मे लाता हे।

हे सिक्खो गुरु की सच्ची बाणी का सदा कीतन और विचार करो।

अनुशीलन -

नाम साधना के पथ का आरम्भ गुरुवाणी कीर्तन के लिए साधक के आह्वान से होता हे। गुरु अमर दास जी ने ४० पउडी छन्दो मे अनदु वाणी की रचना की जिस मे प्रभु मिलन के मार्ग का सुन्दर विवेचन मिलता है। अनदु साहिब वाणी मे पहले मिलन का वर्णन ह फिर उस का साधन ओर प्रक्रिया दी गई है। अनदु साहिब की पउडी ६ म प्यारे सन्तो को हरि की अकथ कहानी कहने की प्रेरणा दी गइ है उस म भी गुरु के हुक्म मानन और सच्ची गणी गाने का सुझाव है –

हुकमु मनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी।

यहा सच्ची वाणी से अभिप्राय गुरु के द्वारा कही अध्यात्म प्रधान सगीतमय वाणी स हे जा साधक को रसमय कर के उस की सुरत को प्रभु मे लीन करती

है। गुरु ग्रन्थ साहिब मे गुरु वाणी के सम्बन्ध मे सभी गुरुओ ने विचार व्यक्त किये है। गुरु नानक देव जी ने शब्द को गुरु माना है–

सबदु गुर पीरा गहिर गभीरा बिनु सबदै जगु बउरान

(राग सारठ/६३५)

गुरु अगददेव जी के अनुसार वाणी मे प्रभु नाम के तत्त्व का वर्णन होता है। प्रभु की कृपा से ही गुरमुख को वाणी का ज्ञान होता है और प्रभु कृपा से ही साधक की सुरत प्रभु के ध्यान मे टिकती है–

अम्रित बाणी ततु वखाणी गिआन धिआन विचि आई।
गुरमुखि आखी गुरमुखि जाती सुरती करमि धिआई।।

(राग सारग/१२६३)

गुरु अमर दास जी ने भी प्रभु कृपा से ही वाणी का मन मे स्थिर रहने का उल्लेख किया है। गुरु वाणी इस जगत मे प्रकाश स्वरूप है–

गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए।

(सिरी रागु/६७)

गुरु राम दास जी ने गुरु बाणी को अमृत की खान कहा है। गुरु उपदेश पर आचरण से सेवक का उद्धार निश्चित है–

बाणी गुरू गुरू हे बाणी विचि बाणी अम्रितु सारे।
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे।।

(राग नट नारायन/६८२)

गुरु बाणी का उदगम निराकार प्रभु की प्रेरणा से होता है गुरु अर्जन देव जी ने ऐसी बाणी को धुर की बाणी कहा है इस प्रकार सत्य चिरन्तन बाणी धुर की बाणी है जिससे सभी चिन्ताए मिट जाती है–

धुर की बाणी आई। तिनि सगली चित मिटाइ।

(सारठि/६२८)

गुर बाणी केवल गुरुआ तक सीमित नही हे सत्य का साक्षात्कार करने वाले सन्तो की वाणी भी गुरु वाणी के समान श्रवण योग्य है–

सतन की सुणि साची साखी। सो बोलहि जो पेखहि आखी।।

(रामकली/८६४)

(७) गुर सिख - दिनचर्या

XVII

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै।

उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अम्रित सरि नावै।

उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविखु पाप दोख लहि जावै।

फिरि चडै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै।

जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै।

जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै।

जनु नानकु धूडि मगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै।।

(वार गउडी की महला ४ सलोक २ {११}) गुरु राम दास जी/३०५–३०६

जो मनुष्य सतिगुरु का सच्चा सिख कहलता है वह रोज सवेरे उठकर हरि नाम का स्मरण करता है स्नान करता है। फिर नाम रुपी अमृत के सरोवर मे डुबकी लगाता है। सतिगुरु के उपदेश द्वारा प्रभु के नाम का जाप जपता ह और इस प्रकार उस के सारे पाप विकार उतर जाते है फिर दिन चढने पर सतिगुर की वाणी का कीर्तन करता है और उठते बैठते प्रभु का नाम स्मरण करता हे। सतिगुरु के मन मे वह सिक्ख भा जाता है जो प्यारे प्रभु को हरदम याद करता है। जिस पर प्यारा प्रभु दयालु होता है उस गुरमुख को सतिगुरु शिक्षा देता है। दास नानक भी उस गुरमुख की चरण धूलि मागता है जो स्वय नाम जपता है और दूसरो को जपाता है।

भाव साम्य -

गुरु वाणी मे नाम साधना के अतिरिक्त कर्मकाण्ड का विरोध किया गया है। नाम साधना का बहुत ही सरल रूप है प्रभात वेला मे स्नान कर के प्रभु का यश गान करना।

अम्रित वेला सचु नाउ वडिआइ वीचारु।

जो प्रभात बेला के समय मे प्रभु स्तुति के द्वारा अपने प्रभु का एक मन स ध्यान करते हे वही वास्तव म धनवान ह। व विकारा को पराजित करक अहकार

रहित हो जाते है–

सबाही सालाह जिनी धिआइआ इक मनि।

सई पूर साह वखतै उपरि लडि मुए।।

(सलोक वार माझ/१४५)

गुरु नानक देव जी के द्वारा उक्त विचारो को ही गुरु रामदास जी तथा गुरु अजन देव जी ने अपने श्लोक और सबद के माध्यम से स्पष्ट किया है। सिख धर्म के महान कवि और गुरुवाणी के व्याख्याता भाइ गुरदास जी ने भी अपने सुन्दर कवित्तो मे गुरु उपदश और सिख की दिनचर्या का वर्णन किया है–

गुर उपदेसि प्रात समै इस्नानि करि

जिहवा जपत गुर मन्त्र जैसो जानही।

तिलक लिलार पाइ पग्त परसपर

सबद सुनाइ गाइ सुनि उनमान ही।।

गुरमत भजन तजन दुरमति कहे

ग्यान ध्यान गुर सिख पथ परवानही।

देखत सुनत अउ कहत सब कोऊ भलो

रहत अन्तरिगति सतिगुर मानही।।६१३।।

गुरु उपदेश क द्वारा जिस की जानकारी मिली हे ऐसे गुरु मन्त्र को सिख प्रभात वेला म स्नान करके जिहा से जाप करता है। सत्सग मे जाकर माथ पर तिलक लगा कर आपस मे चरण स्पर्श करता है। गुरु शब्द को गा कर सुनाता है अथवा सुन कर मग्न होता हे। गुरमत का अनुसरण ओर दुर्मति का त्याग का सन्देश ओरो को समझाता है। सिख पन्थ म गुरमत का ज्ञान और ध्यान अनुकरणीय हे। ऐसे सिख को जो भी दखता या सुनता है भला कहता है। परन्तु जब यह सारा आचरण उस के हृदय मे बस जाता है तो सतिगुरु भी उस का सम्मान देता है।

इस प्रकार सम्यक बाणी सम्यक कर्म तथा सम्यक आचरण से गुरु के दर पर सम्मान मिलता ह।

गुरु सेवक के बारे मे सन्त ज्ञानेश्वर ने निम्न विवरण दिया है–

गुरु सप्रदाय धम। तेचि जयाचे वणाश्रम।

गुरु परिचया नित्य कर्म। जयाचे गा।।४४५।।

गुरु क्षेत्र गुरु देवता। गुरु माता गुरु पिता।

जो गुरु सेवेपरौता। मागु नेणे।।४४६।।

श्री गुरुचे द्वार। ते जयाचे सवस्व सार।

गुरु सेवका सहोदर। प्रेमे भजे।।४४७।।

जयाचे वक्त्र। वाहे गुरु नामाचे मन्त्र।

गुरुवाक्यावाचूनि शास्त्र। हाती न शिव।।४४८।।

(ज्ञानेश्वरी – १३)

गुरु सेवक के लिए गुरु सम्प्रदाय का नियम ही वर्णाश्रम धर्म होता है गुरु भक्ति ही उस का नित्य कर्म होता है।।४४५।।

जो गुरु को ही अपना इष्ट माता पिता आदि सब कुछ मानता है जो आत्म कल्याण के लिए गुरु सेवा के सिवा और काई मार्ग जानता ही नही।।४४६।।

गुरू का द्वार ही जिसके लिए सार और सर्वस्व है– वास्तविक सार तत्व हे। जो गुरू के सेवको (शिष्यो) के साथ सगे भाइयो का सा प्रेम पूर्ण व्यवहार करता है।।४४७।।

जिस के मुख मे सदा गुरू के नाम का मन्त्र (वाहे गुरु) रहता है और गुरू के वाक्यो (वाणी) को छोड कर जो और किसी वाणी पर ध्यान नही देता।।४४८।।

XVIII

करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा।
कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले सजोगा।।१।।
प्रभ बाणी सबदु सुभाखिआ।
गावहु सुणहु पडहु नित भाई गुर पूरै तू राखिआ।। रहाउ।।
साचा साहिबु अमिति वडाई भगतिवछल दइआला।
सता की पैज रखदा आइआ आदि बिरदु प्रतिपाला।।२।।
हरि अम्रित नामु भोजनु नित भुञ्चहु सरब वेला मुखि पावहु।
जरा मरा तापु सभु नाठा गुण गोबिन्द नित गावहु।।३।।
सुणी अरदासि सुआमी मेरै सरब कला बणि आई।
प्रगट भई सगले जुग अन्तरि गुर नानक की वडिआई।।४।।

(राग सोरठि–सबद–११) गुरु अर्जन दव जी/६११

हे भाई! गुरु ने अपना सुन्दर उपदेश दिया है। प्रभु की गुण स्तुति की जो वाणी है इसे गाते रहा सुनते रहो और पढते रहो (ऐसा करने से यह निश्चित है कि) अनको मुसीबतो से पूर्ण गुरु तुझे बचा लेगा।।रहाउ।।

प्रात काल स्नान से तन और प्रभु के नाम स्मरण से मन निरोग हो जाता है। प्रभु की शरण लेने से करोडो रुकावटे दूर हो जाती है और प्रभु के साथ मिलाप के अवसर बन जाते है।।१।।

हे भाइ! मालिक प्रभु सत्य स्वरूप है उसका बडप्पन मापा नही जा सकता वह भक्ति से प्रेम करने वाला है दया को स्रोत है सन्तो की प्रतिष्ठा की रक्षा करता आया है ओर अपना यह विरद वह आदिम काल से निभाता आ रहा है।।२।।

हे भाई! परमात्मा का नाम आत्मिक जीवन देने वाला है वह आत्मिक खुराक सदा खाते रहो प्रति पल अपनी रसना को हरि नाम के रस से पवित्र करो। हे भाई! हमेशा गोविन्द का गुण गान करते रहो न बुढापा आएगा न मृत्यु आएगी और प्रत्येक दुख क्लेश दूर हो जावेगा।।३।।

हे भाई! नाम स्मरण करने वाले मनुष्य की प्रार्थना मेर स्वामी ने सुन ली है। अब प्रभु कृपा होने पर उसके भीतर पूर्ण शक्ति पेदा हो गई है। हे नानक! गुरु की यह महानता तमाम युगो से उजागर रहती है।।४।।

XIX

हम अधुले अन्ध बिखै बिखु राते किउ चालह गुर चाली।
सतगुरु दइआ करे सुख दाता हम लावै आपन पाली।।१।।
गुरसिख मीत चलहु गुर चाली।
जो गुरु कहे सोइ भल मानहु हरि हरि कथा निराली।। रहाउ।।
हरि के सत सुणहु जन भाई गुर सेविहु बेगि बेगाली।
सतिगुरु सेवि खरचु हरि बाधहु मत जाणहु आजु कि काल्ही।।२।।
हरि के सत जपहु हरि जपणा हरि सतु चलै हरि नाली।
जिन हरि जपिआ से हरि होए हरि मिलिआ केल केलाली।।३।।
हरि हरि जपनु जपि लोच लुोचानी हरि किरपा करि बनवाली।
जन नानक सगति साध हरि मेलहु हम साध जना पग राली।।४।।

(राग धनासरी सबद – ४) गुरु रामदास/६६७–६८

हम जीव माया मोह मे अन्धे होकर विषयो के विष मे लिप्त रहते हैं हम किस प्रकार गुरु द्वारा बतलाये हुए मार्ग पर चल सकते है? सुखदाता गुरु आप ही कृपा करे और हमे अपने साथ लगाये।।१।।

हे गुर सिख मित्रो! गुरु द्वारा बतलाए जीवन मार्ग पर चलो। जो कुछ गुरु करते है उसे सही समझा क्योकि प्रभु की गुण स्तुति अनोखी है।।रहाउ।।

हे हरि सन्तो भाइयो! सुनो शीघ्र ही गुरु की शरण मे जाओ। गुरु की शरण लेकर जीवन यात्रा के लिए परमात्मा नाम का माग व्यय गाठ मे बाधो। इस कार्य को करने के लिए आज या कल पर बात मत टालो।।२।।

हे हरि के सन्तो! परमात्मा के नाम का जाप करो। इस से हरि के सन्त का हरि इच्छा स तादात्म्य हो जाता है। हे भाई! जो मनुष्य परमात्मा का नाम जपत है वे परमात्मा का रुप हो जाते है।।३।।

दास नानक का कथन है कि हे बनवारी प्रभु! मुझे तुम्हारा नाम जपने की लालसा है। कृपा करके मुझे सत्सग मे मिलाये रखो मुझ तुम्हारे सन्तजनो के चरणो की धूलि मिलती रहे।।४।।

———––

(८) सेवा

XX

आउ सखी सत पासि सेवा लागीऐ।
पीसउ चरण पखारि आपु तिआगीऐ।
तजि आपु मिटै सतापु आपु नह जाणाईऐ।
सरणि गहीजे मानि लीजै करे सो सुखु पाईऐ।
करि दास दासी तजि उदासी कर जोडि दिनु रैणि जागीऐ।
नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै आओ सखी सत पासि सेवा लागीऐ।

(राग आसा छन्द ३/७) गुरु अर्जन देव/४५७

हे सखि! आ गुरु के पास चले उस के द्वारा बतलाई सेवा मे लगना चाहिए। हे सखी! मै उस के लिए चक्की पीसू उस के चरण धोऊँ। गुरु के द्वार पर जा कर अहकार त्याग देना चाहिए क्योकि अहकार त्याग कर मन का क्लेश मिट जाता है। गुरु का पल्ला पकड लेना चाहिए उस का आदेश मान लेना चाहिए जो कुछ वह करे उसे सुख जान कर स्वीकार करना चाहिए। हे सखि! स्वय को उस गुरु के दासो की दासी बना ले। मन से उदासीनता त्याग कर दोनो हाथ जोड कर दिन रात सचेत रहना चाहिए। नानक का कथन है कि जीव गुरु के शब्द द्वारा ही परमात्मा मे अभिन्नता प्राप्त कर सकता है। इसलिए हे सखि! आ गुरु के पास चले क्योकि उस की बतलाई सेवा मे लगना चाहिए।

अनुशीलन -

सिख धर्म मे सेवा सिमरन और सत्सग की अवधारणाएँ अनूठी और प्राण दायक है। घालि खाइ किछु हथहु देइ के अनुसार सेवा मानवश्रम परिश्रम की कमाई और दान के द्वारा समाज और व्यक्ति से जुडी है दूसरी ओर सेवा सुरति सबद वीचार के अनुसार सेवा का अर्थ गुरबाणी चिन्तन और विचार है। सेवा का यह पक्ष उसे सिमरन से जोडता है। इन दोनो पक्षो (मानव सेवा और गुरुवाणी चिन्तन) को ध्यान मे रख कर गुरु नानक स्पष्ट स्वर मे घोषणा करते है कि सेवा की कमाई ही हमारे जीवन का लक्ष्य है उसी से हमे प्रभु शरण मिलेगी –

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ।
ता दरगह बैसणु पाईऐ।
कहु नानक बाह लुडाईऐ।। (सिरी राग – २६)

सेवा का एक रूप गुरु दर्शन की उत्कण्ठा और गुरु के निकट रहकर गुरु के पखे से सेवा जल द्वारा स्नान की सेवा गुरु स्थान के स्वच्छ करने की सेव का हे जिसे गुरु राम दास जी और गुरु अर्जन देव जी ने अकित किया है। गीत के तरहव अध्याय मे ज्ञान के अठारह लक्षण बतलाए गये है जिन मे आचार्योपसेवनम (गुरु की सेवा) भी सम्मिलित है। इस की व्याख्या ज्ञानदेव जी ने विस्तार से की हे। गुरु दर्शन की उत्कण्ठा का वर्णन सहज और स्वाभाविक है –

साचा प्रेमाचिया भुली। तया दिशेसीचि आवडे बोली।
जीवु थानपती करुनि घाली। गुरुगृही जो।।३७७।।
परि गुरु आज्ञा धरिले। दह गावी असे एकले।
वासरुवा लाविल। दावे जेसे।।३७८।।
म्हणे कै हे बिरडे फिटल। कै तो स्वामी भेटेल।
यूगाहूनि वडिल। निमिष मानी।।३७६।।

सच्चे प्रेम के कारण ही जिसे गुरु गृह की दिशा के साथ बाते करना अच्छा लगता है और जो अपने जीव को गुरु गृह का हकदार बनाए रखत्ता है।।३७७।।

जिस का शरीर गुरु घर की आज्ञा के साथ उसी प्रकार बन्धन मे पडा रहता है जिस प्रकार बछडा रस्सी से बॅधा हुआ गौशाला मे पडा रहता है।।३७८।।

परन्तु फिर भी उस बछडे की भाति जो मन मे यही कहता रहता है कि यह रस्सी का बन्धन कब टूटेगा और किस प्रकार कब मुझे गुरदेव के दर्शन मिलेगे जिसे अपने गुरु के विरह का प्रत्येक क्षण युग से भी बढ कर जान पडता है।।३७६।।

XXI

सतिगुर की सेवा सफल है जे को करे चितु लाइ।
नामु पदारथु पाइऐ अचितु वसै मनि आइ।
जनम मरन दुखु कटीऐ हउमै ममता जाइ।
उतम पदवी पाइऐ सचे रहै समाइ।
नानक पूरबि जिन कउ लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ आइ।।

(वार राग विहागडा/सलोक २{२०}) गुरु अमर दास/५५२

यदि मनुष्य मन टिका कर सतिगुरु की सेवा करे तो वह सेवा अवश्य सफल होती है। सेवा से नाम धन की प्राप्ति होती है और चिन्तन मे न आने वाला प्रभु मन मे निवास करने लगता है। जन्म मरण का दुख दूर हो जाता है अहकार और ममत्व दूर हो जाता है। प्रभु की सेवा मे अत्यन्त सम्मान मिलता है और मनुष्य सत्य रुप परमेश्वर मे समाया रहता है। हे नानक! पूर्वकृत शुभ कर्मो के अनुसार जिनके भाग्य मे शुभ सस्कार लिखे है उन्हे ही सतिगुरु आ मिलता है।

XXII

सा सेवा कीती सफल है जितु सतिगुर का मनु मन्ने।

जा सतिगुर का मनु मन्निआ ता पाप कसमल भन्ने।

उपदेसु जि दिता सतिगुरू सो सुणिआ सिखी कन्ने।

जिन सतिगुर का भाणा मन्निआ तिन चडी चवगणि वन्ने।

इह चाल निराली गुरमुखी गुर दीखिआ सुणि मनु भिन्ने।।

(वार राग गउडी/महला ४ पउडी २५) गुरु राम दास जी।३१४

जिस सेवा सै सतिगुरु का मन सिख पर विश्वास करने लगे वही की हुई सेवा सफल है। क्योकि जब सति गुरु का मन विश्वस्त हो तभी पाप विकार भी दूर हो जाते ह। विश्वस्त होकर सति गुरु जो सिखो को उपदेश देता हे वे ध्यान पूर्वक उसे सुनते है फिर जो सिख सति गुरु की इच्छा पर विश्वास करते है उन्हे पहले की अपेक्षा चौगुणी रगत चढ जाती है। सतिगुरु का ही उपदेश सुन कर मन हरि के प्रेम मे भीगता है – सतिगुरु के सम्मुख रहने वाला यह रास्ता ससार के दूसरे रास्तो से निराला है।

भाव साम्य -

निराकार प्रभु की सवा के निराले माग का वर्णन सामी जी ने अपने सलोक मे किया है–

देवियू ऐ दवा मूर्ख पूजनि मति रे।

लाइन भोग भ्रात जा खीर खड़ू मेवा।

व्रिले को साधू करे सामी शुधु सेवा।

अलख अभेवा पूरणु दिसे प्रम सॉ।।(४२६)

मूख (अज्ञानी जीव) बुद्धि हीन हाकर देवी देवताओ की पूजा करते है और भ्रमवश होकर उन्हे दूध शक्कर तथा फलो के भोग लगाते है। सामी जी कहते

है कोई विरले साधु ही प्रेम पूर्ण सेवा करते है (और अन्तर्मुख होकर) अलख अभेव और पूर्ण परमात्मा को देखते है।

XXIII

भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए।
कित ही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराए।। रहाउ।।
अनदु गरीबी साध सगि जितु प्रभ चिति आए।
जलि जाउ एहु बडपना माइआ लपटाए।।१।।
पीसनु पीसि ओढि कामरी सुखु मनु सतोखाए।
ऐसो राजु न कितै काजि जितु नह त्रिपताए।।२।।
नगन फिरत रगि एक कै ओहु सोभा पाए।
पाट पटबर बिरथिआ जिह रचि लोभाए।।३।।
सभु किछु तुम्हरे हाथि प्रभ आपि करे कराए।
सासि सासि सिमरत रहा नानक दानु पाए।।४।।

(राग सूही/सबद ४१) गुरु अर्जन देव जी/७४५

हे भाई! वह झोपडी भली है जिसमे रहने वाला मनुष्य हरि के गुण गाता है जबकि वे पक्के मकान किसी काम के नही जिसमे रहन वाला मनुष्य परमात्मा को भुला देता है।।रहाउ।।

सत्सगति मे निर्धनता के मध्य भी आनन्द है क्याकि उस दशा मे चित्त प्रभु मे स्थिर रहता है। वह बडप्पन निकृष्ट और जलने योग्य है जिसके कारण मनुष्य माया मे बन्धकर रह जाता हे।।१।।

उस स्थिति मे चक्की पीसकर चीथडे पहन कर भी आनन्द मिलता है क्योकि मन सन्तुष्ट रहता है। हे भाई! ऐसा राज्य किसी काम का नही है जिससे मन कभी तृप्त नही होता।।२।।

जो मनुष्य एक परमात्मा के प्रेम मे मग्न होकर कार्य व्यापार करता हे वह शोभा पाता है। इसके विपरीत रेशमी कपडे पहनना व्यर्थ है। जिनकी चमक दमक मे रम कर मन मे माया की प्यास बढती है।।३।।

प्रभु आप ही सब कुछ करता है और वही जीवो से सब कुछ कराता है। (नानक का कथन है कि) हे प्रभु! सब तुम्हारे हाथ मे है कृपा करो ताकि नानक यह दान प्राप्त कर ले कि वह हर एक सास के साथ तुम्हे स्मरण करता

XXIV

पाणी पखा पीसु दास कै तब होहि निहालु।
राज मिलख सिकदारीआ अगनी महि जालु।।१।।
सत जना का छोहरा तिसु चरणी लागि।
माइआधारी छत्रपति तिन्ह छोडउ तिआगि।। रहाउ।।
सतन का दाना रूखा सो सरब निधान।
ग्रिहि साकत छतीह प्रकार ते बिखू समान।।२।।
भगत जना का लूगरा ओढि नगन न होई।
साकत सिरपाउ रेसमी पहिरत पति खोई।।३।।
साकत सिउ मुखि जोरिऐ अध वीचहु टूटै।
हरि जन की सेवा जो करे इत ऊतहि छूटै।।४।।
सभ किछु तुम्ह ही ते होआ आपि बणत बणाई।
दरसनु भेटत साध का नानक गुण गाई।।५।।

(राग बिलावल/सबद ४४) गुरु अर्जन देव जी/८११

परमात्मा के दासो की सेवा मे पानी ढोना पखा करना और उन के लिए श्रम करना आदि मनुष्य को निहाल कर देता है। राज्य सम्पत्ति और अधिकार इस के सम्मुख कुछ भी नही (अग्नि मे जलाने योग्य है)।।१।।

सन्त जनो का सेवक प्रभु की शरण ग्रहण कर लेता है जब कि माया के फन्दे म फसा छत्रपति माया मे लीन होने से त्याज्य है।।रहाउ।।

सन्तो की सूखी रोटी भी सुखो की भण्डार होती है जब कि मायाधारी के घर मे छत्तीस प्रकार के पकवान भी विष के समान होते है।।२।।

भक्तो की सगति मे रहते हुए फटे कपडे भी मनुष्य की नग्नता को ढके रहते है किन्तु धनवान के रेशमी सिरोपा पहन कर भी मनुष्य मान खो बैठता है।।३।।

गुरु विहीन व्यक्ति से मित्रता करने पर मार्ग मे ही मनुष्य भटक कर समाप्त हो जाता है जब कि सन्तो की सेवा मे ससार से मुक्ति मिलती है और परमात्मा के दरबार मे सम्मान प्राप्त होता हे।।४।।

हे प्रभु! सब कुछ तुम से ही हुआ है यह सारी रचना तुम्हारी ही बनाई हुई है। गुरु नानक दव जी कहते है कि सन्तो की सगति मे रहकर उन के दर्शन और स्पर्श से प्रेरित होकर प्रभु का गुणगान करना चाहिए।।५।।

भाव साम्य -

प्रभु के दासो (सन्तो) की सेवा प्रभु मिलन के मार्ग मे सहायक होती है। सामी जी ने अभिमानी जीव को समझााया है –

हइ हठु विञाइ साझुरि समझी पहिजो।

दासन जी दासी थी शेवा सभु कमाइ।

बाभणु चए ब्याइअ रे चितु चननि सॉ लाइ।

प्रियनि के पचोइ मता रुठाई रहिजी वञे।।७४६।।

ऐ अभिमानी जीवात्मा! तू अभिमान त्याग कर शीघ्र ही अपना हित सोच ले तथा परमात्मा के दासो की दासी बन कर उन की सवा का फल कमा ले। द्वैत रहित होकर परमात्मा के चरणो मे अपना चित्त लगा और उन्हे राजी कर कही एसा न हो कि वे (परमात्मा) तुम स रुठे ही रहे।

―――――

गुरुवाणी चयन खण्ड (२) - नाम भक्ति

प्रथम सोपान

(१) मन उदबोधन

1

तू सुणि हरणा कालिआ की वाडीऐ राता राम।

बिखु फलु मीठा चारि दिन फिरि होवै ताता राम।

फिरि होइ ताता खरा माता नाम बिनु परतापए।

ओहु जेव साइर देइ लहरी बिजुल जिवै चमकए।

हरि बाझु राखा कोइ नाही सोइ तुझहि बिसारिआ।

सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि हरणा कालिआ।

(राग आसा छन्द १/५) गुरु नानक देव/४३६

ह काले हिरन के समान ससार वन मे बेपरवाह हो कर विचरने वाले मन तू मेरी बात सुन। तू इस जगत फुलवाडी मे क्यो मस्त हो रहा है। इस फुलवाडी का फल थोडे समय के लिए मीठा है फिर निरन्तर दु खदाई है। विषय विकारो का यह फल विष से पूर्ण है।

परमात्मा के नाम के बिना यह फल बहुत दुख देता है। विषयो का रग इस प्रकार मोहक और अनित्य है जिस प्रकार सागर मे जब तरग उठती है तो उन पर बिजली का प्रकाश रगीन हो कर चमकता है।

परमात्मा के नाम के इलावा और कोई रक्षा करने वाला नही है। हे हिरन के समान चोकडी भरने वाले मन! तू उस को भुलाए बैठा है। हे काले हिरन! हे मन! सदा स्थिर रहने वाले परमात्मा का स्मरण कर। नही तो इस जगत फुलवाडी मे मस्त होकर तेरी आत्मिक मौत निश्चित है।

भाव साम्य -

साधना के मार्ग मे मन की चचलता और विकारो से प्रभावित होना विशेष रुप से बाधक होता है। क्रमाक १ से २० तक के २० सबदो मे मन के रग बिरगे

विकारमय या धूप छाही चित्र है।

इस सबद मे विषयो के वन मे भटकने वाल मन का काले हिरण से तुलना की गई है। गुरु नानक देव जी के समकालीन आसाम के सत सकर देव जी का इस छन्द से सम्बन्धित एक गीत निम्न प्रकार है–

ए भव गहन वन अति मोह पाशे छन ताहे हामु हरिण बेराइ।

फान्दिला मायार पाशे काल व्याध धाया आसे काम क्रोध कुत्ता खेदि खाय।

हराइलो चतन हरि न जाने कीमते तारि शुनित दगध भेल जीव।

लोभ म्गेह दुइ बाघ सतत नाछारे लाग राखु राखु सदा शिव।

पलाइते न देखो सधि दिने दिने दृथा बन्दी भैल मन्द मनर युकुति।

तुवा हरि लागो गाड मारा माया पाश छोड शकर करय काकूति।।

यह ससार एक घना जगल है जिस मे मोह के बहुत से फन्दे है। मे यहा अकेला भटकता हुआ हिरन हू। मै माया के बन्धन मे जकडा हुआ हू मुझे काल व्याध तेजी से दौड कर खाने को तैयार है। मेरे अन्दर चैतन्य हरि मौजूद था जिस की कीमत मेने नही पहचानी। अपन भाग्य की क्या कहू मरा अन्तर दग्ध हो गया है।

हे सदाशिव! मुझे बचाइए। लोभ और मोह दो चीत मेरे पीछे पड गये है मुझे कोइ बचाव का रास्ता दिखाई नही देता। दिन दिन मेरा बन्धन बढ रहा है ओर विवेक समाप्त हो रहा है। हे हरि! मै आप के पाव पड कर करुण प्रार्थना करता हू कि मुझे माया के बन्धन से छुडाइए।

गौतम बुद्ध ने उट्ठान सुत्त मे शान्ति (निर्वाण) प्राप्ति के लिए इस प्रकार सचेत किया हे–

उट्ठहथ निसीदथ को अत्थो सुपिनेन वो।

आतुरान हि का निद्दा सल्लविद्धान रुप्पत।।१।।

अट्ठहथ निसीदथ दळह सिक्खथ सन्तिया।

2

काए रे मन बिखिआ बन जाइ।।
भूलो रे ठगमूरी खाइ।। रहाउ।।
जैसे मीनु पानी महि रहै। काल जाल की सुधि नही लहै।
जिहबा सुआदी लीलित लोह। ऐसे कनिक कामनी बाधिओ मोह।।१।।
जिउ मधु माखी सचै अपार। मधु लीनो मुखि दीनी छारु।
गऊ बाछ कउ सचै खीरु। गला बान्धि दुहि लेइ अहीरु।।२।।
माइआ कारनि स्रमु अति करे। सो माइआ लै गाडै धरै।
अति सचै समझै नही मूड़्ह। धनु धरती तनु होइ गइओ धूडि।।३।।
काम क्रोध त्रिसना अति जरै। साध सगति कबहू नही करै।
कहत नामदेउ ता ची आणि। निरभै होइ भजीऐ भगवान।।४।।

(राग सारग) नामदेव/१२५२

हे मन! तू क्यो विषय विकारो के वन मे भटकता हे और क्यो ठगमूरि खाकर ठगा जा रहा है।।रहाउ।।

जेसे मछली पानी मे रहती है ओर काल रूपी जाल उसे नही सूझता। जीभ के स्वाद वश लाहा निगल जाती है वैसे ही तुम ने कनक कामिनी के माह के बन्धन बढा लिए है।।१।। जिस प्रकार मधु मक्खी मधु का सचय करती हे किन्तु मधु मनुष्य ल जाता है और मधु मक्खी के मुख धूल ही पडती है। गाय बछडे के लिए दूध सचय करती है किन्तु अहीर रस्सी बाधकर उसे दुह लेता है।।२।। वेसे ही तुम माया मोह के कारण इतना अधिक श्रम करते हो माया एकत्र कर गडढे म दबाते हो। खूब सग्रह करते हो और अन्तत गडा हुआ धन धरती मे ही मिट्टी हो जाता है।।३।। मनुष्य काम क्रोध तृष्णा आदि म जलता है कभी साधु सगति मे समय नही देता। नाम देव जी क्रहते है परमात्मा की शरण लो और निर्भय होकर उसका भजन करो।।४।।

भाव साम्य -

भक्त नाम देव जी भी मन को विकारो के वन मे भटक कर ठगा जाने का वर्णन करते हे। नाम देव जी ने मछली मधु मक्खी और गाय के उदाहरण देकर लोभ वश कष्ट उठाने का वर्णन किया है। इन मे मछली तो मृत्यु को प्राप्त होती हे किन्तु मधु मक्खी और गाय का सचित किया शहद और दूध दूसरे लोग प्राप्त

कर लेते है।

भाई गुरदास जी ने इस सबद मे सञ्चय वृत्ति की परिचायक मधु मक्खी और गाय के उदाहरण ले कर एक सुन्दर कवित्त की रचना की है। इस मे तीसरा दृष्टान्त चूहे द्वारा सञ्चय अपनी ओर से बढा दिया है–

जैसे मधुमाखी सीच सीच कै इकत्र करै
हरै मधु आय ताके मुख छार डारि कै।
जैसे बच्छ हेत गौ सञ्चत है क्षीर ताहि
लेत है अहीर दुह बच्छरे विडारि कै।।
जैसे घर खोदि खादि कर बिल साजै मूसा
पैसत सर्प धाय खाय ताहि मारि कै।।
तैसे कोटि पाप करि माया जोरि जोरि मूढ
अन्त काल छाडि चले दोनो कर झारि कै।।५५४।।

जैसे मधु मक्खी सञ्चय कर कर के शहद इकट्ठा करती है किन्तु शहद इकट्ठा करने वाला उस के मुँह पर धूल डाल कर शहद ले जाता है। जैसे गाय के उदर मे बछडे के लिए दूध एकत्रित होता है किन्तु अहीर उस बछडे को अलग कर के दूध दुह लेता है। जैसे धरती खोद खोद कर चूहा अपना बिल बनाता है किन्तु साप चूहे को मार कर बिल मे प्रवेश कर लेता है।

इसी प्रकार करोडो पाप कर के मूर्ख धन इकट्ठा करता है किन्तु अन्त समय दोनो हाथ झाड कर इस ससार से विदा हो जाता है।

शाह लतीफ अपने मन रूपी ऊट को सम्बोधित करते है –

करहा! कसर छड विख वधन्दी पाइ।
मुहिजो ह्लणु उतही जिते जानिब जाइ।
तोखे चन्दन चारिया ब्रियो वगु लाणी खाइ।
ईए ऊठ। ऊठाए जीअ हुन्दीअ राति हुति मिडू।।

ए मन रूपी ऊँट! आलस्य त्याग कर शीघ्रता से चल। मै तो वही जाना चाहता हूँ जहा प्रियतम का निवास है। मै वहा चल कर तुझे चन्दन खिलाऊँगा जब कि दूसरे कडुवी लाणी (विषय रूपी घास) ही खाते है। हे मन रूपी ऊँट! तू मुझे इस तरह से उठा कर चल कि मै आज की रात प्रियतम से जा मिलू।

(२) काम

3

पापी हीऐ मै कामु बसाइ।
मनु चचलु या ते गहिओ न जाइ।। रहाउ।।
जोगी जगमु अरु सनिआस। सभ ही परि डारी इह फास।।१।।
जिह जिह हरि को नामु सम्हारि। ते भव सागरु उतरे पारि।।२।।
जन नानक हरि की सरनाइ। दीजे नामु रहै गुन गाइ।।३।।

(राग बसन्त) गुरु तेग बहादुर/११८६

हे भाई! हमारे हृदय मे काम वासना ने अपना घर बना रखा है जिस से चचल मन पकड मे नही आ सकता।।रहाउ।।

हे भाइ! योगी यती और सन्यासी सभी पर काम वासना का यह बन्धन पडा हुआ है।।१।।

हे भाई! जिन मनुष्यो ने परमात्मा का नाम अपने हृदय मे बसाया है वे सब ससार समुद्र से पार उतर जाते है।।२।।

हे नानक! परमात्मा का दास परमात्मा की शरण मे रहता है। इस लिए अपना नाम दीजिए ताकि तुम्हारा शरणागत तुम्हारा गुण गान करता रहे।।३।।

4

कालबूत की हसतनी मन बउरा रे चलतु रचिओ जगदीस।
काम सुआइ गज बसि परे मन बउरा रे अकसु सहिओ सीस।।१।।
बिखै बाचु हरि राचु समझु मन बउरा रे।
निरभै होइ न हरि भजे मन बउरा रे गहिओ न राम जहाजु।। रहाउ।।
मरकट मुसटी अनाज की मन बउरा रे लीनी हाथु पसारि।
छूटन को सहसा परिआ मन बउरा रे नाचिओ घर घर बारि।।२।।
जिउ नलनी सूअटा गहिओ मन बउरा रे माया इहु बिउहारु।
जैसा रग कुसुभ का मन बउरा रे तिउ पसरिओ पासारु।।३।।
नावन कउ तीरथ घने मन बउरा रे पूजन कउ बहु देव।
कहु कबीर छूटनु नहीं मन बउरा रे छूटनु हरि की सेव।।४।।

(राम गउडी सबद – ५७) कबीर ३३५–३३६

हे मूर्ख मन! यह जगत परमात्मा ने एक खेल रचाया है। जैसे लोग हाथी को पकडने के लिए कलबूत की हथिनी बनाते है जिसे देखकर काम वासना के कारण हाथी पकडा जाता है और अपने सिर पर सदा महावत का अकुश सहता है। वैसे ही हे पागल मन! तू भी दुखी होता है।।१।।

हे मूर्ख मन! सोच समझकर विषयो से बचा रह और प्रभु से जुडा रह। तू भय त्याग कर परमात्मा को क्यो नही स्मरण करता और प्रभु का आसरा क्यो नही लेता?।।रहाउ।।

हे मूर्ख मन! बन्दर ने हाथ फैलाकर दानो से मुट्ठी भर ली और उसे भय हो गया कि कैद मे से कैसे निकले। उस लालच के कारण अब हर एक घर के दरवाजे पर नाचता फिरता है।।२।।

हे पागल मन! जगत की माया का प्रसार ऐसा ही है जैसे तोता नलिनी पर बैठ कर फस जाता है। हे पागल मन! जैसे कुसुम्भ का रग थोडे ही दिन का है ऐसे ही जगत का विस्तार चार दिन के लिए बिखरा हुआ है।।३।।

हे मूर्ख मन! चाहे स्नान करने के लिए बहुत से तीर्थ है और पूजने के लिए बहुत से देवता है पर माया के भय से मुक्ति नही होती। मुक्ति केवल प्रभु का नाम स्मरण करने से ही होती है।।४।।

भाव साम्य -

पाच विकारो की गणना मे प्रथम स्थान काम का है। कबीर के सबद मे लोभ और मोह का वर्णन भी है।

कबीर ने काम के लिए हाथी लोभ के लिए बन्दर और माया (अविद्या भ्रम) के लिए तोता के पकडे जाने के उदाहरण लिये है। हाथी को पकडने के लिए एक गडढा खोद कर उस पर बनावटी हथिनी खडी कर दी जाती है। जब हाथी काम वासना से प्रेरित हो कर हथिनी की तरफ बढता है तो गडढे मे गिरने से पकडा जाता है। बन्दर को पकडने के लिए एक घडे मे अनाज डाला जाता है जिस मे उस की खाली मुट्ठी चली जाती है। जब उस की मुट्ठी अनाज से भर जाती है तो घडे मे फस जाती है। लालच मे वह मुट्ठी का अनाज नही गिराता और पकडा जाता है। इसी प्रकार तोते को पकडे के लिए एक नीचे ऊपर होने वाली नलिनी बनाई जाती है। तोता जब उस पर बैठता है तो नलिनी तोते के भार से गतिमान हो जाती है। तोता यह सोचता है कि नलिनी ने उसे पकड लिया है तथा वह उस से अलग नही होता और इस प्रकार पकडा जाता है।

हाथी तोता और बन्दर के प्रतीक सन्त कतियो ने अपने काव्य मे अपनाये है। सिन्धी के कवि चैनराइ सामी (१७४३–१८५०) का एक सलोक बन्दर के भ्रम मे फसने का दिया जा रहा है–

पहिजो पाण मरे थो मूर्खु जीअ मनन मे।
जीए भोलो भम मे फाथो मुठि भरे।।
जागी अविद्या निन्ड्र मो करे न पटु परे।
सतिगुरु महिर करे त सामी छुटे दुख खो।।४५४।।

सामी जी कहते है कि मूर्ख जीव ने मन क सकल्प विकल्प मे स्वय ही अपने को उसी प्रकार उलझा दिया है जिस प्रकार मूख बन्दर ने भ्रम वश मुठी बन्द करके अपने को उलझा दिया था। वह अविद्या रुपी नीद से जाग्रत होकर अज्ञान रुपी आवरण को नही हटाता है किन्तु यदि सतिगुरु उस पर कृपा करे तभी वह दुखो से मुक्त हो सकेगा।

तोते और नलिका के विषय मे सत ज्ञानेश्वर जी का वर्णन बहुत ही प्रेरणा दायक है–

जैसी ते शुका चेनि आगभारे। नलिका भोविन्नली एरी मोहरे।
तेणे उडावे परि न पुरे। मनशका।।(७६)
वायाचि मान पिळी। अटुवे हिये आवळी।
टिटातु नळी। धरुनि ठाके।।(७७)
म्हणे बाधला मी फुडा। ऐसिया भावनेचिया पडे खोडा।
की मोकळिया पायाचा चवडा। गोवी अधिके।।(७८)
ऐसा काजेविण आतुडला। तो साग पा काय आणिके बाधला?
मग न सोडीच जव्ही नेला। तोडूनि अर्धा।।७६।।
म्हणऊनि आपणया आपणचि रिपु। जेणे वाढविला हा सकल्पु।
येर स्वय बुद्धि म्हणे बापु। जो नाथिले नेघे।।(८०)

(ज्ञानश्वरी – ६)

उस पुरुष की स्थिति उसी तोते के समान होती हे जो उस नलिका यन्त्र पर बैठता है जो स्वय उसी को पकडने के लिए लगाई जाती है। तोता उस नलिका यन्त्र पर बैठता है और उसी के भार से वह नली चलने लगती है। वास्तव मे

जिस समय वह नली उलटी चलने लगती है उसी समय तोते को उस पर से उड जाना चाहिए। परन्तु उस के मन मे भय समा जाता है।।(७६)

वह व्यर्थ ही गरदन घुमाता है छाती सिकोडता है और चोच से उस नली को खूब पकडे रहता है।।(७७)

उस के मन मे यह मिथ्या धारणा हो जाती है कि मै वास्तव मे पकडा गया हू ओर इस मिथ्या कल्पना के फेर मे वह ऐसा पडता है कि अपने पैरो के खुले हुए पजो को उस यन्त्र मे और भी फॅसाता चलता है।।(७८)

इस प्रकार जो स्वय और अकारण बन्धन मे पडे उसके सम्बन्ध मे क्या यह भी कहा जा सकता है कि उसे किसी दूसरे ने बन्धन मे डाला है? परन्तु जब एक बार वह ऐसे भ्रम मे पड जाता है तब वह उस के फेरे मे ऐसा फस जाता है कि यदि उसे आधा काट भी डाला जावे तो भी वह उस नली को नही छोडगा।।(७९)

इसलिए जो मनुष्य स्वय ही अपने सकल्प विकल्पो को बढाता है वह स्वय ही अपना शत्रु होता है। परन्तु इस के विपरीत जिस पुरुष को इस बोध का अनुभव होता है कि मै आत्मा हू और व्यर्थ या मिथ्या बात को अगीकार नही करता। मै कहता हू वही श्रेष्ठ आत्मज्ञ है।।(८०)

-----

(३) क्रोध

5

हे कलि मूल क्रोध कदञ्च करुणा न उपरजते।

बिखयत जीव वस्य करोति नृत्य करोति जथा मरकटह।

अनिक सासन ताडन्ति जमदूतह तव सगे अधम नरह।

दीन दुखभजन दयाल प्रभु नानक सरब जीअ रख्या करोति।।

(सहसक्रिती श्लोक – ४७) गुरु अर्जन देव/१३५८

ह कल्ह के मूल क्रोध तुम्हे कभी दया नही आती। तुम ने विषयी जीवो को वश मे कर लिया है और वे तुम्हारे सम्मुख बन्दर की तरह नाचते है। आगे यमदूत कई प्रकार के दण्ड देते है। गुरु नानक कहते है कि तुम्हारे विरुद्ध दीनो के दुख दूर करने वाले प्रभु ही सब जीवो की रक्षा करे।

6

एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि। भलके भउकहि सदा बइआलि।

कूड़ु छुरा मुठा मुरदारु। धाणक रूपि रहा करतार।।१।।

मै पति की पदि न करणी की कार।

हउ बिगडै रूपि रहा बिकराल।।

तेरा एकु नामु तारै ससारु।

मै एहा आस एहो आधारु।। रहाउ।।

मुखि निदा आखा दिनु राति। पर घरु जोही नीच सनाति।

कामु क्रोधु तनि वसहि चडाल। धाणक रूपि रहा करतारि।।२।।

फाही सुरति मलूकी वेसु। हउ ठगवाडा ठगी देसु।

खरा सिआणा बहुता भारु। धाणक रूपि रहा करतार।।३।।

मै कीता न जाता हरामखोरु। हउ किआ मुहु देसा दुसटु चोरु।

नानक नीचु कहै बीचारु। धाणक रूपि रहा करतार।।४।।

(सिरी राग– सबद – २६) गुरु नानक देव जी/२४

जीव के साथ एक कुत्ता (लोभ) और दो कुतिया (भूख और प्यास) साथ चलती है दिन का उदय हाते ही वे सदैव तीनो भौकते है। जीव के पास झूठ का छुरा है। ठगी की आदत हराम खाने के समान है। इस प्रकार उस का एक रूप अपराध करने वाली जाति धानक जैसा हे।।१।।

मै ने सम्मानित होने योग्य कोई शिक्षा नही ली न ही कर्त्तव्य करने का ढग मालूम है। मै तो बिगडे रुप मे विकराल बना हुआ हू किन्तु फिर भी मुझे विश्वास है कि केवल तेरा नाम ही ससार से पार लगा सकता है इसीलिए उसी से मुझे एक मात्र आशा है उसी का सहारा है।।रहाउ।।

मुह से म दिन रात दूसरो की निन्दा करता हू और नीच अपराधी लोगो की तरह चोरी के लिए दूसरो के घरो मे झाकता फिरता हू। काम क्रोध रूपी चण्डाल मेरे शरीर मे बसते है। हे स्वामी! मेरा रूप धानक जैसा है।।२।।

भीतर से मेरा ध्यान सदा लोगो को फासने मे लगा रहता हे ऊपर मै कोमल वेष बनाये रखता हू। मै ठग हू ओर देश को ठगता हू। अपने आप को बहुत समझदार मानता हू लेकिन मेरी पापो की गाठ नित्य भारी होती जा रही है। इस प्रकार हे प्रभु! मेरा रूप धानक जैसा है।।३।।

मैने तुम्हारे उपकारो को भुला दिया है इसलिए हरामखोर हू। मै क्या मुख दिखलाऊँ मै दुष्ट और चोर हो रहा हू। इस प्रकार नीच हुआ (नानक) मै विचार करता हू कि हे प्रभु! मै धानक रूप हो गया हू (मेरा कल्याण कैसे हो?)।।४।।

———

(४) लोभ

7

हे लोभा लपट सग सिरमौरह अनिक लहरी कलोलते।

धावन्त जीआ बहु प्रकार अनिक भाति बहु डोलते।

न च मित्र न च इसट न च बाधव न च मात पिता तव लजया।

अकरण करोति अखाद्यि खाद्य असाज्य साजि समजया।

त्राहि त्राहि सरणि सुआमी बिग्याप्ति नानक हरि नरहरह।

(सहसकिती श्लोक – ४८) गुरु अजन देव जी

हे लोभ! तुम ने बडे बडे लोगो को फसाया है और जीव अनेक लहरो मे कल्लोल करते है। अनेक प्रकार से जीव तुम्हारी ओर भागते है और कई तरह तुम्हारे लिए घूमते फिरते है। मित्रो इष्टो सम्बन्धियो और माता पिता आदि मे से तुम्हे किसी का लिहाज नही है तुम न करने योग्य को करवाते न खाने योग्य को खिलाते एव न बनने योग्य को बलात बनवाते हो। गुरु नानक कहते है कि वे लोभ से डर कर परमात्मा की शरण मे विनती करते है हे नरहरि! रक्षा करो रक्षा करो।

8

बिरथा कहउ कउन सिउ मन की।

लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की।। रहाउ।।

सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की।

दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की।।१।।

मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की।

नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की।।२।।

(राग आसा–सबद) गुरु तेग बहादुर/४११

हे भाई! मै अपने इस मन की व्यथा किसे बताऊँ? लोभ मे फसा यह मन दसो दिशाओ मे दौडता रहता है इसे धन जोडने की तृष्णा चिपटी रहती है।।रहाउ।।

हे भाई! सुख पाने के लिए यह मन इधर उधर खुशमद करता फिरता है इस प्रकार वह अधिक दुख सहता है। कुत्ते के समान हर एक के द्वार पर भटकता फिरता है लेकिन इसे परमात्मा का भजन बिल्कुल ही याद नही है।।१।।

(लोभ ग्रस्त जीव) अपना जीवन व्यर्थ गवा देता है। इस लालच के कारण लोगा की ओर से हसी मजाक से भी इसे लज्जा नही आती। हे नानक! (कह हे जीव) तू परमात्मा की गुण स्तुति क्यो नही करता? गुण स्तुति से तेरी यह दुर्बुद्धि दूर हो जावेगी।।२।।

भाव साम्य -

काम और क्रोध के बाद मनुष्य को चारो ओर दौडाने वाले लोभ का स्थान है। धावन्ति जीआ बहु प्रकार की व्याख्या गुरु तेग बहादुर जी ने लोभ ग्रसिउ दस हू दिस धावत के रुप मे की है।

गुरु तेग बहादुर जी के सबद सरल ब्रज भाषा मे हैं। उन के विनय सम्बन्धी पदो का साम्य हिन्दी मे सूरदास जी के पदो से स्पष्ट है सूरदास जी ने अपने मन की व्यथा निम्न प्रकार प्रकट की है –

मेरो मन मति हीन गुसाई।
सब सुखनिधि पद कमल छाडि श्रम करत श्वान की नाई।।
फिरत व्यथा भोजन अवलोकत सूने सदन अज्ञान।
तिहि लालच कबहू कैसे हू तृपति न पावत प्रान।।
जह जह जात तही भय त्रासत आस लकुटि पद त्राण।
कौर कौर कारन कबुद्धि जड किते सहत अपमान।।
तुम सर्वज्ञ सकल विधि पूरण अखिल भवन निज नाथ।
तिन्ह छाडि यह सूर महा सठ भ्रमत भ्रमनि के साथ।।

हे प्रभु! मेरा मन मति हीन है। आप के सब सुखो को भण्डार चरण कमलो को छोडकर यह कुत्ते के समान श्रम करता है। यह सूने घरो मे अज्ञान के कारण भोजन ढूढता फिरता है। इस लालच से इसे तृप्ति नही मिलती यह जहा जहा जाता है लाठी और जूतो से प्रताडित होता है। इस मन्द बुद्धि को रोटी के एक टुकडे के लिए कितना अपमान सहना पडता है। हे तीनो लोको

के स्वामी! तुम सर्वज्ञ हो सभी तरह से पूर्ण हो सभी के नाथ हो। आप को छोड कर यह महा शठ चचल माया के साथ चक्कर काट रहा है।

कविवर रवीन्द्र लोभ से ग्रसित एक जीव (कृपण) की नाटकीय मुलाकात भगवान से करा देते है। कृपण उस अवसर को भी हाथ से खो कर पछताता है –

आमि भिक्षा करे फिरतेछिलेम ग्रामेर पथे पथे
तुमि तखन चलेछिले तोमार स्वर्णरथे।
अपूर्व एक स्वप्नसम लागितेछिल चक्षे मम
की विचित्र शोभा तोमार की विचित्र साज!
आमि मने भावतेछिलेम ए कोन महाराज।।
आजि शुभक्षणे रात पोहालो भेबेछिलेम तबे
आज आमारे द्वारे द्वारे फिरते नाहि हबे।
बाहिर ह ते नाहि ह ते काहार देखा पेलेम पथे
चलिते रथ धन धान्य छडाबे दुइ धारे–
मुठा मुठा कुडिये नेब नेब भारे भारे।।
देखि सहसा रथ थेमे गेल आमार काछे एसे
आमार मुख–पाने चेये नामले तुमि हेसे।
देखे मुखेर प्रसन्नता जुडिये गेल सकल व्यथा
हेने काले किसेर लागि तुमि अकस्मात
आमाय किछु दाओ गो बले बाडिये दिले हात।।
मरि ए की कथा राजाधिराज आमाय दाओगो किछु
शुने क्षण कालेर तरे रइनु माथा नीचु।
तोमार की वा अभाव आछे भिखारी भिक्षुकेर काछे?
ए केवल कातुकेर वशे आमाय प्रवञ्चना।
झुलि हते दिलेम तुले एकटि छोटो कणा।।
यबे पात्र खानि घरे एने उजाडि करि एकि
भिक्षा माझे एकटि छोटा सोनार कणा देखि!
दिलेम या राज भिखारी रे स्वर्ण हये एल फिरे–

तखन कॉदि चोखेर जले दुटि नयन भरे—

तोमाय केन दिहनि आमार सकल शून्य करे।

गीताजलि – ५०/खेया (कृपण)

मै भिक्षा के लिए गाव के रास्ते पर दर दर भटक रहा था। तब तुम्हारा सोने का रथ दूर से एक अपूर्व स्वप्न की भाति लगा। तुम्हारी क्या विचित्र शोभा थी और क्या विचित्र साज था? मैने मन मे यह कल्पना की कि यह कौन महाराज है?

अब मुझे द्वार द्वार मागना नही पडेगा। मेरी आशाओ मे ज्वार आया मैने सोचा मेरे अन्धेरे दिन समाप्त हो गये है। बाहर निकलते ही रास्ते मे यह किस से मुलाकात हुई? चलते समय रथ दोनो ओर धन धान्य बिखेरता आ रहा है। मुट्ठियो से भर भर कर मै इसे गट्ठर बना कर ले जाऊँगा।

कुछ देर बाद सहसा रथ जहा मै खडा था वहा आ कर रुका। तुम्हारी निगाह मुझ पर पडी और तुम मुसकरा कर नीचे उतरे।

तुम्हारे मुख की मुसकराहट देख कर मेरी व्यथा दूर हो गई। तब अचानक तुमने मेरा दाया हाथ पकडा और कहा तुम्हारे पास मुझे देने को क्या है?

हे राजाधिराज! यह कैसा आश्चर्यमय मजाक है कि तुम भिखारी के सामने हाथ फैला रहे हो। मै कुछ देर असमजस मे नीचे देखता रहा और मन मे सोचा हे राजन! तुम्हे क्या अभाव है जो भिखारी के सामने भिक्षुक बने हो। यह शायद मेरे साथ किया गया कौतक वश एक छल है मैने झोली से एक छोटा कण तुम्हे दे दिया।

जब मै अपने भिक्षा पात्र को घर लाया और फर्श पर उसको खाली किया तो उस मे एक छोटा कण सोने का निकला। मुझे आश्चर्य हुआ कि जो कण राजा के रुप मे भिखारी को दिया था वह स्वर्ण के रुप म लौट आया है। तब मै दोनो आखो मे अश्रुपूर्ण हो कर रोया। मेरे हृदय मे तुम्हे सब कुछ समर्पण की भावना क्यो नही हुई (अपनी सम्पूर्ण वासनाये सौप कर मै जीवनमुक्त हो जाता!)।

अहकार से रहित होकर फल की आकाक्षा छोडकर किया गया त्याग ही प्रभु स्वीकार करते है —

जो हम छोडहि हाथ ते सो तुम लिया पसार।

जो हम लेवहि प्रीति सो सो तुम दीया डार।। (दादू)

(६) मोह

9

हे अजित सूर सग्राम अति बलना बहु मरदनह।
गण गन्धरब देव मानुख्य पसु पखी बिमोहनह।
हरि करणहार नमसकार सरणि नानक जगदीस्वरह।।

(सहस क्रिती सलोकु – ४५) गुरु अर्जन देव/१३५८

हे अजय शूरवीर मोह! तुम बडे बलशाली और शत्रु का मर्दन करने मे समर्थ हो। तुम ने देवताओ के गणो गन्धर्वो देवो और मनुष्यो और पशु पक्षियो तक को मोह लिया है मै तुम से बचने के लिए हरि की शरण लेता हू और जगदीश्वर को प्रणाम करता हू।

10

माथै त्रिकुटी द्रिसटि करूरि। बोलै कउडा जिहबा की फूडि।
सदा भूखी पिरु जानै दूरि।।१।।
ऐसी इसत्री इक रामि उपाई।
उनि सभु जगु खाइआ हम गुरि राखे मेरे भाई।। रहाउ।।
पाइ ठगउली सभु जगु जोहिआ। ब्रह्मा बिसनु महादेउ मोहिआ।
गुरमुखि नामि लगे से सोहिआ।।२।।
वरत नेम करि थाके पुनहचरणा। तट तीरथ भवे सभ धरना।
से उबरे जि सतिगुर की सरना।।३।।
माइआ मोहि सभो जगु बाधा। हउमै पचै मनमुख मूराखा।
गुर नानक बाह पकरि हम राखा।।४।।

(राग आसा – ६६) गुरु अर्जन देव/३६४

हे भाई! उस माया स्त्री के माथे पर बल पडे रहते है उस की दृष्टि क्रोध से भरी रहती है। वह बोलने मे फूहड है सदा अतृप्त रहती है और प्रभु पति को कही दूर बसा हुआ समझती है।।१।।

हे मेरे भाई! परमात्मा ने माया एक ऐसी स्त्री पैदा की है कि उसने सारे जगत को खा लिया है। मुझे तो गुरु ने कृपा करके उससे बचा रखा है।।रहाउ।।

उस माया स्त्री ने ठग बूटी खिला कर सारे जगत को अपनी निगाह मे रखा

हुआ है उसने तो ब्रह्मा शिव और विष्णु को भी अपने मोह मे फसाया हुआ है। जो मनुष्य गुरु की शरण ले कर प्रभु के नाम से जुडे रहते है वे सुन्दर आत्मिक जीवन वाले बने रहते है।।२।।

हे भाई! अनेको व्यक्ति व्रत रख रख कर धार्मिक नियम निभाकर और पश्चाताप की धार्मिक रस्मे कर कर के थक गये समस्त पृथ्वी के अनेको तीर्थो का भ्रमण कर चुके किन्तु माया स्त्री से अपनी रक्षा न कर सके केवल वही व्यक्ति बचते है जो गुरु की शरण लेते है।।३।।

हे भाई! सारा जगत माया के मोह मे बँधा हुआ है स्वेच्छाचारी मनुष्य अहकार मे दुखी होता है। हे नानक! कहो– हे गुरु! मुझे तूने ही मेरी बाह पकड कर माया से बचाया है।।४।।

अनुशीलन -

विकारो मे चतुर्थ स्थान मोह का है जिस का दूसरा रुप माया है। पूरा ससार माया के वश मे है। गुरुवाणी मे माया की परमात्मा से अलग कोई सत्ता नही हे। जीवो की रचना प्रभु का चोज या लीला है जीवो मे मोह का मीठा स्वरूप माया है।

माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाइआ।

कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ।। (अनन्दु)

जिस परमात्मा ने यह भ्रम पैदा किया उसने ही माया को मन मोहनी बनाया है। मै उस प्रभु पर कुरबान जाता हू जिसने मोह को मीठा बना दिया।

पदार्थवादी माया को पूर्णत सत्य मानते है। वेदान्त मे इसे पूर्णत मिथ्या कहा है। गुरु वाणी मे जगत को उस समय मिथ्या कहते है जब कोई माया को ही मुख्य मन्तव्य बना ले अथवा जगत को परमात्मा से अलग समझ के परमात्मा को भुला दे–

दाति पिआरी विसरिआ दातारा।

जिस व्यक्ति ने माया से प्रीति की उसी को माया ने खा लिया जिनि लाई प्रीति फिरि खाइआ । माया के इस गुण को देख कर कबीर ने माया को सर्पिणी कह कर खबर ली है जिससे बेकार अन्य वस्तु नहीं है स्रपनी ते छूछ आन नही अवरा। गुरु अर्जुन देव जी ने कबीर की अपेक्षा प्रस्तुत सबद मे माया का नारी के रूप मे शिष्ट चित्र प्रस्तुत किया है।

(६) अहकार

11

हे जनम मरण मूल अहकार पापातमा।
मित्र तजन्ति सत्र द्रिडन्ति अनिक माया बिस्तीरनह।
आवन्त जावन्त थकन्त जीआ दुखु सुख बहु भोगणह।
भ्रम भयान उदिआन रमण महाविकट असाध रोगणह।
बैद्य पारब्रह्म परमेस्वर आराधि नानक हरि हरि हरे।।

(सहसक्रिती–सलोक – ४६) गुरु अर्जन देव/१३५८

ऐ जन्म मरण के मूल अहकार तुम पापी हो। तुम मित्रो से छुडाते हो शत्रुता दृढ करते हो और अनेक प्रकार के मायावी प्रपच बनाते हो। जीव तुम्हारे ही कारण आवागमन मे थकते और बहुत सुख दु ख भोगते है। लोग तुम से प्रभावित होकर भ्रम के महा भयानक जगल मे विचरते अति कठिन असाध्य रोगो से पीडित होते है। तुम्हारा इलाज केवल परब्रह्म परमेश्वर रुपी वैद्य के पास ही है।

12

हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ।
हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ।।१।।
हरि चेति मन मेरे तू गुर का सबदु कमाइ।
हुकमु मन्नहि ता हरि मिलै ता विचहु हउमै जाइ।। रहाउ।।
हउमै सभु सरीरु है हउमै ओपति होइ।
हउमै वडा गुबारु है हउमै विचि बुझि न सकै कोइ।।२।।
हउमै विचि भगति न होवई हुकमु न बुझिआ जाइ।
हउमै विचि जीउ बन्धु है नामु न वसै मनि आइ।।३।।
नानक सतगुरि मिलिऐ हउमै गई ता सचु वसिआ मनि आइ।
सचु कमावै सचि रहै सचे सेवि समाइ।।४।।

(राग वडहस–सबद – १२) गुरु अमर दास जी/५६०

हे मन! तू हरि का स्मरण कर साथ ही गुरु के सबद (हुकुम) के अनुसार आचरण कर। गुरु का हुकम मानने से तुझे हरि की प्राप्ति होगी और अन्त करण से अहकार का नाश होगा।।रहाउ।।

अह भावना और नाम का आपस मे विरोध है और दोनो एक ही स्थान पर नही

रह सकते। मन मे अहकार होने से सेवा नही हो सकती। अगर सेवा की भी जावे तो निष्फल हो जाती है।।१।।

(यह सन्य है) कि अहकार स ही जीव की उत्पत्ति होती है शरीर भी हउमै का पुतला ही है किन्तु हउमै बहुत अन्धकार है और अहकार के परदे क कारण हम अपने आत्म स्वरूप को पहचान नही सकते।।२।।

अहकार मे भक्ति सभव नही है और वाहि गुरु का हुकम समझ मे नही आता। जीव हउमे(मै हू) के बन्धन मे बन्धा रहता है और मन मे नाम का निवास नही होता।।३।।

हे नानक! सति गुरु के मिलने से अहकार का नाश हो जाता है तब मन मे सत्य निवास करने लगता है इस प्रकार मनुष्य सत्य की कमाई करता है। सत्य मे ही स्थिर रहता हे और सत्य स्वरूप की सेवा करते हुए उसी मे समा जाता है।।४।।

अनुशीलन -

पाचो विकारो मे सब से सूक्ष्म विकार अहकार है जो जीव की अस्मिता का द्योतक है। जिस विधाता ने जीवो की रचना की है उसी ने हउमै को जीव का अग बनाया है। जन्म मरण के समय हउमै का ही आना जाना होता है–

जिनि रचि रचिआ पुरखि विधातै नाले हउमै पाई।
जनम मरणु उस ही कउ है रे ओहा आवै जाई।।

प्रभु और जीव का एक ही निवास स्थान है किन्तु दोनो के बीच मे अहकार की दीवार है। पूरा गुरु हउमै की दीवार तोडता है और गुरु नानक को प्रभु के दर्शन होते है–

धन पिर का इक ही सगि वासा विचि हउमै भीति करारी
गुरि पूरै हउमै भीति तोरी जन नानक मिले बनवारी।।

अहकार प्रभु से अलग करने की एक दीवार है अथवा जीव को लगा हुआ एक रोग दोनो की औषधि गुरु के पास है। हउमै की औषधि इसी रोग मे छिपी है वह है गुरु के सबद की कमाई। जब प्रभु की कृपा होती है तो शब्द द्वारा अकाल पुरुष से एकात्म होकर यह दुख समाप्त हो जाता है।

हउमै दीरघ रोगु है दारु भी इसु माहि।
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबद कमाहि।
नानकु कहै सुणहु जनहु इतु सजमि दुख जाहि।।

---

(७) पाच विकार

13

म्रिग मीन भ्रिंग पतग कुचर एक दोख बिनास।

पच दोख असाध जा महि ता की केतक आस।।१।।

माधो अबिदिआ हित कीन।

बिबेक दीप मलीन।। रहाउ।।

त्रिगद जोनि अचेत सभव पुन पाप असोच।

मानुखा अवतार दुलभ तिही सगति पोच।।२।।

जीअ जतु जहा जहा लगु करम के बसि जाइ।

काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ।।३।।

रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन।

भगत जन भै हरन परमानद करहु निदान।।४।।

(राम आसा) रविदास जी/४८६

हिरन मछली भवरा पतगा और हाथी एक एक दोष के कारण नष्ट हो जाते है। वह मनुष्य जिस मे पाच विकार हैं उस की क्या आशा की जा सकती है।।१।।

हे माधो! मनुष्य अविद्या से प्रेम करने लगा है उस का विचार दीप मलिन हो गया हे।।रहाउ।।

तीन प्रकार की योनिया (भूमज अण्डज और स्वेदज) नीच और विवेक हीन होती है वे पाप पुण्य या अच्छे बुरे कर्मो का विचार नही कर सकती। मनुष्य योनि दुर्लभ है किन्तु वह कुसगति मे रहता है।।२।।

जीव जन्तु मनुष्य जो भी जहा है सब अपने कर्मो के वश जन्म लेते है। मृत्यु का समय सब पर भारी है उससे बचने का कोई उपाय नही है।।३।।

रविदास जी कहते है कि हे विरक्त जीव भ्रम को त्याग कर गुरु उपदेशानुसार सत्य की तपस्या करो तभी भक्तो का भय हरण करने वाला प्रभु तुम्हारा उपचार करेगा।।४।।

14

हउमै रोगु मानुख कउ दीना। काम रोगि मैगलु बसि लीना।

द्रिसटि रोगि पचि मुए पतगा। नाद रोगि खपि गए कुरगा।।१।।

जो जो दीसै सो सो रोगी।

रोग रहित मेरा सतिगुरु जोगी।। रहाउ।।

जिहवा रोगि मीनु ग्रसिआनो। बासन रोगि भवरु बिनसानो।

हेत राग का सगल ससारा। त्रिबिधि रोग महि बधे विकारा।।२।।

रोगे मरता रोगे जनमै। रोगे फिरि फिरि जोनी भरमै।

रोग बध रहनु रती न पावै। बिन सतिगुर रोगु कतहि न जावै।।३।।

पारब्रहमि जिसु कीनी दइआ। बाह पकडि रोगहु कढि लइआ।

तूटे बन्धन साधसगु पाइआ। कहु नानक गुरि रोगु मिटाइआ।।४।।

(राग भेरउ–सबद – २०) गुरु अर्जन देव जी/११४०

अहकार का रोग मनुष्य को दुखी करता है। काम के कारण हाथी बन्दी बनता हे। दृष्टि क रोग से पतगा जल मरता हे और सगीत के रोग से हिरन मारा जाता है।।१।।

जो भी दिखाई पडता है किसी न किसी रोग से ग्रस्त है यदि काई रोग रहित हे तो वह मेरा योगेश्वर सति गुरु है।।रहाउ।।

जिह्ना के रोग से मछली फसती है सुगन्धि के लोभ से भवरा नष्ट हो जाता है। मोह रुपी रोग से सारा ससार विकल है। समस्त विकार त्रिगुणात्मक माया के अग है।।२।।

रोग (विकार) मे ही जीव जन्म मरण के चक्कर मे पडता है। रोग के कारण ही विविध योनिया मे भटकता है। रोगी जीव क्षण भर भी स्थिर नही रह पाता। बिना सतिगुरु के यह रोग कभी दूर नही होता।।३।।

जिस पर परब्रह्म की कृपा होती है उन्हे बाह से पकड कर रोग मुक्त कर देता है। सत्सगति मे जीव के सभी बन्धन टूट जाते है गुरु नानक कहते है कि सति गुरु सब रोगो को मिटा देता है।।४।।

15

अवरि पच हम एक जना। किउ राखउ घर बारु मना।

मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना।।१।।

स्री राम नामा उचरु मना।

आगै जम दलु बिखमु घना।। रहाउ।।

उसारि मडोली राखै दुआरा भीतरि बैठी सा धना।

अम्रित केल करे नित कामणि अवरि लुटेनि सु पञ्च जना।।२।।

ढाहि मडोली लूटिआ देहुरा सा धन पकडी एक जना।

जम डण्डा गलि सगलु पडिआ भागि गए से पच जना।।३।।

कामणि लोडै सुइना रुपा मित्र लुडेनि सु खाधाता।

नानक पाप करे तिन कारणि जासी जम पुरि बाधाता।।४।।

(राग गउडी सबद–१४) गुरु नानक/१५५

हे मेरे मन! मेरे वैरी पाच हैं मै अकेला हू मै इन से घर द्वार कैसे बचाऊ? हे भाई! ये पाच मुझ नित्य मारते और लूटते रहते है मै किस के पास शिकायत करुँ?।।१।।

हे मन! परमात्मा का नाम स्मरण कर सामने यमराज की भारी फौज दिखाई दे रही है (अर्थात मौत आने वाली है)।।रहाउ।।

परमात्मा ने यह शरीर बना कर इस के नाक कान आदि दस द्वार बना दिये। उस के हुक्म अनुसार इस शरीर मे जीव स्त्री आ टिकी। पर यह जीव स्त्री अपने आप को अमर जान कर सदा सासारिक तमाशे करती रहती है और वे वैरी काम आदि शुभ गुण लूटते रहते है।।२।।

आखिरकार यम की फौज ने शरीर रुपी मठ को गिरा कर मदिर लूट लिया जीव स्त्री अकेली ही पकडी गई। यमराज का डण्डा सिर पर बजा फन्दा गले मे पडा वे लूटने वाले पाचो व्यक्ति भाग गये।।३।।

(सारी उम्र जब तक जीव जीवित रहा) पत्नी सोने चादी के गहने मागती रहती है सम्बन्धी मित्र खाने पीने के पदार्थ मागते रहते है। हे नानक! इन की खातिर जीव पाप करता रहता है। आखिरकार जीव पापो के कारण बन्धा हुआ यम के नगर मे धकेला जाता है।।४।।

16

नेनहु नीद पर द्रिसटि विकार। स्रवण सोए सुणि निद वीचार।
रसना सोई लोभि मीठे सादि। मनु सोइआ माइआ बिसमादि।।१।।
इसु ग्रिह महि कोई जागतु रहे।
साबतु वसतु ओहु अपनी लहै।। रहाउ।।
सगल सहेली अपनै रस माती। ग्रिह अपुने की खबरि न जाती।
मुसनहार पच बटवारे। सूने नगरि पर ठगहारे।।२।।
उन ते राखै बापु न माई। उन ते राखै मीतु न भाई।
दरबि सिआणप ना ओइ रहते। साधसगि ओइ दुसट वसि होते।।३।।
करि किरपा मोहि सारिंगपाणि। सतन धूरि सरब निधान।
साबतु पूजी सतिगुर सगि। नानकु जागै पारब्रह्म कै रगि।।४।।
सो जागै जिसु प्रभु किरपालु।
इहु पूजी साबतु धनु मालु।। रहाउ दूजा।।

(राग गउडी–सबद – ६०) गुरु अजन देव/१८२

ह भाइ! इस शरीर घर मे कोई विरला मनुष्य ही सचेत रहता है जो सचेत रहता है वह अपनी आत्मिक जीवन की सारी पूजी सभाल लेता है।।रहाउ।।

पराए रूप को विकारमय नजर से देखना यह आखो की नीद है। कान दूसरो की निन्दा सुन सुन कर सो रहे है। जीभ खाने के लोभ मे पदार्थो के मीठे स्वाद मे सोई रहती हे। मन माया के आश्चर्यजनक तमाशे मे सोया रहता है।।१।।

समस्त ज्ञानेन्द्रिया अपने अपने स्वाद मे मस्त रहती है अपने शरीर घर की वह खबर नही रखती। ठगने वाले पाच डाकू सूने घर (शरीर) मे आकर आक्रमण कर देते है।।२।।

उन पाचो डाकुओ से न पिता बचा सकता हे न कोई भाई बचा सकता है वह न धन स रोक जा सकते है न चतुराई से। वे पाचो दुष्ट केवल सत्सगति मे रहने से काबू होते हे।।३।।

हे धनुर्धारी प्रभु! मुझ पर कृपा कर। मुझे सन्तो की चरणो की धूलि दे यही मेरे सारे खजाने है। गुरु की सगति म आत्मिक जीवन का धन बचा रह सकता हे (परमात्मा का सेवक) नानक परमात्मा के प्रेम रग मे रहकर ही सचेत रह सकता है।।४।।

15

अवरि पच हम एक जना। किउ राखउ घर बारु मना।

मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना।।१।।

स्त्री राम नामा उचरु मना।

आगै जम दलु बिखमु घना।। रहाउ।।

उसारि मडोली राखै दुआरा भीतरि बैठी सा धना।

अम्रित केल करे नित कामणि अवरि लुटेनि सु पञ्च जना।।२।।

ढाहि मडोली लूटिआ देहुरा सा धन पकडी एक जना।

जम डण्डा गलि सगलु पडिआ भागि गए से पच जना।।३।।

कामणि लोडै सुइना रुपा मित्र लुडेनि सु खाधाता।

नानक पाप करे तिन कारणि जासी जम पुरि बाधाता।।४।।

(राग गउडी सबद–१४) गुरु नानक/१५५

हे मेरे मन! मेरे वैरी पाच हैं मै अकेला हू मै इन से घर द्वार कैसे बचाऊ? हे भाई! ये पाच मुझ नित्य मारते और लूटते रहते है मै किस के पास शिकायत करुँ?।।१।।

हे मन! परमात्मा का नाम स्मरण कर सामने यमराज की भारी फौज दिखाई दे रही है (अर्थात मौत आने वाली है)।।रहाउ।।

परमात्मा ने यह शरीर बना कर इस के नाक कान आदि दस द्वार बना दिये। उस के हुक्म अनुसार इस शरीर मे जीव स्त्री आ टिकी। पर यह जीव स्त्री अपने आप को अमर जान कर सदा सासारिक तमाशे करती रहती है और वे वेरी काम आदि शुभ गुण लूटते रहते है।।२।।

आखिरकार यम की फौज ने शरीर रुपी मठ को गिरा कर मदिर लूट लिया जीव स्त्री अकेली ही पकडी गई। यमराज का डण्डा सिर पर बजा फन्दा गले मे पडा वे लूटने वाले पाचो व्यक्ति भाग गये।।३।।

(सारी उम्र जब तक जीव जीवित रहा) पत्नी सोने चादी के गहने मागती रहती है सम्बन्धी मित्र खाने पीने के पदार्थ मागते रहते है। हे नानक! इन की खातिर जीव पाप करता रहता है। आखिरकार जीव पापो के कारण बन्धा हुआ यम के नगर मे धकेला जाता है।।४।।

16

नेनहु नीद पर द्रिसटि विकार। स्रवण सोए सुणि निद वीचार।

रसना सोई लोभि मीठे सादि। मनु सोइआ माइआ बिसमादि।।१।।

इसु ग्रिह महि कोई जागतु रहै।

साबतु वसतु ओहु अपनी लहै।। रहाउ।।

सगल सहेली अपनै रस माती। ग्रिह अपुने की खबरि न जाती।

मुसनहार पच बटवारे। सूने नगरि पर ठगहारे।।२।।

उन ते राखै बापु न माई। उन ते राखे मीतु न भाई।

दरबि सिआणप ना ओइ रहते। साधसगि ओइ दुसट वसि होते।।३।।

करि किरपा मोहि सारिंगपाणि। सतन धूरि सरब निधान।

साबतु पूजी सतिगुर सगि। नानकु जागै पारब्रह्म कै रगि।।४।।

सो जागै जिसु प्रभु किरपालु।

इहु पूजी साबतु धनु मालु।। रहाउ दूजा।।

(राग गउडी–सबद – ६०) गुरु अर्जन देव/१८२

हे भाइ! इस शरीर घर मे कोई विरला मनुष्य ही सचेत रहता है जो सचेत रहता है वह अपनी आत्मिक जीवन की सारी पूजी सभाल लेता है।।रहाउ।।

पराए रूप को विकारमय नजर से देखना यह आखो की नीद है। कान दूसरो की निन्दा सुन सुन कर सो रहे है। जीभ खाने के लाभ मे पदार्थो के मीठे स्वाद मे सोई रहती हे। मन माया के आश्चर्यजनक तमाशे मे सोया रहता है।।१।।

समस्त ज्ञानेन्द्रिया अपने अपने स्वाद मे मस्त रहती है अपने शरीर घर की वह खबर नही रखती। ठगने वाले पाच डाकू सूने घर (शरीर) मे आकर आक्रमण कर देते है।।२।।

उन पाचो डाकुओ से न पिता बचा सकता है न कोई भाई बचा सकता है वह न धन से रोक जा सकत है न चतुराई से। व पाचो दुष्ट केवल सत्सगति मे रहने स काबू होते हे।।३।।

हे धनुर्धारी प्रभु! मुझ पर कृपा कर। मुझे सन्तो की चरणो की धूलि दे यही मेरे सारे खजाने है। गुरु की सगति मे आत्मिक जीवन का धन बचा रह सकता है (परमात्मा का सेवक) नानक परमात्मा के प्रेम रग मे रहकर ही सचेत रह सकता है।।४।।

हे भाई! विकारो की निद्रा से वही जाग सकता है जिस पर प्रभु कृपालु हो। उसकी आत्मिक पूजी बची रहती है उसके पास प्रभु का नाम धन बचा रहता है।।रहाउ।।

भाव साम्य -

गुरु अर्जन देव जी के इस सबद के भाव साम्य का एक पद तुलसी दास जी की विनय पत्रिका मे है। तुलसी दास जी काव्यात्मक प्रतिभा से नाम धन की रक्षा का भार राम पर ही डाल देते है—

मै केहि कहौ बिपति अति भारी। श्री रघुवीर धीर हितकारी।।१।।
मम हृदय भवन प्रभु तोरा। तह बसे आइ बहु चोरा।।२।।
अति कठिन करहि बरजोरा। मानहि नहि बिनय निहोरा।।३।।
तम मोह लोभ अहकारा। मद क्रोध बोध–रिपु मारा।।४।।
अति करहि उपद्रव नाथा। मरदहि मोहि जानि अनाथा।।५।।
मे एक अमित बटपारा। कोउ सुनै न मोर पुकारा।।६।।
भागेहु नहि नाथ! उबारा। रघुनायक करहु सभारा।।७।।
कहि तुलसि दास सुनु रामा। लूटहि तसकर तव धामा।।८।।
चिता यह मोहि अपारा। अपयश नहि होइ तुम्हारा।।६।।

हे रघुनाथ जी हे धैर्यवान हित करने वाले! मै तुम्हे छोडकर अपनी दारुण विपत्ति और किसे सुनाऊँ?।।१।।

हे नाथ! मेरा हृदय है तो तुम्हारा निवास स्थान परन्तु आजकल उस मे बहुत चोर आ कर बस गय है।

वे चोर सदा जबरदस्ती करते रहते है। मेरी अनुनय विनय कुछ नही मानते। इन चारो मे प्रधान सात है— पाच विकार मद और अज्ञान। हे नाथ! ये सब बडा उपद्रव कर रहे है। मुझे अनाथ जान कर कुचले डालते है। मै अकेला हू और ये उपद्रवी चोर अपार है कोई मेरी पुकार तक नही सुनता। हे नाथ! भाग जाऊँ तो भी इन से पिण्ड छूटना कठिन है।

अब हे रघुनाथ! आप ही मेरी रक्षा कीजिए।

तुलसी दास जी कहते हे कि हे राम! इस मे मेरा क्या जाता है? चोर तुम्हारे ही घर को लूट रहे है। मुझे तो इस बात की चिन्ता है कि कही तुम्हारी ही बदनामी न हो जाय। आप का भक्त कहलाने पर भी मेरे नाम रत्न को यदि पाच विकार ले जावेगे तो इस मे बदनामी आप की ही होगी।

(८) मन स्वभाव

17

ग्रिहु तजि बन खण्ड जाईऐ चुनि खाईऐ कदा।
अजहु बिकार न छोडई पापी मनु मदा।।१।।
किउ छूटउ कैसे तरउ भव जलनिधि भारी।
राखु राखु मेरे बीठला जनु सरनि तुम्हारी।। रहाउ।।
बिखै बिखै की बासना तजीअ नह जाई।
अनिक जतन करि राखीऐ फिरि फिरि लपटाई।।२।।
जरा जीवन जोबनु गइआ किछु कीआ न नीका।
इहु जीअरा निरमोलको कउडी लगि मीका।।३।।
कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी।
तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी।।४।।

(राग बिलावलु/सबद–३) कबीर/८५५

जो लोग घर छोड कर जगलो मे जाते है और कन्द मूल आदि खा कर निर्वाह करते है उन के भीतर स भी विषय विकारो का अन्त नही होता। उन का मन भी भटकता रहता है।।१।।

मुक्ति कैसे मिल सकती है? इस भयकर ससार सागर को केसे पार हुआ जा सकता है। हे मेरे स्वामी! मेरी रक्षा करो। मै तुम्हारी शरण मे आया हू।।रहाउ।।

विविध प्रकार की विषय वासना का त्याग सभव नही हो पाता। यद्यपि अनेक यत्न करके मन को सयत करता हू, फिर भी यह बार बार वासना की ओर खिच जाता है।।२।।

यौवन का समय गया बुढापा आ गया किन्तु मै कुछ भी भला कार्य नही कर सका। मेरा यह जीवन जो अनमोल था कौडियो के बदले बिक गया।।३।।

कबीर जी करते है कि हे प्रभु! तुम सर्वव्यापी हो तुम्हारे समान कोई दयावान नही है और मेरे समान कोई पापी नही है।।४।।

हे भाई! विकारो की निद्रा से वही जाग सकता है जिस पर प्रभु कृपालु हो। उसकी आत्मिक पूजी बची रहती है उसके पास प्रभु का नाम धन बचा रहता है।।रहाउ।।

भाव साम्य -

गुरु अर्जन देव जी के इस सबद के भाव साम्य का एक पद तुलसी दास जी की विनय पत्रिका मे है। तुलसी दास जी काव्यात्मक प्रतिभा से नाम धन की रक्षा का भार राम पर ही डाल देते है–

मै केहि कहौ बिपति अति भारी। श्री रघुवीर धीर हितकारी।।१।।
मम हृदय भवन प्रभु तोरा। तह बसे आइ बहु चोरा।।२।।
अति कठिन करहि बरजोरा। मानहि नहि बिनय निहोरा।।३।।
तम मोह लोभ अहकारा। मद क्रोध बोध–रिपु मारा।।४।।
अति करहि उपद्रव नाथा। मरदहि मोहि जानि अनाथा।।५।।
मे एक अमित बटपारा। कोउ सुनै न मोर पुकारा।।६।।
भागेहु नहि नाथ! उबारा। रघुनायक करहु सभारा।।७।।
कहि तुलसि दास सुनु रामा। लूटहि तसकर तव धामा।।८।।
चिता यह मोहि अपारा। अपयश नहि होइ तुम्हारा।।९।।

हे रघुनाथ जी हे धैर्यवान हित करने वाले! मै तुम्हे छोडकर अपनी दारुण विपत्ति और किसे सुनाऊँ?।।१।।

हे नाथ! मेरा हृदय है तो तुम्हारा निवास स्थान परन्तु आजकल उस मे बहुत चोर आ कर बस गय है।

वे चोर सदा जबरदस्ती करते रहते है। मेरी अनुनय विनय कुछ नही मानते। इन चारो मे प्रधान सात है– पाच विकार मद और अज्ञान। हे नाथ! ये सब बडा उपद्रव कर रहे है। मुझे अनाथ जान कर कुचले डालते है। मै अकेला हू और ये उपद्रवी चोर अपार है कोई मेरी पुकार तक नही सुनता। हे नाथ! भाग जाऊँ तो भी इन से पिण्ड छूटना कठिन है।

अब हे रघुनाथ! आप ही मेरी रक्षा कीजिए।

तुलसी दास जी कहते है कि हे राम! इस मे मेरा क्या जाता है? चोर तुम्हारे ही घर को लूट रहे है। मुझे तो इस बात की चिन्ता है कि कही तुम्हारी ही बदनामी न हो जाय। आप का भक्त कहलाने पर भी मेरे नाम रत्न को यदि पाच विकार ले जावेगे तो इस मे बदनामी आप की ही होगी।

(८) मन स्वभाव

17

ग्रिहु तजि बन खण्ड जाईऐ चुनि खाईऐ कदा।

अजहु बिकार न छोडई पापी मनु मदा।।१।।

किउ छूटउ कैसे तरउ भव जलनिधि भारी।

राखु राखु मेरे बीठला जनु सरनि तुम्हारी।। रहाउ।।

बिखै बिखै की बासना तजीअ नह जाई।

अनिक जतन करि राखीऐ फिरि फिरि लपटाई।।२।।

जरा जीवन जोबनु गइआ किछु कीआ न नीका।

इहु जीअरा निरमोलको कउडी लगि मीका।।३।।

कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी।

तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी।।४।।

(राग बिलावलु/सबद–३) कबीर/८५५

जो लोग घर छोड कर जगलो मे जाते है और कन्द मूल आदि खा कर निर्वाह करते है उन के भीतर से भी विषय विकारो का अन्त नही होता। उन का मन भी भटकता रहता है।।१।।

मुक्ति कैसे मिल सकती है? इस भयकर ससार सागर को केसे पार हुआ जा सकता हे। हे मेरे स्वामी! मेरी रक्षा करो। मै तुम्हारी शरण मे आया हू।।रहाउ।।

विविध प्रकार की विषय वासना का त्याग सभव नही हो पाता। यद्यपि अनेक यत्न करके मन को सयत करता हू, फिर भी यह बार बार वासना की ओर खिच जाता है।।२।।

यौवन का समय गया बुढापा आ गया किन्तु मै कुछ भी भला कार्य नही कर सका। मेरा यह जीवन जो अनमोल था कौडियो के बदले बिक गया।।३।।

कबीर जी करते है कि हे प्रभु! तुम सर्वव्यापी हो तुम्हारे समान कोई दयावान नही है और मेरे समान कोई पापी नही है।।४।।

18

कवनु कवनु नही पतरिआ तुम्हरी परतीति।
महा मोहिनी मोहिआ नरक की रीति।।१।।
मन खुटहर तेरा नही बिसासु तू महा उदमादा।
खर का पैखरु तउ छुटै जउ ऊपरि लादा।। रहाउ।।
जप तप सजम तुम्ह खण्डे जम के दुख डाण्ड।
सिमरहि नाही जोनि दुख निरलजे भाण्ड।।२।।
हरि सगि सहाई महा मीतु तिस सिउ तेरा भेदु।
बीधा पच बटवारई उपजिओ महा खेदु।।३।।
नानक तिनु सतन सरणागती जिनि मनु वसि कीना।
तनु धनु सरबसु आपणा प्रभि जन कउ दीन्हा।।४।।

(राग बिलावल – ५८) गुरू अर्जन देव/८१५

हे मन! तुम पर विश्वास कर किस किस का पतन नही हुआ? महामोहिनी माया ने तुम्हे मोहित कर लिया है जो नरक का रास्ता है।।१।।

हे मन! तुम दुष्ट हो कपटी हो महान उपद्रवी हो इस लिए तुम्हारा कोई विश्वास नही है। गधे के पाव मे बन्धी रस्सी तभी खोली जाती है जब उस पर कुछ लाद दिया जाता है। मन गधे के समान है इस के पावो मे हरि नाम की रस्सी बन्धी रहे या फिर दु खो के बोझ हा तब यह अपने आप हरि नाम की ओर प्रवृत्त होता है अन्यथा खर मस्ती करता है।।रहाउ।।

मन मे अपनी दुष्ट खर मस्तियो के कारण जप तप आदि पूर्व कर्मो का प्रभाव कम कर दिया है और अपने को यमराज के डण्डो की चोट के योग्य बना लिया हे। हे बेशरम मसखर! क्या तुम मजाक समझ कर गर्भ दुख का स्मरण नही करते?।।२।।

परमात्मा सच्चा मित्र और सहायक है किन्तु उस से तुम दूर रहते हो। तुम्हारा पाच विकारो ने भेदन कर रखा है इसी का मुझे खेद है।।३।।

गुरु नानक कहते है कि जिन सन्तो ने अपना मन वश मे कर लिया है और तन धन सर्वस्व प्रभु को सौप दिया है उन की शरण मे आना ही श्रेयस्कर है।।४।।

(६) मन की खोज

19

सुखु मागत दुखु आगै आवै।

सो सुखु हमहु न मागिआ भावै।।१।।

बिखिआ अजहु सुरति सुखु आसा।

कैसे होई है राजा राम निवासा।। रहाउ।।

इसु सुख ते सिव ब्रहम डराना।

सो सुखु हमहु साचु करि जाना।।२।।

सनकादिक नारद मुनि सेखा।

तिन भी तन महि मनु नहि पेखा।।३।।

इसु मन कउ कोई खोजहु भाई।

तन छूटे मनु कहा समाई।।४।।

गुर परसादी जैदेउ नामा।

भगति कै प्रेमि इन ही है जाना।।५।।

इसु मन कउ नही आवन जाना।

जिस का भरमु गइआ तिनि साचु पछाना।।६।।

इसु मन कउ रुपु न रेखिआ काई।

हुकमे होइआ हुकमु बूझि समाई।।७।।

इस मन का कोई जानै भेउ।

इह मनि लीण भए सुखदेउ।।८।।

जीउ एकु अरु सगल सरीरा।

इसु मन कउ रवि रहे कबीरा।।९।।

(राग गउडी – सबद – ३९) कबीर/३३०

मुझे उस सुख के मागने की आवश्यकता नही जिस सुख के मागने पर दुख मिलता है।।१।।

आज भी हमारी सुरति माया मे लगी हुई है और इस माया मे ही सुखो की आशा लगाये बैठे है तो फिर ज्योति रुप निरकार का निवास इस सुरति मे कैसे हो सकता है।। रहाउ।।

इस माया सुख से तो शिव और ब्रह्मा ने भी कानो को हाथ लगाए पर हम ससारी जीवो ने इस सुख को सच्चा समझ रखा है। ब्रह्मा के चारो पुत्रा सनक आदि नारद मुनि और शेष नाग इन्होने भी इस माया सुख मे लगे मन को अपने शरीर मे नही देखा।।२ ३।।

हे भाई! कोई इस मन की खोज करो कि शरीर से विछोह होने पर यह मन कहा जा टिकता है? सति गुरु की कृपा से जय देव नाम देव जैसे भक्तो ने ही भक्ति के चाव से इस मन को जान लिया है।।४ ५।।

इस मन का जन्म मरण नही होता। जिस मनुष्य की दुविधा दूर हो जाती है उस ने सत्य को पहचान लिया है। इस मन का प्रभु से अलग कोई रूप अथवा निशान नही है। प्रभु के हुक्म के अनुसार वह अलग स्वरूप वाला बना है ओर प्रभु की रजा को समझकर उस मे लीन हो जाता है।।६ ७।।

जो मनुष्य इस मन के भेद को जान लेता है वह इस मन मे ही लीन हो कर सुख स्वरूप और प्रकाश स्वरूप हो जाता है। कबीर उस सर्वव्यापक मन को स्मरण कर रहा है जो स्वय एक है और तमाम शरीरो मे मौजूद है।।८ ९।।

भाव साम्य -

मन की खोज करना सतो का विषय है। जब मन परमात्मा मे लिव द्वारा लग जावे तब मन योगी है। जब इन्द्रियो के द्वारा भोगो मे लग जावे तो भोगी है। मन मे इच्छा शक्ति है। मन मे विक्षेप होने से मन मे पदार्थो की रुचि होती है। विक्षेप हटने पर मन एकाग्र होता है। इस तरह मन के दो रुप है इन मन (यह मन) और उन्मन (ऊचा हुआ मन)–

इहु मनु सकती इहु मनु सीउ। इहु मनु पच तत को जीउ।
इहु मनु ले जउ उनमनि रहै। तउ तीनि लोक की बातै कहै।।

यह मन शक्ति है यह मन शिव है। यह मन पाच तत्त्व का जीव हे इस मन को जो उन्मन अवस्था मे करता है वह तीन लोको की बाते कहता है।

जब काई व्यक्ति अपनी इयत्ता (सत्ता) मन मे ही प्रतीत करता है तब यह साधारण अवस्था है। जब मन मे टिकाव होता है तो आत्मा अलग प्रतीत होती है। इसे मन मे मन का प्रकट होना या प्रतीत होना विधि से वर्णन करते है–

मन महि मनु उलटो मरै

मन उलटकर (ससाराकार से ब्रह्माकार होकर) चेतनता मे लीन हो जावे यहा पहले मन का अर्थ मन है जबकि दूसरा मन विशुद्ध चेतन सत्ता है। इस को दूसरे शब्दो मे मन महि मनुआ चित महि चीता। ऐसे हरि के लोग अतीता। कहकर स्पष्ट किया गया है। जब मन के स्थान पर घर शब्द का प्रयोग करते है तब घर महि घरु देखाइ देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु से स्पष्ट होता है।

सन्त ज्ञानेश्वर ने गीता की टीका भावार्थ दीपिका (ज्ञानेश्वरी) मे मन की व्याख्या इस प्रकार की है–

परिस आता फुडेपणे। मन ते ऐसे।।१०३।।
जे इन्द्रिया आणि बुद्धि। माझारिलिये सधी।
रजोगुणाच्या खादी। तरळत असे।।१०४।।
नीळिमा अबरी। का मृगतृष्णा लहरी।
तैसे वायाचि फरारी। वावो जाहले।।१०५।।
जे प्रवृत्तीसि मूळ। कामा जयाचे बळ।
जे अखड सूये छळ। अहकारासी।।१११।।
जे इच्छेते वाढवी। आशाते चढवी।।
जे पाठे पुरवी। भयासि गा।।११२।।
द्वैत जेथ उठी। अविद्या जेणे लाठी।
जे इद्रियाते लोटी। विषयामाजी।।११३।।
सकल्पे सृष्टी घडी। सवेचि विकल्पूनि मोडी।
मनोरथाच्या उतरडी। उतरी रची।।११४।।
जे भुलीचे कुहर। वायु तत्त्वाचे अतर।
बुद्धीचे द्वार। झाकविले येणे।।११५।।
ते गा किरीट मन। या बोला नाही आन।।

(ज्ञानेश्वरी – १३)

हे अर्जुन! अब तुम को स्पष्ट करके बताता हू कि मन क्या है–

इन्द्रियो और बुद्धि के बीच की सन्धि पर रजोगुण के कन्धे पर चढकर जो बराबर खेलता रहता है और आकाश के नीले रग तथा सूर्य की किरणो मे के मृगजल की भाति जो दृश्यमान होने वाली वायु की चमक है वही मन है।।(१०४–१०५)।।

जो माया का मूल है जिससे काम वासना को बल मिलता है जो अहकार को उत्तेजित करता रहता है।।१११।।

जो इच्छाओ को तो पूर्ण करता है पर आशाओ को बढाता है औ भय को पुष्ट करता है।।११२।।

जो द्वैत भाव का उत्थान करता है अविद्या को बढाता है और इन्द्रियो को भोग के विषय मे फॅसाता है।।११३।।

जो केवल कल्पना से सृष्टि रचता है और रची हुई सृष्टि को नष्ट कर देता है जो मनोरथो के घडे बनाता और फिर उन्हे तोड देता है।।११४।।

जो भ्रम का आगार और वायु तत्त्व का सार है जो बुद्धि का द्वार बन्द कर देता है।।११५।।

हे अर्जुन! उसी को मन कहना चाहिए इसमे सशय नही है।

20

इहु मनु गिरही कि इहु मनु उदासी।
कि इहु मनु अवरनु सदा अविनासी।
कि इहु मनु चचलु कि इहु मनु बैरागी।
इसु मन कउ ममता किथहु लागी।।१।।
पण्डित इसु मन का करहु बीचारु।
अवरु कि बहुता पडहि उठावहि भारु।। रहाउ।।
माइआ ममता करतै लाई। एहु हुकमु करि स्रिसटि उपाई।
गुर परसादी बूझहु भाई। सदा रहहु हरि की सरणाई।।२।।
सो पडितु जो तिहा गुणा की पण्ड उतारै। अनदिनु एको नामु वखाणै।
सतिगुर की ओहु दीखिआ लेइ। सतिगुर आगे सीसु धरेइ।
सदा अलगु रहै निरबाणु। सो पण्डितु दरगहि परवाणु।।३।।

सभना महि एको एकु वखाणै। जा एको वेखै ता एको जाणै।

जा कउ बखसे मेले सोइ। ऐथे ओथै सदा सुखु होइ।।४।।

कहत नानकु कवन बिधि करे किआ कोइ। सोई मुकति जा कउ किरपा होइ।

अनदिनु हरि गुण गावै सोइ। सासत्र बेद की फिरि कूक न होइ।।५।।

(राग मलार – सबद) गुरु अमर दास जी/१२६१

यह मन गृहस्थ है कि यह मन सन्यासी है। यह मन अवर्ण हो कर मरता है और सदा अविनाशी भी है। यह मन चचल है यह मन वैरागी है। इस मन को ममता कहा से लग गई है।।१।।

हे पण्डित! सर्वप्रथम अपने मन पर विचार करो। इस विचार के अतिरिक्त और क्यो अहकार रुपी भार उठाते हो।। रहाउ।।

जिस कर्तापुरुष ने अपने हुकम से यह सृष्टि बनाई है उसी ने अपनी माया से इस मन को अवर्ण होने के कारण माया के ममत्व से बान्धा है। हे भाई! गुरु की कृपा से इस बात को समझो। केवल उस हरि की शरण मे रहो।।२।।

हमारे विचार मे पण्डित वही है जो सत रज तम तीनो गुणो की गठरी को उतारता है और एक नाम का निरन्तर उच्चारण करता है। वह सतिगुरु से दीक्षा लेता है और सतिगुरु के सामने अहकार त्याग कर विनम्र हो जाता है। वह निर्लिप्त होकर निर्वाण का मूर्त स्वरूप हो जाता है। ऐसा पडित सत्सग मे अथवा परलोक मे हरि को स्वीकृत होता है।।३।।

सब जीवो मे जो एक अद्वितीय प्रभु का बखान करता है। जब एक प्रभु को देखता है तो उस का प्रभु से साक्षात्कार होता है। जिन्हे प्रभु की कृपा होती है उन्हे सतिगुरु मिलने है। उन को ही इस लोक और परलोक दोनो मे सदा सुख मिलता है।।४।।

गुरु नानक देव कहते है कोई कुछ भी विधि करे किन्तु मुक्ति उसे ही मिलेगी जिस पर प्रभु की कृपा होगी। वह रात दिन हरि के गुणो का गायन करता है। उस को शास्त्र या वेद आदि की पुकार की आवश्यकता नही होती।

– – – – –

(१०) देही विवेक जागरण

21

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतडा लबि रगाए।

मेरै कत न भावै चोलडा पिआरे किउ धन सेजै जाए।।१।।

हउ कुरबानै जाउ मिहरवाना हउ कुरबाणै जाउ।

हउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ।

लैनि जो तेरा नाउ तिना के हउ सद कुरबाणै जाउ।। रहाउ।।

काइआ रडणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ।

रडण वाला जे रडै साहिबु ऐसा रगु न डीठ।।२।।

जिन के चोले रतडे पिआरे कतु तिना कै पासि।

धूडि तिना की जे मिलै जी कहु नानकु की अरदासि।।३।।

आपे साजे आपे रगे आपे नदरि करेइ।

नानक कामणि कते भावै आपे ही रावेइ।।४।।

(राग तिलग/सबद – ३) गुरु नानक/७२१–७२२

हे मेहरबान प्रभु! मै कुरबान होता हू मै बलिहार होता हू मै बलैया लेता हू उनकी जो तेरा नाम स्मरण करते है।।रहाउ।।

जिस जीव स्त्री के इस शरीर मे माया (मोह) की माण्ड लगी हो। फिर उसने इसे लोभ से रगा लिया हो। वह जीव स्त्री स्वामी प्रभु के चरणो मे नही पहुच सकती क्योकि जीव का यह चोला (शरीर जीवन) परमात्मा (प्रभु) को पसन्द नही है।।१।।

अगर यह शरीर रगरेज की भट्टी बन जावे और हे सज्जन! अगर इसमे मजीठ के समान पक्के रग का प्रभु का रग मिलाया जावे। फिर (रजामी) प्रभु स्वय जीव स्त्री के मन को रग मे डुबा दे तो ऐसा रग चढता है जो पहले कभी देखा न गया हो।।२।।

हे प्रिय सज्जन जिन जीव स्त्रियो के (शरीर) जीवन नाम रग से रगे हुए है

स्वामी (प्रभु) उन्ही के पास निवास करता है। हे सज्जन! नानक की ओर से उनको प्रार्थना कर भला कही नानक को उनके चरणो की धूल मिल जावे।।३।।

हे नानक! जिस जीव स्त्री पर प्रभु स्वय कृपा की नजर करता है उसका स्वय ही सवारता है। खुद ही नाम का रग चढाता है। वह जीव स्त्री स्वामी (प्रभु) को स्वय ही प्रिय लगती है। उसको प्रभु स्वय ही चरणो मे स्थान देता हे।।४।।

(तिलग – महला १)

भाव साम्य -

इस सबद मे गुरु नानक देव जी ने कपडे रगने सम्बन्धी साग रुपक का सुन्दर निर्वाह किया है। रगरेज कपडे रगने से पहले माण्ड लगाता है जिस स रग चमकीला चढे। हमने अपने शरीर मे मोह की माण्ड लगाई है जिस से लोभ का रग इस पर निखर रहा है। माया का यह रग अस्थायी है।

दूसरी ओर वे जीव स्त्रिया है जो प्रभु के द्वारा प्रेम के पक्क रग मे रगी हुई है। प्रभु उन स्त्रियो को अपने चरणो मे स्थान देता है।

कबीर ने भी अपनी चुनरी साहेब के द्वारा रगा जाने का वर्णन किया है। कबीर का सबद सरल और एकागी है इस मे विषयानुरक्त जीव ओर प्रेममय जीव को आमने सामने नही रखा गया है–

साहेब है रॅगरेज चुनरी मेरी रग डारी।

स्याही रग छुडाय के दियो मजीठा रग।

धोय से छूटै नही रे दिन दिन होत सुरग।।

भाव के कुण्ड नेह के जल मे प्रेम रग देइ बोर।

दुख देह मलिन लुटाय कै खूब रगी झकझोरि।।

साहिब ने चुनरी रगी रे प्रीतम चतुर सुजान।

सब कुछ उस पै वार दूँ रे तन मन धन और प्रान।।

कहे कबीर रॅगरेज पिआरे मुझ पर हुए दयाल

सीतल चुनरी ओढि के रे भई हौ मगन निहाल।।

(कबीर/२२६) हजारी प्रसाद द्विवेदी

22

सभि अवगण मै गुणु नहीं कोई। किउ करि कत मिलावा होई।।१।।
न मै रूपु न बके नैणा। न कुल ढगु न मीठे बैणा। रहाउ।।
सहजि सीगार कामणि करि आवै। ता सोहागणि जा कतै भावै।।२।।
न तिसु रूपु न रेखिआ काई। अति न साहिबु सिमरिआ जाई।।३।।
सुरति मति नाही चतुराई। करि किरपा प्रभ लावहु पाई।।४।।
खरी सिआणी कत न भाणी। माइआ लागी भरमि भुलाणी।।५।।
हउमै जाई ता कत समाई। तउ कामणि पिआरे नव निधि पाई।।६।।
अनिक जनम बिछुरत दुखु पाइआ। करु गहि लेहु प्रीतम प्रभ राइआ।।७।।
भणति नानकु सहु है भी होसी। जै भावै पिआरा तै रावेसी।।८।।

(राम सूही अष्टपदी) गुरु नानक/७५०

मेरे भीतर समस्त अवगुण ही अवगुण है गुण एक भी नही इसलिए मुझे पति प्रभु का मिलाप कैसे प्राप्त हो सकता है।।१।। न मै रुपवान हू न मेरे नेत्र सुन्दर है न मेरा आचरण कुलीन लोगो सा हैं मेरी बोली भी मीठी नही है।।रहाउ।।
अगर कामिनी सहज श्रृगार कर के आती है तो वह सोहागिन तभी है जब प्रभु पति को अच्छी लगती हे।।२।। उस पति प्रभु की कोई आकृति नही है न उस को कोई चिह्न है। यदि जीवन मे उसे भुलाए रखा तो अन्तिम समय मे प्रभु को स्मरण नही किया जा सकता।।३।। हे प्रभु! मेरी ध्यानावस्था (सुरति) ऊँची नही है मुझ मे बुद्धि और चतुराई का अभाव है। आप स्वय ही कृपा कर के चरणो मे जगह दो।।४।। जो जीव स्त्री माया मे फसी रहे दुविधा मे पडकर जीवन मार्ग मे विचलित रहे वह कितनी ही चतुर क्यो न हो किन्तु पति प्रभु को अच्छी नही लगती।।५।। हे पति प्रभु! यदि अह भावना दूर हो तभी तुम्हारे चरणो मे जगह मिल सकती है तभी ही हे प्यारे! जीव स्त्री नौ निधियो के स्रोत तुम को पा सकती है।।६।। तुम से बिछड कर अनेक योनियो मे भटक कर मै ने बहुत दु ख सहा ह। अब तुम हाथ पकड कर मुझे उबार लो।।७।। गुरु नानक प्रार्थना करते है कि प्रभु सदा सत्य है और भविष्य मे भी सदा सत्य रहेगा। जो जीव स्त्री उन्हे भली लगती है उसे वे अपने साथ मिला लेते है।।८।।

23

अम्रित काइआ रहै सुखाली बाजी इहु ससारो।
लबु लोभु मुचु कूड़ु कमावहि बहुतु उठावहि भारो।
तू काइआ मै रुलदी देखी जिउ धर उपरि छारो।।१।।
सुणि सुणि सिख हमारी।
सुक्रितु कीता रहसी मेरे जीअडे बहुडि न आवै वारी।। रहाउ।।
हउ तुध आखा मेरी काइआ तू सुणि सिख हमारी।
निन्दा चिन्दा करहि पराई झूठी लाइतबारी।
वेलि पराई जोहहि जीअडे करहि चोरी बुरिआरी।
हसु चलिआ तू पिछै रहीएहि छुटडि होइअहि नारी।।२।।
तू काइआ रहीअहि सुपनतरि तुधु किआ करम कमाइआ।
करि चोरी मै जा किछु लीआ ता मनि भला भाइआ।
हलति न सोभा पलति न ढोई अहिला जनमु गवाइआ।।३।।
हउ खरी दुहेली होई बाबा नानक मेरी बात न पुछै कोई।। रहाउ।।
ताजी तुरकी सुइना रुपा कपड केरे भारा।
किस ही नालि न चले नानक झडि झडि पए गवारा।
कूजा मेवा मै सब कुछ चाखिआ इकु अम्रितु नामु तुमारा।।४।।
दे दे नीव दिवाल उसारी भसमन्दर की ढेरी।
सचे सचि न देई किस ही अन्धु जाणै सभ मेरी।
सोइन लका सोइन माडी सपै किसै न केरी।।५।।
सुणि मूरख मन अजाणा।
होगु तिसै का भाणा।। ३ रहाउ।।
साहु हमारा ठाकुरु भारा हम तिस के वणजारे।
जीउ पिण्डु सभ रासि तिसै की मारि आपे जीवाले।।६।।

(गउडी चती सबद – १३) गुरु नानक/१५४

जीव– हे काया! तू अपने सुखो मे मस्त है क्या तू अमर है? यह ससार ता एक खेल मात्र है। तुझ मे बहुत लोभ और मोह है जिस से तू मिथ्या कमाइ कर रही है ओर पापो का भार उठा रही है। हे काया! मैने तुझे पाव के नीचे ऐसे

दबते देखा है जैसे धरती पर राख।।१।।

काया– हे जीव! अब मेरी शिक्षा भी सुनो– अब मेरे तुम्हारे मिलन की बारी नही आवेगी। इस समय का शुभ कर्म ही काम आवे गा।।रहाउ।।

जीव– हे मेरी काया! तुम मेरी शिक्षा भी सुनो! तुम जो पराई निन्दा नुक़ता चीनी और झूठी चुगल खोरी करती हो क्या यही शुभ कर्म है जिस का उपदेश दे रही हो।

काया– हे मेरे जीव! पराई स्त्री का चोरी से देखना आदि कर्म जो तू मेरे अन्दर बैठ कर आख की खिडकियो से करता है यह क्या चोरी और बुराई नही है?

जीव– जब हस उड जाता है तो तू पीछे रह जाती है। तब बताओ तुम्हारी दशा परित्यक्ता नारी की तरह क्यो हो जाती है।।२।।

वास्तविक बात यह है कि हे काया तूने कोई शुभ कर्म नही किया। मैने चोरी आदि कर के जो कुछ प्राप्त किया तब वह मुझे और तुम्हे दोनो को अच्छा लगा। अब हमारे दोनो के मेल से बने मानव जीवन को न इस लोक मे शोभा है न परलोक मे।।३।।

काया गुरु नानक से– हे बाबा नानक! मै बहुत दुखी हू। मेरी बात पूछने वाला कोई नही है (यहा मै जलाई जाऊगी आगे मुझे पहुचना नही है।)(रहाउ – २)

अरब के और तुर्किस्तान के घोडे सोना चादी और कपडो के भार किसी गवार के साथ नही गए। सब पीछे ही रह जाते है। हे नानक! मै ने मेवा और मिश्री के मीठे पन को देखा है हे हरि तेरे नाम अमृत के समान कुछ मीठा नही है।।४।।

काया ओर जीव ने जो गहरी नीव बना कर महल बनाये वह महल राख की ढेरी हो गये। मनुष्य माया इकट्ठी करता है इकट्ठी कर के सभालता है किन्तु देता किसी को नही है। अन्धा जानता है कि मेरी है। यह नही जानता कि जब सोने की लका और सोने के महल रावण के साथ नही गए तो माया किस के साथ जावेगी?।।५।।

हे अनजान मूर्ख मन (जीव) सुन! परमात्मा का भाणा होगा। परमात्मा की इच्छा या हुक्म सर्वोपरि है।। रहाउ।।

इस लिए यही समझ आता है कि हमारा मालिक बहुत बडा शाहूकार है हम उस के वणजारे है। हमारा जीव और हमारा काया उसी की पूजी है वह खुद

ही मारता है और खुद ही जीवन देता है इसलिए हमे अपने जीव (मन) से उस का ध्यान और काया से उस की सेवा करनी चाहिए।।६।।

भावार्थ -

यह शब्द एक बडी प्रागलभ्य काव्य शैली मे लिखा हुआ है। इस मे इस प्रकार का उपदेश है कि मनुष्य जो जीवात्मा और काया के मेल से बना है इस के लिए सुक्रित करने का अर्थात नाम जपने का अवसर मनुष्य जन्म ही है। यह अवसर हाथ से निष्फल निकल जाता है जीव देह के भोगो मे रम जाता है और यह विचार कभी गम्भीरता से नही स्फुटित होता कि देह और जीवात्मा का सगम टूट जाना है। देह के होते हुए जो धन पदार्थ सामग्री इकट्ठे किये है सब यही रह जावेगे, जीवात्मा ने यहा से बुरे कर्मो के बुरे सस्कार लेकर जाना है उन बुरे सस्कारो से परलोक मे जीव सुखदायी नही हो पावेगा। इसलिए जीवन शुभ करनी मे बिताना चाहिए। वाहिगुरु को शाह समझ कर नाम सामग्री लेकर व्यापार करना चाहिए और अपने आप को प्रभु को अर्पित करने की आवश्यकता समझनी चाहिए।

(सन्थ्या भाई वीर सिह जी/१०५७)

24

बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए नामु महा रसु पीओ।
बिनु रस चाखे बुडि गई सगली सुखी न होवत जीओ।।
मानु महतु न सकति ही काई साधा दासी थीओ।
नानक से दरि सोभावते जो प्रभि अपुनै कीओ।।
हरिचन्दउरी चित भ्रमु सखीए मृग त्रिसना द्रुम छाइआ।
चचलि सगि न चालती सखीए अति तजि जावत माइआ।
रसि भोगण अति रूप रस माते इन सगि सूखु न पाइआ।
धनि धनि हरि साध जन सखीए नानक जिनी नामु धिआइआ।।२।।
जाइ बसहु वडभागणी सखीए सन्ता सगि समाईऐ।
तह दूख न भूख न रोगु बिआपै चरन कमल लिव लाईऐ।
तह जनम न मरणु न आवण जाणा निहचलु सरणी पाईऐ।
प्रेम बिछोह न मोहु बिआपै नानक हरि एकु धिआईऐ।।३।।
द्रिसटि धारि मनु बेधिआ पिआरे रतडे सहजि सुभाए।

सेज सुहावी सगि मिलि प्रीतम अनद मगल गुण गाए।।
सखी सहेली राम रगि राती मन तन इछ पुजाए।
नानक अचरजु अचरज सिउ मिलिआ कहणा कछू न जाए।।४।।

(राग बिलावलु सबद – ५) गुरु अर्जन देव जी/८०२–८०३

हे सखी! विषय विकारो के फीके रसो का त्याग कर हरि नाम रुपी महारस का पान करो। उस रस का पान किये बगैर सारी सृष्टि डूब रही है कोई जीव सुख को प्राप्त नही होता। तुम मे आत्म सम्मान गौरव और शक्ति तीनो की कमी है इसलिए तुम सन्तो की सेवा मे रहो। गुरु नानक कहते है जिन्हे प्रभु अपना बना लेता है वे ही सुशोभित होते है।।

हे सखी! मन का भ्रम मृगतृष्णा के समान है। यह माया बडी चचल है पेडो की छाया और मृगतृष्णा के समान यह कभी साथ नही देती अतत साथ छोड जाती है। रसो के भोग विलास और रुप रस के मतवाले पन मे कोई सुख नही पा सकता। वे सन्त जन धन्य है जिन्होने परमात्मा के नाम का ध्यान किया है।।२।।

ऐ सौभाग्यशाली जीवात्मा रुपी सखी! तुम भी सन्तो की सगति मे रहो। वहा किसी प्रकार का दुख भूख या रोग नहीं होता जीव प्रभु के चरण कमलो मे प्रीत करने लगता है। वहा जीव को निश्चल शरण मिल जाती है जिस मे जन्म मरण या आवागमन नही होता। गुरु नानक देव कहते हैं कि एक प्रभु का सिमरण करने से जीव को प्रेम मोह वियोग आदि नही होता।।३।।

प्यारे परमात्मा ने कृपा कर के हमारे मन को बीध लिया है और हम सहज ही उस के प्रेम मे रग गये है। अपने प्रियतम से एक ही सेज पर मिल कर उन के अनन्त गुणो का मगलमय गान किया है। जो सखिया इसी प्रकार राम के रग मे मग्न है उन के तन मन की सब इच्छाये पूर्ण हो गयी है। गुरु नानक का कथन है कि जीव और प्रभु के मिलन की स्थिति एक विस्मय के दूसरे विस्मय मे मिल जाने की है इसके सम्बन्ध मे वाणी मूक है कुछ कहा नही जा सकता।।४।।

भाव साम्य -

विकारो की व्याख्या के बाद मन के सामने दो विकल्प है एक प्रभु के निकट रहने का दूसरा ससार के विषयो का।

आन्ध्र प्रदेश के सन्त त्याग राज मन से पूछते है–

सच्ची बात बता रे मन! किस मे सच्चा सुख है।

रघुपति की सन्नधि या भव निधि (ससार के पदार्थ) किस से मिलता सुख है।

दूध दही नवनीत रसो का स्वाद तुझे हितकर है

या कि सियावर ध्यान सुधा रस आत्मलोक हितकर है।

शम दम की निर्मल सरिता का मज्जन देता सुख है

या कि विषयो की कलुषित वापी (कूप बावली) देती सच्चा सुख है।

ममता के भव बन्धन से नर स्तुति मे सुख है

त्याग राज या परम पुरुष के यश कीर्तन मे सुख है।

निधि चाल सुखमा रामुनि

सन्निधि सेव सुखमा निजमुगबल्कु मनसा।

दधि नवनीत क्षीरमुलु रुचो

दाशरथी ध्यान भजन सुधा रसम रुचो।

शम दम मनु गगा स्नानम सुखमो

विषय कलुषित वापी सुखमो।

ममता बधन युत न स्तुति सुखमो

सुमति त्याग राज नुतुनि कीर्तन सुखमो।

गुरुवाणी मे विषय वन के फीके रसो को त्याग कर नाम अमृत के पान का सन्देश है। रस भोगो को छोड कर सत्सगति का उपदेश दिया गया है। रस भोगो मे कोई सुख नही है।

दुनियावी दौलत का जोर व घमण्ड आध्यात्मिक जिन्दगी के सत्य के उजाले के सामने धुएँ की तरह नष्ट हो जाता है।

(सूरतुद दुखान {धुआ/कुरान मजीद – XLIV/१०})

–––––

(११) प्रेरणा

25

रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है।
माइआ को सगु तिआगि प्रभ जू की सरनि लागु।
जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ काजु है।। रहाउ।।
सुपने जिउ धनु पछानु काहे परि करत मानु।
बारू की भीति जैसे बसुधा को राजु है।।१।।
नानक जन कहतु बात बिनसि जैहे तेरो गातु।
छिनु छिनु करि गइओ कालु तैसे जातु आजु है।।२।।

(राग जैजावती) गुरु तेग बहादुर/१३५२

ऐ जीव! प्रभु नाम का स्मरण कर तुम्हारे लिये यही करने योग्य कार्य है। विकार युक्त कार्यो की आसक्ति छोड कर परमात्मा की शरण लो। सासारिक सुखो को मिथ्या मानो। दुनिया की सब शान शौकत झूठी समझो।।रहाउ।।

दुनिया मे धन दौलत मिलना वैसा ही समझो जैसे वह सपने मे मिला हो। घमण्ड किस बात पर करे दुनिया का राज्य रेत की दीवार जैसा है जो कभी भी ढह सकती है।।१।।

गुरु नानक कहते है कि बात कहते कहते तुम्हारा शरीर नष्ट हो जावेगा। क्षण क्षण कर के जैसे कल का समय बीत गया वैसे ही आज बीत रहा है।

―――――

(१२) विषय मिठास का त्याग

26

लख सिउ प्रीति होवै लख जीवणु किआ खुसीआ किआ चाउ।
विछुडिआ विसु होइ विछोडा एक घडी महि जाइ।
जे सउ वरहिआ मिठा खाजै भी फिरि कउडा खाइ।
मिठा खाधा चिति न आवै कउडतणु धाइ जाइ।
मिठा कउडा दोवै रोग।
नानकु अति विगुते भोग।

झखि झखि झखणा झगडा झाख।

झखि झखि जाहि झखहि तिन्ह पासि।।

जीव का प्रेम लाखो लोगो से हो लाखो वर्षो तक जिए लाखो खुशियो और चाव उस के जीवन मे हो इन सब से बिछुडने पर घडी भर मे ही खुशिया समाप्त हो जाती है और बिछुडने का दुख विष की तरह सालता है। सौ बरस तक मीठा खाया तो भी कडवा खाना पडा। मीठा खाने पर ध्यान भी नही रहता। जब कि कडवा खाने की स्मृति कभी भूलती ही नही।

गुरु नानक कहते है कि मीठा और कडवा दोनो रोग हैं अतत भोगो के कारण व्यक्ति को हानि ही उठानी पडती है। ये सब बेकार लाभ रहित ओर अनावश्यक जीवन व्यवहार है तो भी जीव विषय विकारो की ओर खिचते ही रहते है।

27

कापडु कातु रगाइआ रागि। घर गच कीते बागे बाग।

साद सहज करि मनु खेलाइआ। तै सह पासहु कहणु कहाइआ।

मिठा करि कै कउडा खाइआ। तिनि कउडे तनि रोगु जमाइआ।

जे फिरि मिठा पेडै पाइ। तउ कउडतणु चूकसि माइ।

नानक गुरमुखि पावै सोइ। जिसनो प्रापति लिखिआ होइ।।

(वार सारग सलोक–१२ {१५}) गुरु नानक/१२४३

घर मे कपडो तथा काठ के सामान को विभिन्न रगो से सजाता है। घर की दीवारो को बिल्कुल सफेद कर लेता है। स्वादो और सुखो से मन को बहलाता है। तुमने स्वामी प्रभु को माया मे खचित रहने के कारण उपालम्भ का मौका दिया। विषय विकारो की अन्तिम कटुता को भुला कर और उन्हे मीठा समझ कर लिप्त रहा। उस कडवे स्वाद ने शरीर मे रोग पैदा किये। अब यदि जीव पुन केवल मीठे रस का ही भोग करे (नाम जपे) तो कडवी माया के प्रभाव से मुक्त हो सकता है। गुरु नानक कहते है कि वह तत्व केवल गुरु के द्वारा ही मिलता है जिस के भाग्य मे पूर्व लिखित होता वही उस तत्व ज्ञान को पाता है।

भाव साम्य -

काम भोगो के सेवन के दुष्परिणाम का वर्णन गौतम बुद्ध ने सुत्त निपात मे किया है। गौतम बुद्ध ने आरभ मे मीठे किन्तु परिणाम मे विष के समान विषयो

के त्याग किये जाने पर बल दिया है—

काम कामयमानस्स तस्स चेत समिज्झति।
अद्धा पीतिमानो होति लद्धा मच्चो यदिच्छति।।१।।
तस्स चे कामयमानस्स छन्दजातस्स जन्तुनो।
ते कामा परिहायन्ति सल्लविद्धोव रुप्पति।।२।।
यो कामे परिवज्जेति सप्पस्सेव पदा सिरो।
सो इम विसत्तिक लोके सतो समतिवत्तति।।३।।
खेत्त वत्थु हिरञ्ञ वा गवास्स दासपोरिस।
थियो बन्धु पुथू कामे यो नरो अनुगिज्झति।।४।।
अबलान बलीयन्ति मद्दन्ते न परिस्सया।
तनो न दुक्खमेवेन्ति नावे भिन्नमिवोदक।।५।।
तस्मा जन्तु सदा सत्तपो कामानि परिवज्जये।
ते पहाय तरे ओघ नाव सिञ्चित्व पारगू ति।।६।।

(सुत्त निपात/अट्ठक वाग/कामसुत्त) गौतम बुद्ध

यदि भोग विलास की इच्छा करने वाले की इच्छा पूरी हो जाती है तो वह व्यक्ति अवश्य ही अपनी इच्छा पूरी होने से प्रसन्न मन होता है।।१।।

यदि इच्छा करने वाले तृष्णा के वशीभूत उस व्यक्ति की वे काम भोग की चीजे नष्ट हो जाती है तो वह तीर चुभने की भॉति पीडित होता है।।२।।

सर्प के सिर को पैरो से बचाने की भॉति जो काम भोग को त्याग देता है तो वह इस ससार मे स्मृति के साथ विषैली तृष्णा को त्याग देता है।।३।।

जो मनुष्य खेती बारी (=वस्तु) सोना गौ घोडा दास स्त्रियो या बन्धु सम्बन्धी अनेक प्रकार के भोग विलास मे फॅस जाता है।।४।।

तो उसे वासनाये दबाती है और परेशानियॉ मर्दन करती है और फिर जैसे फूटी हुई नौका मे पानी घुस जाता है वैसे ही उसके पीछे दु ख हो लेता है।।५।।

इसलिए व्यक्ति को सदा स्मृतिमान हो काम भोगो का परित्याग कर देना चाहिए। उनका त्याग करे नाव को उलीच कर भव सागर को पार कर जाय।।६।।

28

मोती त मदर ऊसरहि रतनी त होहि जडाउ।
कसतूरि कुगू अगरि चदनि लीपि आवै चाउ।
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ।।१।।
हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ।
मै आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ।। रहाउ।।
धरती त हीरे लाल जडती पलघि लाल जडाउ।
मोहणी मुखि मणी सोहै करे रगि पसाउ।
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ।।२।।
सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ।
गुपत परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ।
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ।।३।।
सुलतानु होवा मेलि लसकर तखत राखा पाउ।
हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ।
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ।।४।।

(सिरी राग सबद – १) गुरु नानक/१४

मैने हरि (अकाल पुरुष) की प्राप्ति को अपना मनोरथ बनाया है क्योकि हरि के बिना जी जलभुन जाता है। गुरु से पूछने पर भी मुझे ज्ञात हुआ कि सदैव सुख का हरि के बिना अन्य कोई ठिकाना नही है।।रहाउ।।

मैने अपने लिए और कोई कामना नही रखी जैसे पदार्थ की तृष्णा मोतियो और रत्नो से जडे भवन हो कस्तूरी अगरु कगू (केसर) और चन्दन का लेप हो। सम्भवत मै इनको देखकर मोहित हो जाऊ और हे हरि! मोहित होकर मुझे नाम भी भूल जावे और फिर वह नाम चित्त मे ही न आवे।।१।।

अब भोगो की तृष्णा का त्याग करते हुए कथन करते है कि भवनो मे फश हीरे व लाल से जटित हो उस पर लालो से जडा पलग बिछा हो पलग पर मोह लेने वाली नारी बैठी हो जिसके मुख पर मणियो का शृगार सुशोभित हो तथा वह प्रेम से हाव भाव करे। इस प्रकार मन से मोहित होकर तेरा नाम न भूल

जाऊ और पुन वह नाम चित्त ही न आवे।।२।।

अब विभूतियो की तृष्णा का उल्लेख करते है। अगर मै भोगो मे न पडा किन्तु मुझे योग शक्ति से ऋद्धि सिद्धि प्राप्त हो जावे। फिर किसी भी सिद्धि मे स्थित होकर ऋद्धियो का आमन्त्रण करु और मै इच्छानुसार गुप्त या प्रगट हो जाऊ। इस प्रकार के ऐश्वर्य से हे हरि कही तेरा नाम न भूल जाऊ और फिर वह नाम चित्त ही न आवै।।३।।

अन्त मे प्रभुता की तृष्णा का उल्लेख करते है अगर मै सुलतान भी हो जाऊ और सैनिको की फौज इकट्ठी कर लू। सिहासन पर विराजमान हो जाऊ मेरे हुकुम से कर वसूल हो। यह सब उपलब्धि भी एक पवन का झोका है इस क्षण भगुर प्रभुता को पाकर कदाचित हे हरि! मै मन मे मोहित होकर तेरा नाम न भूल जाऊ और फिर वह नाम चित्त ही न आवै।।४।।

अनुशीलन -

इस सबद से गुरु गन्थ साहिब की राग मयी वाणी का आरम्भ होता है। इस मे मानव जीवन मे मनुष्य को प्रभु से अलग करने वाले चार आकर्षणो का वर्णन चार पदो मे किया गया है। गुरु नानक देव जी ने इस विषय को अष्टपदी और श्लोको मे भी दोहराया है। राग माझ की वार मे पउडी ६ के साथ सलग्न चार श्लोको मे ऐश्वर्य की इन बाधाओ के होते हुए भी प्रभु स्तुति मे लीन रहने का सन्देश दिया गया है।

इस सबद के सम्बन्ध मे गुरु नानक देव जी की जन्म साखिओ मे दो सन्दर्भ मिलते है। गुरु नानक देव जी जब पूर्व की यात्रा मे आसाम गये तब भाई मरदाना आसाम मे एक जादूगरनी नूरशाह के प्रभाव मे आ गये। तब गुरु नानक देव जी ने मरदाना को विकारो से रहित करने के लिए इस सबद का उच्चारण किया। दूसरे मत के अनुसार इस सबद का उच्चारण आसाम से उडीसा यात्रा के समय कटक से पुरी मार्ग के बीच मे हुआ। कटक के राजा प्रताप रुद्र ने (१४८५–१५३३) गुरु जी का कटक मे स्वागत किया जिस की प्रसिद्धि पुरी तक पहुची। पुरी मे तान्त्रिक विद्या जानने वाला पण्डित कलिजुग जगन्नाथ जाने वाली सडक पर आ गया। उसने पहले गुरु जी को डराने का प्रयास किया फिर कनक और कामिनी का प्रलोभन दिया। कलियुग के उपदेश के लिए गुरु जी ने इस सबद का उच्चारण किया।

29

चोआ चन्दनु अकि चडावउ। पाट पटबर पहिरि हढावउ।

बिनु हरि नाम कहा सुखु पावउ।।१।।

किआ पहिरउ किआ ओढि दिखावउ।

बिनु जगदीस कहा सुखु पावउ।। रहाउ।।

कानी कुण्डल गलि मोतीअन की माला। लाल निहाली फूल गुलाला।

बिनु जगदीस कहा सुखु भाला।।२।।

नैन सलोनी सुन्दर नारी। खोड सीगार करै अति पिआरी।

बिनु जगदीस भजे नित खुआरी।।३।।

दर घर महला सेज सुखाली। अहिनिसि फूल बिछावै माली।

बिनु हरि नाम सु देह दुखाली।।४।।

हैवर गैवर नेजे वाजे। लसकर नेब खवासी पाजे।

बिनु जगदीस झूठे दिवाजे।।५।।

सिधु कहावउ रिधि सिधि बुलावउ। ताज कुलह सिरि छत्रु बनावउ।

बिनु जगदीस कहा सचु पावउ।।६।।

खानु मलूकु कहावउ राजा। अबे तबे कूडे है पाजा।

बिनु गुर सबद न सवरसि काजा।।७।।

हउमै ममता गुर सबदि विसारी। गुरमति जानिआ रिदै मुरारी।

प्रणवति नानक सरणि तुमारी।।८।।

(गउडी अष्टपदी – १०) (गुरु नानक देव जी/२२

यदि मै इत्र और चन्दन शरीर पर लगा लू, यदि मै रेशमी वस्त्र पहनू कि फिर भी यदि परमात्मा का नाम मुझ मे नही है तो कही भी मे सुख प्राप्त न कर सकता।

सुन्दर सुन्दर वस्त्र पहनने और पहन कर दूसरो को दिखाने का क्या ला परमात्मा के अतिरिक्त सुख कही भी नही मिल सकता है।

यदि मै अपने कानो मे कुण्डल पहन लू, गले मे मोतियो की माला पहन मेरे लाल रग के गद्दे पर लाल पुष्प बिखरे हो फिर भी परमात्मा के स्मरण बिना मै कही भी सुख प्राप्त नही कर सकता।।२।।

जाऊ और पुन वह नाम चित्त ही न आवे।।२।।

अब विभूतियो की तृष्णा का उल्लेख करते है। अगर मै भोगो मे न पडा किन्तु मुझे योग शक्ति से ऋद्धि सिद्धि प्राप्त हो जावे। फिर किसी भी सिद्धि मे स्थित होकर ऋद्धियो का आमन्त्रण करु और मै इच्छानुसार गुप्त या प्रगट हो जाऊ। इस प्रकार के ऐश्वर्य से हे हरि कही तेरा नाम न भूल जाऊ और फिर वह नाम चित्त ही न आवै।।३।।

अन्त मे प्रभुता की तृष्णा का उल्लेख करते है अगर मै सुलतान भी हो जाऊ और सैनिको की फौज इकट्ठी कर लू। सिहासन पर विराजमान हो जाऊ मेरे हुकुम से कर वसूल हो। यह सब उपलब्धि भी एक पवन का झोका है इस क्षण भगुर प्रभुता को पाकर कदाचित हे हरि! मै मन मे मोहित होकर तेरा नाम न भूल जाऊ और फिर वह नाम चित्त ही न आवै।।४।।

अनुशीलन -

इस सबद से गुरु गन्थ साहिब की राग मयी वाणी का आरम्भ होता है। इस मे मानव जीवन मे मनुष्य को प्रभु से अलग करने वाले चार आकर्षणो का वर्णन चार पदो मे किया गया है। गुरु नानक देव जी ने इस विषय को अष्टपदी और श्लोको मे भी दोहराया है। राग माझ की वार मे पउडी ६ के साथ सलग्न चार श्लोको मे ऐश्वर्य की इन बाधाओ के होते हुए भी प्रभु स्तुति मे लीन रहने का सन्देश दिया गया है।

इस सबद के सम्बन्ध मे गुरु नानक देव जी की जन्म साखिओ मे दो सन्दर्भ मिलते है। गुरु नानक देव जी जब पूर्व की यात्रा मे आसाम गये तब भाई मरदाना आसाम मे एक जादूगरनी नूरशाह के प्रभाव मे आ गये। तब गुरु नानक देव जी ने मरदाना को विकारो से रहित करने के लिए इस सबद का उच्चारण किया। दूसरे मत के अनुसार इस सबद का उच्चारण आसाम से उडीसा यात्रा के समय कटक से पुरी मार्ग के बीच मे हुआ। कटक के राजा प्रताप रुद्र ने (१४८५–१५३३) गुरु जी का कटक मे स्वागत किया जिस की प्रसिद्धि पुरी तक पहुची। पुरी मे तान्त्रिक विद्या जानने वाला पण्डित कलिजुग जगन्नाथ जाने वाली सडक पर आ गया। उसने पहले गुरु जी को डराने का प्रयास किया फिर कनक और कामिनी का प्रलोभन दिया। कलियुग के उपदेश के लिए गुरु जी ने इस सबद का उच्चारण किया।

29

चोआ चन्दनु अकि चडावउ। पाट पटबर पहिरि हढावउ।
बिनु हरि नाम कहा सुखु पावउ।।१।।
किआ पहिरउ किआ ओढि दिखावउ।
बिनु जगदीस कहा सुखु पावउ।। रहाउ।।
कानी कुण्डल गलि मोतीअन की माला। लाल निहाली फूल गुलाला।
बिनु जगदीस कहा सुखु भाला।।२।।
नैन सलोनी सुन्दर नारी। खोड सीगार करै अति पिआरी।
बिनु जगदीस भजे नित खुआरी।।३।।
दर घर महला सेज सुखाली। अहिनिसि फूल बिछावै माली।
बिनु हरि नाम सु देह दुखाली।।४।।
हैवर गैवर नेजे वाजे। लसकर नेब खवासी पाजे।
बिनु जगदीस झूठे दिवाजे।।५।।
सिधु कहावउ रिधि सिधि बुलावउ। ताज कुलह सिरि छत्रु बनावउ।
बिनु जगदीस कहा सचु पावउ।।६।।
खानु मलूकु कहावउ राजा। अबे तबे कूडे है पाजा।
बिनु गुर सबद न सवरसि काजा।।७।।
हउमै ममता गुर सबदि विसारी। गुरमति जानिआ रिदै मुरारी।
प्रणवति नानक सरणि तुमारी।।८।।

(गउडी अष्टपदी – १०) (गुरु नानक देव जी/२२५)

यदि मै इत्र और चन्दन शरीर पर लगा लू, यदि मे रेशमी वस्त्र पहनू किन्तु फिर भी यदि परमात्मा का नाम मुझ मे नही है तो कही भी मे सुख प्राप्त नही कर सकता।

सुन्दर सुन्दर वस्त्र पहनने और पहन कर दूसरो को दिखाने का क्या लाभ? परमात्मा के अतिरिक्त सुख कही भी नही मिल सकता है।

यदि मै अपने कानो मे कुण्डल पहन लू, गले मे मोतियो की माला पहन लू मेरे लाल रग के गद्दे पर लाल पुष्प बिखरे हो फिर भी परमात्मा के स्मरण के बिना मै कही भी सुख प्राप्त नही कर सकता।।२।।

यदि सुन्दर आखो वाली मेरी सुन्दर स्त्री हो वह सोलह प्रकार के शृगार करती हो और मुझे बहुत प्यारी लगती हो फिर भी जगत के मालिक प्रभु का स्मरण किये बिना परेशानी ही होती है।।३।।

यदि मेरे पास बसने के लिए महल हो सुखदायक पलग हो उस पर माली दिनरात फूल बिछाता रहे फिर भी हरि नाम स्मरण के बिना शरीर दुखो का घर बना रहता है।।४।।

यदि मेरे पास बढिया हाथी तथा घोडे हो सशस्त्र फौजे हो सहायक हो शाही नौकर चाकर हो यह सारा दिखावा हो फिर भी परमात्मा के स्मरण के बिना यह दिखाव नश्वर ही हैं।।५।।

यदि मै करामाती साधू कहलवाऊँ ओर करामाती शक्तियो को अपने पास बुला सकू। मेरे सिर पर ताज की टोपी हो मै अपने सिर पर छत्र झुला सकू फिर मुझे प्रभु स्मरण के बिना सच्चाी आत्म शक्ति नही मिल सकती।।६।।

यदि मे अपने आप को खान बादशाह और राजा कहलवाऊँ और नौकर चाकरो को झिडकिया भी दे सकू, तो शक्ति का यह दिखावा मिथ्या है। बिना गुरु के शब्द के कार्य सिद्ध नही होते।।७।।

अहकार और ममता का नाश गुरु शब्द से ही होता है। गुरु की शिक्षा के अनुसार चलने स परमात्मा का निवास हृदय मे पहचाना जाता है। नानक प्रभु के द्वार पर प्राथना करता है हे प्रभु! मै तेरी शरणागत हू।।८।।

अनुशीलन -

इस अष्ट पदी मे मोती त मन्दर के भाव को दूसरी शैली मे व्यक्त किया गया है। दुनिया के वैभव प्रथम पद मे शारीरिक भोग पद २ ३ ४ मे ऋद्धि सिद्धि पद ६ मे तथा प्रभुता पद ५ ७ मे वर्णित है। अन्तिम पद मे प्रार्थना है।

सासारिक जीवन के वैभव को जो हम ने विभिन्न प्रकार के लोगो को दे रखा है निगाह उठा कर भी न देखो। वह तो हमने उन्हे परीक्षा मे डालने के लिए दिया है। तेरे प्रभु की दी हुई रोजी ही अधिक अच्छी और अधिक स्थायी है।

(सूर तान्हा {XX/१३०} कुर आन मजीद)

———

सासत सिम्रिति बेद चारि मुखागर बिचरे।

तपे तपीसर जोगीआ तीरथि गवनु करे।।

खटु करमा ते दुगुणे पूजा करता नाइ।

रगु न लगी पारब्रहमु ता सरपर नरके जाइ।।५।।

राज मिलक सिकदारीआ रस भोगण बिसथार।

बाग सुहावे सोहणे चलै हुकमु अफार।।

रगु तमासे बहु बिधी चाइ लगि रहिआ।

चिति न आइओ पारब्रहमु ता सरप की जूनि गइआ।।६।।

बहुत धनाढि अचारवतु सोभा निरमल रीति।

मात पिता सुत भाईआ साजन सगि परीति।।

लसकर तरकसबन्द बन्द जीउ जीउ सगली कीत।

चिति न आइओ पारब्रहमु ता खडि रसातलि दीत।।७।।

काइआ रोगु न छिद्रु किछु न किछु काडा सोगु।

मिरतु न आवी चिति तिसु अहिनिसि भोगै भोगु।

सभु किछु कीतोनु आपणा जीइ न सक धरिआ।

चिति न आइओ पारब्रहमु जमककर वसि परिआ।।८।।

किरपा करे जिसु पारब्रह्मु होवै साधू सगु।

जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रगु।।

दुहा सिरिआ का खसमु आपि अवरु न दूजा थाउ।

सति गुर तुठै पाइआ नानक सचा नाउ।।६।।

(राग सिरी अष्टपदी) गुरु अर्जन देव जी/७०–७१

यदि किसी व्यक्ति के जीवन बहुत बडी कठिनाई उपस्थित हो कोई भी उसे सहारा न दे। उस के शत्रु हावी हो जावे सम्बन्धी साथ छोड दे। उस के सभी सहारे नष्ट हो जावे कोई भी आश्रय स्थान न रहे किन्तु फिर भी यदि वह परमात्मा का स्मरण करता है तो उसे कष्ट (गम वायु) छू नही सकते।।१।।

हे मेरे स्वामी! तुम निर्बलो का बल हो। तुम सदैव सत्य हो ओर गुरु के सदोपदेश से तुम्हारी पहचान होती है।।रहाउ।।

यदि कोई व्यक्ति शारीरिक रुप से दुर्बल हो गरीबी और भूख से त्रस्त हो। उस के पास धन बिल्कुल न टिकता हो कोई धेर्य देने वाला भी न हो न वह अपना हित कर सकता है न उस से कोई कार्य होता है किन्तु यदि उस के चित मे प्रभु का नाम रहेगा तो वह स्थिर राजसत्ता को पावेगा।।२।।

यदि किसी को बहुत चिन्ताए हो जिस से उस को शरीर मे बहुत रोग हा जावे। कुटुम्ब और परिवार से घिर कर कभी हष और कभी शोक अनुभव हो चारो तरफ भाग दौड करनी पडती हो ओर कही शान्ति से बैठना नसीब न हो यदि उसके मन मे पारब्रह्म का स्मरण है तो उस का तन और मन शीतल रहेगा।।३।।

यदि कोई व्यक्ति काम क्रोध आदि विकारो के वश मे है अथवा लोभ के कारण उस का स्वभाव कजूस का है। उस ने चारो महा पाप (शराब पीना सोने की चोरी व्यभिचार तथा हत्या) ओर अनेक पाप किये हो। दानव स्वभाव के कारण जीव हत्या की हो। कभी किसी धार्मिक पुस्तक उपदेश या ईश्वर प्रेम की कविता न सुनी हो फिर भी यदि क्षण भर के लिए भी वह प्रभु का नाम स्मरण करेगा तो इस ससार सागर से पार हो जावेगा।।४।।

(दूसरी ओर) यदि किसी व्यक्ति को वेद और स्मृतिया कठस्थ हो। सभी तपस्वियो मे ऊचा स्थान प्राप्त कर ले। अडसठ तीर्थो की यात्रा करे सदाचार पूर्वक ब्राह्मणो के निर्धारित बारह कर्म भी करे। प्रात काल स्नान कर पूजा करे। किन्तु उस के मन मे प्रभु नाम नही आता तो उस का निश्चय ही रक वास होगा।।५।।

यदि किसी व्यक्ति को राज्य मे सत्ता का पद प्राप्त है जिस स उसे कइ भोगो की खुली छूट है। उस के पास सुन्दर उद्यान है। उस की आज्ञा का चारो ओर पालन होता है। उस के मनोरजन के लिए कई तरह के नाटक व अन्य वासनात्मक कार्यक्रम हे। यदि उस के मन मे प्रभु नाम नही हे तो वह सप योनि

सासत सिम्रिति बेद चारि मुखागर बिचरे।

तपे तपीसर जोगीआ तीरथि गवनु करे।।

खटु करमा ते दुगुणे पूजा करता नाइ।

रगु न लगी पारब्रहमु ता सरपर नरके जाइ।।५।।

राज मिलक सिकदारीआ रस भोगण बिसथार।

बाग सुहावे सोहणे चलै हुकमु अफार।।

रगु तमासे बहु बिधी चाइ लगि रहिआ।

चिति न आइओ पारब्रहमु ता सरप की जूनि गइआ।।६।।

बहुत धनाढि अचारवतु सोभा निरमल रीति।

मात पिता सुत भाईआ साजन सगि परीति।।

लसकर तरकसबन्द बन्द जीउ जीउ सगली कीत।

चिति न आइओ पारब्रहमु ता खडि रसातलि दीत।।७।।

काइआ रोगु न छिद्रु किछु न किछु काडा सोगु।

मिरतु न आवी चिति तिसु अहिनिसि भोगै भोगु।

सभु किछु कीतोनु आपणा जीइ न सक धरिआ।

चिति न आइओ पारब्रहमु जमककर वसि परिआ।।८।।

किरपा करे जिसु पारब्रह्मु होवै साधू सगु।

जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रगु।।

दुहा सिरिआ का खसमु आपि अवरु न दूजा थाउ।

सति गुर तुठै पाइआ नानक सचा नाउ।।६।।

(राग सिरी अष्टपदी)

गुरु अर्जन देव जी/७०–७१

यदि किसी व्यक्ति के जीवन बहुत बडी कठिनाई उपस्थित हो कोई भी उसे सहारा न दे। उस के शत्रु हावी हो जावे सम्बन्धी साथ छोड दे। उस के सभी सहारे नष्ट हो जावे कोई भी आश्रय स्थान न रहे किन्तु फिर भी यदि वह परमात्मा का स्मरण करता है तो उसे कष्ट (गर्म वायु) छू नही सकते।।१।।

हे मेरे स्वामी! तुम निर्बलो का बल हो। तुम सदेव सत्य हो ओर गुरु के सदोपदेश से तुम्हारी पहचान होती है।।रहाउ।।

यदि कोई व्यक्ति शारीरिक रुप से दुर्बल हो गरीबी और भूख से त्रस्त हो। उस के पास धन बिल्कुल न टिकता हो कोई धैर्य देने वाला भी न हो न वह अपना हित कर सकता है न उस से कोई काय होता है किन्तु यदि उस के चित मे प्रभु का नाम रहेगा तो वह स्थिर राजसत्ता को पावेगा।।२।।

यदि किसी को बहुत चिन्ताए हो जिस से उस को शरीर मे बहुत रोग हो जावे। कुटुम्ब और परिवार से घिर कर कभी हष और कभी शोक अनुभव हो चारो तरफ भाग दौड करनी पडती हो और कही शान्ति से बैठना नसीब न हो यदि उसके मन मे पारब्रह्म का स्मरण है तो उस का तन और मन शीतल रहेगा।।३।।

यदि कोई व्यक्ति काम क्रोध आदि विकारो के वश मे है अथवा लोभ के कारण उस का स्वभाव कजूस का है। उस ने चारो महा पाप (शराब पीना सोने की चोरी व्यभिचार तथा हत्या) ओर अनेक पाप किये हो। दानव स्वभाव के कारण जीव हत्या की हो। कभी किसी धार्मिक पुस्तक उपदेश या ईश्वर प्रेम की कविता न सुनी हो फिर भी यदि क्षण भर के लिए भी वह प्रभु का नाम स्मरण करेगा तो इस ससार सागर से पार हो जावेगा।।४।।

(दूसरी ओर) यदि किसी व्यक्ति को वेद और स्मृतिया कठस्थ हो। सभी तपस्वियो मे ऊचा स्थान प्राप्त कर ले। अडसठ तीर्थो की यात्रा करे सदाचार पूर्वक ब्राह्मणो के निर्धारित बारह कर्म भी करे। प्रात काल स्नान कर पूजा करे। किन्तु उस के मन मे प्रभु नाम नही आता तो उस का निश्चय ही ।रक वास होगा।।५।।

यदि किसी व्यक्ति को राज्य मे सत्ता का पद प्राप्त है जिस से उसे कई भोगो की खुली छूट है। उस के पास सुन्दर उद्यान ह। उस की आज्ञा का चारो ओर पालन होता हे। उस के मनोरजन के लिए कई तरह के नाटक व अन्य वासनात्मक कार्यक्रम है। यदि उस के मन मे प्रभु नाम नही है तो वह सर्प योनि

मे जावेगा।।६।।

यदि कोई पूजीपति धनवान व्यक्ति सदाचार से युक्त है सभी सम्बन्धियो को भी प्रिय है उस के पास शस्त्र हो सेना हो अनेक लोग चापलूसी करते हो (इतना होने पर भी) यदि उस के मन मे प्रभु नाम नही है तो उसे नरक मे ही फैका जावेगा।।७।।

यदि कोई व्यक्ति शरीर से स्वस्थ है उसे शोक सन्ताप नही है। रात दिन भोग विलास मे लीन है उसे मृत्यु का भय भी नही सताता यदि उसने अपने भुजबल से सब को अधीन कर लिया है और उसे किसी शत्रु का भय नही है तब भी यदि उस के मन मे प्रभु का नाम नही है तो वह निश्चय ही यमदूतो के हाथो प्रताडित होगा।।८।।

(निष्कष यह है कि) जिस पर प्रभु कृपा होती है उसे ही सद्गुरु का सम्पर्क प्राप्त होता है। ज्यो ज्यो सत्सग मे चित लगता है प्रभु से प्रेम मे भी प्रगाढता बढती जाती है। प्रभु लोक परलोक दोनो का स्वामी है उस के बिना दूसरा कोई स्थान नही। सतिगुरु के सन्तुष्ट होने पर सच्चे नाम की प्राप्ति होती है।।६।।

भाव साम्य -

गुरु अर्जन देव जी के द्वारा रचित इस अष्टपदी मे ६ पद है। प्रथम चार पदो मे प्रभु के स्मरण से जीवन के कष्टो के निवारण का वर्णन है और अगले चार पदो मे प्रभु के विस्मरण से साधन सम्पन्न होते हुए भी जीवन के दु खमय होने का चित्रण है। इस अष्टपदी की टेक मे दिये गये भाव की पुष्टि प्रभु निर्बल लोगो का बल है इन आठ पदो मे की गई है। टेक मे दिये गये द्वितीय पक्ति के भाव प्रभु जन्म मरण से रहित है और वह गुरु के शबद से जाना जाता है को अष्टपदी के अतिम पद मे स्पष्ट किया गया है। प्रभु की ही कृपा से सत्सग प्राप्त होता है जिस से प्रभु मे प्रीति बढने लगती है जब जीव सतिगुरु को सन्तुष्ट कर लेता है तभी वह नाम धन का अधिकारी बनता है।

इस अष्टपदी के भाव सैन्दर्य को कविवर रवीन्द्र ने अपने एक गीत मे समेटा है जिसमे प्रथम चार चरणो मे प्रभु के स्मरण से प्राप्त सुखो के भाव को व्यक्त किया गया है। जाको मुसकल अति बणे को जीवन जखन शुकाये जाय नग भुख की पीर को दीन हीन मन जा कउ चिन्ता बहुत के स्थान पर कर्मजखन प्रबल धार और काम क्रोध मोह वस कीआ के स्थान पर वासना जखन विपुल धुलाय वाक्याश प्रयोग किये गये है। लगे न ताती वाउ को

करुण धारा निहचल होवे राज को राज समारोह तन मन शीतल होय को शान्त चरण एसो निमख सिमरत तरिआ को रुद्र आलोक एसो से व्यक्त किया गया है। कविवर रवीन्द्र का मूल गीत निम्न प्रकार है–

जीवन यखन शुकाये याय करुणधाराय एसो।

सकल माधुरी लुकाय याय गीत सुधा रसे एसो।।१।।

आपनारे यबे करिया कृपण कोणे पडे थाके दीन हीन मन

दुयार खुलिया हे उदार नाथ राज समारोहे एसो।।३।।

कर्म यखन प्रबल आकार गरजि उठिया ढाके चारि धार

हृदयप्रान्ते हे जीवन नाथ शान्त चरणे एसो।।२।।

वासना यखन विपुल धुलाय अन्धा करिया अबोधे भुलाय

ओहे पवित्र ओहे अनिद्र रुद्र आलोक एसो।।४।।

जब जीवन मे कठिनाई और शुष्कता हो तो करुण धारा के रुप मे आओ। जब जीवन मे माधुरी छिप जावे तो कृपा की अमृत वर्षा करो।

जब मेरा दीन हीन मन टूट कर एक कोने मे पडा हो तो हे नाथ! द्वार खोल कर मुझे निकालो और राज समारोह के रुप मे आओ।

जब अन्धा धुन्ध कार्यो की धूल से चारो ओर अन्धकार मे फस जाऊँ तो हे नाथ! जीवन के स्वामी बन कर शान्त चरण से आओ।

जब कामनाओ का भ्रम और धूल मेरी बुद्धि को ढक ले तो हे पावन प्रभु! अपने प्रकाश और गर्जन से आओ।

सदर्भ -

गुरू अर्जन देव जी ने इस अष्टपदी का उच्चारण उस समय किया जब शहीदी से पूर्व उन्हे कष्ट दिये जा रहे थे। गुरू जी ने कोइ आध्यात्मिक चयत्कार न दिखा कर सहर्ष कष्ट सहना स्वीकार किया। उन्होने जपु जी का पाठ किया। वे ज्येष्ठ शुक्ला ४ सवत १६६३ (दिनाक ३१ ५ १६०६) को जोति जोत समाये।

-----

(१४) मानव-जीवन (प्रभु मिलन का अवसर)

31

गुर सेवा ते भगति कमाई। तब इह मानस देही पाई।
इस देही कउ सिमरहि देव। सो देही भजु हरि की सेव।।१।।
भजहु गुोबिन्द भूलि मत जाहु।
मानस जनम का एही लाहु।। रहाउ।।
जब लगु जरा रोग नहीं आइआ। जब लगु काल ग्रसी नही काइआ।
जब लगु विकल भई नही बानी। भजि लेहि रे मन सारिगपानी।।२।।
अब न भजसि भजसि कब भाई। आवै अन्तु न भजिआ जाई।
जो किछु करहि सोई अब सारु। फिरि पछताहु न पावहु पारु।।३।।
सो सेवकु जो लाइआ सेव। तिन ही पाए निरजन देव।
गुर मिलि ता के खुल्हे कपाट। बहुरि न आवै जोनी बाट।।४।।
इही तेरा अउसरु इह तेरी बार। घट भीतरि तू देखु बिचारि।
कहत कबीरु जीति कै हारि। बहु विधि कहिओ पुकारि पुकारि।।५।।

(राग भैरउ/सबद – ६) कबीर/११५६

मनुष्य जीवन उसी का सफल है जो गुरु सेवा के द्वारा भक्ति की कमाई करता है। यह मनुष्य शरीर ऐसा अनमोल है कि देवता भी उसकी प्राप्ति की इच्छा करते है अत इस शरीर मे रहते हुए सदा हरि की सेवा करते रहो।।१।।

गोविन्द का भजन करना मत भूलो यही मनुष्य जन्म का एक मात्र लाभ है।।रहाउ।।

जब तक बुढापा और रोग तन पर हावी नही होते और शरीर काल का कलेवा नही बनता। जब तक वाणी लडखडाने नही लगती उससे पूर्व ही हे मन! परमात्मा का भजन कर ले।।२।।

यदि अब भजन नही करते तो फिर कब करोगे। मरण अवस्था के निकट आने पर भजन नही हो सकता। जो कुछ करना है वह इसी समय सार्थक है। बाद मे पछताने से कुछ नही होगा।।३।।

सच्चा सेवक वही है जो निरन्तर सेवा रत है। उसी को परमात्मा का साक्षात्कार होता है। गुरु से भेट होने पर माया का परदा हट जाता है और ५८

पुन जन्म के चक्कर मे नही पडता।।४।।

यह मनुष्य जीवन ही तेरे लिए अवसर है इसी बेला मे तुझे प्रभु पाना है। मन मे विचार कर यह तथ्य समझ ले। कबीर जी कहते है मै ने तुम्हे पुकार पुकार कर कह दिया है अब तुम चाहे जीवन का खेल जीतो चाहे हारो।।५।।

भाव साम्य -

जैन धर्म मे वर्धमान महावीर ने प्रभु मिलन के चार मुख्य अग माने है जिन का आधार मानव जीवन है। मानव जीवन पाकर शेष तीन अग क्रमश धर्म श्रवण धर्म मे श्रद्धा (मनन या विश्वास) और धार्मिक आचरण है। जब इन चारो का योग होता है तब मानव अपनी आत्मा पर से पूर्व जन्म के सस्कारो की रज हटा कर निर्मल हो जाता है।

चतुरगीय सूत्र

चत्तरि परमगाणि दुल्लाणीह जन्तुणो।
माणुसत्त सुई सद्धा सजमम्मि य वीरिअ।।३ ३ १।।
माणुस्स विग्गह लद्धु सई धम्मस्स दुल्लहा।
ज सोचा पडिवज्जन्ति तव खतमहिसय।।३ ३ ८।।
आहच्च सवण लद्धु सद्धा परम दुल्लहा।
सोचा ने आउय मग्ग बहवे परमस्सई।।३ ३ ६।।
सुइच लद्धु सद्धच वीरय पुण दुल्लह।
बहवे रोय माणावि नो य ण पडिवज्जए।।३ ३ १०।।
माणुसत्तम्मि आयाओ जो धम्म सोच्च सद्दहे।
तवस्सी वीरिय लदधु सवुडे निद्धुणे रय।।३ ३ ११।।

ससार मे जीवो को इन चार श्रेष्ठ अगो का प्राप्त होना बडा दुर्लभ है–
१ मनुष्यत्व २ धर्मश्रवण ३ श्रद्धा ४ धर्म मे पुरुषार्थ।।१।।

मनुष्य शरीर पा लेने पर भी सधर्म का श्रवण दुर्लभ है जिसे सुन कर मनुष्य तप क्षमा अहिसा को स्वीकार करता है।।८।।

सौभाग्य से यदि श्रवण प्राप्त होता भी है तो उस पर श्रद्धा होना दुर्लभ है कारण कि बहुत से लोग न्याय मार्ग को सुन कर भी उस पर विश्वास नही लाते।।६।।

सद्धर्म श्रवण श्रद्धा दोनो प्राप्त होने पर भी उस पर पुरुषार्थ करना यह तो और भी कठिन है क्योकि ससार मे बहुत से लोग है जो सधम मे दृढ विश्वास रखते हुए भी उसे आचरण मे नही लाते।।१०।।

परन्तु जो तपस्वी मनुष्यत्व को पा कर सधर्म का श्रवण कर उस पर श्रद्धा लाता है ओर तदानुसार पुरषार्थ कर आस्रव रहित हो जाता है वह अन्तरात्मा पर से कर्म रज झटक देता है।।११।।

(वद्धमान महावीर/उत्तराध्ययन सूत्र/३ १ ८ ६ १० ११) (महावीर वाणी)

32

भई परापति मानुख देहुरीआ।

गोबिन्द मिलण की इह तेरी बरीआ।

अवरि काज तेरै कितै न काम।

मिलु साधसगति भजु केवल नाम।।१।।

सग्जामि लागु भवजल तरन कै।

जनमु ब्रिथा जात रगि माइआ कै।। रहाउ।।

जपु तपु सजमु धरमु न कमाइआ।

सेवा साध न जानिआ हरि राइआ।।

कहु नानक हम नीच करमा।

सरणि परे की राखहु सरमा।।२।।

(राग आसा) (गुरु अर्जन देव/१२)

हे भाई! तुझे मनुष्य जन्म मे सुन्दर देह की प्राप्ति हुई है यही समय परमात्मा से मिलने का है। तेरे ओर दूसरे काम किसी काम नही आवेगे (इसलिए) सत्सगति मे जाकर केवल परमात्मा का भजन किया कर।।१।।

हे भाई! ससार समुद्र मे हो पार उतरने के प्रयास मे लग। माया के मोह मे ग्रस्त होकर तेरा मनुष्य जन्म व्यर्थ जा रहा है।।रहाउ।।

हे नानक! कह – हे पतित पावन प्रभु! मैने कोई जप तप सयम नही किया। मैने तेरे सन्तो की सेवा की सुन्दर विधि नही सीखी। मै कुकर्मी हू लेकिन अपने दास की लज्जा की रक्षा कीजिए।।२।।

भाव साम्य -

मानव जीवन मे ही प्रभु मिलन हो सकता है इस विषय पर गुरु अजन देव जी
ा यह सबद बहुत लोकप्रिय है और नित्य नेम की बाणी रहरासि मे सम्मिलित
।

मराठी भाषा के सन्त समर्थ गुरु रामदास जी ने दासबोध मे मानव जीवन को
ावन्त भेट का समय कहा है। उन्होने गुरु अर्जन देव जी की भाति सत्सगति
 बल दिया है। विषय सुखो की मिठास के कष्ट को बताते हुए रघुनाथ से
ति का सन्देश दिया है।

हुता जन्माचे सेवटी। जेणे चुके अटाटी।
ो हा नरदेह भेटी। करी भगवन्ती।।१।।   ३–१०–२५
ामे बिण जे जे आस। तितुकी जाणावी नैराश।
ाझे माझे सावकाश। सीणचि उरे।।२।।   ३–१०–६०
ा नरदेहाचेनि लागवेगे। सार्थक करावे सतसगे।
ीच योनी दु ख मागे। बहुत भोगिले।।३।।   ३–१०–३८
ेषय जनित जे जे सुख। तथे चि होते परम दु ख।
र्वी गोड अती शोक। नेमस्त आहे।।४।।   ३–१०–६५
ळ गिळिता सुख वाटे। वोढून घेता घसा फाटे।
ा ते बापुडे मृग आपटे। चारा घेऊन पळता।।५।।   ३–१०–६६
सी विषयेसुखाची गोडी। गोड वाटे परी ते कुडी।
ाणौनिया आवडी। रघुनाथी धरावी।।६।।   ३–१०–६७

मर्थ गुरु राम दास (महाराष्ट्र)/दास बोध/स्वगुण परीक्षा/वैराग्य निरुपण

हुत से जन्म हो चुकने के बाद नर देही प्राप्त होती है। जो जन्म मरण या
ागमन का अन्त करके ईश्वर मिलाती है। राम के बिना जो जो आशा की
ी है उन सब को तुम निराश और व्यर्थ समझो। मेरा मेरा कहते रहने से
 ही होता है।

न्तो की सगत कर के नर देही को सार्थक कर लेना चाहिए। क्योकि पहले
 योनि मे काफी दुख भोग चुके हैं। जो सुख विषय से उत्पन्न होते है वही
 दुखदायी है। उन का यह नियम ही है कि पहले तो वे मीठे लगते है किन्तु
 मे शोक होता है। जिस प्रकार काटे का चारा निगलने मे पहले मछली को

सुख होता है पर खीचा जाने पर गला फट जाता है अथवा चारा देखता हुआ हिरण जाल मे फस जाता है। ठीक वैसे ही विषय सुख की मिठास भी कष्ट दायक है चाहे वह विषय सुख मीठा क्यो न हो पर वह होता है बहुत कटु। इस लिए कहते है रघुनाथ से प्रीति करो।

------

(१५) नाम धन

33

सरमु धरमु दुइ नानका जे धनु पलै पाइ।
सो धनु मित्रु न काढीऐ जितु सिरि चोटा खाइ।
जिन कै पलै धनु वसै तिन का नाउ फकीर।
जिन कै हिरदै तू वसहि ते नर गुणी गहीर।।१।।
दुखी दुनी सहेडीऐ जाइ त लगहि दुख।
नानक सचे नाम बिन किसै न लथी भुख।।
रूपी भुख न उतरै जा देखा ता भुख।
जेते रस सरीर के तेते लगहि दुख।।२।।
अन्धी कमी अन्धु मनु मनि अन्धै तनु अन्धु।
चिकडि लाइऐ किआ थीऐ जा तुटै पथर बन्धु।।
बन्धु तुटा बेडी नही ना तुलहा ना हाथ।
नानक सचे नाम विणु केते डुबे साथ।।३।।
लख मण सुइना लख मण रुपा लख साहा सिरि साह।
लख लसकर लख वाजे नेजे लखी घोडी पातिसाह।
जिथै साइरु लघणा अगनि पाणी असगाह।
कन्धी दिसि न आवई धाही पवै कहाह।
नानक ओथै जाणीअहि साह केई पातिसाह।।४।।

(वार मलार सलोक १ – ४ {२१}) गुरु नानक/१२८७

हे नानक! अगर कोई धन दे दे तो लोग धर्म और शर्म दोनो त्याग देते है। ऐसा धन मित्र नही कहा जा सकता जिस के कारण आगे सजा मिले। जिन के पास सासारिक धन है उन्हे कगाल कहा जाना चाहिए। जिन के मन मे तू निवास करता है वे गुणो का समुद्र है। (१)

हे नानक! सच्चे नाम के बिना किसी की तृष्णा नही बुझती। सुन्दरता देखते हुए उस की चाह कम नही होती। जैसे जैसे देखते है भूख बढती हैं। जितने भी शरीर के भोग है वे दुख का ही कारण होते हैं। (२)

बुरे काम करते हुए मन अन्धा हो जाता है और अन्धा मन अन्धे काम ही करवाता है। अगर पत्थर का बान्ध टूट जावे तो कीचड लगाने से क्या बनता है? बान्ध टूटने पर न नाव काम आती है न तुलहा और न ही उस की गहराई का पता चलता है। सच्चे नाम के बिना कितने ही समूह डूब गए। (३)

लाखो मन सोना चादी हो और लाखो राजाओ का राजा हो। लाखो आदमी और लाखो घोडो का लशकर हो जिस के साथ लाखो वाद्य यन्त्र व शस्त्र हो। जिस समुद्र से पार होना है उस मे तृष्णा का अथाह पानी है। उस का किनारा नजर नही आता। उस मे गिरे लोग गिड गिडा रहे है जिस का शोर मच रहा है। वहा पता लगता है कि राजा कौन है और महाराजा कौन है? ससार समुद्र को जो तर जावे वही असली बादशाह है। (४)

भाव साम्य -

नाम धन ही सच्चा धन है। हमे इसी की प्राप्ति का यत्न करना चाहिए सासारिक धन व्यर्थ हे क्योकि वे परमार्थिक जीवन मे बाधक हैं।

आन्ध्र प्रदेश के सन्त वेमना के निम्न वचन मे इस की व्याख्या की गई है—

धन मेच्चिन मद मेच्चिन

मद मेच्चिन दुर्गणुबु मानक हेच्जुन

धनमुडिगिन मद मुडुगुन

मद मुडिगिन दुगुणुब मानूर वेमा।

धन जब बढता है तो उस के साथ मद भी बढता जाता है। मद के प्रकोप से दुर्गुण बढते है।

धन के निकल जाने पर मद उतर जाते है और उसके अभाव से दुर्गुण भी दूर हो जाते है।

34

अगनि न दहै पवनु नही मगनै तसकरु नेरि न आवै।
राम नाम धनु करि सचउनी सो धनु कत ही न जावै।।१।।
हमरा धनु माधउ गोबिन्दु धरणीधरु इहै सार धनु कहीऐ।
जो सुखु प्रभ गोबिन्द की सेवा सो सुखु राजि न लहीऐ।। रहाउ।।
इसु धन कारणि सिव सनकादिक खोजत भए उदासी।
मनि मुकन्दु जिह्बा नाराइनु परै न जम की फासी।।२।।
निज धनु गिआनु भगति गुरि दीनी तासु सुमति मनु लागा।
जलत अभ थभि मनु धावत भरम बधन भउ भागा।।३।।
कहे कबीरु मदन के माते हिरदै देखु मुरारी।
तुम घरि लाख कोटि अस्व हसती हम घरि एकु मुरारी।।४।।

(राग गउडी – सबद – ५८) कबीर/३३६

हे भाइ! परमात्मा का नाम रुपी धन एकत्रित कर यह कभी भी नष्ट नही होता। इस धन को न आग जला सकती है न हवा उडा सकती है चोर इस के समीप नही आ सकता।।१।।

हमारा धन तो माधव गाविन्द ही है जो सारी पृथ्वी का सहारा है इसी धन को सबसे उत्तम धन कहा जा सकता है। जो सुख परमात्मा गोविन्द के भजन मे मिलता है वह सुख राजसत्ता के भोग स भी नही मिलता।। रहाउ।।

इस धन को प्राप्त करने के लिए शिव सनक आदि खोज करते करते सन्यासी हो गये। जिस मनुष्य के मन मे मुक्तिदाता परमेश्वर रहता है। जिस की जिह्वा पर नारायण (अकाल पुरुष) है उसे यम भी फासी नही लगा सकता।।२।।

प्रभु की भक्ति और ज्ञान ही सच्चा धन है जिस सुबुद्धि वाले को गुरु ने यह देन दी है उस का मन प्रभु मे टिकता है। माया की तृष्णा मे जलने वाले के लिए यह नाम धन पानी है। भटकते मन को सहारा है। नाम के प्रभाव से भ्रम के बन्धनो का भय दूर हो जाता है।।३।।

कबीर कहते है– हे काम वासना मे मस्त हुए राजन! मन मे सोच कर देख यदि तेरे घर मे लाखो करोडो हाथी और घोडे है तो हमारे हृदय घर मे (यह सारे पदार्थ देने वाला) एक परमात्मा है।।४।।

35

वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि
तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि।
अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि।।१।।
भाई रे रामु कहहु चितु लाइ।
हरि जसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतीआइ।।१।।
जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ।
खोटै वणजु वणजिऐ मनु तनु खोटा होइ।
फाही फाथै मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ।।२।।
खोटे पोतै न पवहि तिन हरि गुर दरसु न होइ।
खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइ।
खोटे खोटु कमावणा आइ गइआ पति खोइ।।३।।
नानक मनु समझाईऐ गुर कै सबदि सालाह।
राम नाम रगि रतिआ भारु न भरमु तिनाह।
हरि जपि लाहा अगला निरभउ हरि मन माह।।४।।

(सिरी राग चौपदे – २३) गुरु नानक/२२

हे जीव रूपी व्यापारी गण! व्यापार करते समय सामग्री सभाल कर खरीदो। ऐसी वस्तु को खरीदो जो अन्त तक तुम्हारे काम आवे। आगे स्वामी बहुत सुजान है वह तुम्हारी खरीदी वस्तु बहुत परख कर लेगा।।१।।

हे भाई! अपना मन एकाग्र करके राम का जाप करो। यहा से हरि गुण गान का माल खरीद कर आगे जाओ। पति परमात्मा देख कर प्रसन्न होगा।।रहाउ।।

जिनके पास सत्य की पूजी नही है उन्हे सुख किस प्रकार हो सकता हे। जो खोटी वस्तु खरीदते हे उनका मन भी खोटा हो जाता है और शरीर भी। जिस तरह हिरन बन्धन मे पडकर रोता है और दुखी होता है यही दशा खोटी वस्तु खरीदने वालो की होगी।।२।।

खोटे सिक्के थैली मे नही पडते। खोटो को हरि और गुरु का दर्शन नही होता। खोटा व्यक्ति अपनी इज्जत और विश्वास गवा देता है। बुराई कमा कर वह कभी सफल नही होता।।३।।

हे नानक! गुरु वाणी के द्वारा निरकार का गुणगान करके मन स्थिर बुद्धि का बनाना चाहिए। जो राम नाम मे रग गये है उनके सिर पर पाप का बोझ नही रहता। उनका भ्रम भी नष्ट हो जाता है। हरि नाम को मन मे बसा कर निर्भय हो जावो। हरि नाम स्मरण कर लाभ का अबार लगा दो।

36

साह चले वणाजारिआ लिखिआ देवै नालि।
लिखे उपरि हुकमु होइ लईऐ वसतु सम्हालि।
वसतु लई वणजारई वखरु बधा पाइ।
केई लाहा लै चले इकि चले मूलु गवाइ।
थोडा किनै न मगिओ किसु कहीऐ साबासि।
नदरि तिना कउ नानका जि साबतु लाए रासि।।

(वार सारग/श्लोक – १/३) गुरु अगद दव जी/१२३८

शाह (प्रभु) के निकट से व्यापारी चला हे साथ मे उसने हुण्डी लिखकर दे दी हे। जीव व्यापारी अपनी रुचि अनुसार अच्छी बुरी वस्तु खरीदता है हुण्डी के अनुसार उस की इच्छा पर वस्तु मिलती रहती है। सब व्यापारी इस प्रकार वस्तु खरीदते है और माल लाद लेते है। उन मे से कुछ लाभ कमाते है कुछ मूलधन भी गवा बेठते है। इन मे से किस को शाबाशी दे थोडा तो किसी ने नही लिया (हरि नाम ओर माया का भरपूर व्यापार हुआ) गुरु नानक कहते है कि महिमा उन्ही की है जो अपने जीवन मनोरथ की राशि सम्पूर्ण बचा कर ले आते है। (दास कबीरे एसी ओढी जिऊ की तिऊ धरि दीनी चदरिआ।)

37

हरि रासि मेरी मनु वणजारा।
हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतगुर ते रासि जाणी।
हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाडी।
एहु धनु तिना मिलिआ जिनि हरि आपे भाणा।
कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा।।

(अनदु राग रामकली – पउडी – ३१) गुरु अमर दास जी/६२१

मेरे पास नाम धन की पूजी हे मेरा मन उन गुणो का वणजारा है। हरि राशि (नाम धन) की जानकारी और उस की प्राप्ति मुझे सतिगुरु के पास रहकर हुई

है। गुरु ने मुझे यह बताया है कि इस धन की प्राप्ति प्रतिदिन पूरे दिल से प्रभु के स्मरण से होती है यही दैनिक जीवन की कमाई या पारश्रमिक है। यह धन उसे मिलता है जिन पर हरि स्वय प्रसन्न हुआ। हरि मेरी पूजी है उस की पूजी की प्राप्ति के लिए मैने मन को वणजारा बनाया है।

38

साहु हमारा तू धणी जैसी तू रासि देहि तैसी हम लेहि।
हरि नामु वणजह रग सिउ जे आपि दइआलु होइ देहि।।
हम वणजारे राम के।
हरि वणजु करावै दे रासि रे।। रहाउ।।
लाहा हरि भगति धनु खटिआ हरि सचे साह मनि भाइआ।
हरि जपि हरि वखरु लदिआ जमु जागाती नेडि न आइआ।।२।।
होरु वणजु करहि वापारीए अनतु तरगी दुखु माइआ।
ओइ जेहै वणजि हरि लाइआ फलु तेहा तिन पाइआ।।३।।
हरि हरि वणजु सो जनु करे जिसु क्रिपालु होइ प्रभु देई।
जन नानक साहु हरि सेविआ फिरि लेखा मूलि न लेई।।४।।

(राग गउडी – सबद – ४५) गुरु राम दास जी/१६५

38

हे प्रभु! तू हमारा शाह है तू हमे जैसे धन देता है वैसा ही धन हम ले लेते है। यदि तू आप कृपालु हो कर हमे अपना नाम धन देवे ता हम सप्रेम तेर नाम क व्यापार करते लगते है।।१।।

ह भाई! हम जीव प्रभु राम के भजे हुए व्यापारी है। वह साहूकार अपना नाम धन देकर हम जीवो से व्यापार कराता है।। रहाउ।।

जिस जीव वणजारे ने परमात्मा–भक्ति की कमाई की हे परमात्मा का नाम धन प्राप्त किया है वह उस सत्य स्वरूप साहूकार प्रभु के मन मे भला लगता है। जिस जीव व्यापारी मे परमात्मा का नाम जप कर परमात्मा के नाम का सौदा किया है यमराज रूपी चुगी लेने वाला उसके निकट नही आता।।२।।

पर जो जीव वणजारे दूसरे व्यापार करते है। वे माया मोह की अनन्त लहरो मे फस कर दुख सहते रहते है। उनके भी क्या वश? जैसे व्यापार मे परमात्मा ने उन्हे लगा दिया है वैसा फल उन्होने पा लिया है।।३।।

(१६) सतिगुरु होइ दइआलु

सति गुरु महिमा

40

सतिगुरु होइ दइआलु त सरधा पूरीऐ।
सतिगुरु होइ दइआलु न कबहू झूरीऐ।
सतिगुरु होई दइआलु ता दुखु न जाणीऐ।
सतिगुरु होइ दइआलु ता हरि रगु माणीऐ।
सतिगुरु होइ दइआलु ता जम का डरु केहा।
सतिगुरु होइ दइआलु ता सद ही सुखु देहा।
सतिगुरु होइ दइआलु ता नव निधि पाईऐ।
सतिगुरु होइ दइआलु त सचि समाइऐ।

(वार राग माझ पउडी – २५) गुरु नानक देव जी/१४६

यदि सतिगुरु दयालु होवे तो दैवीय गुणो के प्रति आकर्षण वृत्ति परिपक्व होती है। यदि सतिगुरु दयालु होवे तो किये गये कर्मो और प्राप्त हुए फल पर कभी पछतावे का भाव ह्रदय मे नही आता। यदि सतिगुरु दयालु होवे तो उस की रजा मे चलने मे दुख का आभास नही होता। यदि सतिगुरु दयालु होवे तो प्रभु के प्रेम का आनन्द लाभ होता है।

यदि सति गुरु दयालु होवे तो जीवन का रहस्य जान लेने से मृत्यु का डर कैसा? यदि सतिगुरु दयालु होवे तो देह सदा सुखी रहती है। यदि सतिगुरु दयालु होवे तो नौ निधिया प्राप्त होती हैं। यदि सतिगुरु दयालु होवे तो सत्य रुप परमात्मा मे समाया जाता है।

42

करउ बेनती सुणहु मेरे मीता सन्त टहल की बेला।

ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला।।१।।

अउध घटै दिनसु रैणारे।

मन गुर मिलि काज सवारे।

इहु ससारु बिकारु ससे महि तरिओ ब्रहमगिआनी।

जिसहि जगाइ पीआवै इहु रस अकथ कथा तिनि जानी।।२।।

जा कउ आए सोई बिआझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा।

निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा।।३।।

अन्तरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे।

नानक दासु इहै सुखु मागै मो कउ करि सन्तनु की धूरे।।४।।

(राम गउडी/ पुरबी – सबद – १२३) गुरु अर्जन दव जी/१३/२०५

हे मित्रो! सुनो मै विनती करता हू। इस जगत मे मानव जीवन सन्तो की सेवा का समय है अगर यहा हरि नाम का लाभ कमा लिया तो आगे परलोक मे निवास शोभामय होगा।।१।।

हे मन! गुरु से मिल कर हरि लाभ के काम को सवार ले क्योकि दिन रात आयु बीतती जा रही है।।रहाउ।।

यह ससार विकार रुप मे है और सशय पूर्ण है इस को ब्रह्म ज्ञानी ने तैर लिया है। प्रभु की अकथ कथा वही जान सकता है जिस को मोह निद्रा से जगा कर प्रभु नाम रस का पान कराता है।।२।।

जिस वस्तु को लेने आए थे वही खरीदो। गुरु के द्वारा हरि का मन मे बसेरा प्राप्त करो तब तुम स्वय अपने ही हृदय मे सहज अवस्था मे हरि का महल प्राप्त कर लो गे फिर जन्म मरण नही होगा।।३।।

हे अन्तर्यामी हे करतार! हे मन की श्रद्धा पूर्ण करने वाले! दास नानक यही सुख मानता है कि मुझे सन्तो की चरण धूलि बनाओ मुझे सत्सग मे श्रद्धा प्रदान करो।।४।।

भाव साम्य -

कई बार प्रभु कृपा मे आस्था की कमी से मनुष्य यह सोचता है कि उस के प्रयत्न व्यर्थ हो रहे है और वह प्रयत्नो के प्रति विपरीत मत बना कर चिन्ता ग्रसित हो जाता है। कविवर रवीन्द्र ने इस चिन्ता और शका का निवारण नैवेद्य के एक गीत मे किया है—

माझे माझे कतबार भारि कर्म हीन
आज नष्ट हल बेला नष्ट हल दिन
नष्ट हय नाइ प्रभु से सकल क्षण
आपनि तादेर तुमि करेछ ग्रहण
ओगो अन्तर्यामी देव! अन्तरे अन्तरे
गोपन प्रच्छन्न रहि कोन अवसरे
बीजेरे अकुर रुपे तुलेछ जागाये
मुकुल प्रस्फुट वर्णे दियेछ राडाये—
फुलेरे करेछ फल रसे सुमधुर
बीजे परिणत गर्भ।। आमि निद्रातुर
आलस्य शय्यार परे श्रान्तिते मरिया
भेवेछिनु सब कर्म रहिल पडिया
प्रभाते जागिया उठि मेलिनु नयन
देखिनु भरिया आछे आमार कानन।।

बीच बीच मे कई बार आलस्य के दिनो मे मैने सोचा कि मेरा आज का दिन या समय नष्ट हो गया है। किन्तु हे प्रभु! वे सब क्षण नष्ट नही हुए। हे अन्तर्यामी देवता तुमने उन क्षणो को अपने हाथ मे ले लिया।

सब वस्तुओ के अन्दर व्यापक होकर तुम बीज मे से अकुर जगाते हो और कलिओ से रग बिरगे फूल विकसित करते हो और फूलो से मधुर रस वाले फल बनाते हो। फलो के अन्दर बीज रहने से विकास क्रम पूरा होता है।

मै थक कर आलस्य की शैया पर ऊध रहा था और विचार रहा था कि मेरे सब कार्य बेकार हो गये है। अगले दिन प्रभात के समय जागकर मैने पाया कि मेरा उद्यान फूलो से भरा पडा है। (मेरा जीवन शुभ कार्यो से सुवासित है।)

पाठान्तर - राग के अन्तर्गत तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै के स्थान पर कवन खिलावै कवनु चुगावै तथा ऊडे के स्थान पर ऊडै पाठ है।

(१७) सत्सगति

45

बिसरि गई सभ ताति पराई।

जब ते साधसगति मोहि पाई।।

ना को बैरी नही बिगाना सगल सगि हम कउ बनि आई।।१।।

जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई।।२।।

सभि महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई।।३।।

(राग कानडा/सबद – ८) गुरु अजन दव जी/१२६६

जब से मैने साधुओ का पावन दर्शन पाया है दूसरो को देखकर उपजने वाली ईर्ष्या नष्ट हो गई है।

अब हमारा न कोई बैरी है न अजनबी। अब हमारी सब से बनन लगी है।।१।।

अब मुझे सत्सग से यह सूझ प्राप्त हो गई है कि प्रभु जो करता ह मे उसे भला मानू।।२।।

(सूर्य के समान) उस एक प्रभु का प्रकाश सब मे व्याप्त है जिसे देख देख कर मेग हृदय कमल विकसित होता है।।३।।

(सभि महि रवि र्ग ्रा। प्रभु ऐकै की व्याख्या गुरु नानक दव जी क सूरजु एको रुति अनेक नानक करत के केते वेस {७२} के आधार पर की गइ हे।)

भाव साम्य -

सिन्धी भाषा के सन्त कवि चैनराइ सामी सत्सगति के द्वारा बाहर और भीतर प्रभु दर्शन इस प्रकार करते हे–

करे सम सिदिकु मिली साध सगति सॉ।

जो तोखे प्यास पसण जी ता सिप चात्रिक जॉ सिकु।

पाए बून्द अनभई करि लोकनि खो लिकु।

ता अन्दरि बाहरि हिकु सामी दिसे सुप्री।।६५२।।

यदि तू परमात्मा के दीदार का प्यासा है तो साधुओ का सग कर समता और स्नेह को अपना कर सीप तथा चातक की तरह (परमात्मा रुपी) स्वाति बूॅ्द ० लिए तडप। आत्मज्ञान रुपी बूद पाने के पश्चात ससार से छिप। तो तुझे बाहर और अन्दर एक ही प्रियतम दिखाई दे।

46

करि किरपा दीओ मोहि नामा बन्धन ते छुटकाए।

मन ते बिसरिओ सगलो धन्धा गुर की चरणी लाए।।१।।

साधसगि चित बिरानी छाडी।

अहबुधि मोह मन बासन दे करि गडहा गाडी।। रहाउ।।

ना को मेरा दुसमनु रहिआ ना हम किस के बैराई।

ब्रह्मु पसारु पसारिओ भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई।।२।।

सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन।

दूरि पराइओ मन का बिरहा ता मेलु कीओ मेरै राजन।।३।।

बिनसिओ ढीठा अम्रितु वूठा सबदु लगो गुर मीठा।

जलि थलि महीअलि सरब निवासी नानक रमईआ डीठा।।४।।

(राग धनासरी सबद – ३) गुरु अर्जन देव जी/६७१

सत्सगति मे गुरु कृपा से मुझे परमात्मा का नाम मिला। गुरु के चरणो मे जगह पाकर मुझे माया के बन्धनो से छुटकारा मिला और मेरे मन से सभी विकार दूर हो गए।।१।।

हे भाई! सत्सगति पाकर मैने दूसरो की आशा त्याग दी अह माया मोह मन को आकाक्षा सभी को गडढा खोदकर दबा दिया।।रहाउ।।

सत्सगति के कारण मेरा कोई दुश्मन नही रह गया। मै भी किसी से दुश्मनी नही करता। मुझे गुरु के द्वारा यह समझ प्राप्त हो गई है कि ससार का सब प्रसार परमात्मा आप ही है सब के भीतर उसने स्वय को फैलाया हुआ है।।२।।

अब मै हर प्राणी को मित्र समझता हू, मै भी सभी का सज्जन मित्र बना रहता हू। मेरे मन का विरह भी दूर हो गया है। जब मैने सत्सगति की शरण ली तब मेरे प्रभु ने मुझे अपने चरणो मे जगह दे दी।।३।।

सत्सगति द्वारा मेरे मन की धृष्टता समाप्त हो गई है। मेरे भीतर आत्मिक जीवन देने वाला नाम अमृत टिक गया है। गुरु का शब्द मुझे प्यारा लग रहा है। नानक का कथन है कि अब मैने जल थल आकाश मे सर्वत्र रमण करने वाले सुन्दर राम को देख लिया है।।४।।

(१८) सतुहु राम नामि निसतरीऐ

47

गुरि पूरै किरपा धारी। प्रभि पूरी लोच हमारी।

करि इसनानु ग्रिहि आए। अनद मगल सुख पाए।।१।।

सतुहु राम नामि निसतरीऐ।

ऊठत बैठत हरि हरि धिआईऐ अनदिनु सुक्रितु करीऐ।। रहाउ।।

सत का मारगु धरम की पउडी को वडभागी पाए।

कोटि जनम के किलबिख नासे हरि चरणी चितु लाए।।२।।

उसतति करहु सदा प्रभ अपने जिनि पूरी कल राखी।

जीअ जत सभि भए पवित्रा सतिगुर की सचु साखी।।३।।

बिघन बिनासन सभि दुख नासन सतिगुरि नाम द्रिडाइआ।

खोए पाप भए सभि पावन जन नानक सुखि घरि आइआ।।४।।

(राग सोरठि सबद – ५३) गुरु अर्जन देव जी/६२१–२२

हे सन्तो! राम नाम से ससार सागर से पार उतरा जा सकता है – मानव जीवन की यात्र सफल होती है। इसलिए उठते बैठते प्रतिपल परमात्मा का स्मरण करना चाहिए। प्रभु के नाम स्मरण की कमाई प्रतिदिन करनी चाहिए (रहाउ)।

जब से गुरु ने कृपा की है तबसे प्रभु ने हमारी कामनाए पूर्ण कर दी है हम आत्मिक रूप से शुद्ध होकर भीतर प्रभु का नाम स्मरण करते रहते है और आत्मिक आनन्द खुशिया और सुख महसूस कर रहे है।।१।।

नाम स्मरण ही गुरु द्वारा बतलाया सही मार्ग है यही धर्म की सीढी है लेकिन इसे कोई विरला भाग्यशाली पुरुष ही प्राप्त करता है जो मनुष्य परमात्मा के चरणो मे मन लगाता है उसके करोडो जन्म के पाप नष्ट हो जाते है।।२।।

हे सन्तो! जिस प्रभु ने अपना अस्तित्व प्रकट किया हुआ है उसकी गुण स्तुति करने वाले सभी प्राणी सदाचारी बन जाते है और आत्मिक अनुभव करते हुए स्थित प्रज्ञ हो जाते है। यह सतगुरु का प्रत्यक्ष दर्शन किया गया सत्य है।।३।।

गुरु नानक का कथन है कि विघ्नो और दु खो के नाश करने वाले सति गुरु का नाम हृदय मे दृढ करो। ऐसा करने से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते है सब प्रकार से पवित्र होने से उसके हृदय मे स्थायी आनन्द रहता है।।४।।

(१६) सत महिमा

48

तनु सतन का धनु सतन का मनु सतन का कीआ।
सन्त प्रसादि हरि नामु धिआइआ सरब कुसल तब थीआ।।१।।
सतन बिनु अवरु न दाता बीआ।
जो जो सरणि परै साधू की सो पारगरामी कीआ।। रहाउ।।
कोटि पराध मिटहि जन सेवा हरि कीरतनु रसि गाईऐ।
ईहा सुखु आगै मुख ऊजल जन का सगु वडभागी पाईऐ।।२।।
रसना एक अनेक गुण पूरन जन की केतक उपमा कहीऐ।
अगम अगोचर सद अबिनासी सरणि सतन की लहीऐ।।३।।
निरगुन नीच अनाथ अपराधी ओट सतन की आही।
बूडत मोह ग्रिह अन्ध कूप महि नानक लेहु निबाही।।४।।

(राग सोरठि सबद – ७) गुरु अजन दव – ६१०

हे भाई! जब कोई मनुष्य अपना तन मन धन सन्त जनो के हवाले कर देता है और सन्तो की कृपा से नाम स्मरण करने लगता है तब उसे सारे सुख मिल जाते है।

हे भाइ! सन्त जनो के इलावा परमात्मा का नाम देन वाला कोई नही हे। जो जो मनुष्य सत की शरण लेता है वह ससार समुद से पार होने योग्य हो जाता हे।

ह भाई! परमात्मा के सेवक की सेवा करने से कराडो पाप मिट जाते हे और प्रेम पूर्वक परमात्मा की गुण स्तुति की जा सकती ह। इस लोक मे आत्मिक आनन्द मिलता हे और परलोक मे मुक्त हो जाते हे। लेकिन सन्त जन का साथ भाग्य स मिलता है।

हे भाई! मेरी जिहा एक हे और सन्त जना मे गुण अनेक है उन की उपमा कैसी कही जा सकती है। सन्तो की शरण लेन से अविनाशी और अगम्य परमात्मा मिल सकता है।

दास नानक का कथन हे कि मे गुण हीन नीच निराश्रित विकृत हू मैने सन्ता का आश्रय लिया है। हे परमात्मा! गृहस्थ के मोह के अन्ध कूप म डूब रहे का साथ अन्तिम दम तक निभाओ।

49

हम सतन की रेनु पिआरे हम सतन की सरणा।

सत हमारी ओट सताणी सन्त हमारा गहणा।।१।।

हम सन्तन सिउ बणि आई।

पूरबि लिखिआ पाई।

इहु मनु तेरा भाई। रहाउ।।

सन्तन सिउ मेरी लेवा देवी सन्तन सिउ बिउहारा।

सन्तन सिउ हम लाहा खाटिआ हरि भगत भरे भण्डारा।।२।।

सन्तन मो कउ पूजी सउपी तउ उतरिआ मन का धोखा।

धरमराइ अब कहा करैगो जउ फाटिओ सगलो लेखा।।३।।

महा अनद भए सुखु पाइआ सन्तन के परसादे।

कहु नानक हरि सिउ मन मानिआ रगि रते बिसमादे।।४।।

(राग सोरठि सबद – १६) गुरु अजन दव/६१४

हे प्यारे प्रभु। मै सन्त जनो की चरण धूलि बना रहू उन की शरण मे रहू ऐसी मेरा कामना हे। सन्त ही प्रबल सहारा है और सन्त ही मेरा जीवन सुन्दर बनाने वाले हैं।

हे प्रभु! तुम्हारे सन्त जनो से मेरी प्रीति हो गई है। पूवलिखित लेख के अनुसार ऐसा हुआ है अब मेरा यह मन तुम्हारा प्रेमी बन गया है।

सन्तो के साथ ही मेरा लेने देन और व्यवहार है। सन्तो के साथ रहकर मैने यह लाभ प्राप्त किआ है कि मेरे भीतर भक्ति के खजाने भर गए है।

जब से सन्त जनो ने मुझे परमात्मा की भक्ति की पूजी दी है तब से मेरे मन का सशय दूर हो गया है। अब धर्मराज मुझ से कोई पूछ ताछ नही करेगे मेरे पूर्वकृत कर्मो के अनुसार लिखित हिसाब का कागज फट चुका है।

हे भाई! सन्तो की कृपा से मेरे भीतर अत्यन्त आत्मिक आनन्द विकसित हो गया है। नानक का कथन है कि मेरा मन परमात्मा के साथ विश्वस्त हो गया है और आश्चर्य जनक प्रभु के प्रेम रग मे रग गया है।

उसका जागना सहज मे होता है। उसका सोना सहज मे होता है। जो हो रहा है वह भी सहज ही हो रहा है। उसका वैराग्य भी सहज मे होता है। उसका हसना भी सहज मे होता है। उसका मौन और जाप भी सहज के प्रतीक है। वह नाम स्मरण सहज ही करता है और नाम का जप भी सहज करता है।

उसका भोजन सहज मे है प्रेम भी सहज है सहज के द्वारा उसका दुराव समाप्त हो जाता है। सहज ही उसे साधू सग प्राप्त हो जाता है सहज ही उसे पार ब्रह्म मिल जाता है।

सहज मे ही वह घर मे निवास करता है सहज ही वह घर का त्यागी हो जाता है। सहज ही उसके तन की दुविधा (द्वैत) दूर हो जाती है। जिसके मन मे सहज का आनन्द है उसे मानो परमात्मा ही मिल गया है।

सहज मे ही वह नाम रूपी अमृत पीता है। सहज मे ही वह नाम की जीअ दान जीवो को देता है। जिसका मन सहज पद की कथा मे रसमय हो गया उसके साथ मानो नाश रहित परमात्मा निवास कर रहा है।

सहज मे आसन स्थिर हो गया है। सहज मे ही अनाहत शब्द बज रहा है। सहज मे ही अनहत शब्द (रुण झुण) शोभायमान है उसके हृदय (रूपी घर) म परब्रह्म परमेश्वर समा रहा है।

जिसके मस्तक पर परमात्मा की कृपा कर्मो का लेख लिखा था उसे सहज ही सच्चा धर्मात्मा गुरु मिल जाता है। जिसे सहज मिलता है वही जानता है कि सहज क्या वस्तु है गुरु नानक उस पर बलिहार जाते है।

भाव साम्य -

कश्मीर की शैव साधिका ललद्यद ने गुरु के उपदेश के अनुसरण की भावना अपने वाख मे व्यक्त की है –

ग्वर शब्दस युस पछ बछ बरे
ग्यानह वग रटि चित तोरगस
इन्द्री शोमरिथ आनन्द करे
आदय कुस मरति मारन कस।

जो जीव गुरु की शिक्षा पर विश्वास करे और ज्ञान रुपी लगाम से चित्त रुपी अश्व और इन्द्रियो को वश मे करे वही मुक्त हो सकता है। वह मर नही सकता उसे कौन मार सकता है।

प्रभु अपने आप ही यह दात और सम्मान देते है। ह नानक! जो मनुष्य दरगाह मे प्रभु चरणो मे जुडा रहता है वह उससे कभी बिछुडता नही हे वह सदा ही परमात्मा के नाम मे लीन रहता है।।४।।

भाव साम्य

जीवन मुकत के सम्बन्ध मे लल द्यद ने वाख मे सक्षिप्त एव सारगर्भित वर्णन किया है–

चिदा नदस ज्ञानु प्रकाशस

यिमव च्यून तिव जीवतय मुकत

विशेमिस सम सारनिस पश्यस

अवोद्य गण्डाह शेत्य शेत्य दित।

जिन को चिदानन्द ज्ञान प्रकाश प्रभु का प्रगटाव हो जाता हे वे जीवन मुक्त है। (जीवित होने पर भी जन्म मरण के चक्कर से अलग है) वे लोग कितने नादान है जो इस ससार के माया जाल मे सौ सौ गाठे डाल कर उसी मे उलझ जाते है।

जीवनमुक्त माया के बन्धन से मुक्त गुरुमुख होते है। सामी जी ने अपने सलोक मे इस गुण पर बल दिया है–

माया मझि उदास व्रिले को गुर्मुख रहे।

जहि मिली साध सगति सा कयो अन्तरि मुखि अभ्यासु।

पर्ची डिठाई पाण म चेतन चिदाकासु।

सामी जाणे नासु जगतु सभु जगदीस रे।।७३।।

जिसने साधुओ के सग मे अन्तमुख हो अभ्यास किया है ऐसा कोई विरला गुरमुख भक्त ही माया से मुक्त रह सकता है। सामी जी कहते है कि उसने अपने आप मे ही चेतन चिदाकाश (परमेश्वर) को देखा है और जगदीश्वर के सिवा सारे विश्व को नश्वर माना है।

———— —

(२१) नाम चिन्तन

52

निधि सिधि निरमल नामु बीचारु। पूरन पूरि रहिआ बिखु मारि।।

त्रिकुटी छूटी बिमल मझारि। गुर की मत जीइ आई कारि।।१।।

इन बिधि राम रमत मनु मानिआ।

गिआन अजनु गुर सबदि पछानिआ।। रहाउ।।

इकु सुखु मानिआ सहजि मिलाइआ। निरमल बाणी भरमु चुकाइआ।।

लाल भए सूहा रगु माइआ। नदरि भई बिखु ठाकि रहाइआ।।२।।

उलट भई जीवत मरि जागिआ। सबदि रवै मनु हरि सिउ लागिआ।।

रसु सग्रहि बिखु परहरि तिआगिआ। भाइ बसे जम का भउ भागिआ।।३।।

साद रहे बाद अहकारा। चितु हरि सिउ राता हुकमि अपारा।

जाति रहे पति के आचारा। द्रिसटि भई सुखु आतम धारा।।४।।

तुझ बिनु कोइ न देखउ मीतु। किसु सेवउ किसु देवउ चीतु।

किसु पूछउ किसु लागउ पाइ। किसु उपदेसि रहा लिव लाइ।।५।।

गुर सेवी गुर लागउ पाइ। भगति करी राचउ हरि नाइ।

सिखिआ दीखिआ भोजन भाउ। हुकमि सजोगी निज घरि जाउ।।६।।

गरब गत सुख आतम धिआना। जोति भई जोती माहि समाना।

लिखतु मिटै नही सबदु नीसाना। करता करणा करता जाना।।७।।

नह पडितु नह चतुरु सिआना। नह भूलो नह भरमि भुलाना।।

कथउ न कथनी हुकमु पछाना। नानक गुरमति सहजि समाना।।८।।

(राग गउडी – अष्टपदी – १) (गुरुनानक/२२०)

निर्मल नाम का विचार ही निधि और सिद्धि है। विकार रहित मन स स्मरण करने से व्यापक परमात्मा के दर्शन होते है। निर्मल नाम से अन्त करण भी निर्मल हो जाता है और माया के तीन गुणो से छुटकारा मिल जाता है। इस प्रकार जीव को गुरु की शिक्षा फलदायक होती है।।१।।

नाम जाप से मन मे भरोसा होता है। गुरु के ज्ञान रुपी अन्जन से व्यापक परमात्मा से पहचान हो जाती है।।रहाउ।।

गुरु की निर्मल वाणी से सारा भ्रम दूर हो गया हें और सहज आनन्द की प्राप्ति हुई है। प्रभु कृपा से माया का विषमय प्रभाव दूर हो गया तथा ईश्वर के लाल रग के प्रेम मे रग गए।।२।।

प्रभु प्रेम से चित्तवृत्ति अन्तर्मुखी हो गई। मन माया की आसक्ति से मर गया। इस मरण से नया आत्मिक जीवन प्राप्त हुआ है और गुरु के वचन से मन हरि मे अनुरक्त हो गया। मन ने विषय रस का त्याग कर दिया और हरि रस सग्रह कर रहा है। हरि के प्रेम मे बसने से यमराज का भय दूर हो गया।।३।।

अहकार मे रत होकर विवाद से जीत हाने का स्वाद समाप्त हो गया। चित्त हरि से और उसके हुकुम से अनुरक्त हो गया है। जाति और लोक लाज के कम छुट गए है। परमात्मा की कृपा दृष्टि से अन्दर आत्मसुख प्राप्त हो गया है।।४।।

हे प्रभु! मुझे तुम्हे छोडकर और कोई मित्र दिखाइ नही देता। मे किसकी सेवा करु किसको अपना मन दू? अपनी कठिनाई किससे पूछू? किसके चरणो मे लगू किसके उपदेश से ध्यान लगाऊ?।।५।।

गुरु की मै सेवा करुगा। गुरु के चरणो मे लगूगा। गुरु की शिक्षा दीक्षा मे मेरा प्रेम है यही मेरी आत्मा का भोजन है। परमात्मा के भाणे मे अपने को मिलाकर मै अपने स्वरूप मे स्थित हो जाऊगा।।६।।

अब मेरा अहकार दूर हो गया है सुखपूर्वक आत्म ध्यान होने से निज स्वरूप मे स्थित हो गया हू। ध्यान स्थित होने से ज्योति ज्योति मे मिल गइ है। जब तक शब्द का निशान नही पडता तब तक पूव लिखे कर्मो की रेखा नही मिटती। नाम अभ्यास स कर्मो की लिखी लिखत भी मिट जाती है। अब मैने कारण और करता को जान लिया है।।७।।

हे नानक! मै सहज मे समा रहा हू। न तो कोई पण्डित है न कोई चतुर और विद्वान है न कोई भूला है न कोई भ्रम मे है। अब मै अपनी तरफ से कुछ कथन

नही कहता। मै अब केवल उसके हुकुम को पहचानता हू।।८।।

भाव साम्य -

निर्मल नाम का विचार ही सब सुखो का स्रोत है नाम सकीर्तन प्रभु के मिलन या सच्चा साधन हे। ज्ञानेश्वर जी ने इस तथ्य को श्री कृष्ण जी के द्वारा स्पष्ट है –

ऐसे माझनि नाम घोषे। नाहीचि करिती विश्वाची दु खे।
अवधे जगचि महासुखे। दुम दुमित भरले।।२००।।
कही एखादेनि वैकुण्ठी जावे। ते तिही वैकुठचि केले आघवे।
ऐसे नामघोष गौरवे। धवळले विश्व।।२०३।।
परी तयापाशी पाण्डवा। मी हारपला गिवसावा।
जेथ नामघोषु बरवा। करिती माझा।।२०८।।
कैसे माझया गुणी धाले। देशकाळाते विसरले।
कीतन सुखे सुखी झाले। आपणपाचि।।२०६।।
कृष्ण विष्णु हरि गोविन्द। या नामाचे निखिल प्रबन्ध।
माजी आत्मचर्चा विशद। उदड गाती।।२१०।।

(ज्ञानेश्वरी/६) सन्त ज्ञानेश्वर

इस प्रकार वे महात्मा लोग मेरे नाम कीर्तन के घोष से ही विश्व के दु खो का नाश करके समस्त ससार को आत्म सुख से भरपूर कर देते है।

वैकुण्ठ म तो शायद ही कभी कोई जाता हो किन्तु वे सारे विश्व को वैकुण्ठ बना डालते है। इस प्रकार वे केवल नाम घोष के कीर्तन से सारे ससार को स्वच्छ प्रकाशमय बना देते है।

ता भी हे अर्जुन जिस स्थान पर मेरे अनन्य भक्त प्रेम से मेरे नाम सकीर्तन का घोष करते है वहा मै जो और कही कभी नही मिलता सहज मे मिल जाता हू।

जरा देखो कि वे लोग मेरे गुणो मे कहा तक और कैसे लीन हो जाते है। उन्हे स्थल और काल का भी स्मरण नही रह जाता और वे मेरे नाम कीर्तन मे आत्म सुख प्राप्त करते है।

उन की कृष्ण विष्णु हरि गोविन्द के स्मरण की अखण्ड माला चलती रहती है और वे मेरे सम्बन्ध मे मुक्त हृदय से चर्चा करके जी भर कर मेरे गुणो के गीत गाते रहते है।

53

राम नामि मनु बेधिआ अवरु कि करी वीचारु।
सबद सुरति सुखु ऊपजै प्रभु रातउ सुख सारु।
जिउ भावै तिउ राखु तू मै हरि नामु अधारु।।१।।
मन रे साची खसम रजाइ।
जिनि तनु मनु साजि सीगारिआ तिसु सेती लिव लाइ।। रहाउ।।
तनु बैसन्तरि होमीऐ इक रती तोलि कटाइ।
तनु मनु समधा जे करी अनदिनु अगनि जलाइ।
हरि नामै तुलि न पुजई जे लखि कोटी करम कमाइ।।२।।
अरध सरीरु कटाईऐ सिरि करवतु धराइ।
तनु हैमचलि गालीऐ भी मन ते रोगु न जाइ।
हरि नामै तुलि न पुजई सभ डिठी ठोकि वजाइ।।३।।
कचन के कोट दतु करी बहु हैवर गैवर दानु।
भूमि दानु गऊआ घणी भी अन्तरि गरबु गुमानु।
राम नामि मनु बेधिआ गुरि दीआ सचु दानु।।४।।
मन हठ बुधी केतीआ केते बेद बीचार।
केते बन्धन जीअ के गुरमुखि मोख दुआर।
सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु।।५।।
सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ।
इकनै भाण्डे साजिऐ इकु चानणु तिहु लोइ।
करमि मिले सचु पाइऐ धुरि बखस न मेटै कोइ।।६।।
साधु मिलै साधू जनै सन्तोखु वसै गुर भाइ।
अकथ कथा वीचारीऐ जे सतिगुर माहि समाइ।
पी अम्रित सन्तोखिआ दरगहि पैधा जाइ।।७।।
घटि घटि वाजै किगुरी अनदिनु सबदि सुभाइ।
विरले कउ सोझी पई गुरमुखि मनु समझाइ।
नानक नामु न वीसरै छूटै सबदु कमाइ।।८।।

(राग सिरी – अष्टपदी – १४) गुरु नानक

मेरा चित्त राम नाम से बिन्ध गया है इसलिए मै अन्य क्या विचार करूँ? गुरु शब्दो मे लीन होने से मै प्रभु प्रेम मे रग गया हू, यही सुख का आधार है। हे प्रभु! जैसी भी तेरी रजा हो मुझे अपने चरणो मे रख। तेरा नाम मेरे चरणो का सहारा बन जावे।।१।।

हे मेरे मन! पति प्रभु की रजा मे चलना सत्य मार्ग है। हे मन! तू उस प्रभु के चरणो मे लिव जोड जिसने यह मन और शरीर पैदा करके इनको सुन्दर बनाया है।।रहाउ।।

अगर अपने शरीर को काट काट कर एक एक रत्ती भर तोल तोल कर अग्नि मे हवन कर दिया जावे। अपने मन और शरीर को हवन की सामग्री बना दिया जावे और रोजाना इनको आग मे जलाया जावे या ऐसे अनेको काम किये जावे। तो भी कोई काम परमात्मा के नाम की बराबरी तक नही पहुचता।।२।।

अगर सिर पर आरा रख कर शरीर को दो हिस्सो मे चिरवा दिया जावे अथवा शरीर को हिमालय पर्वत की बर्फ मे गला दिया जावे तो भी मन से हउमै (अहकार) रोग दूर नही होता। कर्मकाण्ड की सारी मर्यादा मैने अच्छी तरह से ठोक बजाकर देख ली है। कोई कर्म प्रभु के नाम स्मरण की बराबरी नही कर सकता।।३।।

अगर मै सोने के किले दान करु बहुत से उत्तम हाथी घोडे दान करु जमीन दान करु फिर भी इस दान का मन मे अहकार बन जाता है। मुझे सतगुरु ने सदा स्थिर प्रभु के नाम जपने की बख्शिश की है मेरा मन राम नाम से बिन्ध गया है यही सच्चा कार्य है।।४।।

अनेक लोगो की बुद्धि तप आदि कार्यो की ओर प्रेरित करती है जो मन के हठ से किये जाते है। अनेको लोग वेद आदि धर्म पुस्तको के अर्थ का विचार करते है और इसी वाद विवाद को जीवन का सही रास्ता मानते है। इसी प्रकार के अन्य कार्य है जो जीव के लिए बन्धन का कारण बन जाते है। किन्तु अहकार आदि के बन्धनो से निवृत्ति का दरवाजा गुरु के सन्मुख होने पर ही खुलता है क्योकि गुरु प्रभु के नाम स्मरण की शिक्षा देता है। सभी ज्ञान सत्य के ज्ञान तक नही पहुचते पर सच्चा आचरण सत्य के ज्ञान से ऊचा है।।५।।

प्रत्येक जीव को अच्छा ही कहना चाहिए जगत मे कोई नीच नही दिखाई देता क्योकि एक करतार ने ही सभी जीवो की रचना की है और तीनो लोको मे उसी करतार की ज्योति का प्रकाश है। स्मरण (सिमरन) की दात प्रभु कृपा से ही

मिलती है। और प्रभु के हुकम अनुसार जिसको सिमरन की दात मिलती है उसमे कोई रोक नही लगा सकता।।६।।

जो गुरमुख मनुष्य गुरमुखो की सगति मे मिल बैठता हे गुरु आशय के अनुसार चलने पर उसके मन मे सन्तोष का निवास होता है क्योकि अगर मनुष्य सतगुरु के उपदेश मे लीन रहे तो अनन्त गुणो वाले करतार की सिफत सालाह की जा सकती है। वह सिफत सालाह रूप अमृत पीने से सन्तोष ग्रहण कर लेता हे अत जगत मे आदर मान प्राप्त करके प्रभु की शरण मे पहुचता है।।७।।

गुरु के शब्द के द्वारा प्रभु के स्वभाव मे हर समय अभिन्न होकर रहने से यह निश्चय हो जाता है कि दैवीय जीवन की वीणा हर एक शरीर मे बज रही हे। किन्तु यह समझ किसी बिरले ही व्यक्ति को होती हे। हे नानक! जो व्यक्ति गुरु की शरण मे आकर अपने मन को इस प्रकार समझा लेता हे। उसे परमात्मा का नाम कभी नही भूलता वह गुरु के उपदेश अनुसार जीवन ढाल कर मुक्त हो जाता है।।८।।

अनुशीलन -

ससार के कार्यो (प्रपञ्च) मे व्यस्त होने पर भी प्रभु (परमार्थ) मे लिव लगाई जा सकती है। इस विषय को राग राम कली मे एक सबद मनु राम नामा बेधीअले मे भक्त नाम देव ने सुन्दर दृष्टान्त देकर समझाया है। बातचीत मे व्यस्त होने पर भी पतग उडाने वाले बालक का ध्यान पतग की डोरी मे रहता है पानी लाने वाली कन्या का ध्यान घडे मे रहता है काम मे व्यस्त माता का ध्यान पालने मे लिटाये गये बच्चे मे रहता है तथा चरागाह मे चरन वाली गाय का ध्यान घर मे बधे बछडे मे रहता है उसी प्रकार मेरा मन राम नाम से बीधा गया है।

(२२) मूल मन्त्र (हरि नाम)

54

अउखध मत्र मूलु मन एकै जे करि द्रिड़ु चितु कीजै रे।
जनम जनम के पाप करम के काटनहारा लीजै रे।।१।।
मन एको साहिबु भाई रे।
तेरे तीनि गुणा ससारि समावहि अलखु न लखणा जाई रे।। रहाउ।।
सकर खडु माइआ तनि मीठी हम तउ पड उचाई रे।
राति अनेरी सूझसि नाही लजु टूकसि मूसा भाई रे।।२।।
मनमुखि करहि तेता दुखु लागै गुरमुखि मिलै वडाई रे।
जो तिनि कीआ सोई होआ किरतु न मेटिआ जाई रे।।
सुभर भरे न होवहि ऊणे जो राते रगु लाई रे।
तिन की पक होवै जे नानकु तउ मृडा किछु पाई रे।।४।।

(राग गउडी/मबद – १६) गुरु नानक – १५६

हे भाइ! यदि तू जन्म जन्मान्तरो के किए कुकर्मो के सस्कारो को काटने वाला परमात्मा का नाम लेता रहे यदि तू नाम स्मरण मे चित्त को दृढ कर ले तो तुझे विश्वास आ जावेगा कि मन के रोग को दूर करने वाली सब से बढिया ओषधि प्रभु का नाम ही है यह मन को सयम मे करने वाला सब से कारगर मन्त्र है।।१।।

हे भाइ! विकारा से बचा सकने वाला एक प्रभु नाम ही है (उस के गुण पहचान) किन्तु जब तक यह इन्द्रिया सत रज और तम के तीन गुणो से युक्त इस ससार के मोह मे लगी हे तब तक उस अलक्ष्य प्रभु को समझा नही जा सकता।।रहाउ।।

हे भाई! हम जीवो ने माया की गठरी सिर पर उठाइ हुई है हमे तो अपने भीतर माया शक्कर जैसी मीठी लग रही है। हमारे लिए मोह की अन्धेरी रात फैली हुई है जिस मे हमे कुछ नही दिखाई देता। ऊपर से यमराज रुपी चूहा हमारी उम्र की रस्सी काटता जा रहा है।।२।।

हे भाई! स्वेच्छाचारी हा कर मनुष्य जितना भी काम करते है उतना ही दु ख होता है। लोक परलोक मे शोभा उन्हे मिलती है जो गुरु के सम्मुख रहते है। जो नियम उस परमात्मा ने बना दिया है वही होता है। नियम के अनुसार कर्म

के सस्कारो का समूह स्वेच्छाचारी हो कर मिटाया नही जा सकता।।३।।

नानक (कहता है) जो मनुष्य प्रभु के चरणो मे प्रीति जोडकर उसके प्रेम मे रगे रहते है उन के मन प्रेम रस से लबालब भरे रहते है वे प्रेम से खाली नही होते। यदि हमारा मूर्ख मन उन के चरणो की धूल बने तो इसे भी कुछ प्राप्त हो जावे।।४।।

भाव साम्य -

गुरु नानक देव जी ने जिस मूल मन्त्र की औषध का उल्लेख किया है गोस्वामी तुलसीदास जी ने उसे राम नाम के रुप मे अपनाया हे। माया के मीठे बोझ और त्रिगुणात्मक ससार ने वृद्धावस्था के जर्जर शरीर का स्वरूप ले लिया है अन्धेरी रात की कठिनाई रास्ते मे लपेटन और लोटन से और बढ गई है। रास्ते मे भटके मन्मुख जितना कुछ करते है उतना ही दुख बढता जाता हे। विषय मे मग्न तुलसी की प्रभु से भेट भी सभव नही है क्योकि प्रभु से दूरी बढ रही है। निश्चय ही राम यहा आवागमन का त्रास हरने वाले पर ब्रह्म स्वरूप है।

राम कहत चलु राम कहत चलु राम कहत चलु भाई रे।
नाहि तौ भव बेगारि मे परिहै छूटत अति कठिनाई रे।।१।।
बॉस पुरान साज सब अठकठ सरल तिकोन खटोला रे।
हमहि दिहल करि कुटिल करम चॅद मद मोल बिनु डोला रे।।२।।
विषम कहार मार मद माते चलहि न पॉउ बटोरा रे।
मद बिलद अभेरा दलकन पाइअ दुख झकझोरा रे।।३।।
कॉट कुराय लपेटन लोटन ठावहि ठाउँ बझाऊ रे।
जस जस चलिय दूरि हाय तस तस निज बास न भेट लगाऊ रे।।४।।
मारग अगम सग नहि सवल नॉउ गाउ कर भूला रे।
तुलसी दास भव त्रास हरहु अब होहु राम अनुकूला रे।।५।।

अरे भाई! राम राम राम राम कहत चला नही तो कही ससार की बेगार मे पकडे जाओगे तो फिर छूटना अत्यन्त कठिन हो जावेगा। (प्रभु नाम के मन्त्र के जाप स कई जन्म के पाप कट जाने से जन्म मरण की बेगार से मुक्ति मिल जावेगी)।।१।।

कुटिल कर्मचन्द (हमारे पूर्व जन्म कृत पाप कर्मो के प्रारब्ध) ने बिना मोल के

एसा खटोला (भजन हीन तामस प्रधान मनुष्य शरीर) हमे दिया हे जिस मे पुराना बॉस लगा लगा हे जिस का साज अट सट हे जो सडा हुआ तिकोन है। (सत रज तम तीन गुणो स निर्मित है)।।२।।

जिस को उठा कर चलन वाल कहार (पाच ज्ञानन्द्रिया) सख्या म विषम है और जाडी मे बाट कर समान गति से नही चल सकत। फिर यह कहार काम के मद म मतवाले हे आर उन की चाल बहक हुए शराबी जेसी हे। इन्द्रिया अपने अपन विषयो की आर दोडती हे। इस मे कभी ऊच कभी नीचे चलने से धक्के ओर झटके लग रह हे। बहकी हुई चाल और विषय आकर्षण की खीच तान से बडा ही दुख हो रहा ह।।३।।

परमात्मा को भुला कर चलन वाली इन्द्रियो के मार्ग मे अहकार के काटे क्रोध के ककड मोह की लपेटन वाली बले और लोभ की उलझन (लोटन) फैली है। जिन से पद पद पर रुक रुक कर दुख भोगते हुए चलना पडता हे। ससार के भोगो के माग म जस जसे आग बढते है वेसे वैसे भगवत प्राप्ति रूपी निजी घर से दूर होत जा रहे हे ओर काइ राह बताने वाला भी नही हे।।४।।

माग बडा कठिन हे। साथ म राह खच के लिए नाम की पूजी भी नही हे। यहा तक कि अपने गाव का नाम तक भूल गय हे। अत भगवान की कृपा के बिना परम पद रूपी घर तक नही पहुच सकते। इसलिए हे श्री राम जी! अब आप ही कृपा करके तुलसीदास के जन्म मरण रूपी ससार भय को दूर कीजिए।

भाव साम्य

कुर आन मजीद मे नाम सिमरन को सब से ऊच रूप मे रखा गया है –

बेशक मुसलमान इमानवाले आज्ञाकारी सच्चे सब्र रखने वाले अल्लाह क आग झुकन वाले खेरात दने वाल रोजा रखन वाले जितेन्द्रिय ओर अल्लाह को स्मरण करने वाल – ऐस मद और ओरते इन क लिए अल्लाह ने बहुत प्रतिफल रखे हे।

(सूर अल अह जाब XXXIII/३५)

-----

(२३) शुभ कर्म

55

विदिआ वीचारी ता परउपकारी।

जा पच रासी ता तीरथ वासी।।१।।

घुघरू वाजै जे मनु लागै।

तउ जमु कहा करे मो सिउ आगे।। रहाउ।।

आस निरासी तउ सनिआसी।

जा जतु जोगी ता काइआ भोगी।।२।।

दइआ दिगबरु देह बीचारी।

आपि मरै अवरा नह मारी।।३।।

एकु तू होरि वेस बहुतेरे।

नानकु जाणै चोज न तेरे।।४।।

(राग आसा सवद – २५) गुरु नानक/३५६

जो विद्या पर विचार (आचरण) करता हे वही (पण्डित) परोपकारी होता है अर्थात दूसरो का हित करता है।

जब ज्ञानेन्द्रियो को कोई वशीभूत करता है तभी वह सच्चा तीर्थवासी होता हे।।१।। अगर मन लगता हे तब अनाहत शब्द हाता है। तब परलोक मे यमराज मेरा क्या बिगाडेगा? रहाउ

आशाओ मे भी निराश बने रहने पर ही कोई वास्तविक सन्यासी होता हे जब किसी योगी म सयम होता है तभी शरीर का वास्तविक सुख भागता ह।।२।। जिस मे दया और काया का विचार हे वही वास्तव मे दिगम्बर है। जा हरि भक्ति मे जीवित अवस्था मे ही स्वय मर जाता है वह दूसरो को मार नही पाता। (अहिसा मे विश्वास हाने स दु ख नही देता)।।३।। हे प्रभु तुम अकल हो तुम्हार वेष अनेक हे नानक तुम्हारी लीला का कथन नही कर सकता।।४।।

भाव साम्य -

केवल शास्त्र अध्ययन या कथनी मात्र पयाप्त नही ह इस विषय पर भाई गुरुदास कवित्त मे गुरुवाणी की व्याख्या करते ह–

पूछत पथिक तिह मार्ग न धारै पग
प्रीतम के देस कैसे बातन से जाइए?
पूछत है बैद खात औखधि न सजम से
कैसे मिटै रोग सुख सहज समाइए?
पूछत हे सोहागनि करम है दोहागनि के
रिदै बिभचार कत सेजा बुलाईए?
गाए सुणे आखे मीचै पाइऐ न परम पद
गुरु उपदेस गहि जौ लौ न कमाईऐ।।४३६।।

(भाई गुरदास जी)

अगर कोइ पथिक रास्ते को पूछता रहे किन्तु उस पर चले नही तो वह अपनी मजिल पर नही पहुचता उसी प्रकार हम प्रियतम के देश मे केवल बातो से नही पहुच सकते।

अगर कोइ रागी वैद्य से ओषधि तो पूछता है किन्तु उस का सेवन सयम से नही करता हे तो उसका रोग नही कटता और वह सुख लाभ नही कर सकता।

अगर कोई नारी बात तो सुहागिनो की तरह करती है किन्तु उसके कर्म दुहागिन (बुरे कर्म वाली नारी) के है उसके हृदय मे व्यभिचार की भावना है तो वह अपनी सेज पर प्रियतम को कैसे बुला सकती है?

परम पद की प्राप्ति गाने सुनने या आख मूद कर बगले की तरह ध्यान लगाने स नही होती जब तक गुरु उपदेश को ग्रहण कर उस पर आचरण न किया जाव।।४३६।।

भाव साम्य -

बोले तेसा चाले। त्याची बन्दीन पाउले।
अगे झाडीन अगन। त्याचे दासत्व करीन।
त्याची होऊन किकर। उभा ठाके जुडन करि।
तुका म्हणे देव। त्याचे चरणी माझा भाव।

जिस मनुष्य की कथनी करनी एक है मै उसकी चरण वन्दना करता हू, उसका दास होकर चरण धूल झाडता हू और दोनो हाथ जोडकर सेवा मे खडा हू। तुका कहते है उसके चरणो मे मेरी प्रीति है।

56

सुक्रितु करणी सारु जपमाली।

हिरदै फेरि चलै तुधु नाली।।१।।

हरि हरि नामु जपहु बनवाली।

करि किरपा मेलहु सतसगति तूटि गई माइआ जम जाली।। रहाउ।।

गुरमुखि सेवा घाल जिनि घाली।

तिसु घडीऐ सबदु सची टकसाली।।२।।

हरि अगम अगोचरु गुरि अगम दिखाली।

विचि काइआ नगर लधा हरि भाली।।३।।

हम बारिक हरि पिता प्रतिपाली।

जन नानक तारहु नदरि निहाली।।४।।

(राम भैरउ – ३) गुरु राम दास/११३४

उत्तम कर्म ही जप माला है। उसे हृदय मे फेरो (शुभ कर्म करो) उसी का फल तुम्हारा साथ देगा।।१।।

ऐ मन! परमात्मा (प्रकृति के स्वामी) का नाम जपो। वह कृपा पूर्वक तुम्हे सत्सगति मे विचरण का सुअवसर प्रदान करेगा जिस से तुम्हारा माया जा'ल भग हो जावेगा।।रहाउ।।

जिस ने शब्द विचार के द्वारा गुरु की सेवा का परिश्रम किया है उस की सुरत प्रभु के दरबार से जुड जाती है।।२।।

गुरु उस अगम अगोचर परमात्मा को दिखाता है जो पहुच से पर है। वह शरीर के भीतर ही वह नगर बता देता है जहा परमात्मा कि खोज की जानी चाहिए।।३।।

हम बालक है प्रभु पालन करने वाला पिता है। वह कृपा की एक दृष्टि से ही मुक्त कर देता है।।४।।

―――――

(२४) दरसनु हरि देखण कै ताई

57

करउ बिनउ गुर अपने प्रीतम हरि वरु आणि मिलावै।
सुणि घनघोर सीतलु मनु मोरा लाल रती गुण गावै।।१।।
बरसु घना मेरा मनु भीना।
अम्रित बूद सुहानी हीअरै गुरि मोही मनु हरि रसि लीना।। रहाउ।।
सहजि सुखी वर कामणि पिआरी जिसु गुर बचनी मनु मानिआ।
हरि वरि नारि भई सोहागणि मनि तनि प्रेमु सुखानिआ।।२।।
अवगण तिआगि भई बैरागनि असथिरु वरु सोहागु हरी।
सोगु विजोगु तिसु कदे न विआपै हरि प्रभि अपणी किरपा करी।।३।।
आवण जाणु नही मनु निहचलु पूरे गुर की ओट गही।
नानक राम नामु जपि गुरमुखि धनु सोहागणि सचु सही।।४।।

(राग मलार सबद – २) गुरु नानक/१२५४

मे अपने गुरु के समक्ष विनती करता हू कि वह मेरे प्रीतम हरि को मुझे मिलाए। मेरे सति गुरु बाणी के बादल है। उन के उपदेश का गर्जन सुनकर मेरा मन शीतल हो गया है। जिस मे अनुरक्त होकर मरी वाणी उस के रग मे रग गइ है तथा उस का गुण गान कर रही है।।१।।

जब बादल रुपी सतिगुरु ने उपदेश रुपी जल मुझ पर बरसाया तो मेरा मन प्रेम से भीग गया है। सतिगुरु का उपदेश अमृत मुझे सुहावना लगा हे मरी बुद्धि गुरु की और आकर्षित हुई है और मन हरि प्रभु के प्रेममय आनन्द मे लीन हो गया है।।रहाउ।।

वही स्त्री पति की प्यारी और सुखी है जिस ने अपने मन मे गुरु के वचनो पर विश्वास कर लिया हे। अपने प्रीतम को पा कर वह सुहागिन हो गई है। उस के मन आर तन मे परमात्मा के प्रेम का सुख व्याप्त है।।२।।

जो स्त्री अवगुणो को त्याग कर सच्ची वैरागिन हुई है उसे हरि का स्थिर सुहाग प्राप्त होता है। उस पर हरि प्रभु अपनी कृपा करते है और शोक और वियाग का दुख उसे नही मिलता।।३।।

जिन्होने पूरे सतिगुरु की ओट ली है उन का मन स्थिर हुआ है ओर इसी के फल स्वरूप उन का जन्म मरण नही होता। गुरु नानक देव जी का कथन है कि जिसने गुरु के द्वारा राम नाम का स्मरण करके सत्य स्वरूप को दृढ कर लिया है वह सुहागिन धन्य है।।४।।

58

कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा हउ तिसु पहि आपु वेचाई।।१।।
दरसनु हरि देखण कै ताई।
क्रिपा करहि ता सतिगुरु मेलहि हरि हरि नामु धिआई।। रहाउ।।
जे सुखु देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई।।२।।
जे भुख देहि त इत ही राजा दुख विचि सूख मनाई।।३।।
तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगनी आपु जलाई।।४।।
पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई।।५।।
नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई।।६।।

(राग सूही – अष्टपदी {पहली ६ पक्ति}) (गुरु रामदास/७५७)

हे भाई! यदि कोई मेरा प्रियतम मुझे मिलाए तो मै उस के समक्ष अपने आप को बेच दू।।१।।

हे प्रभु! यदि तुम कृपा करो तो मुझे गुरु मिला दो तो मै सदैव तुम्हारे दर्शनो के लिए तुम्हारा नाम स्मरण करता रहू।

ह प्रभु! यदि तुम मुझे सुख दा तो मे तुम्हे ही स्मरण करता रहू, दु ख के क्षण मे भी तुम्हारी ही आराधना करता रहू।।२।।

यदि तुम मुझे भूखा रखोगे तो उस स्थिति मे भी सन्तुष्ट रहूगा और दुखो मे भी सुख महसूस करुगा।।३।।

तुम्हारे दर्शना के लिए मै तन काट काट कर भेट कर दूगा और स्वय को अग्नि मे भट कर दूगा।।४।।

हे प्रभु! (तुम्हारा नाम स्मरण करने वाले भक्त जनो को) पखा करुगा उनके लिए पानी ढोऊगा। जो कुछ तुम दोगे वही प्रसन्न हो कर खा लूगा।।५।।

गरीब नानक तुम्हारे द्वार पर शरणागत है उसे अपने चरणो मे जगह दो तुम्हारा उपकार होगा।।६।।

भाव साम्य

प्रभु के प्रति अनन्य समर्पण भक्त का एक प्रमुख लक्षण है जो किसी प्रकार की कठिनाइयो से विचलित नही होता। गुरु प्रभु से भेट कराता है इसलिए गुरु के प्रति भी वही श्रद्धा और समर्पण अपेक्षित है। समर्पण सिक्ख या भक्त के मन मे अन्तरिहित रहता है। कन्नड भाषा की साधिका अक्का महादेवी ने इस विचार को अपने शब्दो मे व्यक्त किया है—

चदनव कडिदु कारदु तेदाड नादनदु कप बिट्टित?
तदु सवर्णव कडिदारदाड बदु कळक हिडिदित्त?
सदु सदनु किडदु कब्बनु तदु गाणदलिक्कि अरदड
बदु पाकगूळ सक्करयागि नादनदु सविय बिट्टित?
ना हिद माडिद हीनगळल्लव तदु मदिळुहळु निमग हानि!
एन्न तद चेन्न मल्लिकार्जन देवय्य कादाड शरणबुद माण।।

चन्दन की लकडी को काटकर चीर कर घिसने पर चन्दन यह समझ कर कि मुझे बहुत कष्ट हुआ अपनी सुगन्धि छोड देगा?

सोन को काट कर तपा कर शुद्ध करने पर उस पर कलक लग सकता है?

इख को काट काट घानी मे पीस पीस कर रस निकाले और उसे गरम कर खौला कर शक्कर बनावे तो क्या वह अपने को दुखी समझकर अपनी मिठास को छोड देगा?

यदि मै अपने पूर्वकृत पापो की गठरी को सामने उतार दू तो क्या आपका नुकसान होगा?

परम पिता परमात्मा अगर मार भी डाले तो उनकी शरण मे आश्रय पाने का प्रयत्न नही छोडूगी।

———————

(२५) मै बनजारनि राम की

59

अपुने ठाकुर की हउ चेरी।

चरन गहे जगजीवन प्रभ के हउमै मारि निबेरी।। रहाउ।।

पूरन परम जोति परमेसर प्रीतम प्रान हमारे।

मोहन मोहि लीआ मनु मेरा समझसि सबदु बीचारे।।१।।

मनमुख हीन होछी मति झूठी मनि तनि पीर सरीरे।

जब की राम रगीलै राती राम जपत मन धीरे।।२।।

हउमै छोडि भई बैरागनि तब साची सुरति समानी।

अकुल निरजन सिउ मन मानिआ बिसरी लाज लुोकानी।।३।।

भूर भविख नाही तुम जैसे मेरे प्रीतम प्रान अधारा।

हरि कै नामि रती सोहागनि नानक राम भतारा।।४।।

(राग सारग सबद – १) (गुरु नानक/११६७)

मै अपने स्वामी प्रभु की दासी हूँ। उस जगत को जीवन देने वाले परमात्मा के मैने चरण पकडे है। और अह भाव को मार कर समाप्त कर दिया है।। रहाउ।।

पूण परब्रह्म परमेश्वर मेरे प्रियतम है मेरे प्राणनाथ है। प्रभु ने मेरा मन मोह लिया है और अब वह गुरु के शब्द को विचार कर उसे समझने लगा है।।१।।

गुरु से विमुख हीन ओछी और मिथ्या बुद्धि वाला होता है उस के तन मन मे पीडा ही पीडा भरी रहती है। जब से मुझे अपने रगीले स्वामी का रग चढा है तब से राम नाम जपते हुए मन निरन्तर धैर्यवान बनता जा रहा है।।२।।

अह भाव को छोडकर जब मै ससार से विरक्त हुआ तब मेरी आत्मा सत्य मे समा गई। माया से परे और कुल जाति से रहित प्रभु से मन लग गया। झूठी दुनियावी लाज चुक गई।।३।।

मेरे प्राणाधार प्रियतम तुम्हारे समान तो कोई भूत भविष्य मे कही नही मिला। गुरु नानक कहते है कि हरि नाम जपने वाली जीवात्मा ही सुहागिन है और हरि ही उस का पति है।।४।।

60

हरणी होवा बनि बसा कद मूल चुणि खाउ।

गुर परसादी मेरा सहु मिलै वारि वारि हउ जाउ जीउ।।१।।

मै बनजारनि राम की।

तेरा नामु वखरु वापारु जी।। रहाउ।।

कोकिल होवा अबि बसा सहज सबदि बीचारु।

सहजि सुभाइ मेरा सहु मिलै दरसनि रूपि अपारु।।२।।

मछुली होवा जलि बसा जीअ जत सभि सारि।

उरवारि पारि मेरा सहु वसै हउ मिलउ गी बाह पसारि।।३।।

नागनि होवा धर वसा सबदु वसै भउ जाइ।

नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ।।४।।

(राग गउडी वैरागणि – १६) गुरु नानक/१५७

मै परमात्मा की बनजारिन हू। नाम रूपी सौदे का मै व्यापार करने वाली हू।।रहाउ।।

अब अगर हिरनी के समान मेरा निवास जगल मे हो तो बन के कन्द मूल चुन चुन कर खाऊ ओर गुरु की कृपा से मुझे मेरा पति प्रभु मिल जावे तो न्योछावर हो जाऊ।।१।।

अगर म कायल होऊ तो आम के ऊपर जा बसू और सहज योग मे रहकर शबद का विचार करु। वहा मुझे मेरा स्वामी सहज स्वाभाविक ही मिल जावे तो मै उसके दर्शन और अपार रूप पर बलिहार होऊ।।२।।

अगर मै मछली हाऊ तो जीव जन्तुओ के पालक परमात्मा को याद करु और इस पार से उस पार तक व्यापक प्रभु से बाह पसार कर मिलू।।३।।

अगर मै नागिन होऊ और धरती मे बसू तब मेरे मन मे शब्द (ब्रह्म) बस जावे इस प्रकार वियोग से सदैव निर्भय हो जाऊ। नागिन शब्द सुनकर मस्त होती है। मै शब्द ब्रह्म द्वारा ब्रह्म मे लीन हो जाऊ। हे नानक! जिनकी ज्योति ज्योति स्वरूप मे समा जावे वे सदा सुहागिन है।।४।।

———

(२६) नामे प्रीति नाराइण लागी

61

जैसी भूखे प्रीति अनाज। त्रिखावत जल सेती काज।
जैसी मूड कुटब पराइण। ऐसी नामे प्रीति नराइण।।१।।
नामे प्रीति नाराइण लागी।
सहज सुभाइ भइओ बैरागी।। रहाउ।।
जैसी पर पुरखा रत नारी। लोभी नरु धन का हितकारी।
कामी पुरख कामनी पिआरी। ऐसे नामे प्रीति मुरारी।।२।।
साई प्रीति जि आपे लाए। गुर परसादी दुबिधा जाए।
कबहू न तूटसि रहिआ समाइ। नामे चितु लाइआ सचि नाइ।।३।।
जैसी प्रीति बारिक अरु माता। ऐसा हरि सेती मनु राता।
प्रणवै नामदेउ लागी प्रीति। गोबिदु बसै हमारै चीति।।४।।

(राग भेरउ – सबद – १) नाम दव/११६४

जिस प्रकार भूखे व्यक्ति की अन्न से प्रीति होती है प्यासे जन को जल की इच्छा होती है जैसे मूढ जीव कुटुम्ब के मोह मे आसक्त होता हे वैसे ही नामदेव को परमात्मा से प्यार है।।१।।

नाम देव को प्रभु से प्यार है वह राहज स्वभाव से ही वैरागी बन गया।। रहाउ।।

जैसे कुलटा नारी पर पुरुष मे रत होती है लोभी व्यक्ति को धन से प्यार होता है कामी जन को कामिनी की आसक्ति होती है ऐसी ही प्रीति नामदेव जी की प्रभु मे है।।२।।

वही प्रीति उत्तम है जो प्रभु की प्रेरणा से उपजती है। गुरु की कृपा से दुविधा नष्ट हो जाती है। ऐसी प्रीति कभी नही टूटती प्रेमी प्रिय मे ही मग्न रहता है नामदेव जी ने भी इसी दिशा मे सच्चे नाम के साथ (श्रेय के साथ) पक्की प्रीति लगाई है।।३।।

जैसी प्रीति बालक और माता मे होती है ऐसे ही मेरा मन भी हरि मे रत है। नाम देव जी कहते है कि उन्हे ऐसी प्रीति लगी है कि प्रभु हर समय उनके चित्त मे बसते है।

62

हटवाणी धन माल हाटु कीतु। जूआरी जूए माहि चीतु।
अमली जीवै अमलु खाइ। तिउ हरि जनु जीवै हरि धिआइ।।१।।
अपनै रगि सभु को रचै।
जितु प्रभि लाइआ तितु तितु लगै।। रहाउ।।
मेघ समै मोर निरतिकार। चद देखि बिगसहि कउलार।
माता बारिक देखि अनद। तिउ हरि जन जीवहि जपि गोबिन्द।।२।।
सिघ रुचै सद भोजनु मास। रणु देखि सूरे चित उलास।
किरपन कउ अति धन पिआरु। हरि जन कउ हरि हरि आधारु।।३।।
सरब रग इक रग माहि। सरब सुखा सुख हरि कै नाइ।
तिसहि परापति इहु निधानु। नानक गुरु जिसु करे दानु।।४।।

(राग बसन्त/सबद–२) गुरु अर्जन देव जी/११८०

जिस प्रकार दुकानदार का ध्यान अपनी दुकान पर धनमाल इकट्ठा करने मे रहता हे जुआरी का चित्त जूए मे रहता है तथा अफीमची अफीम खा कर जीवित रहता है उसी प्रकार हरि का दास हरि का ध्यान करके जीवित रहते है।।१।।

हे भाई! सभी अपने अपने रग मे लीन है। जहा जहा प्रभु ने लगाया है वहा वहा हर कोई लगा है।।रहाउ।।

जिस प्रकार बादलो के गर्जने पर मोर नृत्य करते है और चन्द्रमा को देखकर कमलिनी विकसित होती है। बच्चे को देखकर माता आनन्दित होती है। उसी प्रकार हरि के दास गोविन्द का जाप करके जीवित रहते है।।२।।

जिस प्रकार मास के भोजन की शेर सदैव रुचि रखता है और युद्ध देखकर शूरवीर का चित्त उत्साहित हो जाता है। कजूस को धन से प्यार होता है उसी प्रकार हरि के दास को केवल हरि का आधार है।।३।।

एक अद्वितीय परमात्मा के प्रेम रग मे ही सभी रग है सारे सुख एक परमात्मा के प्रेम करने से प्राप्त होते है। हरि नाम के सुख मे ही सब सुख समाहित है किन्तु हे नानक! यह नाम का खजाना उसे प्राप्त होता है जिसे गुरु यह दान देता है।।४।।

भाव साम्य -

प्रभु के प्रति अपने अनन्य प्रेम का वर्णन नाम देव जी के द्वारा विविध दृष्टान्त देकर किया गया है। गुरु अर्जन देव जी के सबद मे भी उसी शैली का अनुसरण, है।

सस्कृत मे शकराचार्य जी ने शिवानन्द लहरी मे भगवान के प्रति प्रेम को इसी प्रकार व्यक्त करते हुए भक्ति की परिभाषा भी दी हे–

रोधस्तोयहृत श्रमेण पथिकश्छाया तरोर्वृष्टितो

भीत स्वस्थगृह गृहस्थमतिथिर्दीन प्रभु धार्मिकम।

दीप सतमसाकुलश्च शिखिन शीतावृतस्त्व तथा

चैत सर्वभयापह व्रज सुख शम्भो पदाम्भोरुहम।।६०।।

अडकोल निज बीजसततिरयस्कान्तोपल सूचिका

साध्वी नेजविभु लता क्षितिरुह सिन्धु सरिद्वल्लभम।

प्राप्नोतीह यथा तथा पशुपते पादारविन्दद्वय

चेतोवृत्तिरुपेत्य तिष्ठति सदा सा भक्तिरित्युच्यते।।६१।।

जिस तरह जल धारा मे बहता व्यक्ति किनारे तक पहुचना चाहता है थका हुआ व्यक्ति पेड की छाया चाहता है। वर्षा से डरा व्यक्ति घर की शरण लेता है अतिथि किसी गृहस्थ के पास पहुचता है दीन व्यक्ति किसी मानव प्रेमी स्वामी को खोजता है। घने अन्धकार से आकुल दीपक का प्रकाश चाहता हे शीत से पीडित अग्नि चाहता हे।

उसी प्रकार हे मेरे मन! तू सभी डर दूर करने वाले शम्भु के चरण कमल तक आसानी से पहुच।।६०।।

जिस प्रकार अडकोल वृक्ष का बीज उड कर अपने पेड से चिपक जाता है। जिस प्रकार सूइ चुम्बक से चिपक जाती है। साध्वी नारी अपने पति मे स्थायी प्रेम रखती है लता एक पेड का सहारा लेती हे और नदी सागर की ओर दोडती है।

उसी प्रकार यदि मन का प्रवाह सभी जीवो के स्वामी (पशुपति शिव) के चरणो की ओर होता हे और सदा वहा टिकता है उसे भक्ति कहते है।।६१।।

सन्त तुका राम जी ने पाण्डुरग के प्रति अपनी अनन्य भक्ति को इस प्रकार व्यक्त किया है।

कामिनीसी जैसा आवडे भ्रतार। इच्छीत चकोर चन्द्र जैसा।

तैसे ही आवडी विट्ठलाचे पायी। लागलिया नाही गर्भवास।

दुष्काले पीडिल्या आवडे भोजन। आणिक जीवन तृषा क्रान्ता।

कामातुर जैसा भय लज्जा साडोनि आवडे कामिनी सर्वभावे।

तुका म्हणे तेसे राहिली आवडी पाडुरग थडी पाववली।।

तुका राम/४५०२

जैसी सुन्दर रमणी प्रियतम की चकोर चन्द्र की इच्छा करता है प्रभु से साक्षात्कार की इच्छा ठीक वेसी ही है। जैसी पीडित भोजन की प्यासा पानी की और कामातुर नर लज्जा और भय त्याग कर नारी की कामना करता है वैसी ही प्रीति पाडुरग भगवान मे मेरी है।

माते विण बाला। आणीक न माने सोहला।

तैस जाला मया चिन्ता तुझ बिन पढरी नाथ।

वाट पाहे मेघा बिन्दु मेघे चातिक सरिता सिन्धु।

सारसाशी निशी ध्यान रवीच्या प्रकाशी।

जीवना विण मत्स्य जेसे धानू लागी वत्स।

पनि व्रते जिणे भ्रातराच्या वर्तमाने।

कृपणा चे धन लोभ्या लागी जैसे मन।

तुका म्हणे काय तुझ बिन प्राण राहे।

जा दशा बच्चे की मेले मे मा से बिछड कर होती है हे पण्ढरी नाथ वही दशा मेर हृदय की है। चातक सरिता और सिन्धु को त्याग कर केवल मेघ की बूद चाहता है। कमल रात्रि भर सूर्य के प्रकाश के ध्यान मे खिचा रहता है मछली जल की धारा के लिए बछडा गाय के लिए पतिव्रता अपने पति (भरता) के लिए तथा कजूस धन के लिए जैसे व्यग्र और उत्सुक रहता है वही दशा मेरी है तुम्हारे बिना मेरा मरण निश्चित है।

63

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि।
लहरी नालि पछाडीऐ भी बिगसे असनेहि।
जल महि जीअ उपाइ कै बिनु जल मरणु तिनेहि।।
मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर।
गुरमुखि अन्तरि रवि रहिआ बखसे भगति भण्डार।। रहाउ।।
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछुली नीर।
जिउ अधिकउ तिउ सुखु घणो मनि तनि सान्ति सरीर।
बिनु जल घडी न जीवई प्रभु जाणे अभ पीर।।२।।
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चात्रिक मेह।
सर भरि थल हरिआवले इक बून्द न पवई केह।
करमि मिलै सो पाइऐ किरतु पइआ सिरि देह।।३।।
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल दुध होइ।
आवटणु आपे खवै दुध कउ खपणि न देइ।
आपे मेलि विछुन्निआ सचि वडिआई देइ।।४।।
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चकवी सूर।
खिनु पलु नीद न सोवई जाणै दूरि हजूरि।
मनमुखि सोझी न पवै गुरमुख सदा हजूरि।।५।।

(सिरी राग अष्टपदी – ११) गुरु नानक–स्री राग/५६

हे मन! परमात्मा के साथ ऐसी प्रीति कर जसे कमल की पानी से है और पानी की कमल स। कमल पानी मे धक्क खाता हे फिर भी परस्पर प्यार के कारण वह कमल विकसित ही हाता हे। पानी मे कमल को उत्पन्न करके परमात्मा ऐसी लीला करता है कि पानी क बिना उसकी मौत हो जाती है।।१।।

हे मन! प्रभु क प्रम के बिना तू माया के धक्को से बच नही सकता किन्तु यह प्यार गुरु की शरण क बिना नही मिलता। गुरु के सन्मुख रहने वाले मनुष्या मे गुरु की कृपा से एसा प्रेम का भाईचारा बनता है कि परमात्मा हर समय मौजूद रहता है। गुरु उनका प्रभु के खजाने ही सौप देता है।।रहाउ।।

हे मन! परमात्मा के साथ ऐसा प्रेम कर जैसा मछली का पानी के साथ है। पानी जितनी ही अधिक होता है मछली को उतना ही अधिक आनन्द होता है उसके मन तन और शरीर मे शीतलता होती है। पानी के बिना मछली एक क्षण भी जी नही सकती। मछली के हृदय की यह वेदना परमात्मा ही जानता है।।२।।

हे मन! प्रभु के साथ ऐसी प्रीतिकर जैसी पपीहे की स्वाति नक्षत्र की एक बून्द से है। पानी से सरोवर भरे होते है किन्तु अगर स्वाति नक्षत्र मे हुई वर्षा के जल की एक बून्द पपीहे के मुह मे न पडे तो उसको उस सारे पानी से कोई प्रयोजन नही है। पर हे मन! तेर भी क्या बस मे है? परमात्मा अपनी कृपा से ही मिले तो मिलता है नही तो पूर्व जन्म के कार्मो का फल शरीर पर सहन करना पडता है।।३।।

हे मन! हरि के साथ ऐसा प्यार कर जैसा पानी और दूध का हे। पानी दूध मे आ मिलता है दूध की शरण लेता है दूध उसको अपना रूप बना लेता है। जब पानी मिले दूध को आग पर रखते हे तो पानी दूध को जलने नही देता और अग्नि का ताप स्वय ही सहन कर लेता है। इसी प्रकार जीव अपने आपको कुरबान करे तो प्रभु बिछुडे जीवो को अपने साथ मिलाकर लोक परलोक मे सम्मान दता है।।४।।

हे मन! परमात्मा के साथ ऐसा प्यार कर जैसा कि चकवी का प्यार सूरज के साथ हे। जब सूरज डूब जाता है तो चकवी एक क्षण या एक पल भी नीद के वश मे आकर नही सोती। दूर छिपे सूर्य को अपने समीप समझती है। जो मनुष्य गुरु के सन्मुख रहता है उसे परमात्मा अपने हृदय मे निवास करता दिखाई देता हे किन्तु अपने मन के पीछे चलने वाले को यह समझ नही होती।।५।।

भाव साम्य -

गुरु नानक देव जी ने प्रभु के प्रति प्रीति को विविध दृष्टातो से प्रस्तुत किया हे। शडकराचार्य जी ने शिवानन्द लहरी मे प्रभु के प्रति प्रेम की व्यञ्जना निम्न प्रकार की है –

हस पदमवन समिच्छति यथा नीलाम्बुद चातक
कोक कोकनदप्रिय प्रतिदिन चन्द्र चकोरस्तथा।
चेतो वाच्छति मामक पशुपते चिन्मार्गमृग्य विभो
गौरीनाथ भवत्पदाब्जयुगल कैवल्य सौरव्यप्रद।।५६।।

जिस प्रकार हस कमल के सरोवर की इच्छा करता है। चातक पक्षी काले बादलो की प्रतीक्षा करता है। चक्रवाक पक्षी को जिस प्रकार सूर्य प्रिय है और चकोर चन्द्रमा के लिए व्याकुल होता है।

उसी प्रकार ह गौरी नाथ! मेरा चित्त आप के चरण कमल युगल की कामना करता है जिन तक ज्ञान के द्वारा पहुचा जाता है। हे सब जीवो के स्वामी! आप के चरण कमल मुक्ति देने वाले है।

हस कमल सरोवर के सहारे रहता है। चातक स्वाती नक्षत्र के मेघ की बूद ग्रहण करता है चक्रवाक पक्षियो का विरह रात्रि बीतने पर सूर्य के द्वारा मिटाया जाता है चकोर पक्षी चन्द्रमा की किरणो के सहारे जीता है इसी प्रकार भक्त का हृदय भगवान के चरणो मे रहता है।

64

मारवाडि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला।
जिउ कुरक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ।।१।।
तेरो नामु रूडो रुपु रूडो अति रग रूडो मेरो रामईआ।। रहाउ।।
जिउ धरणी कउ इद्रु बालहा कुसम बासु जैसे भवरला।
जिउ कोकिल कउ अबु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ।।२।।
चकवी को जैसे सूरु बालहा मान सरोवर हसुला।
जिउ तरुणी कउ कतु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ।।३।।
बारिक कउ जैसे खीरु बालहा चात्रिक मुख जैसे जलधरा।
मछुली कउ जैसे नीरु बालहा तिउ मेरे मनि रामईआ।।४।।
साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला।।
सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला।।५।।

(राग धनासरी) नाम देव/६६३

हे मेरे सुन्दर राम! तेरा नाम सुन्दर है रूप सुन्दर है रग सुन्दर है।।रहाउ।।

जिस प्रकार मारवाड प्रदेश मे पानी प्यारा लगता है जैसे ऊट को बेल प्यारी लगती है जैसे हिरन को राग की आवाज प्यारी लगती है उसी प्रकार मेरे मन मे मुझे राम प्यारा लगता है।।१।।

जैसे धरती को वर्षा प्यारी लगती है जैसे भौरे को सुगन्ध अच्छी लगती है जैसे कोयल को आम प्यारा लगता है वैसे ही मेरे मन को राम प्यारा लगता है।।२।।

जैसे चकवी को सूर्य से प्रेम है जैसे हस को मानसरोवर से अनुराग है जैसे जवान स्त्री को स्वामी से प्रणय है वैसे ही मेरे मन को राम से प्रेम है।।३।।

जैसे बालक को दूध प्यारा लगता है जैसे चातक पक्षी स्वाती नक्षत्र मे बरसी जल की बून्द का पान करने को लालायित रहता है जैसे मछली को पानी से प्रेम है वैसे ही सुन्दर राम से मेरे मन को प्रेम है।।४।।

योग साधना करने वाले योगी और मुनि सभी राम का दर्शन करना चाहते है पर किसी विरले को ही दर्शन होता है। हे मेरे सुन्दर राम! जैसे सारे लोको के जीवो को तेरा नाम प्यारा है वैसे ही मुझ नामदेव के मन मे वीठल प्यारा है।।५।।

भाव साम्य -

भ्रमर राज हस कोकिल तथा चकोर के प्रीतिमय जीवन का अपना आदर्श है– एक इष्ट के प्रति अनन्यता। तेलगु मे महाभागवत के रचयिता महाकवि पोतन्ना क द्वारा इस भाव को माधुर्यमयी पदावलि मे व्यक्त किया गया है –

मदार मकरन्द माधुर्यमनु देलु मधुपबु बोवने मदनमुलकु
निर्मल मन्दाकिनी वीचि कल दुगु राय च जनने तरगिणी लुक
ललित रसाल पल्लव खादियै चाक्कु कोयिल सोरने कुटुज मुलकु
पूर्णेन्दु चन्द्रिका स्फुरक बरुगुने सान्द्र नीहार मुलकु
अबजोदर दिव्य पदारविन्द चिन्तनामृत पान विशेष मत्त
चित मेरीति निरतबु जेर नर्चु विनुत गुण शील माटुलवेय नेलु

क्या मन्दार पुष्पो के मकरन्द का पान करने वाला भ्रमर नीम के वृक्षो की ओर भटकेगा अर्थात कभी नही।

गगा जल की तरगो पर विहार करने वाला राजहस क्या छोटी मोटी नदियो पर तैरना पसन्द करेगा।

मृदुल रसाल के पल्लवो को चखने वाली कोयल क्या साधारण वृक्षो पर बैठना पसन्द करेगी?

पूण चन्द्र की शीतल किरणो का आस्वादन करने वाला चकोर क्या ओस की बूदो पर आसक्त होगा।

इसी प्रकार भगवान (विष्णु=परब्रह्म) के चरणारविन्दो के चिन्तन (नाम) अमृत का पान कर यह मन आनन्द विभोर हुआ तो अन्य विषयो पर कैसे आसक्त होगा।

65

ऐसी प्रीति गोविन्द सिउ लागी।

मेलि लए पूरन वडभागी।। रहाउ।।

भरता पेखि बिगसै जिउ नारी।

तिउ हरिजन जीवै नाम चितारी।।१।।

पूत पेखि जिउ जीवत माता।

ओति पोति जन हरि सिउ राता।।२।।

लोभी अनदु करै पेखि धना।

जन चरन कमल सिउ लागो मना।।३।।

बिसरु नही इकु तिलु दातार।

नानक के प्रभ प्रान अधार।।४।।

(राग गउडी सबद – १६२) गुरु अजन देव जी/१६८

परमात्मा के साथ जिन मनुष्या की ऐसी प्रीति बनती है वे मनुष्य बडे भाग्यशाली होते है वे सारे गुणो से भरपूर हो जाते है। परमात्मा उन्हे अपने साथ मिला लेता है।।रहाउ।।

जैसे स्त्री अपने पति को देखकर प्रसन्न होती है उसी प्रकार हरि का सेवक हरि का नाम स्मरण करके आत्मिक प्रसन्नता अनुभव करता है।।१।।

जैसे मा अपने पुत्रो को देख कर जीवन मे उत्साह अनुभव करती हे वैसे ही परमात्मा का भक्त प्रभु के साथ ताने बाने के धागे के समान जुडा रहता है।।२।।

जैसे लोभी व्यक्ति का मन धन को देखकर आनन्दित होता है वैसे ही भक्त का मन प्रभु के चरणो मे लीन रहता हे।।३।।

हे दानी! हे नानक के प्राणो के सहारे प्रभु! मुझ नानक को तू एक क्षण भर भी विस्मृत न हो।।४।।

66

तू जलनिधि हम मीन तुमारे।
तेरा नामु बूद हम चात्रिक तिखहारे।
तुमरी आस पिआसा तुमरी तुम ही सगि मनु लीना जीउ।।१।।
जिउ बारिकु पी खीरु अघावै।
जिउ निरधनु धनु देखि सुखु पावै।
त्रिखावत जलु पीवत ठढा तिउ हरि सगि इहु मनु भीना जीउ।।२।।
जिउ अधिआरै दीपकु परगासा।
भरता चितवत पूरन आसा।
मिलि प्रीतम जिउ होत अनदा तिउ हरि रगि मनु रगीना जीउ।।३।।
सतन मो कउ हरि मारगि पाइआ।
साध क्रिपालि हरि सगि गिझाइआ।
हरि हमरा हम हरि के दासे नानक सबदु गुरू सचु दीना जीउ।।४।।

(राग माझ सबद – २१) गुरु अर्जन देव जी/१००

हे परमात्मा! तू जलनिधि है और हम जल मे रहने वाली मछली है। तेरा नाम जल की बूद के समान है और हम प्यासे पपीहे है। तुम्हारी ही आशा है तुम्हारे ही दर्शन की तीव्र पिपासा है और हमारा मन तुम्हारे सग ही लीन हो रहा है।।१।।

जैसे बालक मा का दूध पीकर तृप्त होता है जैसे निर्धन धन प्राप्त होता देखकर सुख महसूस करता है जैसे प्यासा ठण्डा जल पीकर प्रसन्न होता है वैसे ही यह मन हे हरि! तेरे प्रेम मे लीन होकर सुख अनुभव करता है।।२।।

जैसे अन्धेरे मे दीपक के प्रकाश से आनन्द होता है। जैसे परदेश गए पति के पत्नी स्मरण करती है और पति के दर्शन से उसकी आशा पूर्ण हो जाती है जैसे मित्र को मित्र मिलने से आनन्द होता है उसी प्रकार हरि रग मे रगा मेरा मन आनन्दित हुआ है।।३।।

हे हरि! सन्त जनो ने मुझे तेरा मार्ग बतलाया है। सन्तजन कृपालु है उन्होने ही हरि के साथ रिझा दिया है। हे हरि! तू हमारा स्वामी है हम आपके दास है सतिगुरु ने मुझे सच्चा उपदेश दिया है।।४।।

(२७) दरसन पिआस

67

हरि दरसन कउ मेरा मनु बहु तपते जिउ त्रिखावतु बिनु नीर।।१।।

मेरे मनि प्रेमु लगो हरि तीर।

हमरी बेदन हरि प्रभु जानै मेरे मन अन्तर की पीर।। रहाउ।।

मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै सो भाई सो मेरा बीर।।२।।

मिलु मिलु सखी गुण कहु मेरे प्रभ के ले सतिगुर की मति धीर।।३।।

जन नानक की हरि आस पुजावहु हरि दरसनि साति सरीर।।४।।

(राग गाण्ड) गुरु राम दास जी/८६१

जिस प्रकार प्यासा पानी क लिए तडपता ह उसी तरह मेरा मन हरि के दर्शनों के लिए तडप रहा है।।१।।

मेर मन मे हरि प्रेम का तीर गहरा घाव कर गया है इसलिए मेर भीतर की पीडा भी केवल उसी परमात्मा को विदित ह जिसन मुझे प्रेम बाण से घायल किया है।।रहाउ।।

जो मेरे पास मेरे प्रियतम की प्रिय कथा कहे वही मरा भाइ हे वही मेरा शुभ चिन्तक है।।२।।

ऐ सखियो! मेरे सतिगुरु की मति ल कर नित्य प्रति इकट्ठे होकर प्रभु की गौरव गाथा सुनाओ।।३।।

दास नानक कहते हैं कि परमात्मा ही हमारी सब आशाओ का पूरक ह और उसी के दशन से शरीर का शान्ति मिलती हे।।४।।

68

कैसे कहउ मोहि जीअ बेदनाई।

दरसन पिआस प्रिअ प्रीति मनोहर मनु न रहै बहु बिधि उमकाई।। रहाउ।।

चितवनि चितवउ प्रिअ प्रीति बैरागी कदि पावउ हरि दरसाई।

जतन करउ इहु मनु नहि धीरै कोऊ है रे सतु मिलाई।।१।।

जप तप सजम पुन सभि होमउ तिसु अरपउ सभि सुख जाई।

एक निमख प्रिअ दरसु दिखावै तिसु सन्तन कै बलि जाई।।२।।

करउ निहोरा बहुत बेनती सेवउ दिनु रैनाई।

मानु अभिमानु हउ सगल तिआगउ जो प्रिअ बात सुनाई।।३।।

देखि चरित्र भई हउ बिसमनि गुरि सतिगुरि पुरखि मिलाई।

प्रभ रग दइआल मोहि ग्रिह महि पाइआ जन नानक तपति बुझाई।।४।।

(राज सारग सबद – १५) गुरु अर्जन देव जी/१२०६–१२०७

मै अपने मन की वेदना कैसे कहू? मुझे प्रियतम के दर्शनो की प्यास है मेरे मन मे अपने स्वामी के लिए अनेक उमगो भरी प्रीति छलकती है।।रहाउ।।

प्रिय के प्यार मे विरक्त हुई मन मे सोचती हू कि कब हरि दर्शन होगा। मेरे मन मे धैर्य नही कोई सन्त जन यत्न करके मेरे प्रभु से मिला दे।।१।।

मे अपने जप तप सयम आदि गुणो की आहुति देकर अपने सुखो को उस के चरणो म अर्पित कर दूगी। जो सन्त जन क्षण भर के लिए भी मुझे प्रियतम का दर्शन दिखा सके मै नित्य उस पर बलिहार जाऊगी।।२।।

मे उस की मिन्नत करती हूँ रात दिन सेवा मे विनती करती रहू गी यदि प्रियतम मुझसे बात करे तो मेरा मान अभिमान सब धुल जाये।।३।।

सति गुरु की कृपा से जब प्रिय से भेट हुइ तो उम्म का चरित देख कर मुझे विस्मय हुआ। गुरु नानक देव कहते है कि प्यार के रग के कारण वह मुझ पर दयालु था और घर (अन्तर) ही मे उसने मेरी सब तृष्णाएँ शान्त कर दी।।४।।

——————

(२८) निरभउ निरकार सचु एकु

69

इहु जगु सचै की है कोठडी सचे का विचि वासु।
इकना हुकमि समाइ लए इकना हुकमे करे विणासु।
इकना भाणै कढि लए इकना माइआ विचि निवासु।
एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि।
नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करै परगासु।।

(राग आसा {सलाकु ३(२)}) गुरु अगद देव जी६६

यह जगत सच्चे परमात्मा का घर है वह परम सत्य स्वय इस मे निवास करता है। कुछ उत्तम जीवो को अपने हुकुम मे तल्लीन रखता है और कुछ का विनाश कर देता है। कुछ जीवो पर दया करके (अपनी इच्छानुसार) ससार के आवागमन से निकाल लेता है और कुछ को माया के चक्कर मे डाले रहता है। ऐसा भी नही कहा जा सकता कि वह किसी जीव को मुक्त करेगा। गुरु नानक कहते है कि सतिगुरु को हम तभी जान सकते हैं यदि परमात्मा ने स्वय अपना प्रकाश दिया हो।

70

भै विचि पवणु वहै सदवाउ। भै विचि चलहि लख दरिआउ।
भै विचि अगनि कढै वेगारि। भै विचि धरती दबी भारि।
भै विचि इन्दु फिरै सिर भारि। भै विचि राजा धरम दुआरु।
भै विचि सूरज भै विचि चन्दु। कोह करोडी चलत न अन्तु।
भै विचि सिध बुध सुर नाथ। भै विचि आडाणे आकास।
भै विचि जोध महा बल सूर। भै विचि आवहि जावहि पूर।
सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु। नानक निरभउ निरकारु सचु एकु।।

(राग आसा {सलोकु १(४)}) गुरु नानक देव जी/४६४

सैकडो बल वाला पवन परमात्मा के भय मे बहता है हजारो नदिया परमात्मा के भय मे बहती हैं अग्नि भी भय से प्रभु के आदेशानुसार कार्य करती है। धरती उसी भय मे सभी का भार वहन करती है। (आकाश मे) इन्द्र अपने सिर पर बोझ लिए बादल बन कर भय से सदा चलता रहता है। स्वय धर्मराज तेरे भय मे तेरे

दरवाजे पर काम कर रहा है। सूर्य चन्द्र भी भय मे करोड मील चलते है और **उन की** यात्रा का अन्त नही होता। ऋषि मुनि योगी और देवता सब भय से बन्धे **हैं। आकाश** बिना किसी सहारे तेरे भय मे खडा है। बडे बडे योद्धा बली सूरमा **सब भया**क्रान्त है। आवागमन मे पडे लाखो जीव नित्य भय मे जन्म लेते ओर **मरते हैं**। परमात्मा के भय ने सब का भाग्य निश्चित कर रखा है। गुरु नानक **कहते है** कि केवल वह निराकार परम सत्य प्रभु ही एक मात्र भय रहित हे।

भाव साम्य -

निरभउ सत्य स्वरूप प्रभु एक है। और उसके भय मे सभी कार्यरत है। इस **विषय** को बृहदारण्यक उपनिषद मे याज्ञवल्क्य ने गार्गी को अनुमान प्रमाण के अन्तर्गत अक्षर ब्रह्म की विवेचना करते हुए समझाया है—

एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि सूर्याचन्द्रमसौ विधृतौ तिष्ठत
एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि द्यावा पृथिव्यौ विधृते तिष्ठत
एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गी निमषा महूर्ता।
अहोरात्राणि अर्धमासा मासा ऋतव सवत्सरा इति विधृतास्तिष्ठन्ति
एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासन गार्गि प्राच्योऽन्यानद्य
स्यन्दन्ते श्वेतभ्य पर्वतेभ्य प्रतीच्योऽन्या या या दिशमन्व
एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि ददतो मनुष्या
प्रश ॅसन्ति यजमान देवा दर्वी पितरोऽ—वायत्त ।।

(वृहदारण्यक/३/८/६)

हे गार्गि! इस अक्षर के ही प्रशासन मे सूर्य और चन्द्रमा विशेष रुप से धारण किये हुए स्थित रहते है।

हे गार्गि! इस अक्षर के प्रशासन मे द्युलोक और पृथिवी विशेष रुप से धारण **किये** हुए स्थित रहते हैं।

हे गार्गि इस अक्षर के प्रशासन मे निमेष महूर्त दिन रात मास ऋतु सवत्सर **विशेष** रुप से धारण किये हुए स्थित रहते हे।

हे गार्गि! इस अक्षर के प्रशासन मे ही पूर्व वाहिनी व अन्य नदिया श्वेत पर्वतो से बहती है तथा अन्य पश्चिम वाहिनी नदिया जिस जिस दिशा को बहने लगती है उसी का अनुसरण करती रहती है।

हे गार्गि! इस अक्षर के प्रशासन मे मनुष्य दाता की प्रशसा करते है तथा

देवगण यजमान का और पितृ गण दर्वी होम का अनुवर्तन करते है।

गुरु अर्जन देव जी ने प्रभु के हुकुम के डर से सभी को अनुशासन मे बरतते हुए दिखाया है उनके वर्णन का आधार मुख्यत गुरु नानक जी का श्लोक है –

डरपै धरति अकासु नख्यत्रा सिर ऊपर अमरु करारा
पउणु पाणी बेसन्तरु डरपै डरपै इन्द्रु बिचारा।

(राग मारु)

71

तितु सरवरडै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ।

पक जु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले।।१।।

मन एकु न चेतसि मूड मना।

हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ।। रहाउ।।

ना हउ जती सती नही पडिआ मूरख मुगधा जनमु भइआ।

प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही वीसरिआ।।२।।

(राग आसा – दुपदे – २६) गुरु नानक/३५७

हम जीवो का उस भयानक सरोवर मे निवास है जिस म उस प्रभु ने आप ही पानी के स्थान पर आग पैदा की है। उस सरोवर मे जो मोह की कीचड है उस मे जीवो का पैर नही चलता। हमारे देखते ही सरावर के अथाह जल म कितने जीव डूबते जा रहे है।।१।।

हे मूख मन! तू एक प्रभु की याद नही करता। तू जेसे जैसे प्रभु को भुलाता है तेरे भीतर से गुण कम होत जा रहे ह।।रहाउ।।

हे प्रभु! न मै इन्द्रियो पर विजय प्राप्त करन वाला यति हू न सत्यवादी हू, न पढा लिखा हू मेरा जीवन तो अज्ञानियो जैसा बना हुआ है। मुझ उन गुरमुखो की शरण मे रख जिन्हे तू ने विस्मृत नही किया।।२।।

भाव साम्य -

गौतम बुद्ध ने एक सुत्त मे तृष्णा म फसी मानवता का वर्णन किया है साथ ही डूबने से बचने का उपाय भी दर्शाया है—

पस्सामि लोके परिफन्दमान पज इम तण्हागत भेवसु।

हीना नरा मच्चुमुखे लपन्ति अवीततण्हासे भवाभवेसु।।५।।

ममायिते पस्सथ फन्दमाने मच्छे व अप्पोदके खीणसोते।

एतम्पि दिस्वा अममो चरेय्य भवेसु आसत्तिमकुब्बसानो।।६।।

उभोसु अन्तेसु विनेय्य छन्द फस्स परिञ्ञाय अनानुगिद्धो।

यदत्तगरही तदकुब्बमानो न लिप्पति सिट्ठसुतेसु धीरो।।७।।

सञ्ञ परिञ्ञा वितरेय्य ओघ परिग्गहेसु मुनि नोपलित्तो।

अब्बूळसल्लो चरमप्पमत्तो नासिसति लोकमिम परञ्चा ति।।८।।

ससार मे तृष्णा मे फॅसी इस प्रजा को तडफडात हुए मै देखता हूँ। सासारिक तृष्णा मे हीन नर मृत्यु के मुख मे पड कर विलाप करते है।।५।।

अल्प जल वाली क्षीण जलाशय की मछलियो की तरह तृष्णा के वशीभूत हो तडफडाने वालो को देखो। इनको देखकर सासारिक विषयो मे आसक्ति न रखते हुए तृष्णा रहित हो विचरण करे।।६।।

दोना अन्तो मे इच्छा दूर कर स्पर्श को अच्छी तरह जान लालायित न हो आत्मा निन्दा की बात न करते हुए धीर दृष्टियो तथा श्रुतियो मे लिप्त नही होता।।७।।

मुनि परिग्रह मे लिप्त न हो सज्ञा को अच्छी तरह जान भवसागर को तर जाय। कामना रूपी तीर को निकाल कर अप्रमत्त हो विचरने वाला इस लोक या परलोक की इच्छा नहीं करता।।८।।

72

छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस। गुरु गुरु एको वेस अनेक।।१।।
बाबा जै घरि करते कीरति होइ।
सो घरु राखु वडाई तोइ।। रहाउ।।
विसुए चसिआ घडीआ पहरा थिती वारी माहु होआ।
सूरजु एको रुति अनेक। नानक करते के केते वेस।।२।।

(राग आसा –दुपदे – ३०) गुरु नानक/३५७

छ शास्त्र है छ ही शास्त्रो के चलाने वाले है छ ही उन के सिद्धान्त हे। किन्तु गुरु को प्रकाशित करने वाला एक है उस के वष अनेक है अर्थात करता एक है कुदरत बहुरगी है।।१।।

जिस घर मे (सत्सग मे) अकाल पुरुष की गुण स्तुति होती ह उस घर को सभाल कर रख तुझे प्रतिष्ठा मिलेगी।।रहाउ।।

जिस प्रकार समय की छोटी बडी इकाइआ (विसे चसे घडी प्रहर तिथि महीने और ऋतुए) अनेक है किन्तु सूर्य एक ही है उसी प्रकार हे नानक! कतार के ये लौकिक प्राणी अनेक रुप हैं।।२।।

पाठान्तर –राग बाणी मे द्वितीय पक्ति मे बाबा शब्द नही है तथा पाचवी पक्ति मे होआ के स्थान पर भइआ पाठ है। यह पाठ सोहिला पृष्ठ १२ के अनुसार है।

समय की इकाई –

६० विसा	=	१ चसा	=	३७५ सैकण्ड
६० चसा	=	१ पल	=	२२ ५ सैकण्ड
६० पल	=	१ घडी	=	२२ ५ मिनट
२ घडी	=	१ महूरत	=	४५ मिनट
४ महूरत	=	१ प्रहर	=	३ घण्टे
८ प्रहर	=	१ दिन रात(वार)	=	२४ घण्डे

भाई वीर सिह जी के शब्द कोष मे समय इकाई मे महूर्त का उल्लेख नहीं है तथा ७१/२ घडी का एक प्रहर दिया गया है (शब्द कोष पृष्ठ ४६६)

(२६) एक नूर ते सभु जग उपजिआ

73

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बन्दे।

एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मदे।।१।।

लोगा भरमि न भूलहु भाई।

खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ स्रब ठाई।। रहाउ।।

माटी एक अनेक भाति करि साजी साजनहारै।

ना कछु पोच माटी के भाडे ना कछु पोच कुभारै।।२।।

सभ महि सचा एको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई।

हुकमु पछानै सु एको जानै बदा कहीऐ सोई।।३।।

अलहु अलखु न जाई लखिआ गुरि गुडु दीना मीठा।

कहि कबीर मेरी सका नासी सरब निरजनु डीठा।।४।।

(राग प्रभाती/सबद–३) कबीर – १३४६–१३५०

हे भाई! भ्रम मे पडकर भटको मत। यह परमात्मा सारी सृष्टि को पैदा करने वाला है और सारी खलकत मे मौजूद है वह सभी जगह भरपूर है।।रहाउ।।

सबसे पहले परमात्मा की ज्योति ही है जिसने जगत पैदा किया है यह सारे जीव जन्तु परमात्मा की कुदरत के ही बनाए हुए है। यह जगत प्रभु की ही ज्योति से बना है इसलिए (मजहब या जाति के भ्रम मे पडकर) किसी को अच्छा या बुरा मत समझो।।१।।

सृजनहार प्रभु ने एक ही मिट्टी से अनेक किस्म के जीव जन्तु पैदा किए है। न इन मिट्टी के बर्तनो (जीवो) मे कुछ न्यूनता है और न ही बनाने वाले कुम्हार मे ही।।२।।

वह सदा स्थिर रहने वाला प्रभु सब जीवो मे निवास करता है। जो कुछ जगत मे हो रहा हे सब उसी का किया हो रहा है। वही मनुष्य परमात्मा का प्यारा कहा जा सकता है जो उसकी इच्छा (रजा) को पहचानता है और उससे साझा करता है।।३।।

वह परमात्मा ऐसा है कि उसका पूर्णरूप वर्णन से परे है। उसके गुण कहे नही जा सकते। कबीर कहते है कि मेरे गुरु ने (प्रभु के गुणो की सूझ बूझ) का मीठा

गुड मुझे दिया है जिसका स्वाद तो मै नहीं बता सकता किन्तु मैने उस माया रहित प्रभु को हर स्थान पर देख लिया है और मुझे कोई शका नही है। मेरे अन्दर किसी जाति या धर्म के लोगो के ऊचा या नीचा होने का भ्रम नही है।

74

एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई।
सुणि मीता जीउ हमारा बलि बलि जासी हरि दरसनु देहु दिखाई।।१।।
सुणि मीता धूरी कउ बलि जाई।
इहु मनु तेरा भाई।। रहाउ।।
पाव मलोवा मलि मलि धोवा इहु मन तै कू देसा।
सुणि मीता हउ तेरी सरणाई आइआ प्रभ मिलउ देहु उपदेसा।।२।।
मानु न कीजै सरणि परीजै करै सु भला मनाईऐ।
सुणि मीता जीउ पिण्डु सभु तनु अरपीजै इउ दरसनु हरि जीउ पाइऐ।।३।।
भइओ अनुग्रहु प्रसादि सतन कै हरि नामा है मीठा।
जन नानक कउ गुरि किरपा धारी, सभु अकुल निरजनु डीठा।।

(राग सोरठि – १२) गुरु अर्जन देव जी/६११ – १२

हे मित्र! हमारा एक ही पिता है हम एक ही पिता के बच्चे हैं तू मेरा गुरु भाई है। हे प्रिय मित्र सुनो मेरी जीवात्मा जिस पर बार बार बलिहारी जाती है मुझे उस हरि के दर्शन करा दो।।१।।

हे मित्र! सुनो मै तुम्हारे चरणो की धूलि पर बलिहारी जाता हू। हे भाई! मेरा यह मन तेरा है।।रहाउ।।

हे प्यारे! मै तुम्हारे चरणो को मलता हूँ, मल मल कर उसको धोता हू। मैने अपना यह मन भी तुम को दे दिया है। हे मित्रवर सुनो मै तुम्हारी शरण म आया हू। मुझे ऐसा उपदेश दो ता कि मै प्रभु स जा मिलू।।२।।

(उत्तर) अहकार नही करना चाहिए प्रभु के शरण मे सदैव रहना चाहिए। जो कुछ प्रभु परमात्मा करे उसे श्रेष्ठ मानना चाहिए। हे मित्र! सुनो जीवात्मा और शरीर सब कुछ उस के प्रति समर्पित करना चाहिए तब हरि के दर्शन होत है।।३।।

हे मित्रवर! जब सन्तो की कृपा से प्रभु की कृपा हुई तब हरि का नाम मुझे प्यारा लगने लगा। दास नानक पर गुरु की कृपा हुई तब मुझे निरजन प्रभु सर्वत्र दिखाई देता है।।४।।

75

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै।

राम बिना को बोलै रे।। रहाउ।।

एकल माटी कुजर चीटी भाजन है बहु नाना रे।

असथावर जगम कीट पतगम घटि घटि रामु समाना रे।।१।।

एकल चिता राखु अनता अउर तजहु सभ आसा रे।

प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को दासा रे।।२।।

(राग माली गउडा सबद) नाम देव/६८८

सभी जीवो और शरीरो मे परमात्मा व्याप्त है उस के अतिरिक्त वहा कौन बोलता है? रहाउ

मिट्टी एक ही है हाथी से ले कर चीटी तक असख्य प्रकार के बर्तन उसी से बने हैं। स्थिर रहने वाले पेड पौधो और चलने वाले जीव जन्तुओ कीट पतग सभी मे राम समाया हुआ है।।१।।

मुझे अब उस अनन्त परमात्मा का ही ध्यान है। अन्य सब आशाये मैने छोड दी है। सन्त नाम देव कहते है कि वे निष्काम हो गये हैं और अब स्वामी और दास एक हो गये हैं (नाम देव व्यापक प्रभु मे लीन हो गये है।)।।२।।

76

एक अनेक बिआपक पूरक जत देखउ तत सोई।

माइआ चित्र बिचित्र बिमोहित बिरला बूझै कोई।।१।।

सभु गोबिन्दु है सभु गाबिन्दु है गोबिन्द बिनु नही कोई।

सूतु एक मणि सत सहस जैसे ओति पोति प्रभु सोई।। रहाउ।।

जल तरग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिन्न न होई।

इहु परपचु पारब्रह्म की लीला बिचरत आन न होई।।२।।

मिथिआ भरमु अरु सुपन मनोरथ सति पदारथु जानिआ।

सुक्रित मनसा गुर उपदेसी जागत ही मनु मानिआ।।३।।

कहतु नाम देउ हरि की रचना देखहु रिदै बीचारी।

घट घट अन्तरि सरब निरतरि केवल एक मुरारी।।४।।

(राग आसा–सबद) नाम देव/४८५

परमात्मा एक है। उस के रुप अनेक है वह सभी जगह रमा हुआ है। मै जहा भी देखता हू वही नजर आता है। उस की माया विचित्र है जो सभी को मोहने वाली है। प्रभु का रहस्य कोई विरला ही जान सकता है।।१।।

प्रभु माला का एक धागा है लाखो जीव मणको के समान है जो माला मे पिरोये हुए हैं। सभी गोविन्द का रुप है गोविन्द के सिवाय कोई नही है।।रहाउ।।

यह ससार प्रभु की लीला है प्रभु जल का आधार समुद्र हे। जीव उस से उठने वाली एक लहर है अथवा क्षण भर मे उसी मे समा जाने वाला एक बुलबुला हे।।२।।

जीव का मन अज्ञान से माया के भ्रम और सपने को सत्य मान लेता है। गुरु के उपदेश से जीव जागता है उस के मन मे पुण्य का उदय होता है और वह तृप्त हो जाता है।।३।।

नाम देव जी कहते है कि हरि की रचना विचार कर देखो तो यह ज्ञात होता है कि केवल एक मुरारी सभी के हृदय मे विराजमान है।।४।।

भाव साम्य -

गुरु अर्जन देव जी ने नाम देव जी के इस सबद के भाव को राग बिलावलु मे एक रुप सगलो पासारा अनिक रग निरगुन इक रगा के रूप मे दर्शाया है। हिन्दी के महाकवि निराला ने इसे नये स्वर मे अभिव्यक्त किया है—

जग का एक देखा तार।
कण्ठ अगणित देह सप्तक मधुर स्वर झकार।।
बहु सुमन बहु रग निर्मित एक सुन्दर हार।
एक ही कर से गुथा उर एक शोभा भार।।
गन्ध शत अरविन्द नन्दन विश्व वन्दन सार।
अखिल उर रजन निरजन एक अनिल उदार।।
सतत सत्य अनादि निर्मल सकल सुख विस्तार।
अयुत अधरो मे सुसिञ्चित एक किञ्चित प्यार।।
तत्त्व नभ तम मे सकल भ्रम शेष श्रम निस्तार।
अलक मण्डल मे यथा मुख चन्द्र निरलकार।।

('राग विराग – चयन – ३६)

(३०) तिलु तेरी वडिआई

77

होरु सरीकु होवै कोई तेरा तिसु अगै तुधु आखा।
तुधु अगै तुधै सालाही मै अन्धे नाउ सुजाखा।
जेता आखणु साही सबदी भाखिआ भाइ सुभाई।
नानक बहुता एहो आखणु सभ तेरी वडिआई।।

(वार राग सारग सलोकु १{१२}) गुरु नानक देव/१२४२

हे प्रभु यदि कोई अन्य तुम्हारा प्रतिद्वन्द्वी हो तो उस के पास तुम्हारी बात करुँ। तुम्हारे सम्मुख तुम्हारी स्तुति करता हू। अज्ञान के कारण मै अन्धा हू किन्तु मैने अपना नाम अच्छे नेत्रो वाला रखा लिया है। जो कुछ कह सकता हू, शब्दो से ही होता है। इसलिए कहना भी अपने अपने स्वभाव से है। किन्तु गुरु नानक देव जी कहते है अधिकतर कहना यही है कि सब उसी प्रभु की बडाई है।

78

जा हउ तेरा ता सभु किछु मेरा हउ नाही तू होवहि।
आपे सकता आपे सुरता सकती जगतु परोवहि।
आपे भेजे आपे सदे रचना रचि रचि वेखै।
नानक सचा सची नाई सचु पवै धुरि लेखै।।

(वार राग सारग सलोक २ {१३}) गुरु नानक देव/१२४२

हे प्रभु! जब मै तुम्हारा हू तो सब कुछ मेरा ही है मेरा कुछ अस्तित्व नही तुम ही तुम हो। तुम ही शक्तिवान हो तुम ही विवेकवान हो तुमने अपनी शक्ति मे सारे जगत को पिरो रखा है। तुम खुद भेजते हो खुद ही बुला लेते हो— बना बना कर अपनी रचना देखते हो। गुरु नानक कहते है कि सच्चे नाम से ही जीव निर्मल होता है और सत्य अपना कर प्रभु की विधि का अश बनकर मुक्त हो जाता है।

भाव साम्य -प्रभु का कोई प्रतिद्वन्द्वी नही है— यह गुनाह तो अल्लाह कभी माफ नहीं करता कि उसके साथ कोई शरीक ठहराया जावे और उस के सिवाय दूसरा गुनाह वह चाहे जिस को माफ करे। जिस ने अल्लाह को साझीदार ठहराया वह सीधी राह से भटक गया। (सूर अन–निसा/IV/११६–कुर–आन अमीन)

जाहिर पीर जगत गुरु बाबा

गुरुनानक देवजी

तेरे गुण गावा देहि बुझाई। जेरा सच महि रहउ रजाई।।

गुरुनानक देवजी रबाब वादक भाई मरदाना तथा चवर सेवक भाई बाला के साथ
(चित्रकार श्री सोभा सिह)

79

तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई।
जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई।।१।।
तेरे गुण गावा देहि बुझाई।
जैसे सच महि रहउ रजाई।।
जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई।
तेरा अतु न जाणा मेरे साहिब मै अन्धुले किआ चतुराई।।२।।
किआ हउ कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना जाइ।
जो तुधु भावै सोई आखा तिलु तेरी वडिआई।।३।।
एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई।
भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमे नाउ न जाई।।४।।

(राग बिलावलु) गुरु नानक ७ ५

हे प्रभु! तुम तो सब के बादशाह हो किन्तु अगर म तुम्हे मिया कहकर गुण गान करु तो इस म तुम्हारी क्या बडाइ ह? हे मालिक! तुम जसी भी नाम कथन की शक्ति देते हो मै वसा ही कथन कर लेता हू, अन्यथा मै मूख जीव क्या कह सकता हू।।१।।

मे तुम्हारे गुण गा सकू मुझे ऐसी बुद्धि प्रदान करा। ह रजा (चित शक्ति) क स्वामी! ऐसी कृपा करो कि मे तुम्हारे सत्य स्वरूप मे स्थित रह सकू।।रहाउ।।

यह जा कुछ जड चेतन विश्व प्रपञ्च निर्मित हे सब कुछ तुम स ही हुआ ह और यह सब तुम्हारी ही प्रीति से हुआ हे। हे मालिक! मै जीव तुम्हारा अन्त क्या जान सकता हू? मुझ अन्धे मे कहा ऐसी सामथ्य हे?।२।।

मे तुम्हार गुणो का कथन कैस कर सकता हू, क्याकि वणन कर कर क भी जब देखता हू तो यही कहना पडता ह कि तुम अकथ हा। हे ईश्वर! मे तिल भर भी वही बडाई कहने मे अपने का समथ पाता हू जो तुम्हे अच्छी लगती हे।।३।।

काम क्रोध आदि विकारो क बीच फसा हुआ म स शरीर की मुक्ति क लिए पुकार रहा हू। हे भगवन! यदि मे भक्ति से हीन भ ऊ तो भी तुम्हारा ही रहूगा तब भी तुम्हारा नाम मरे साथ रहेगा अथा मुझ तुम्हारा ही द कह जाएगा।।४।।

भाव साम्य -

अकथ्य प्रभु की स्तुति नही की जा सकती। अगर प्रभु थोडी सी सूझ बूझ द आर उस को अच्छा लगे तो उस की तिल मात्र बडाई कही जा सकती है। हो सकता है कि हम अपनी सीमित बुद्धि के अनुसार बडाई करे किन्तु वह वास्तव म प्रभु के गुणो की ऊचाई तक न पहुच कर हमारी मूर्खता की परिचायक हो। भाई गुरदास जी अपने कवित्त मे स्पष्ट करते है–

जाके एक फन पै धरन है सो धरनीधर

ताहि गिरधर कहे कउन बडिआई है।

जाको एक बावरो कहावत है बिस्वनाथ

ताहि ब्रजनाथ कहै कौन अधिकाई है।

सगल अकार ओकार के बिथारे जिन

ताहि नन्द नन्द कहे कौन ठकुराई है।

उसतति जानि निन्दा करत अगिआन अन्ध

ऐसे ही अराधन ते मौन सुखदाई है।।६७१।।

(भाई गुरदास जी दूसरा स्कन्ध)

जिस करतार के एक शेषनाग के फन पर पृथ्वी टिकी है उस प्रभु को वृन्दावन के एक छोटे से पर्वत को धारण करने वाला गिरिधर कहने म क्या बडाई है?

जिस का एक मस्तमौला देवता शिव विश्वनाथ कहलाता है उसकी ब्रजनाथ कहने से कौन सी गरिमा बढेगी?

जिस के सारे आकार ॐकार से फैलाए हुए है उसे नन्द का पुत्र कहने से क्या प्रधानता प्राप्त होगी?

इस तरह अज्ञान से अन्धे लोग स्तुति समझ कर निन्दा करते है। हमारे विचार से तो ऐसी आराधना से मौन ही अच्छा है।

गुरु नानक देव जी की लालसा है कि वे भगवान की रजा मान कर सत्य से एक रुप हो जावे इस भाव का प्रस्फुटन कवित्त मे नही हो पाया है। भाई गुरदास जी अपनी सीमा का अनुभव कर मौन द्वारा ध्यानावस्था मे लीन हो जाते है

80

तू करता सचिआरु मैडा साई।
जो तउ भावै सोई थीसी जो तू देहि सोई हउ पाई।। रहाउ।।
सभ तेरी तू सभनी धिआइआ।
जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ।
गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ।
तुधु आपि विछोडिआ आपि मिलाइआ।।१।।
तू दरीआउ सभ तुझ ही माहि।
तुझ बिनु दूजा कोई नाहि।
जीअ जत सभि तेरा खेलु।
विजोगि मिलि विछुडिआ सजोगी मेलु।।२।।
जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै।
हरि गुण सद ही आखि वखाणै।
जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ।
सहजे ही हरि नामि समाइआ।।३।।
तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ।
तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ।
तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ।
जन नानक गुरमुखि परगटु होइ।।४।।

(राग आसा – सबद – १) गुरु राम दास/३६५

हे प्रभु! तुम सारे ससार के सृजनहार हो तुम सत्य स्वरूप हो तुम ही मेरे स्वामी हो। हे प्रभु! जगत मे वही हो रहा है जो तुझे अच्छा लगता है। हे प्रभु! मे वही प्राप्त कर सकता हू। जो तुम देते हो।।रहाउ।।

ह प्रभु! सारी सृष्टि तेरी है सभी जीव तेरा ही स्मरण करते है। जिस पर तुम कृपा करते हो उस मनुष्य ने तेरा नाम रत्न प्राप्त कर लिया। नाम रत्न उसी ने पाया जिसने गुरु की शरण ली स्वेच्छाचारी ने उस रत्न को खो दिया। तुम ने स्वेच्छाचारी को अपने से अलग कर रखा है और गुरमुख को अपने चरणो मे स्थान दिया है।।१।।

हे प्रभु! तुम समुद्र हो सारे प्राणी बून्द के समान इस मे अश मात्र है तुझ स अलग कोई दूसरा नही है। जगत के सारे जीव जन्तु तेरा तमाशा है। (तुम्हारे प्रभाव से) वियोग के कारण मिले हुए जीव बिछुड जाते है और सयोग के कारण बिछुडा हुआ जीव पुन मिलाप प्राप्त कर लेता है।।२।।

हे प्रभु! जिस मनुष्य को तुम ज्ञान देते हो वही मनुष्य जीवन मनोरथ पहचानता है और वही मनुष्य हरि प्रभु के गुण सदा कहकर बतलाता है जिस मनुष्य न शब्द विचार से प्रभु की नाम साधना की उसने आत्मिक आनन्द पा लिया। वह मनुष्य सहज अवस्था मे परमात्मा के नाम मे लीन हो गया।।३।।

हे प्रभु! तुम आप ही सृजनहार हो जगत मे सब कुछ तेरा किया हो रहा है। तुझ से अलग दूसरा कोई कुछ करने वाला नही है। तुम स्वय ही जगत की रचना कर कर के सब की सँभाल करते हो इस भेद को तुम्ही जानते हो। हे दास नानक! गुरु के सम्मुख रहने वाले मनुष्य का यह सारी बात समझ म आ जाती है।

81

भाडा धोइ बैसि धूपु देवहु तउ दूधै कउ जावहु।

दूधु करम फुनि सुरति समाइणु होइ निरास जमावहु।।१।।

जपहु त एको नामा।

अवरि निराफल कामा।। रहाउ।।

इहु मनु ईटी हाथि करहु फुनि नेत्रउ नीद न आवै।

रसना नामु जपहु तब मथीऐ इनि बिधि अम्रितु पावहु।।२।।

मनु सपुटु जितु सत सरि नावणु भावन पाती त्रिपति करे।

पूजा प्राण सेवकु जे सेवे इन्ह बिधि साहिबु रवतु रहे।।३।।

कहदे कहहि कहे कहि जावहि तुम सरि अवरु न कोई।

भगति हीणु नानकु जनु जपै हउ सालाही सचा सोई।।४।।

(राम सूही – ७२८) गुरु नानक/७२८

हे भाई! आगर प्रभु को प्रसन्न करना हो तो केवल प्रभु नाम ही जपो। प्रभु को प्रसन्न करने के और सभी उद्यम व्यर्थ है।। रहाउ।।

निष्काम कर्मो से अन्त करण (देही = भाण्डा) को शुद्ध करना यही भाण्डा धोना हे शुभ इच्छा करना उस बरतन को धूप देना है गुरु उपदेश का श्रवण रुप ही दूध हे उत्तम प्रीति ही जामन है सब से वैराग्य होना दही जमाना है।।१।।

इस मन और चित्त को जो वश मे करना है यही ईटी हाथ मे पकडना है वैराग्य से जो नीद नही आती यही नेता करो। जिहा से नाम का जाप मन्थन है इस प्रकार अमृत (नवनीत) मिलता है।।२।।

मन का जीतना रुप डिब्बा और सत्सग मे श्रद्धा आदि पत्र फूल से भगवान को तृप्त करो। इस प्रकार जो सेवक अपने अहभाव को प्रभु को अर्पण कर के सेवा करता हे तो वह स्वामी से अभेद हो जाता है।।३।।

जो भक्ति की धारणा स हीन है और वेद आदि का कथन करते है वे कह कह कर चले जाते है तेरे बराबर कोई नही है। गुरु जी कहते है कि मै दास भक्ति स रहित होकर कहता हू कि हे हरि! जो तेरा सच्चा नाम है मै वही सलाहणा करुँ।।४।।

भाव माम्य -

इस सबद का भाव साम्य वासवेश्वर के वचन से है—

मानव देह के बर्तन मे बुद्धि का नैवेद्य रखे।

ममरसता का जल उडेले।

ज्ञानेन्द्रिया की मथानी से मथे

ज्ञान के ताप से पकावे।

विवेक की चम्मच के प्रयोग से आनन्द का पकवान पक कर गाढा हागा

अब प्रभु का अपने हृदय मे स्थिर होने दे

साहिब की आनन्द क पकवान से सेवा करे।

सेवक की इस प्रकार की सेवा ही प्रभु का भाग है।

गुरु ग्रन्थ साहिब मे राग सोरठि मे कबीर के सबद मे इस रुपक की ओर सकत ह किन्तु उसमे सदाचार मय जीवन की व्याख्या नही की गई हे। गुरु की कृपा से सुमति का प्राप्त होना दर्शाया गया है।

(७) तुरीया अवस्था (परम विज्ञान मय)

साहमस्मि इति बृत्ति अखण्डा। दीप सिखा सोइ परम प्रचण्डा।
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा। तब भ्रम मूल भेद भ्रम नासा।।
ग्यान पथ कृपान क धारा। परत खगेस होइ नहि बारा।
जो निर्बिघ्न पथ निर्बहई। सो कैवल्य परम पद लहई।।

साऽहमस्मि (वह ब्रह्म मै हू) यह जा अखण्ड तेल धारा के समान कभी न टूटने वाली वृत्ति ह वही उस ज्ञान दीपक की परम प्रचण्ड दीपशिखा है। इस प्रकार जब आत्मानुभव के सुख का सुन्दर प्रकाश फैलता है तब ससार के मूल भेद रूपी भ्रम का नाश हा जाता हे।

ज्ञान का माग कृपाण (दुधारी तलवार) की धार के समान है। हे पक्षिराज इस स गिरत दर नही लगती जा इस मार्ग का निविघ्न निर्वाह कर लेता है वही मोक्ष रूपी परम पद को प्राप्त करता है।

याग वासिष्ठ मे ज्ञान की सात भूमिकायो का चिन्तन स्तर पर विशद वणन है जिस क अनुसार ज्ञान की भूमिकाये शुभेच्छा विचारणा तनुमानसा सत्त्वात्पत्ति असससक्ति पदाथ भावना और तुयगा है।

(याग वासिष्ठ – उत्पत्ति प्रकरण सग – ११८)

82

सुणि वडा आखे सभु कोइ। केवडु वडा डीठा होइ।
कीमति पाइ न कहिआ जाइ। कहणै वाले तेरे रहे समाइ।।१।।
वडे मेरे साहिबा गहिर गभीरा गुणी गहीरा।
कोई न जाण तेरा केता केवडु चीरा।। रहाउ।।
सभि सुरती मिलि सुरति कमाई। सभि कीमति मिलि कीमति पाई।
गिआनी धिआनी गुर गुरहाई। कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई।।२।।
सभि सत सभि तप सभि चगिआईआ। सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ।
तुधु विणु सिधी किने न पाईआ। करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ।।३।।
आखण वाला किआ वेचारा। सिफती भरे तेरे भडारा।
जिसु तू देहि तिसै किआ चारा। नानक सचु सवारण हारा।।४।।

(राग आसा गउ – गुरु नानक,

प्रत्येक जीव (दूसरो से) सुनकर ही प्रभु को महान कह देता है। लेकिन तू कितना बडा हे यह बात तो देखने से ही कही जा सकती है। तेरे बडप्पन का अन्दाज नही लगाया जा सकता यह कहा भी नही जा सकता। तेरी महानता का बखान करन वाले अपने आप को भूलकर तुझ मे लीन हो जात है।।१।।

ह मर महान मालिक! तू अथाह गम्भीर तथा अगणित गुणो से सम्पन्न है। कोई भी नही जानता कि तेरा कितना बडा विस्तार है।।रहाउ।।

(तुझे जानने के लिए) कितने ही योगियो ने ध्यान लगाने के बराबर यत्न किये कितने ही शास्त्र वेत्ताओ ने पारस्परिक सहयोग से तेरे बराबर की हसती ढूढने की काशिश की पर तेरी महानता का तिल मात्र भी नही कह सके।।२।।

सब शुभ कार्य समस्त तप तथा शुभ गुण सिद्धो की ऋद्धिया सिद्धिआ – किसी को यह सफलता तेरी सहायता के बिना नही मिली। अगर किसी को यह सफलता मिली तो तेरी कृपा से मिली और दूसरा कोई इस प्राप्ति के मार्ग मे काइ रुकावट नही डाल सका।।३।।

हे प्रभु! तेरे गुणो के भण्डार भरे पडे है। जीव की क्या सामर्थ्य है कि इन गुणो का बखान कर सके? तुम जिसे गुण स्तुति करने की देन देते हो उस के मार्ग मे रुकावट डालने मे किसी का जोर नही चल सकता क्योकि हे नानक! सदा स्थिर रहने वाला प्रभु उस को स्वय सवारने वाला है।।४।।

83

आखा जीवा विसरै मरि जाउ। आखणि अउखा साचा नाउ।

साचे नाम की लागै भूख। उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख।।१।।

सो किउ विसरै मेरी माइ।

साचा साहिबु साचै नाइ।। रहाउ।।

साचे नाम की तिलु वडिआई। आखि थके कीमति नही पाई।

जे सभि मिलि कै आखण पाहि। वडा न होवै घाटि न जाइ।।२।।

न ओहु मरै न होवै सोगु। देदा रहै न चूकै भोगु।

गुणु एहो होरु नाही कोइ। ना को होआ ना को होइ।।३।।

जेवडु आपि तेवड तेरी दाति। जिनि दिनु करि कै कीती राति।

खसमु विसारहि ते कमजाति। नानक नावै बाझु सनाति।।४।।

(राग आसा सबद – २)

प्रभु का नाम जपने से जीवन मिलता है जब मुझे नाम विस्मृत होता हे तो मेरी मोत होने लगती है। प्रभु का सत्य नाम स्मरण कठिन काम है। (जिस मनुष्य क भीतर) सदा स्थिर रहने वाले प्रभु के नाम स्मरण की भूख पैदा होती है इस भूख क प्रभाव से नाम का भोजन खा कर सभी दुख दूर हो जाते है।।१।।

हे मेरी मा! प्रार्थना करो कि वह प्रभु मुझे कभी विस्मृत न हो। ज्यो ज्या उस सत्य स्वरूप प्रभु का स्मरण किया जावे त्यो त्यो वह सत्य स्वरूप मालिक (मन मे बसता है)।।रहाउ।।

सदा स्थिर रहने वाले प्रभु की तिल मात्र महिमा बखान करके लोग थक गये है। कोई भी नही बता सका कि उस के समकक्ष कौन है? यदि जगत क सारे जीव मिलकर उस के गुणो का बखान करे तो वह (अपनी असलियत) से बडा नही हो होता ओर महानता का बखान न करने पर वह कम नही हो जाता।।२।।

वह परमात्मा कभी नही मरता और न उसे शोक होता है। वह प्रभु सदा जीवो को भोजन देता हे उस की दी हुई देन प्रयोग करन पर समाप्त नही होती। उस प्रभु की सर्वोपरि विशेषता यह है कि दूसरा कोइ उसके जैसा नही है। उस जेसा आज तक न ही कोई हुआ है न कभी होगा।।३।।

हे प्रभु! जितने महान तुम स्वय हो उतनी ही महान तुम्हारी देन है। तुम्ही ने दिन और रात बनाये हे। हे नानक! वे पुरुष निम्न आचरण के बन जाते है जो प्रियतम प्रभु को विस्मृत कर देते है। नामहीन जीव नीच है।।४।।

भाव साम्य -

सिन्धी के कवि सामी जी ने प्रभु गुण गान के भाव को इसी शैली मे व्यक्त किया है –

अन्धा अनुमानी सचु सुञाणनि कीन की।
गाल्हियू कनि बुधी सुधी जोडे जबानी।
सामी सुजागनि डिठो दिलि मे दिलि जानी।
सदा सेलानी खेलिनि पहिजे ख्याल मे।।३४५।।

अन्ध (अज्ञानी) सत्य को नही पहचानते है वे (सत्य के विशय मे) अनुमान ही करते रहते ह और सुनी हुई बातो मे अपनी ओर से जोडकर कुछ बकते रहते ह। किन्तु जाग्रतो मे प्राण प्यारे परमात्मा को हृदय मे देख लिया है। अत वे सेलानी सदेव अपने ही विचारो मे मस्त रहते है।

(३१) आरती

84

गगन म थालु
रवि चन्दु दीपक बने
तारिका मण्डल जनक मोती।
धूपु मलआनलो
पवणु चवरो करे
सगल बनराइ
फूलन्त जोती।।१।।
कैसी आरती होइ।।
भव खडना तेरी आरती।
अनहता सबद वाजन्त भेरी।। उहाउ।।
सहस तव नैन
नन नैन हहि तोहि कउ
सहस मूरति नना एक तोही।
सहस पद बिमल नन एक पद
गन्ध बिनु सहस तव गन्ध
इव चलत मोही।।२।।
सभ महि जोति जोति है सोइ।
तिस दे चानणि सभ महि चानणु होइ।
गुरसाखी जोति परगटु होइ।
जो तिसु भावै सु आरती होइ।।३।।
हरि चरण कवल मकरन्द लोभित मनो
अनदिनुो मोहि आही पिआसा।
क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ
होइ जा ते तेरे नाइ वासा।।४।।
(राग धनासरी)

गुरु नानक/१३/६६३

जन्म मरण के बन्धन को काटने वाले प्रभु की आरती कैसे की जावे? यह आरती ता अपने आप हो रही है जिस मे अनहद नाद की भेरी बज रही है।

(परमात्मा की आरती उस के द्वारा रचित प्रकृति द्वारा की जा रही है।) आकाश एक थाल है सूर्य और चन्द्रमा उसमे रखे दो दीपक है। अनगणित तारे थाल मे रखे मोती है। मलय पर्वत के सुगन्धित चन्दन की धूप है। हवा चँवर कर रही है। सभी वनस्पति और खिले हुए फूल अजलि दे रहे है।

परमात्मा के कौतुको ने मेरा मन मोह लिया है। (वह निरकार सीमा रहित है और हमारी बाणी की सीमाएँ है। उसके गुणो का वर्णन कैसे किया जावे?) परमात्मा के हजारो आख है और एक भी आख नही उस के हजारो पैर है और एक भी पैर नही। हजारो नाक हैं और एक भी नाक नही। हजारो आकृति है और एक भी आकृति नही।

परमात्मा की ज्योति सभी जीव प्राणियो मे है और सभी उस की ज्योति से प्रकाशित है। गुरु के समान नजर प्राप्त होने पर परमात्मा का स्वरूप दिखाई देता हे। जो निरकार प्रभु को पसन्द आवे वही आरती है।

मरे मन मे नित्य हरि चरणो की धूल प्राप्त करने की लालसा है। हे प्रभु! नानक पपीहे की कृपा जल दीजिए जिस से उस की प्यास शान्त हो तथा तेरे नाम मे निवास हो जावे।

अनुशीलन -

गुरु नानक देव जी के द्वारा धनासरी राग मे उच्चारित यह सबद काव्य और चिन्तन की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है। गुरु जी ने इस सबद का उच्चारण अपनी जगन्नाथ यात्रा के समय किया जब उन्होने मदिर मे औपचारिक आरती मे भाग नही लिया। इस सबद मे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड द्वारा निराकार प्रभु की आरती केसे हो रही है इस का वर्णन किया गया है। सबद का काव्य सौन्दय समझने के लिए सस्कृत और हिन्दी की पृष्ठ भूमि तथा बगला भाषा मे रवीन्द्र नाथ ठाकुर के गीतो की तुलना मे गुरु नानक की काव्य प्रतिभा का स्वरूप समझा जा सकता है।

प्रथम पद और रहाउ की तीन पक्ति सबद का एक भाग है। पहले रहाउ मे यह प्रश्न रखा गया है जन्म मरण के बन्धन काटने वाले प्रभु की आरती कैसे की जावे जिस मे अनहद नाद की भेरी बज रही है।

गुरु नानक देव जी साग रुपक के द्वारा आरती का एक मौलिक और उदात्त चित्र प्रस्तुत करते हैं। परमात्मा की आरती उन के द्वारा रचित प्रकृति द्वारा की जा रही है। आकाश एक थाल है सूर्य और चन्द्रमा इस मे रखे दो दीपक है। अनगणित तारे थाल मे रखे मोती है। मलय पर्वत के सुगन्धित चन्दन की धूप ह। हवा चवर कर रही है। सभी वनस्पति और खिले हुए फूल अजलि दे रहे है।

सबद के दूसरे पद म निराकार के रुप का चित्र खीचने का प्रयास है। परमात्मा क कातुका ने मेरा मन मोह लिया है। (वह निरकार सीमा रहित है आर हमारी वाणी की सीमाएँ है उस के गुणो का वर्णन कैसे किया जावे) परमात्मा के हजारो आखे है और एक भी नही। उस के हजार पैर है और एक भी पैर नही। हजारो नाक है और एक भी नाक नही। हजारो आकृति है और एक भी आकृति नही।

परमश्वर क इस स्वरूप वर्णन का सकेत मात्र पुरुष सूक्त मे है (ऋग्वेद १० ६० १) किन्तु विशद वर्णन नही है। श्वेताश्वेतरोपनिषद के अध्याय तीन के तीन श्लोका मे इस का विस्तार किया गया है तथा परमेश्वर को समस्त देह इन्द्रियादि स रहित होन पर भी समस्त इन्द्रियो के विषय जानने वाला बताया गया हे –

सर्वेन्द्रिय गुणाभास सर्वेन्द्रिय विवर्जितम। (३ १७)

गुरु नानक दव जी न अपनी समास शैली मे उपनिषद के दर्शन का मूर्त रुप प्रदान किया हे।

तीसर पद म विचार के साथ छन्द की पक्ति लघु है। इस मे प्रभु के ज्योति स्वरूप का वर्णन है। परमात्मा की ज्योति सभी जीव प्राणियो मे है और सभी उस की ज्योति स प्रकाशित है परमात्मा की ज्योति गुरु के माध्यम से प्रकट हाती हे। उस प्रभु को जो स्वीकार्य होता है वही आरती बन जाती है।

श्वताश्वतरोपनिषद मे सभी पर शासन करने वाले प्रभु की निर्मल ज्योति का उल्लेख ह (३ १२)।

सुनिमलामिमा प्राप्तिमीशानो ज्योतिरव्यय ।

गुरु नानक दव जी ने ज्योति की व्यापकता और प्रकट होने के उपाय को दशा कर उक्त चिन्तन का नया आयाम दिया है।

सबद के चतुर्थ पद मे जो राग की दृष्टि से सबद का आभोग है गुरु नानक

देव जी चिन्तन के क्षेत्र से नाम भक्ति मे प्रवश करते ह। उन का मन रूपी भ्रमर प्रभु के चरण कमल के मकरद का लोभी है। गुरु नानक देव जी कहत ह कि हे कृपा निधि! मुझ पपीहे का भी अपनी कृपा की स्वाति बूद प्रदान कर। जिस स मै तेरे नाम मे लीन हा जाऊ।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के द्वारा कबीर का एक सबद अपनी पुस्तक मे दिया गया हे जो निम्न है–

ग्रह चन्द्र तपन जोति बरत हे सुरत राग निरत तार बाजे।
नौबतिया घुरत हे दिन रैन सुन्न मे कहे कबीर पीउ गगन गाजै।। I।।
क्षण और पलक की आरती कौन सी रैन दिन आरती बिस्व गाव।
घुरत निस्सान तह गैब की झालरा गैब की घट का नाद आवे।। II।।
खेल ब्रह्माण्ड का पिण्ड मे देखिआ जगत की भरमना दूर भागी।
बाहरा भीतरा एक आकासवत धरिया म अधर भरपूर लागी।।XVII।।
देख दीदार मस्तान मे होय रह्या सकल भरपूर है ूर तेरा।
ज्ञान का थाल और प्रेम दीपक अहै अधर आसन किया अगम डेरा।
कहे कबीर तह भर्म भासे नही जनम और मरन का मिटा फेरा।।XVIII।।/१७

कबीर के सबद के १८ पदो मे रहस्यवाद की विस्तृत व्याख्या ह। उदधृत किये गये प्रथम दो और अन्तिम दा पदो मे गुरु नानक दव जी क आरती सबद के कुछ सकत है जैसे सूय (तपन) और चन्द्रमा की ज्योति जल रही ह। वैराग्य (निरति) के द्वारा सुरति (प्रेम) का राग बज रहा है। दूसरे पद मे गैब के घण्टा द्वारा अनहता वाजन्त भेरी का अभिप्राय है। सभ मे जोति जोति है सोइ को कबीर ने खेल ब्रह्माण्ड का पिण्ड मे देखिआ कहा है। अन्तिम पद मे कबीर गभु के सत्य लोक मे पहुँचते है जहा ज्ञान का थाल ओर प्रम के दीपक का उल्लख है। सत्यलोक म भ्रम का नाश हो जाता है और अभद होने से जन्म मरण से मुक्ति मिल जाती है।

काव्यात्मक दृष्टि से गुरु नानक दव जा का वर्णन अन्वित और सघन है। कविवर रवीन्द्र जब अमृतसर आये तो गुरुवाणी से प्रभावित होकर प्रथम पद और टेक के अश को बगला भाषा मे तत्त्व बोधिनी पत्रिका (फरवरी १८७६) मे प्रकाशित किया। बगला भाषा से इस का साम्य विचारणीय है–

गगनेर थाले रवि चन्द दीपक ज्वले तारिका मण्डल मोतिरे।

धूप मलयानल पवन चामर करे सकल वनराजि फुलन्त जोति रे।

कनन आरती हे भव खण्डन

तव आरति अनाहत शब्द वाजन्त रे।।

कविवर रवीन्द्र ने बाद म १८६६ मे जो गीत लिखा उस की प्रथम पक्ति मे चन्द्र तपन ता कबीर से ल लिये शेष पक्तियो मे गुरु नानक जी के सबद की प्रथम तथा अन्तिम पदो को काव्यात्मक रुप दिया है—

तॉहार आरति करे चन्द्र तपन देव मानव वन्दे चरण—

आसीन सइ विश्व शरण तॉर जगत मन्दिरे।

अनादिकाल अनन्तगगन सेइ असीम महिमा मगन—

ताहे तरग उठे सघन आनन्द नन्द नन्द रे।

हान लय छय ऋतुर डालि पाये देय धरा कुसुम ढालि

कतइ बरन कतइ गन्ध कत गीत कत छन्द रे।

ऊत कन शत भकत प्राण हेरिछे पुलके गाहिछेगान—

पुण्य किरणे फुटिछे प्रम टुटिछे मोहबन्ध रे।

प्रभु अपन जगत मन्दिर मे आसीन है सूर्य और चन्द्रमा उस की आरती कर रहे हे। वह असीम अनादि काल से अनन्त गगन मे अपनी लीला मे मग्न है। इसीलिए आनन्द की लहरे उठ रही है। प्रकृति (धरा) प्रभु के चरणो म छ ऋतुओ क फूलो की डलिया डाल देती है जिसमे कितने ही रग कितन गन्ध कितन गीत और छन्द हे। कितने भक्त प्रभु को निहार रहे है कितन गा रहे है पुण्य किरणो स प्रम फूट रहा है और मोह का बन्धन टूट रहा हे।

यह रवीन्द्र नाथ ठाकुर की प्रौढ कविता नही है इसमे गुरु नानक दव क आध्यात्मिक स्पश का अभाव है। सबद की अन्तिम दोनो पक्ति समाधि भाषा क विस्मय स युक्त है।

हरि चरण लोभित मकरन्द मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा।।

क्रिपा जलु देहि नानक सारिग कउ होइ जा ते तेरे नाइ वासा।।

———

(३२) सो दरु

85

सो दरु तेरा केहा
सो घरु केहा
जितु बहि सरब समाले।
वाजे तेरे नाद अनेक असखा
केते तेरे वावणहारे।।
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि
केते तेरे गावण हारे।
गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसन्तरु
गावै राजा धरमु दुआरे।।
गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि
लिखि लिखि धरमु बीचारे।
गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी
सोहनि तेरे सदा सवारे।
गावनि तुधनो इन्द्र इन्द्रासणि
बैठे देवतिआ दरि नाले।
गावनि तुधनो सिध समाधी अन्दरि
गावनि तुधनो साध बीचारे।
गावनि तुधनो जती सती सन्तोखी
गावनि तुधनो वीर करारे।
गावनि तुधनो पडित पडनि रखीसुर
जुग जुगु वेदा नाले।
गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि
सुरगु मछु पइआले।
गावनि तुधनो रतन उपाये तेरे
अठसठि तीरथ नाले।।

गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा
गावनि तुधनो खाणी चारे।
गावनि तुधनो खड मण्डल ब्रहमण्डा
करि करि रखे तेरे धारे।।
सेई तुधनो गावनि
जो तुधु भावनि
रते तेरे भगत रसाले।
होरि केते तुधनो गावनि
से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे।।
सोई सोई सदा सचु
साहिबु साचा
साची नाई।
हे भी होसी जाइ न जासी
रचना जिनि रचाई।।
रगी रगी भाती करि करि
जिनसी माइआ जिनि उपाई।
करि करि देखै कीता आपणा
जिउ तिस दी वडिआई।
जो तिसु भावै सोई करसी
फिरि हुकमु न करणा जाई।
सो पातिसाहु साहा पतिसाहिबु
नानक रहणु रजाई।।

(राग आसा/सादरु) गुरु नानक/१

वह दर घर बडा ही आश्चयमय हे जहा बैठकर हे निरकार! तू सभी जीवा का पालन करता है।

तेरी इस बनाई हुई कुदरत मे अनेको बाजे और राग है बेअन्त जीव उन बाजो के बजाने वाल है।

ह निरकार! हवा पानी आग तेरे गुण गा रहे है। धर्मराज तेरे दर पर खडा

अनुशीलन -

गुरु ग्रन्थ साहिब मे सो दरु वाणी का विशेष महत्त्व है यही एक मात्र वाणी ह जा तीन स्थाना मे उदधृत की गइ हे राग आसा के आरम्भ मे जपुजी के ऽद तथा जपुजी की २७वी पोडी क रुप मे। सकलन मे कुछ शब्दो के अन्तर ग इर क दा रुप हे जपुजी की प्रथम तीन पक्तियो मे तेरा या तेरे शब्द नही ह तथा चाथी स चोदहवी पक्ति तक गावनि तुधनो के स्थान पर गावहि शब्द का प्रयाग किया गया है।

सा दरु वाणी क शीषक का सकत कबीर क निम्न लिखित श्लोक मे मिलता ह –

कबीर जिह दरि आवत जातिअहु हटक नाही कोइ।

सा दरु कैसे छोडीए जो दरि ऐसा हाइ।।६६।।

(सलाक भगत कबीर/१३६७)

कबीर कहते ह कि जिस दर (दरवाजा–ड्योढी) पर आने जाने मे कोई रुकावट नही हे उस दर (प्रभु के कृपा मय द्वार) को कैसे छोडा जावे जिस मे एसा गुण हा।

गुरु नानक दव जी ने प्रभु क उस दर का वणन किया है। जपु जी की २५वी पाडी मे प्रभु के ऊचे स्थान का सकेत है उसी ऊचे स्थान पर प्रभु के महल और उस क द्वार पर गायक सृष्टि का वणन सा दरु मे है। इस वाणी मे २२ पक्तिया है पहली से चौदहवी पक्ति तक प्रभु के सामान्य गायन करने वाले (दवलाक मातृलाक ओर ब्रह्माण्ड) लोगो का वर्णन है। अगली दो पक्तियो मे प्रभु क अनन्य भक्तो के कीर्तन का वर्णन हे जो प्रभु को प्रिय है। सा दरु की अन्तिम छ पक्तियो मे प्रभु के सत्य स्वरूप का वर्णन है। जिसने सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की है। गुरु नानक देव जी ने प्रकृति के सभी उपादानो द्वारा प्रभु के सिफ्त सलाह (गायन) से एक सगीत रुपक की रचना की है अन्त मे तीन शब्द नानक रहणु रजाई के द्वारा अपना स्वर भी प्रभु की रजा मे मिला देते है।

गुरु ग्रन्थ साहिब मे भक्त वाणी म नाम देव और कबीर के द्वारा प्रभु के दर का वर्णन भी मिलता है। नाम देव जी ने अकुल निरजन गोपाल राइ क द्वार ओर घर का वर्णन किया है जिस मे अनेको ब्रह्मा ऋषि गन्धर्व आदि प्रभु का यश गायन कर रहे है।

सवीले गोपाल राइ अकुल निरजन।

(राग मला

कबीर की इस सम्बन्ध मे दो अष्टपदिया है पहली मे प्रभु के अगम दुर्गम किले का वर्णन है जिस मे मायातीत बाल गोविन्द विश्राम कर रहे है। दूसरी अष्टपदी मे प्रभु की सेवा मे सम्पूर्ण पृथ्वी करोडो इन्द्र आदि को दिखाया गया है कबीर उसी राम से याचना करना चाहते है। उन्हे अन्य देवी देवताओ से कोई वास्ता नही है।

जउ जाचउ तउ केवल राम।
आन देव सो नाही काम।।

(राग भैरउ/११६२)

प्रभु के अनन्य भक्तो के गायन की लीला निराली है। जहा भक्त प्रभु के प्रेम मे बन्धे हे वहा प्रभु भी भक्तो के प्रेम के बन्धन मे है। कविवर रवीन्द्र अपने गान के द्वारा प्रभु को अपनी निजी कुटिया के द्वार पर खडा पाते हैं –

तव सिहासनेर आसन हते एले तुमि नेमे
मोर विजन घरेर द्वारेर काछे दॉडाले नाथ थेमे।
एकला बसे आपन मने गाइतेछिलेम गान
तोमार काने गेल से सुर एले तुमि नेमे–
मार विजन घरेर द्वारेर काछे दॉडाले नाथ थेमे।।
तामार सभाय कत ना गान कतइ आछेन गुणी
गुनहीनेर गानखानि आज बाजल तोमार प्रेमे।
लागल तानेर माझे एकटि करुण सुर
हाते लये वरणमाला एले तुमि नेमे–
मोर विजन घरेर द्वारेर काछे दॉडाले नाथ थेमे।

(गीताजलि)

हे नाथ! अपने सिहासन से तुम नीच उतर आये और मेरी निर्जन कुटिया के द्वार के निकट खडे हो गये। मै अकेले एक कोने मे गा रहा था तुम्हारे कानो मे मेर सगीत का स्वर पडा। तुम नीचे उतर आये और मेरी कुटिया के द्वार पर खडे हो गये। तुम्हारे दर पर (भवन मे) गाने वाले कितने सिद्ध पुरुष दिन रात सिफ्त सलाह (स्तुति) कर रहे हे। आज दुनिया के उस सगीत मे मुझ गुणहीन का एक स्वर तुम्हारे प्रेम मे झकृत हो उठा और तुम पुरस्कार स्वरूप देने के लिए पुष्प माला ले कर नीच आये। हे नाथ! मेरी निर्जन कुटिया के द्वार के निकट तुम खडे हो गये।

(३३) सो पुरखु

86

सो पुरखु निरजनु
हरि पुरखु निरजनु
हरि अगमा अगम अपारा।
सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी
हरि सचे सिरजणहारा।
सभि जीअ तुमारे जी
तू जीआ का दातारा।
हरि धिआवहु सन्तहु जी
सभि दूख विसारणहारा।
हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी
किआ नानक जत विचारा।।१।।
तू घट घट अन्तरि सरब निरन्तरि जी
हरि एको पुरखु समाणा।
इकि दाते इकि भेखारी जी
सभि तेरे चोज विडाणा।।
तू आपे दाता आपे भुगता जी
हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा।
तू पार बह्मु बेअन्तु
बेअन्तु जी
तेरे किआ गुण आखि वखाणा।।
जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी

जनु नानकु तिन कुरबाणा।।२।।

हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी

से जन जुग महि सुखवासी।

से मुकतु

से मुकतु भए

जिन हरि धिआइआ जी

तिन तूटी जम की फासी।

जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी

तिन का भउ सभु गवासी।

जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी

ते हरि हरि रूपि समासी।

से धनु से धनु जिन हरि धिआइआ जी

जनु नानकु तिन बलि जासी।।३।।

तेरी भगति तेरी भगति भण्डार जी

भरे बिअन्त बेअन्ता।

तेरे भगत

तेरे भगत सलाहनि तुधु जी

हरि अनिक अनेक अनन्ता।

तेरी अनिक

तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी

तपु तापहि जपहि बेअन्ता।

तेरे अनेक

तेरे अनेक पडहि बहु सिम्रिति सासत जी

करि किरिआ खटु करम करन्ता।

से भगत

से भगत भले जन नानक जी

जो भावहि मेरे हरि भगवन्ता।।४।।

तू आदि पुरखु अपरपरु करता जी

तुधु जेवडु अवरु न कोई।

तू जुगु जुगु एको

सदा सदा तू एको जी

तू निहचलु करता सोई।

तुधु आपे भावे सोई वरतै जी

तू आपे करहि सु होई।

तुधु आपे स्रिसटि सभ उपाई जी

तुधु आपे सिरजि सभ गोई।

जनु नानकु गुण गावै करते के जी

जो सभसै का जाणोई।।५।।

(राग आसा) गुरु रामदास/३४८

वह परमात्मा सभी जीवो मे व्यापक है फिर भी माया के प्रभाव से ऊपर है अगम्य हे और बेअन्त हे। हे सदा रहने वाले और सब जीवो को पैदा करने वाले हरि! सार जीव जन्तु तेरा स्मरण करते है और सारे जीव तेरे ही पैदा किये हुए ह तू सभी जीवो का रोजी देने वाला है। हे सन्त जनो! उस प्रभु का स्मरण करो वह सभी दुखो का नाश करने वाला है। वह प्रभु सभी जीवो मे व्यापक होने के कारण स्वय ही मालक हे और स्वय ही सेवक है। हे नानक! जीव बेचारे क्या हे? (जीवो की परमात्मा से बाहर कोई हस्ती नही है)।।१।।

ह हरि! तू हर एक शरीर मे व्याप्त है। तू सब जीवो मे एक रस मौजूद है। तू एक खुद ही सब जीवो मे समाया हुआ है फिर भी कई जीव दानी है कई जीव भिखारी है यह सब तेरे ही आश्चर्यमय कौतुक है क्योकि वास्तव मे तू ही

(३४) मन जोति सरुपु

87

मन तू जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु।
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रगु माणु।
मूलु पछाणहि ता सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई।
गुर परसादी एको जाणहि ता दूजा भाउ न होई।
मनि साति आई वजी वधाई ता होआ परवाणु।
इउ कहै नानकु मन तू जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु।।

(राग आसा छन्द २{५}) गुरु अमर दास जी/४४१

हे मेरे मन! तू उस प्रकाश स्वरूप परमात्मा का ही एक अश है अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान। वह परमात्मा सदा तेरे साथ साथ रहता है इसलिए गुरु की शिक्षा पर चल कर प्रभु से मिलने के रस का आस्वादन कर।
यदि तू गुरु की कृपा से एक परमात्मा के साथ गहरी पहचान कर ले तो प्रभु स तेरा साक्षात्कार हो जावेगा। तब तुझे जीवन मृत्यु के रहस्य का पता चल जावेगा और तेरे भीतर मोह से उत्पन्न दुविधा समाप्त हो जावेगी।
जब मनुष्य के भीतर मन मे शान्ति पैदा हो जाती है उस का विकास होता हे तब वह प्रभु के दरबार मे स्वीकृत होता है। गुरु नानक का कथन है कि ह मेरे मन! तू उस प्रकाश स्वरूप प्रभु का ही अश है अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान।

भाव साम्य -

कश्मीर की शैव साधिका लाल दद्यद ने मन पर विषय वासना की मैल हटन के बाद सार तत्व ब्रह्म के दर्शन का वर्णन किया है –

मुकरस जन मल चेलुम मनस
अदम्य लबम जनस जान
सुयेलि ड्यूठम निशि पानस
सारय सुय तुया ब नो केहै।

(वाख/१००) लाल द्यद/३०

जिस प्रकार **दर्पण को** स्वच्छ करके उसमे पूर्ण प्रतिबिम्ब दृष्टिगोचर होता है उसी प्रकार मन से विषय वासनाओ की मैल धुलने के पश्चात सारतत्त्व ब्रह्म का अनुभव होता है।

मन (जीव) प्रभु का ही अग है। जीव द्वारा प्रभु की खोज को सामी जी ने इस प्रकार व्यक्त किया है –

हैरत ऐ हासी अचे हिक अचरज ते।
सोई फोले आत्मा खण्ड्र के पतासो।
गहणो ढून्ढे सोनखे मिटीअ खे कासो।
पाणी प्यासो सामी रहे नितु नीर जो।।२६१।।

सामी जी कहते है कि मुझे इस आश्चर्य पर हसी भी आ रही है एव विस्मय भी हो रहा है कि जीव परमात्मा का अश होते हुए भी उसे उसी प्रकार ढूढता है जिस प्रकार शक्कर का बना बतासा शक्कर को सोने के बने आभूषण सोने का तथा मिट्टी से बना प्याला मिट्टी को। (वास्तव मे उक्त मे किसी प्रकार का भेद नही है उनका रुप अलग अलग है उसी प्रकार जीव और परमात्मा मे भेद नही है पर अज्ञान वश जीव अपने को अलग मान बैठा है। पानी मे रहकर भी जीव प्यासे का प्यासा रहता है)।

88

नानक तरवरु एकु फलु दुइ पखेरू आहि।
आवत जात न दीसही ना पर पखी ताहि।
बहु रगी रस भोगिआ सबदि रहै निरबाणु।
हरि रसि फलि राते नानका करमि सचा नीसाणु।।

(राग विहागडा की वार सलाकु २/६) गुरु अमरदास जी/५५०

हे नानक! शरीर मानो एक वृक्ष है। इसको हरि रस रुपी फल लगा है। इस पर दो पक्षी बैठे है एक है जीवात्मा और दूसरा है परमात्मा। ये दो पक्षी आते जाते नही दिखाई देते न ही इनके पख दिखाई देते है। अगर बहुत रगो के रस भोग करने वाला जीवात्मा शब्द के द्वारा इन रस भोगो से अलग रहे तो हरि रस मे लीन होने से उस पर प्रभु की कृपा से सच्चा निशान पड जाता है। (सञ्चित कर्मो का लेख मिटकर मुक्ति प्राप्त हो जाती है।)

इस श्लोक के विचारो का साम्य ऋगवेद की एक प्रसिद्ध ऋचा से है।(१–१६४–२०)

(३५) गुपत हीरु हरि राखा

89

अकुल पुरख इकु चलितु उपाइआ। घटि घटि अतरि ब्रह्मु लुकाइआ।।
जीअ की जोति न जानै कोई।
तै म कीआ सु मालूमु होई।। रहाउ।।
जिउ प्रगासिआ माटी कुभेउ। आपे ही करता बीठुलु देउ।।२।।
जीअ का बधनु करमु बिआपै। जो किछु कीआ सु आपै आपै।।३।।
प्रणवति नामदेउ इहु जीउ चितवै सु लहै। अमरु होइ सद आकुल रहै।।'

'राग' प्रभाती) नाम देव/

कुल रहित परम पुरुष ने एक लीला रचाई। प्रत्येक शरीर मे ब्रह्म तत्त्व ि
कर रखा है। यह तत्त्व हमारे प्राणो की ज्याति है परन्तु कोई इसे पहचानता
(इस के विपरीत) जो हम लोग करते है उसका उसे पता रहता है। जैसे ि
से घडा बनता है (घड मे मिट्टी स्पष्ट है) वैसे ही हरि से सब कुछ बनता है
भिन्न रुपा म दृश्यमान है। कर्म जीवो के बन्धन है (इन स मुक्ति पा सकना ज
क वश मे नही) किन्तु यह भी तो वह स्वय करवाता हे। नाम देव जी कहत
कि जीव की जो भावना होती है वैसा ही फल वह पाता है। यदि वह कुल र
परमात्मा मे लीन रहे तो अमर हो जाता है।

भाव साम्य -

सिन्धी के सत कवि सामी ने प्रभु के मानव देह मे छिपने की लीला का व
निम्न प्रकार किया है –

अणहूदे ओले सामी लिको सुप्री।
लधो पॅहिजे घर मो फकीरनि फोले।
जिनिखे आशिकु अगम जी चिडिग लगी चोले।
पटु पर्दो खोले माणिनि दौर दर्सजा।।३१२।।

प्रियतम (परमात्मा) झूठे भ्रम मे छिप गया है पर फकीरो (प्रेमियो) ने उसे अ
हृदय रुपी घर मे ढूढ लिया है। जिनके शरीर रुपी चोले मे अगम प्रेम
चिनगारी लग गई है। वे अज्ञान के पर्दे को भस्म करके प्रियतम के दर्शन
आनन्द लूट रहे है।

90

हीरा लालु अमोलकु है भारी बिनु गाहक मीका काखा।

रतन गाहकु गुरु साधू देखिओ तब रतनु बिकानो लाखा।।१।।

मेरे मनि गुपत हीरु हरि राखा।

दीन दइआलि मिलाइओ गुरु साधू गुरि मिलिऐ हीरु पराखा।। रहाउ।।

मनमुख कोठी अगिआनु अधेरा तिन घरि रतनु न लाखा।

ते ऊझडि भरमि मुए गावारी माया भुअग बिखु चाखा।।२।।

हरि हरि साधु मेलहु जन नीके हरि साधु सरणि हम राखा।

हरि अगीकारु करहु प्रभ सुआमी हम परे भागि तुम पाखा।।३।।

जिहवा किआ गुण आखि वखाणह तुम वड अगम वड पुरखा।

जन नानक हरि किरपा धारी पाखाणु डूबत हरि राखा।।४।।

(राग जेतसरी/सबद–२) गुरु रामदास/६६६

ह भाई! मेरे मन मे परमात्मा ने अपना नाम हीरा छिपा कर रखा हुआ था। दीनो पर दया करने वाले उस हरि ने मुझे गुरु मिला दिया। गुरु मिलने से मेने वह हीरा परख लिया हे। मै ने उस हीरे की कदर समझ ली।।१।।

हे भाई! परमात्मा का नाम बडा ही कीमती हीरा है। पर गाहक के बिना यह हीरा तृण के समान पडा हुआ है। अब इस रत्न का ग्राहक गुरु मिल गया तो यह लाखो रुपयो मे बिकने लगा।।रहाउ।।

हे भाई! मन के पीछे चलने वाले मनुष्यो के हृदय मे अविद्या का अन्धकार है। इसलिए उन्होने अपने हृदय मे टिका हुआ नाम रत्न कभी नही देखा। वह मूर्ख भटकाव के कारण कुमार्ग पर चल कर आत्मिक मौत मरते रहते है क्योकि वे माया सर्पिणी के मोह का जहर खात है।।२।।

हे हरि! मुझे अच्छे सन्त मिला। मुझे गुरु की शरण मे रख। हे प्रभु! हे मालिक! मुझे स्वीकार करो मै अन्य मार्ग छोड कर तेरी शरण मे आ गया हू।।३।।

हे प्रभु! तू पुरुषोत्तम है अगम्य है हम अपनी जीभ से तुम्हारे क्या गुण कह सकते है। हे दास नानक कह कि जिस मनुष्य पर प्रभु ने कृपा की उस पत्थर को भी ससार मे डूबने से बचा लिया।।४।।

भाव साम्य -

गुरु राम दास जी के गुपत हीरु हरि राखा का वर्णन मराठी मे समर्थ गुरु राम दास जी ने निम्न प्रकार किया हे –

दृश्या वेगळा दृश्या अतरी। सर्वात्मा तो सचराचरी।
विचार पाहाता अन्तरी। निश्चये बाणे।।१।। (६ ६ २३)
गुप्त आहे उदड धन। काये जाणती सेवक जन।
तयास आह ते ज्ञान। बाह्य आकाराचे।।२।। (६ ६ १)
गुप्त परीस चितामणी। प्रगट खडे काचमणी।
गुप्त हेमरत्नखाणी। प्रगट पाषाण मृत्तिका।।३।। (६ ६ ११)
दिसेना जे गुप्त धन। तयासि करणे लागे अजन।
गुप्त परमात्मा सज्जन । सगती शोधावा।।४।। (६ ६ १६)
रायाचे सन्निध होता। सहजचि लाभे श्री मतता।
तेसा हा सत्सग धरिता। सदवस्तु लाभे।।५।। (६ ६ २०)
दव पद आहे निर्गुण। देवपदी अनन्यपण।
हाचि अथ पाहाता पूर्ण। समाधान बाणे।।६।। (६ ६ ३२)

(समथ्र गुरु राम दास – देवशेधन नाम/सारशाधन)

वह परमात्मा इस दृश्य जगत से परे भी है और इस के अन्दर भी भरा है। वह सब चर और अचर पदार्थो मे है। यदि अपने ही मन मे विचार पूर्वक देखा जावे ता दिखाई देता है।

घर मे छिपे धन का हाल नौकर चाकर क्या जाने? वे तो केवल ऊपरी और बाहरी बाते जानते है।

चिन्ता मणि गुप्त पडी है काच मणि प्रगट है रत्न और स्वर्ण मणि गुप्त है ओर पत्थर तथा मिट्टी प्रकट है।

जो गुप्त धन दिखाई नही पडता उसी को देखने के लिए आखा मे अजन लगाने की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार गुप्त परमात्मा को ढूढने के लिए सज्जनो की सगति की आवश्यकता होती हे।

राजा के पास रहने से सहज मे सम्पत्ति मिलती है इसी प्रकार सत्सग से सहज म परमात्मा की प्राप्ति होता है।

देवपद निर्गुण है और उसी देवपद मे ही अनन्य भाव रखना चाहिए इसी दृष्टि स विचार करने पर पूण शान्ति मिलती है।

91

कत जाइऐ रे घर लागो रगु।
मेरा चितु न चलै मनु भइओ पगु।। रहाउ।।
एक दिवस मन भई उमग। घसि चदन चोआ बहु सुगन्ध।
पूजन चाली ब्रह्म ठाइ। सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि।।१।।
जहा जाइऐ तह जल पखान। तू पूरि रहिओ है सभ समान।
बेद पुरान सभ देखे जोइ। ऊहा तउ जाइऐ जउ ईहा न होइ।।२।।
सतिगुर मै बलिहारी तोर। जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर।
रामानद सुआमी रमत ब्रहम। गुर का सबदु काटै कोटि करम।।३।।

(राग बसन्त) रामानन्द/ १ ५

मे कहा जाऊ? ओर केसे जाऊ? मुझे तो प्रेम रग घर ही मे लग गया हे मेरा चित अब कही जाता ही नही मेरा मन पगु हो गया है।।रहाउ।।

एक दिन मेरे मन मे कुछ ऐसी उमग उठी कि खूब सुगन्धित चन्दन चोवा लेकर ब्रह्म मन्दिर मे मै ब्रह्म देव को पूजने चलू, पर सतगुरु ने तो ब्रह्म का ठोर मन ही मे बता दिया।।१।।

जहा भी जाऊ वहा जल और पाषाण ही नजर आता है और तू समान रूप से व्याप्त हो रहा हे। वेद पुराण सब उलट पलट कर देख डाले अब कहा जाऊ? जहा तू न हो वही जाना चाहिए। पर तुझ से खाली जब कोई ठौर हो।।२।।

सत गुरु! मे तुम पर कुर्बान हू, मेरी तमाम विकट भ्रान्तिओ को तू ने काट डाला। धन्य! मुझे ब्रह्म रमण की अवस्था प्राप्त हो गई कर्म जाल के बन्धन का सतगुरु का शब्द बाण ही काट सकता है।।३।।

92

काहे रे बन खोजन जाई।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही सगि समाई।। रहाउ।।
पहुप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई।
तैसे ही हरि बसे निरतरि घट ही खोजहु भाई।।१।।
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई।
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई।।२।।

(राग धनासरी) गुरु तेग बहादुर जी/६८४

तू उस जगल मे खोजने क्यो जाता है? वह घट घट वासी सदा अलिप्त रहने वाला स्वामी तो तर घट घट मे समाया है।।रहाउ।। जैसे फूल मे सुगन्ध रहती है और दर्पण म प्रतिबिम्ब उसी भाति प्रभु तेरे अन्दर ही निरन्तर बस रहा ह। भाई तू उस प्रियतन को अपने घट ही मे खोज।।१।। बाहर भीतर सर्वत्र उसी प्रभु का वास है – मुझे तो सतगुरु ने यही ज्ञान बताया है। अपने आत्मदेव की पहचान बिना भ्रान्ति की यह काई कभी दूर होने की नही।।२।।

भाव साम्य -

परमात्मा को पाने के लिए हमे हृदय मे झाकना चाहिए सन्त वाणी मे इस पर बल दिया गया है। सन्त कवि वेमना के वचन निम्न प्रकार है –

तन लो सर्व बडुग

दन लोलप वेद कलक घरेवेदिकेडियी।

नन बुल मोगेड येददुल

मन्मुल दल्पग वशम महिलो वेमा।।

अपन शरीर के भीतर रहने वाले तत्त्व का बाह्य जगत मे खोजने वाले अज्ञानी तो शरीर ढाने वाले बैल हे उन्हे समझाना असभव कार्य है। परमात्मा को हृदय म दखने वाले ज्ञानियो को छोडकर अन्य साधको को शाश्वत सुख मिलना असभव है।

सिन्धी भाषा के सन्त कवि सामी जी का श्लोक भ्रम का निवारण कर प्रभु दर्शन का सन्देश देता हे –

कूके कोहु चरी त को लिको नाहि लकनि मे।

फिटी करि सामी चए ईहा भर्म भरी।

मोटी दिसु महलि मे त वञनी ठप ठरी।

त दौलत जी दरी प्री पटे दियनी पाणही।।६५७।।

हे पगली जीवात्मा! तेरा प्रियतम गुफाओ मे छिपा हुआ तो है नही फिर क्या इस प्रकार चिल्ला रही हो? तू इस आत्मा और परमात्मा के भेद समझने के भ्रम रुपी गठरी को फेक दे और अपने हृदय रुपी महल मे पैठ कर देख तो तेरा राम रोम शीतल हो जावेगा क्योकि (परमात्मा को अपने अन्दर झाक कर देखने मात्र से ही) प्रियतम (आत्मज्ञान रुपी) कोष गृह की खिडकी स्वय ही खोल दग।।

93

कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जगम जाती।

काइअउ धूप दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती।।१।।

काइआ बहु खण्ड खोजते नव निधि पाई।

न कछु आइबो न कछु जाइबो राम की दुहाई।। रहाउ।।

जो ब्रह्मण्डे सोई पिण्डे जो खोजै सो पावै ।

पीपा प्रणवै परमततु है सतिगुरु होइ लखावै।।२।।

(राग धनासरी) पीपा/६६५

शरीर के भीतर प्रभु हे अत शरीर की खोज ही मेरा देवता है। शरीर ही मेरा मन्दिर है शरीर ही मुझ यात्री के लिए तीर्थ यात्रा है शरीर की खोज ही भीतर स्थित देवता के लिए धूप दीप और अर्चन है। इसी की खोज कर के मै मानो पत्र पुष्प भेट कर के अपने इष्ट देव की पूजा कर रहा हू।।१।।

दश दशान्तरो को खोज खोज कर अपने शरीर के भीतर ही मैने प्रभु के नाम रुपी निधिया प्राप्त कर ली है। अब परमात्मा की स्मृति का ही प्रभाव है कि मेरे लिए न कुछ जन्म लेता है और न कुछ मरता है अर्थात मेरा आवागमन का चक्कर मिट गया है।।रहाउ।।

पीपा कहता है कि जो सृष्टि का सृजन हार परमात्मा समस्त ब्रह्माण्ड मे है वही मनुष्य शरीर मे है। जो मनुष्य भीतर खोज करता है वह उसे प्राप्त कर लेता है। यदि सतिगुरु मिल जावे तो अन्दर ही दर्शन करा देता है।।२।।

भाव साम्य -

शरीर ही मन्दिर है। इस विषय पर आन्ध्र प्रदेश के सन्त कवि वेमना का वचन सारगर्भित हे।

पडि पडि भ्रोकग्गि नेटिकि

गुडिलो गल कठिन शिलल गुणमुल चेडुना।

गुडि देहमात्म देवडु

चेडुराल्लुकु वदु पूज सेयुक वेमना।।

क्या मन्दिर की शिलाओ के आगे माथा टेकने से उस की परुषता दूर हो जाती है। यह शरीर ही मन्दिर है और जीवात्मा ही भगवान है। यह व्यर्थ की शिलाओ की पूजा करना छोड दो।

94

मनु मन्दरु तनु साजी बारि। इस ही मधे बसतु अपार।
इस ही भीतर सुनीअत साहु। कवनु बापारी जा का ऊहा विसाहु।।१।।
नाम रतन को को बिउहारी।
अम्रित भोजनु करे आहारी।। रहाउ।।
मनु तनु अरपी सेव करीजै। कवन सु जुगति जितु करि भीजै।
पाइ लगउ तजि मेरा तेरै। कवनु सु जनु जो सउदा जोरै।।२।।
महलु साह का किन बिधि पावै। कवनु सु बिधि जिति भीतरि बुलावै।
तू वड साहु जा के कोटि वणजारे। कवनु सु दाता ले सचारे।।३।।
खोजत खोजत निज घरु पाइआ। अमोल रतनु साचु दिखलाइआ।
करि किरपा जब मेले साहि। कहु नानक गुर कै वेसाहि।।४।।

(राग गउडी/सबद – ८६) गुरु अर्जन देव जी/१८०–१८१

परमात्मा ने अपने रहने के लिए मनुष्य के मन को सुन्दर घर बनाया हुआ है और मनुष्य शरीर उस की रक्षा की बाड है। इस मन मदिर के भीतर ही सीमा रहित वस्तु (प्रभु का नाम धन) हे इसी के अन्दर उस अपार वस्तु का स्वामी रहता है। अब बताइए वह कौन सा व्यापारी है जिस का उस स्वामी के दरबार मे विश्वास बना हुआ है।।१।।

नाम रत्न का वह कोन व्यापारी है जो इस अमृत भोजन का आहार करता है? रहाउ

कोन सी युक्ति है जिस स यह व्यापारी प्रसन्न हो जावे। क्या मन तन अर्पण करने से व्यापारी सन्तुष्ट हो जावेगा। वह कौन सा स्वामी का विश्वास प्राप्त दास है जो नाम का सौदा करा दे? मै मेरे तेरे की भावना छोडकर उस के चरणो की सेवा मे लग जाऊ।।२।।

मै गरीब वणजारा स्वामी के महल तक कैसे पहुचूँ? वह कौन सी विधि है जिस से स्वामी अन्दर बुला ल? हे प्रभु! तू सर्वोच्च शाह है जिस के करोडो वणजारे है। तू ही बता वह दाता कौन है जो मुझे तेरे साथ मिला दे।।३।।

यह पूछते पूछते ओर खोज करते करते अपना घर प्राप्त हो गया। अमूल्य रत्न सत्य मुझे दिखला दिया गया। यह मिलन तभी सभव हुआ है जब शाह प्रभु की कृपा हुई है जिस का आधार गुरु का विश्वास है। इस प्रकार प्रभु की कृपा से गुरु मिलता है और गुरु की कृपा से प्रभु मिलता है।।४।।

95

ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुन्नि पदारथु पाइआ।

अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ।।१।।

हरि गुन कहते कहनु न जाई।

जेसे गूगे की मिठिआई।

रसना रमत सुनत सुखु स्रवना चित चेते सुखु होई।

कहु भीखन दुइ नैन सतोखे जह देखा तह सोई।।२।।

(राग सारठि – २) भीखन/६५६

प्रभु का नाम एक ऐसा अमूल्य पदार्थ है जो सौभाग्य वश मिलता है। इस रत्न को यदि अनेक यत्नो से भी हृदय मे छिपा कर रखे तो भी यह छिपाये नही छिपता।।१।।

वह आनन्द कहा नही जा सकता जा परमात्मा का गुण गान करने से मिलता है। जेसे गूगे द्वारा खाइ मिठाई का स्वाद कहा नही जा सकता वेसे ही प्रभु के नाम स्मरण का आनन्द कहा नही जा सकता।।रहाउ।।

इस रत्न रुप नाम को जपने से जिहा को सुख मिलता है सुनने वाले कानो को सुख मिलता है। भीखन का कथन है कि प्रभु नाम स्मरण से मेरी आखो मे ऐसाी शीतलता छाई है कि मै जिधर देखता हू उस परमात्मा को ही देखता हू।।२।।

भाव साम्य -

साधना के अभाव मे नाम रत्न सभाला नही जा सकता। कश्मीर के वर्तमान काल के कवि जिदा कौल का अनुभव इस प्रकार है–

सुमरन पानुन दित्तोनम प्रेमुक निशान वेसिये।

रतसरु न तोगुम न रोवुम ओसम न बान वेसिये।

पथ काली छुम न द्युतमत सोन मोख्ता दान वेसिये।

अनय सारी क्याह लबख वोन्य तिम मोख्तदान वेसिये।।१।।

वाइलन जी मनज थावुन गोछ हावुन थोवम अथास पायथ।

राह कस छु कोर मे पानस नोखसान पान वेसिये।

हावुन छु राव रावुन छावुक समर छे खाइमी।

थावान जि छाव बापथ बान अन छि थान वेसिये।।२।।

यान सुय निशान रोवुम तान माइत गायमितस त फलवा
न्युन हान ने केन्ह ती फेरान छसवान वान वेसिये।
वसरुन पनुन वनस क्याह बुथ मा सयम दोहाख।
कुन्य जाय तिमन मन्ज गत्स कोत शबान वेसिये।।३।।

(सुमरन)

हे सखि! उसने मुझे अपने प्रेम की निशानी के रुप मे नाम रत्न दिया। मै उसे सभाल न सकी ओर वह खो गया। मै उसकी पात्रा नही थी। मैने पिछले जन्म मे सोना ओर मोती दान मे नही दिया था। अन्धे के रुप मे उनके कीमती रत्नो का म केसे पा सकती हूँ।

मुझे उस रत्न को छिपाकर रखना था किन्तु मैने प्रदर्शन के लिए अपने हाथ म रखा। इस गभीर नुकसान के लिए मै स्वय उत्तरदायी हू, कोई दूसरा दोषी नही है। अपने कोष को दिखाना उसको खोना है धैर्य रहित होने से हम परिपक्व नही होते। ह सखि! चावल अच्छी तरह पकाने के लिए लोग पतीले पर ढक्कन रख देते है।

हे सखि! क्योकि मैने प्रेम चिह्न खो दिया है। मै एक बुद्धि हीन मूर्ख की तरह चक्कर काट रही हू जिसे कुछ खरीदना या लेना नही। मै अपनी लापरवाही भूल ओर गिरावट को कैसे समझ सकती हू? मै प्रभु को उस दिन कैसे देखूगी? मै भयानक अन्धेरी रात मे (रत्न के प्रकाश के बिना) अकेले भी उसके पास नही जा सकती।

वर्तमान मराठी कविता के जनक केशव सुत (१८६६–१९०५) ने भी अपनी कविता हरपले श्रेय मे खोये हुए श्रेय (नाम रत्न) की चर्चा की है। तुझे वही मिला जो तू ने प्रभु से मागा था। वही चीज तेरे पल्ले पडी जिस का तू ने मोल चुकाया था। सोदा करने मे वाणी द्वारा कुद भूल जरूर हुई उसे समझ कर अपने हृदय को दोष दे। प्रभु ने स्वर्णमय दिया तेरे हाथ मृणमय लगा। कैसा बदनसीब है यह विनिमय!

प्राप्त जाहले ते तुजला तू मागितले जे देवाला
ज्याचे मोल तुवा दिधले तेच तुझ्या पदरी पडले–
या वचने चुकला सौदा उमगुनि हृदया दे खेदा!
दिले हिरण्मय हाती मृण्मय हा हतविनिमय!

95

ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुन्नि पदारथु पाइआ।
अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ।।१।।
हरि गुन कहते कहनु न जाई।
जैसे गूगे की मिठिआई।
रसना रमत सुनत सुखु स्रवना चित चेते सुखु होई।
कहु भीखन दुइ नैन सतोखे जह देखा तह सोई।।२।।

(राग सोरठि – २) भीखन/६५६

प्रभु का नाम एक ऐसा अमूल्य पदार्थ है जो सोभाग्य वश मिलता है। इस रत्न को यदि अनेक यत्नो से भी हृदय म छिपा कर रखे तो भी यह छिपाये नही छिपता।।१।।

वह आनन्द कहा नही जा सकता जो परमात्मा का गुण गान करने से मिलता हे। जेसे गूगे द्वारा खाई मिठाई का स्वाद कहा नही जा सकता वैसे ही प्रभु के नाम स्मरण का आनन्द कहा नही जा सकता।।रहाउ।।

इस रत्न रुप नाम को जपने से जिह्वा को सुख मिलता हे सुनने वाले कानो को सुख मिलता है। भीखन का कथन हे कि प्रभु नाम स्मरण से मेरी आखो मे ऐसी शीतलता छाई है कि मै जिधर देखता हू उस परमात्मा को ही देखता हू।।२।।

भाव साम्य -

साधना के अभाव मे नाम रत्न सभाला नही जा सकता। कश्मीर के वर्तमान काल के कवि जिदा कौल का अनुभव इस प्रकार है–

सुमरन पानुन दित्तोनम प्रेमुक निशान वेसिये।
रतसरु न तोगुम न रोवुम ओसम न बान वेसिये।
पथ काली छुम न द्युतमत सोन मोख्ता दान वेसिये।
अनय सारी क्याह लबख वोन्य तिम मोख्तदान वेसिये।।१।।
वाइलन जी मनज थावुन गोछ हावुन थोवम अथास पायथ।
राह कस छु कोर मे पानस नोखसान पान वेसिये।
हावुन छु राव रावुन छावुक समर छे खाइमी।
थावान जि छाव बापथ बान अन छि थान वेसिये।।२।।

यान सुय निशान रोवुम तान माइत गायमितस त फलवा
न्युन होन ने केन्ह ती फेरान छसवान वान वेसिये।
वसरुन पनुन वनस क्याह बुथ मा सयम दोहाख।
कुन्य जाय तिमन मन्ज गत्स कोत शबान वेसिये।।३।।

(सुमरन)

हे सखि! उसन मुझे अपने प्रेम की निशानी के रुप मे नाम रत्न दिया। मै उसे सभाल न सकी ओर वह खो गया। मै उसकी पात्रा नही थी। मैने पिछले जन्म मे सोना ओर माती दान मे नही दिया था। अन्धे के रुप मे उनके कीमती रत्नो को म कैसे पा सकती हूँ।

मुझे उस रत्न को छिपाकर रखना था किन्तु मैने प्रदर्शन के लिए अपने हाथ मे रखा। इस गभीर नुकसान के लिए मै स्वय उत्तरदायी हू, कोई दूसरा दोषी नही है। अपन कोष को दिखाना उसको खोना है धैर्य रहित होने से हम परिपक्व नही होते। हे सखि! चावल अच्छी तरह पकाने के लिए लोग पतीले पर ढक्कन रख देते है।

हे सखि! क्योकि मैने प्रेम चिह्न खो दिया है। मै एक बुद्धि हीन मूर्ख की तरह चक्कर काट रही हू जिसे कुछ खरीदना या लेना नही। मै अपनी लापरवाही भूल और गिरावट को कैसे समझ सकती हू? मै प्रभु को उस दिन कैसे देखूगी? मै भयानक अन्धेरी रात मे (रत्न के प्रकाश के बिना) अकेले भी उसके पास नही जा सकती।

वतमान मराठी कविता के जनक केशव सुत (१८६६–१६०५) ने भी अपनी कविता हरपले श्रेय मे खोये हुए श्रेय (नाम रत्न) की चर्चा की है। तुझे वही मिला जो तू ने प्रभु से मागा था। वही चीज तेरे पल्ले पडी जिस का तू ने मोल चुकाया था। सौदा करने मे वाणी द्वारा कुद भूल जरूर हुई उसे समझ कर अपने हृदय को दोष दे। प्रभु ने स्वर्णमय दिया तेरे हाथ मृणमय लगा। कैसा बदनसीब है यह विनिमय!

प्राप्त जाहले ते तुजला तू मागितले जे देवाला
ज्याचे मोल तुवा दिधले तेच तुझ्या पदरी पडले–
या वचने चुकला सौदा उमगुनि हृदया दे खेदा!
दिले हिरण्मय हाती मृण्मय हा हतविनिमय!

96

ओइ सुख का सिउ बरनि सुनावत।
अनद बिनोद पेखि प्रभ दरसन मनि मगल गुन गावत।। रहाउ।।
बिसम भई पेखि बिसमादी पूरि रहे किरपावत।
पीओ अम्रित नामु अमोलक जिउ चाखि गूगा मुसकावत।।१।।
जैसे पवनु बध करि राखिओ बूझ न आवत जावत।
जा कउ रिदै प्रगासु भइओ हरि उआ की कही न जाइ कहावत।।२।।
आन उपाव जेते किछु कहीअहि तेते सीखे पावत।
अचिन्त लालु ग्रिह भीतरि प्रगटिओ अगम जैसे परखावत।।३।।
निरगुण निरकार अबिनासी अतुलो तुलिओ न जावत।
कहु नानक अजरु जिनि जरिआ तिस ही कउ बनि आवत।।४।।

(राग सारग – ६) गुरु अर्जन देव जी/१२०५

जो सुख प्रभु के दर्शन और उल्लास सहित मगल गुण गान से मिलता है उस सुख का वर्णन नही किया जा सकता।।रहाउ।।

कृपालु परमात्मा कण कण मे व्याप्त है। उस की आश्चर्यजनक लीलाओ को देख देखकर विस्मय हो रहा है। अमृत समान हरि रस का पान कर भक्तजन ऐसे मग्न है जैसे गूगा मीठे फलो को चखने पर मुसकाता है।।१।।

जिस प्रकार शरीर मे प्राण वायु सहज बन्धन मे है उस के आने जाने का आभास नही होता वैसे ही जिस के हृदय मे हरि का प्रकाश हो जाता है उस की बात कही नही जा सकती।।२।।

मैने अन्य सभी उपायो को सीख कर परख लिया है किन्तु अब मेरे हृदय मे ही मेरा प्रियतम प्रकट हो गया है। जैसे अगम को परखने की सामर्थ्य मिल गइ हो (अभिप्राय यह है कि प्रयत्नो से कुछ नही बना प्रभु ने कृपा पूर्वक यह अवस्था पैदा कर दी हे)।।३।।

गुरु नानक कहते है कि परमात्मा निर्गुण निरकार अविनाशी और अतुलनीय है। जिसने अजर अमर अवस्था को पा लिया है उसी का जीवन सफल है।।४।।

———––

(३६) लालु रगीला सहजे पाइओ

97

मेरा मनु राम नामि रसि लागा।

कमल प्रगासु भइआ गुरु पाइआ हरि जपिउ भ्रमु भउ भागा।। रहाउ।।

भै भाइ भगति लागो मेरा हीअरा मनु सोइओ गुरमति जागा।

किलबिख खीन भए साति आई हरि उर धारिओ वडभागा।।१।।

मनमुखु रगु कसुभु है कचूआ जिउ कुसम चारि दिन चागा।

खिन महि बिनसि जाइ परतापै डण्डु धरमराइ का लागा।।२।।

सतसगति प्रीति साध अति गूडी जिउ रगु मजीठ बहु लागा।

काइआ कापरु चीर बहु फारे हरि रगु न लहै सभागा।।३।।

हरि चार्हिओ रगु मिलै गुरु सोभा हरि रगि चलूलै रागा।

जन नानकु तिन के चरन पखारै जो हरि चरनी जनु लागा।।४।।

(राग माली गउडा – सबद–४) राम दास जी/६८५

मेरा मन प्रभु नाम के रस मे पगाा है गुरु के मिलन से हृदय कमल विकसित हुआ है और हरि नाम जपने से मेरे सब भ्रम भय दूर हो गए है।।रहाउ।।

मेरा सोया मन गुरु के उपदेश से जाग गया है और हृदय प्रभु के भय प्रेम और भक्ति भाव मे रत हे। सौभाग्य से हरि प्रभु को हृदय मे धारण करने से मेरे पाप क्षीण हो गए है और मन मे शाति पैदा हो गई है।।१।।

मनमुख जीव पर चढा विषय सुख का रग कसुभ के समान थोडे समय रहता है जैसे फूल की बहार चार दिन की होती है। थोडी सी गर्मी लगने से यह रग उतर जाता है ओर उसे धर्मराज का दण्ड सहन करना पडता है।।२।।

सत्सगति मे उपजने वाली प्रीति का रग मजीठ के रग की तरह गाढा होता है। हरि नाम के मजीठ रग से रगा कपडा फट तो जाता है किन्तु बे रग नही होता (दुख उठाते हुए भी प्रफुल्लता खत्म नही होती)।।३।।

गुरु मिलने से हरि रग चढता है और उसकी (जीव की) शोभा खूब गूढे रग सी हो जाती है। जो जन हरि चरणो मे समर्पित है दास नानक उनके चरण धोते है।।४।।

98

अब मोरो नाचनो रहो।
लालु रगीला सहजे पाइओ सतिगुर बचनि लहो।। रहाउ।।
कुआर कनिआ जैसे सगि सहेरी प्रिअ बचन उपहास कहो।
जउ सुरिजनु ग्रिह भीतरि आइओ तब मुखु काजि लजो।।१।।
जिउ कनिको कोठारी चडिओ कबरो होत फिरो।
जब ते सुध भए है बारहि तब ते थान थिरो।।२।।
जउ दिनु रैनि तऊ लउ बजिओ मूरत घरी पलो।
बजावन हारो ऊठि सिधारिओ तव फिरि बाजु न भइओ।।३।।
जैसे कुभ उदक पूरि आनिओ तब ओुहु भिन्न द्रिसटो।
कहु नानक कुभु जलै महि डारिओ अभै अभ मिलो।।४।।

(राग सारग – सबद – ३) गुरु अरजन देव/१२०३

हे भाई! गुरु के उपदेश से मै ने सुन्दर प्रीतम प्रभु को प्राप्त कर लिया है। आत्मिक स्थिरता से अब मुझ मे स्थिरता आ गई है और मेरा भटकना समाप्त हो गया है।।रहाउ।।

जैसे काई कुआरी कन्या अपनी सखियो के साथ अपने मगेतर प्रिय की बात हस हस कर करती है परन्तु जब उस वही प्रियतम के रुप मे घर आ जाता है तो वह लज्जा से मुख ढक लेती है।।१।।

जिस प्रकार कुठाली मे पडा सोना (पूरा शुद्ध न होने तक) ताप से पागल की तरह चचल रहता है परन्तु जब वही बारह बार आग मे तपाने से शुद्ध हो जाता है उस की तडपन बन्द हो जाती है और वह स्थिर हो जाता है।।२।।

(ससार मे हमारा जीवन रात्रि के समान है और सवेरा प्रभु मिलन है) जब तक मनुष्य की जिन्दगी की रात रहती है तब घडियाल बजाने वाला रात को समय सूचक घडिआल बजाता है। पर प्रात होने पर घडिआल बजाने वाला चला जाता है तब घडिआल दुबारा नही बजाया जाता।।३।।

जैसे पानी से भरा घडा लाया जावे तो वह पानी से अलग दिखाई देता है। परन्तु जब घडा पानी मे डाल दिया जावे तब घडे का पानी अन्य पानी मे मिल जाता है।।४।।

भाव साम्य -

प्रस्तुत सबद मे सतिगुरु का उपदेश सुनकर प्रभु की सहज अवस्था मे प्राप्ति का वणन है। भाई गुरदास जी ने इस सबद की व्याख्या अपने शब्दो मे एक कवित्त मे की है—

कञ्चन अशुद्ध जेसे भ्रमत कुठारी विषय
शुद्ध भय भ्रमत न पावक प्रगास हे।
जस कर ककणि अनेक से प्रगट धुनि
एक एक टक पुन धुनि को बिनास है।
खुध्या के बालक बिललात अकुलात अति
अस्थन पान कर सहज निवास है।
तैसे माया भ्रमत चतर कुण्ट धावे
गुरु उपदेस नि चल ग्रह पद बास है।।३४६।।

जेसे साना अशुद्ध हाने पर कुठारी मे गतिशील रहता ह किन्तु शुद्ध होकर जलती हुइ भट्टी मे स्थिर हो जाता हे। जेसे सोन क अनेक आभूषणो (ककण) स ध्वनि निकलती ह किन्तु जब आभूषणो को गला कर एक स्वर्ण की टेक ले ली तो ध्वनि का विनाश हा जाता हे। जैस शिशु भूख से अकुला कर रोता हे किन्तु जब मा स्तन पान कराती हे तो शान्त हो जाता हे।

वस ही माया स ग्रसित व्यक्ति चारो ओर दोडता है किन्तु जब गुरु का उपदेश सुन कर उसका प्रभु साक्षात्कार होता हे तब अपने हृदय म प्रभु को पाकर उसका मन टिक जाता हे।

—————

98

अब मोरो नाचनो रहो।
लालु रगीला सहजे पाइओ सतिगुर बचनि लहो।। रहाउ।।
कुआर कनिआ जैसे सगि सहेरी प्रिअ बचन उपहास कहो।
जउ सुरिजनु ग्रिह भीतरि आइओ तब मुखु काजि लजो।।१।।
जिउ कनिको कोठारी चडिओ कबरो होत फिरो।
जब ते सुध भए है बारहि तब ते थान थिरो।।२।।
जउ दिनु रैनि तऊ लउ बजिओ मूरत घरी पलो।
बजावन हारो ऊठि सिधारिओ तव फिरि बाजु न भइओ।।३।।
जैसे कुभ उदक पूरि आनिओ तब ओहु भिन्न द्रिसटो।
कहु नानक कुभु जलै महि डारिओ अभै अभ मिलो।।४।।

(राग सारग – सबद – ३) गुरु अरजन देव/१२०३

हे भाई! गुरु के उपदेश से मै ने सुन्दर प्रीतम प्रभु को प्राप्त कर लिया है। आत्मिक स्थिरता से अब मुझ मे स्थिरता आ गई है और मेरा भटकना समाप्त हो गया है।।रहाउ।।

जैसे काई कुआरी कन्या अपनी सखियो के साथ अपने मगेतर प्रिय की बात हस हस कर करती है परन्तु जब उस वही प्रियतम के रुप मे घर आ जाता है तो वह लज्जा से मुख ढक लेती है।।१।।

जिस प्रकार कुठाली मे पडा सोना (पूरा शुद्ध न होने तक) ताप से पागल की तरह चचल रहता है परन्तु जब वही बारह बार आग मे तपाने से शुद्ध हो जाता है उस की तडपन बन्द हो जाती है और वह स्थिर हो जाता है।।२।।

(ससार मे हमारा जीवन रात्रि के समान है और सवेरा प्रभु मिलन है) जब तक मनुष्य की जिन्दगी की रात रहती है तब घडियाल बजाने वाला रात को समय सूचक घडिआल बजाता है। पर प्रात होने पर घडिआल बजाने वाला चला जाता है तब घडिआल दुबारा नही बजाया जाता।।३।।

जैसे पानी से भरा घडा लाया जावे तो वह पानी से अलग दिखाई देता है। परन्तु जब घडा पानी मे डाल दिया जावे तब घडे का पानी अन्य पानी मे मिल जाता है।।४।।

भाव साम्य -

प्रस्तुत सबद मे सतिगुरु का उपदेश सुनकर प्रभु की सहज अवस्था मे प्राप्ति का वणन है। भाई गुरदास जी ने इस सबद की व्याख्या अपने शब्दो मे एक कवित्त मे की है—

कञ्चन अशुद्ध जेस भ्रमत कुठारी विषय
शुद्ध भय भ्रमत न पावक प्रगास है।
जेस कर ककणि अनेक से प्रगट धुनि
एके एक टक पुन धुनि को बिनास है।
खुध्या के बालक बिललात अकुलात अति
अस्थन पान कर सहज निवास है।
तेस माया भ्रमत चतर कुण्ट धावै
गुरु उपदेस नि चल ग्रह पद बास है।।३४६।।

जस सोना अशुद्ध होन पर कुठारी म गतिशील रहता ह किन्तु शुद्ध हाकर जलती हुइ भट्टी म स्थिर हो जाता हे। जैसे सोन क अनेक आभूषणो (ककण) से ध्वनि निकलती हे किन्तु जब आभूषणो को गला कर एक स्वर्ण की टेक ले ली तो ध्वनि का विनाश हो जाता हे। जेसे शिशु भूख से अकुला कर राता ह किन्तु जब मा स्तन पान कराती हे तो शान्त हो जाता है।

वेस ही माया से ग्रसित व्यक्ति चारा ओर दोडता हे किन्तु जब गुरु का उपदश सुन कर उसका प्रभु साक्षात्कार होता हे तब अपने हृदय मे प्रभु का पाकर उसका मन टिक जाता ह।

—————

98

अब मोरो नाचनो रहो।

लालु रगीला सहजे पाइओ सतिगुर बचनि लहो।। रहाउ।।

कुआर कनिआ जैसे सगि सहेरी प्रिअ बचन उपहास कहो।

जउ सुरिजनु ग्रिह भीतरि आइओ तब मुखु काजि लजो।।१।।

जिउ कनिको कोठारी चडिओ कबरो होत फिरो।

जब ते सुध भए है बारहि तब ते थान थिरो।।२।।

जउ दिनु रैनि तऊ लउ बजिओ मूरत घरी पलो।

बजावन हारो ऊठि सिधारिओ तव फिरि बाजु न भइओ।।३।।

जैसे कुभ उदक पूरि आनिओ तब ओुहु भिन्न द्रिसटो।

कहु नानक कुभु जलै महि डारिओ अभै अभ मिलो।।४।।

(राग सारग – सबद – ३) गुरु अरजन देव/१२०३

हे भाई! गुरु के उपदेश से मै ने सुन्दर प्रीतम प्रभु को प्राप्त कर लिया है। आत्मिक स्थिरता से अब मुझ मे स्थिरता आ गई है और मेरा भटकना समाप्त हो गया है।।रहाउ।।

जैसे काई कुआरी कन्या अपनी सखियो के साथ अपने मगेतर प्रिय की बात हस हस कर करती है परन्तु जब उस वही प्रियतम के रुप मे घर आ जाता है तो वह लज्जा से मुख ढक लेती है।।१।।

जिस प्रकार कुठाली मे पडा सोना (पूरा शुद्ध न होने तक) ताप से पागल की तरह चचल रहता है परन्तु जब वही बारह बार आग मे तपाने से शुद्ध हो जाता है उस की तडपन बन्द हो जाती है और वह स्थिर हो जाता है।।२।।

(ससार मे हमारा जीवन रात्रि के समान है और सवेरा प्रभु मिलन है) जब तक मनुष्य की जिन्दगी की रात रहती है तब घडियाल बजाने वाला रात को समय सूचक घडिआल बजाता है। पर प्रात होने पर घडिआल बजाने वाला चला जाता है तब घडिआल दुबारा नही बजाया जाता।।३।।

जैसे पानी से भरा घडा लाया जावे तो वह पानी से अलग दिखाई देता है। परन्तु जब घडा पानी मे डाल दिया जावे तब घडे का पानी अन्य पानी मे मिल जाता है।।४।।

भाव साम्य -

प्रस्तुत सबद मे सतिगुरु का उपदेश सुनकर प्रभु की सहज अवस्था मे प्राप्ति का वणन है। भाइ गुरदास जी ने इस सबद की व्याख्या अपने शब्दो मे एक कविन्त मे की है–

कञ्चन अशुद्ध जेसे भ्रमत कुठारी विषय
शुद्ध भये भ्रमत न पावक प्रगास हे।
जेसे कर ककणि अनेक से प्रगट धुनि
एके एक टक पुन धुनि को बिनास है।
खुध्या के बालक बिललात अकुलात अति
अस्थन पान कर सहज निवास हे।
तैस माया भ्रमत चतर कुण्ट धावै
गुरु उपदेस नि चल ग्रह पद बास है।।३४६।।

जेस सोना अशुद्ध हाने पर कुठारी म गतिशील रहता हे किन्तु शुद्ध होकर जलती हुई भट्टी मे स्थिर हो जाता हे। जेसे सान के अनेक आभूषणो (ककण) स ध्वनि निकलती है किन्तु जब आभूषणो को गला कर एक स्वर्ण की टेक ले ली ता ध्वनि का विनाश हो जाता हे। जेस शिशु भूख से अकुला कर रोता हे किन्तु जब मा स्तन पान कराती हे तो शान्त हो जाता है।

वेसे ही माया स ग्रसित व्यक्ति चारो ओर दोडता है किन्तु जब गुरु का उपदेश सुन कर उसका प्रभु साक्षात्कार होता हे तब अपने हृदय मे प्रभु को पाकर उसका मन टिक जाता हे।

–––––

(३७) प्रभु मगल मिलन

99

घर महि घरु देखाइ देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु।
पच सबद धुनिकार धुनि तह बाजै सबदु नीसाणु।
दीप लोअ पाताल तह खड मडल हैरानु।
तार घोर बाजिन्त्र तह साचि तखति सुलतानु।
सुखमन कै घरि रागु सुनि सुन्नि मडलि लिव लाइ।
अकथा कथा बीचारीए मनसा मनहि समाइ।
उलटि कमलु अम्रिति भरिआ इहु मनु कतहु न जाइ।
अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि समाइ।
सभि सखीआ पचे मिले गुरमुखि निज घरि वासु।
सबदु खोजि इहु घरु लहै नानकु ता का दासु।।

(सलोक वार मलार १/{२७}) गुरु नानक देव जी/१२६१

सच्चा समर्थ सतिगुरु वही है जो हृदय रुपी घर मे प्रभु का निवास प्रकट कर दे। पाच प्रकार के शब्दो की मधुर ध्वनि और प्रभु का शखनाद सतिगुरु ही सुनवाता है। इस अवस्था मे हुए प्रकाश के सामने दीपक या अन्य खण्ड मण्डल पाताल के प्रकाश विस्मय मे पड जाते हैं। वहा वादन यन्त्रो की ध्वनि होती है वहा सत्य के आसन पर परमात्मा स्वय विराजता है। सुषुम्णा की मिलाप अवस्था मे जीव राग मग्न हो जाता है और अफुर अवस्था मे समाधिष्ठ होता है।

इस अकथनीय कथा पर तभी विचार सभव है जब प्रभु की इच्छा मन मे समा जाती है। माया से विमुख हो कर अमृत भरे इस हृदय रुपी कमल को पाकर मन स्थिर हो जाता है। सब सखियो (ज्ञानेन्द्रियो) को पाच सदगुण {सत्य सन्तोष दया धर्म धैर्य}) प्राप्त हुए हे और गुरु के द्वारा जीव अपने असली घर मे रहने लगता है। जो जीव सच्चे सबद सूत्र मे बन्धकर अपना घर खोज लेता है नानक उस का दास है।

वर्तमान पजाबी साहित्य के प्रवर्तक

पद्मभूषण भाई वीर सिह

[illegible] दुहह गहि नाहो जन पर उपका। आए।
[illegible] लाइनि हरि सिउ लनि मिलाए।।
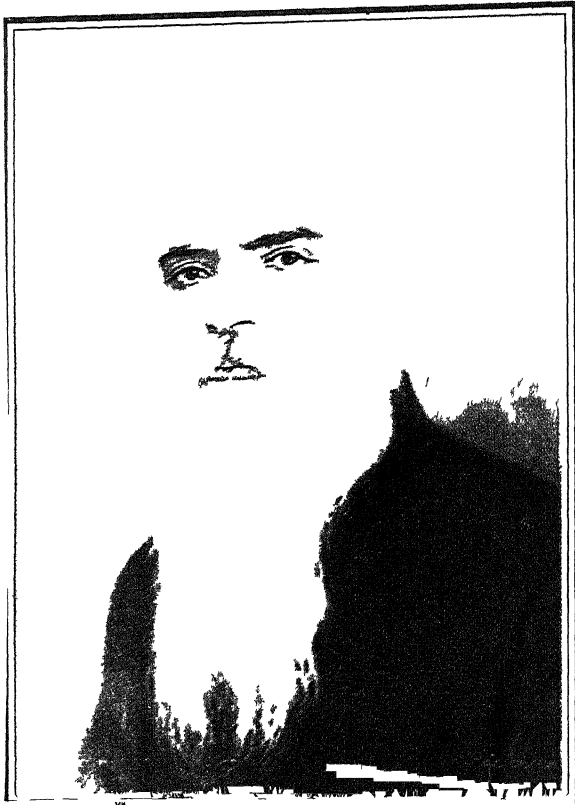
सन्न जन जन्म मरण के चक्कर मे नही आत व ता यहा दूसरो की भलाई करने क लिए आते है। सन्त जन दूसरो का आत्मिक जीवन की दन देकर परमात्मा की भक्ति मे लगाते है और उन्ह परमात्मा मे मिला देते है।

भाई वीर सिह जी ने धार्मिक रचनाओ (गुरु ग्रन्थ साहिव की व्याख्या शब्दकोश गुरुओ की जीवन गाथा) धार्मिक साहित्य (उपन्यास ओर [illegible] और आध्यात्मिक काव्य के द्वारा सिक्ख धर्म का उदात्त स्वरूप प्रस्तुत किया।

सिर कचकौल वणा हथ लीता पढिया द्वारे फिरिया।
दर दर दे टुक मग मग पाए तुन तुन के इह भरिया।। १
भरिया वेख आफरिया मै सॉ जाणा पण्डित होया
टिके न पैर जिमी ते मेरा उच्चा हो हो टुरिया।। २
इक दिन इह कचकोल लै गया मुरशिद मुहरे धरिया
जूठ जूठ कह उस उलटाया खाली सारा करिया।। ३
मल मल के फिर धोता इस नू मैल इलम दी लाही।
वेखो इह कचकाल लिश्किया कवल वाग फिर खिडिया।। ४

(भाईवीर सिह)

सिर को भिक्षा पात्र बना कर मै द्वार द्वार पर भिखारी बन कर घूमने लगा। घर–घर से भीख मागकर मै ने इसे ठूस ठूस कर भर लिया।

पात्र को भरा हुआ देखकर समझा कि मै ज्ञानी हो गया मेरे पैर धरा पर नही टिकता मै ऊचा होकर अभिमान से चलने लगा।

एक दिन मैने इस पात्र को गुरु के सामने रखा उसने जूठन कहकर इसको उलटा और खाली कर दिया ।

फिर इसको मलमल कर धोया और मिथ्या ज्ञान की सारी मैल उतार दी। अब यह पात्र प्रकाशमान होकर कमल की भाति खिल उठा है।

भाव साम्य -

गुरु के द्वारा शिष्य के हृदय मे प्रभु के दर्शन कराये जाने का वर्णन सामी जी सक्षेप मे एक सलोक मे करते है –

अन्धे वटि आयो सुजागो स्वभाव सॉ।
तहि दई हथ हिमथ जा राह सचीअ लायो।
घरि पहुँचाए पहिजे सन्सो मिटायो।
सामी समायो जल पपोटो जल मे।।३७६।।

जब अन्धे (अज्ञानी) के पास ईश्वरीय सत्ता को जानने वाला) जागृत (ज्ञानी) सहज ही आ जाता है तब वह उस अज्ञानी जीव को हिम्मत का हाथ देकर अपनी ज्ञान शक्ति के सहारे सत्य के रास्ते पर लगा देता है तथा भ्रम को मिटाकर उसे उस के ही घर पर पहुचा देता है (हृदय रुपी घर मे आत्मा का दशन कराता है जिससे वह पानी के बुद बुदे की तरह पानी मे समा जाता है। (परमात्मा मे लीन हो जाता है)।।३७६।।

100

अनहदो अनहदु वाजै रुण झुणकारे राम।
मेरा मनो मेरा मनु राता लाल पिआरे राम।।
अनदिनु राता मनु बैरागी सुन मडलि घरु पाइआ।
आदि पुरख अपरपरु पिआरा सतगुरि अलखु लखाइआ।।
आसण बैसणि थिरु नारायणु तितु मनु राता वीचारे।
नानक नामि रते बैरागी अनहद रुण झुणकारे।।

(राग आसा छन्द १ {II}) गुरु नानक देव जी/४३६

मेरा मन प्रभु के रग मे रग गया है। अब मेरे भीतर मानो घुघरुओ झाझो की ध्वनि करन वाला अनहद निरन्तर बज रहा है। मेरा मन प्रत्येक पल प्रभु स्मृति मे मस्त रहता है। मैने अब ऐसे उच्च मण्डल मे ठिकाना कर लिया है जहा कोई माया सम्बन्धी कल्पना नही उठती। सतगुरु ने मुझे वह अलक्ष्य प्रभु दिखा दिया है जो सब का आदि है जो सब मे व्यापक है जो सब का प्यारा है और जिससे परे कोई हस्ती नही है। मेरा मन गुरु के शब्द के विचार से उस नारायण मे मस्त रहता है जो अपने आसन पर सदा स्थिर रहता है। हे नानक! जिन के मन प्रभु के रग मे रगे जाते है प्रभु नाम के मतवाले हो जाते है उन के मन के भीतर मानो घुघरुओ की छनकार वाला बाजा निरन्तर बजता है।

101

झिमि झिमे झिमि झिमि वरसै अम्रित धारा राम।
गुरमुखे गुरमुखि नदरी रामु पिआरा राम।
राम नामु पिआरा जगत निसतारा राम नामि वडिआई।
कलिजुगि राम नामु बोहिथा गुरमुखि पार लघाई।
हलति पलति राम नामि सुहेले गुरमुखि करणी सारी।
नानक दाति दइया कर देवै राम नामि निसतारी।।

(आसा छन्द १{II}) गुरु राम दास जी/४४२–४४३

(जब मनुष्य के हृदय की धरती पर) आत्मिक जीवन की दाता नाम जल की धार धीमी धीमी बरसती है तो गुरु के सान्निध्य मे रहने वाले उस भाग्यशाली मनुष्य को प्रिय परमात्मा का दर्शन हो जाता है। समस्त ससार के प्राणियो को ससार समुद्र से पार उतारने वाला परमात्मा का नाम उस प्राणी को प्रिय लगने लगता है और परमात्मा के नाम के आधार पर उसे सम्मान मिलता है। हे भाई! विकार ग्रस्त हीन आत्मिक स्थिति मे राम नाम जहाज है। गुरु की शरणागत होने से प्रभु जीव को पार करा देता है। जो मनुष्य प्रभु के नाम मे अनुरक्त रहते है वे लोक परलोक मे सुखी रहते हैं। गुरु की शरणागत हो कर नाम स्मरण ही करने योग्य श्रेष्ठ कर्म है। हे नानक! परमात्मा कृपा करने योग्य जिस मनुष्य को अपने नाम की देन देता है उसे नाम मे अनुरक्त कर के ससार समुद्र से पार उतार देता है।

102

भिन्नी रैनडीऐ चामकनि तारे।
जागहि सन्त जना मेरे राम पिआरे।।
राम पिआरे सदा जागहि नामु सिमरहि अनदिनो।
चरण कमल धिआनु हिरदै प्रभ बिसरु नाही इकु खिनो।
तजि मानु मोहु बिकारु मन का कलमला दुख जारे।
बिनवति नानक सदा जागहि हरि दास सन्त पिआरे।।

(आसा – छन्द {I – १०}) गुरु अर्जन देव जी/४५६

वर्षा होने के बाद भीगी चादनी रात मे तारे चमक रहे है। गुरु के उपदेश के बाद जीवन मे शुभ गुण प्रकट हो रहे है। ऐसे मे मेरे प्रभु के प्यारे जीव निरन्तर

जाग्रत अवस्था मे रहते हे ओर रात दिन जगते हुए प्रभु का नाम स्मरण करते हैं। उन क हृदय मे हरि चरणो का ध्यान क्षण भर भी विस्मृत नही होता। वे मन का अभिमान मोह विकार आदि बुराइयो को त्यागकर दु खो का नाश करते है। गुरु नानक का कथन हे कि ऐसे जीव प्रभु के प्यारे सन्त जन होते है और वे ही सदा जाग्रत अवस्था (आत्मिक विकास) का भोग करते है।

भाव साम्य -

राम के प्यारे सन्तजना के जागने का वर्णन शाह लतीफ के शब्दो मे निम्न प्रकार है –

तनु तसबीह मनु मणिया दिलि दम्बूरो जनि।
तन्दू जे तलब जूॅ, वहदत सिरि वजनि।
वहदह ला शरीक लहु इहो रागु रगुनि।
स सुताई जागनि निन्ड इबादत उन जी।।

(शाह जा र[illegible]ला) (स्वर ऑसा)

जिनका शरीर माला ह मन माला का मणिका है तथा हृदय तम्बूरा है जिसकी तारे परमात्मा के एकत्व के रहस्य से बज रही है और जिनकी रग रग यही गीत आलाप रही हे– वह (परमात्मा) एक है और उस जैसा दूसरा कोई नही हे – वे लोग चाहे सोये हुए है फिर भी जाग्रत है और उनकी नीद भी मानो बन्दगी है।

―――――

103

हम घरि साजन आए। साचै मेलि मिलाए।
सहजि मिलाए हरि मनि भाए पच मिले सुखु पाइआ।
साई वसतु परापति होई जिसु सेती मनु लाइआ।
अनदिनु मेलु भइआ मनु मानिआ घर मन्दर सोहाए।
पच सबद धुनि अनहद वाजे हम घरि साजन आए।।१।।
आवहु मीत पिआरे। मगल गावहु नारे।
सचु मगलु गावहु ता प्रभ भावहु सोहिलडा जुग चारे।
अपनै घरि आइआ थानि सुहाइआ कारज सबदि सवारे।।
गिआन महा रसु नेत्री अजनु त्रिभवण रूपु दिखाइआ।
सखी मिलहु रसि मगलु गावहु हम घरि साजनु आइआ।।२।।
मनु तनु अम्रिति भिन्ना। अतरि प्रेमु रतन्ना।
अन्तरि रतनु पदारथु मेरै परम ततु वीचारो।
जन्त भेख तू सफलिओ दाता सिरि सिरि देवणहारो।।
तू जानु गिआनी अन्तरजामी आपे कारणु कीना।
सुनहु सखी मनु मोहनि मोहिआ तनु मनु अम्रिति भीना।।३।।
आतम रामु ससारा। साचा खेलु तुम्हारा।
सचु खेलु तुम्हारा अगम अपारा तुधु बिनु कउणु बुझाए।
सिध साधिक सिआणे केते तुझ बिनु कवणु कहाए।।
कालु बिकालु भए देवाने मनु राखिआ गुरि ठाए।
नानक अवगण सबदि जलाए गुण सगमि प्रभु पाए।।४।।

(राग सूही/छन्द – २) गुरु नानक/७६४

मेरे ह्रदय मे मेरे साजन प्रभु प्रकट हुए है उन्होने मुझे अपने चरणो मे स्थान दिया है। प्रभु कृपा से मुझे सहज अवस्था प्राप्त हो गई है। मुझे प्रभु जी मन मे

प्यारे लगते है मेरी पाचो ज्ञानेन्द्रिया केन्द्रित हो गई है। मैने परमानन्द प्राप्त कर लिया है जिस नाम रूपी वस्तु की मेरे भीतर चाह पैदा हो रही थी वह मुझे मिल गइ हे। अब प्रतिपल प्रभु के नाम के साथ मेरा एक्य बना रहता है। मेरा मन नाम म रम गया है। मेरा हृदय ओर ज्ञानेन्द्रिया सुहावनी हो गई है। मेरे हृदय घर मे सज्जन प्रभु प्रकट हो गए है और मानो पाच किस्म के बाजे लगातार मिले जुले स्वर मे बज रहे है।

हे मेरी ज्ञानेन्द्रियो हे सखिया! आओ परमात्मा की गुण स्तुति के गीत गाओ। व गीत गाओ जा मन मे उत्साह पैदा करते है। वे गीत गाओ जो अटल आनन्द पैदा करते है। वह गीत गाओ जो चारो युगो मे आत्मिक उत्साह प्रदान करता है तभी तुम परमात्मा को भली लगोगी। सज्जन प्रभु मेरे घर आया है मेरे हृदय स्थान मे बैठा सुशोभित हे। गुरु के शब्द ने मेरे जीवन मनोरथ सवार दिये है सर्वोत्कृष्ट आत्मिक आनन्द देने वाला ज्ञान का सुरमा मुझे आखो मे डालने को मिला है (उसके प्रभाव से) गुरु ने मुझे तीनो भुवनो मे व्यापक प्रभु का दर्शन करा दिया है। हे सखियो! प्रभु चरणो मे मन लगायो और आनन्द स्तुति का वह गीत गाओ जो आत्मिक उत्साह पैदा करता है।

मेरा मन और शरीर आत्मिक जीवन देने वाले नाम जल से भीग गया है मेरे हृदय मे प्रेम रत्न पैदा हो गया है। मेरे हृदय मे परमात्मा के गुणो के विचार का वह रत्न पैदा हुआ है जिससे यह प्रतीत होता है कि यह जीव प्रभु द्वार पर भिक्षुक है। तुम भिक्षुक जीवो के दाता हो तुम हर जीव के रक्षक हो तुम बुद्धिमान हो अन्तर्यामी हो तुमने आप ही यह जगत बनाया है। हे सहेलियो! मोहन प्रभु ने मेरा मन प्रेम के वशीभूत कर लिया है। मेरा मन तन उसके नाम अमृत मे भीगा पडा है।

हे प्रभु! तुम ससार के प्राण हो यह ससार तुम्हारी रची हुई क्रीडा है। हे अगम्य और अनन्त प्रभु! यह ससार सचमुच तुम्हारी रची गई क्रीडा है इस रहस्य को तुम्हारे बिना कोई नही जान सकता। अनेक पहुचे हुए योगी अनेक साधना करने वाले तथा बुद्धिमान होते आए है (लेकिन) तुम्हारे बिना कोई भी तुम्हारा स्मरण नही करा सकता। गुरु ने जिसका मन तुम्हारे चरणो मे अनुरक्त कर दिया उसका जन्म मरण का चक्र दूर हो गया जिस मनुष्य ने गुरु के शब्द मे प्रवृत्त होकर अपने अवगुण जला दिये उसने गुणो के द्वारा प्रभु को प्राप्त कर लिया।

104

हरि पहिलडी लाव परविरती करम द्रिडाइआ बलि राम जीउ।
बाणी ब्रह्मा वेदु धरमु द्रिडहु पाप तजाइआ बलि राम जीउ।
धरमु द्रिडहु हरि नामु धिआवहु सिम्रिति नामु द्रिडाइआ।
सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु सभ किलविख पाप गवाइआ।
सहज अनदु होआ वडभागी मनि हरि हरि मीठा लाइआ।
जनु कहै नानकु लाव पहिली आरभु काजु रचाइआ।।१।।
हरि दूजडी लाव सतिगुरु पुरखु मिलाइआ बलिराम जीउ।
निरभउ भे मनु होइ हउमै मैलु गवाइआ बलिराम जीउ।
निरमलु भउ पाइआ हरि गुण गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे।
हरि आतम रामु पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे।
अतरि बाहरि हरि प्रभु एको मिलि हरिजन मगल गाए।
जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए।।२।।
हरि तीजडी लाव मनि चाव भइआ बैरागीआ बलिराम जीउ।
सत जना हरि मेलु हरि पाइआ वडभागीआ बलिराम जीउ।
निरमलु हरि पाइआ हरि गुण गाइआ मुखि बोली हरि बाणी।
सत जना वडभागी पाइआ कथीऐ अकथ कहाणी।
हिरदै हरि हरि धुनि उपजी हरि जपीऐ मसतकि भागु जीउ।
जनु नानकु बोले तीजी लावै हरि उपजे मनि बैरागु जीउ।।३।।
हरि चउथडी लाव मनि सहजु भइआ हरि पाइआ बलिराम जीउ।
गुरमुखि मिलिआ सुभाइ हरि मनि तनि मीठा लाइआ बलिराम जीउ।
हरि मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ अनदिनु हरि लिव लाई।
मनि चिदिआ फलु पाइआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई।
हरि प्रभि ठाकुरि काजि रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी।
जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अविनासी।।४।।

(राग सूही – छन्द – २) गुरु राम दास जी/७७३

प्रभु ने पहली भावर मे जीव को गृहस्थ धर्मपालन (प्रवृत्ति कर्म) मे दृढ रहने का आदेश दिया है। गुरु वाणी ब्रह्मा ह गुरु वाणी ही वेद है इसके अनुसार धर्म आचरण स पाप दूर होत है। धर्म पालन का आधार सत्य स्वरूप परमात्मा की आराधना ओर हरि नाम स्मरण है। हरिनाम से सहज आनन्द की प्राप्ति होती हे तथा हरिनाम अमृत के समान मीठा लगता है। आनन्द कार्य (विवाह) को प्रथम भावर म प्रभु ने यह उपदेश दिया है।

सतगुरु की कृपा से दूसरी भावर मे परम पुरुख (प्रभु) से भेट होती है। प्रभु का आश्रय पाकर जीवात्मा निर्भय हो जाती है उसका अहकार दूर हो जाता है। जीवात्मा का प्रभु के प्रति भय का भाव निर्मल होता है जिससे उसे प्रभु का साक्षात अनुभव होता है और वह सहज रूप से हरि गुण गान मे लीन हो जाती ह। जीवात्मा को प्रभु पति की ज्योति सभी मे दिखाई देती है। अन्दर और बाहर एक ही प्रभु का ज्ञान स्पष्ट हा जाता है। हरि कीर्तन के प्रेमी भक्तो मे मिलकर जीवात्मा हरि के मगल गीत गाती है। प्रभु कीर्तन से हृदय मे स्थिरता आने से अनहद नाद की ध्वनि सुनाइ देती है।

तीसरी भावर मे जीवात्मा के मन मे प्रभु पति के लिए प्रेम उमडता है जिससे ससार के विकारो के प्रति वैराग्य हो जाता है। सौभाग्यवान सन्तजन हरि को प्राप्त करते है ओर हरि की अकथ कहानी कहते है। जीवात्मा के हृदय मे भी हरि हरि की ध्वनि उत्पन्न हुई और सौभाग्यवती होकर हरि का जाप करने लगी। इस प्रकार तीसरी लाव से मन मे हरि मे अनुराग और ससार से वैराग्य की भावना पैदा होती है।

चोथी भावर मे जीवात्मा का मिलन गुरमुख से हुआ जिसकी वृत्ति प्रभु मे केन्द्रित है। गुरमुख के मिलन से मन और तन हरि मे केन्द्रित हो गए। तीनो गुणो स ऊपर सहज अवस्था प्राप्त हुई दिनरात हरि प्रभु मे लिव (सुरत) लग गई तथा हरि नाम मीठा लगने लगा। मेरे स्वामी प्रभु ने इस कारज की रचना की हे जिस जीवात्मा (पत्नी) मे प्रभु नाम का प्रकाश होता है चौथी भावर मे वह अविनाशी प्रभु को प्राप्त करती है।

105

वीआहु होआ मेरे बाबोला गुरमुखे हरि पाइआ।

अगिआनु अन्धेरा कटिआ गुर गिआनु प्रचण्डु बलाइआ।

बलिआ गुर गिआनु अन्धेरा बिनसिआ हरि रतनु पदारथु लाधा।

हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा आपु आपै गुरमति खाधा।

अकाल मूरति वरु पाइआ अबिनासी न कदे मरै न जाइआ।

वीआहु होआ मेरे बाबोला गुरमुखे हरि पाइआ।।

(सिरी राग छन्द १/२) गुरु राम दास जी/७८

हे मेरे पिता! मैने गुरु के सत्सग से पति परमेश्वर को पा लिया है। गुरु के ज्ञान की प्रचण्ड अग्नि के प्रकाश से अज्ञान रुपी अन्धेरा नष्ट हो गया हे। ज्ञान ज्योति के आलोक से मुझे परमात्मा रुपी रत्न पदार्थ मिल गया है। गुरु के उपदेशानुसार आचरण करने से जीव को आत्म रुप की पहचान हुई उस का अहकार रूपी रोग नष्ट हो गया। जीव स्त्री अकाल पुरुष को वरण कर लेती है जो जन्म मरण से सदा ऊपर है। हे पिता! मैने (जीव स्त्री ने) गुरु कृपा से हरि पति को पा लिया है मै विवाहित हुई हू।

106

सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम।

जोती जोति रली सपूरनु थीआ राम।

बहमु दीसै ब्रहमु सुणीऐ एकु एकु वखाणीऐ।

आतम पसारा करण हारा प्रभ बिना नही जाणीऐ।

आपि करता आपि भुगता आपि कारणु कीआ।

बिनवति नानक सेई जाणहि जिन्ही हरि रसु पीआ।।

(राग बिलावलु – छन्द २/४) गुरु अर्जुन दव जी/८४६

जैसे सूरज की किरण और सूरज तथा जल की लहर और जल मे कोई अन्तर नही होता है वैसी ही अभेद स्थिति जीवात्मा और परमात्मा की हो गई है। जीवात्मा की ज्योति परमात्मा मे लीन होने से जीव ज्योति का अश सम्पूर्ण हो गया। जीवात्मा को सर्वत्र ब्रह्म ही दिखाई देता है और ब्रह्म ही सुनाई पडता है। सत्य तो यह है कि प्रभु के बिना आत्म प्रसार का ज्ञान सभव नही है क्योंकि

मिलन का रस पान किया है वे ही उक्त तथ्य को जानते है ऐसी गुरु नानक की मान्यता है।

———————

(३८) जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ

107

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ। सिरु धरि तली गली मेरी आउ।
इतु मारगु पैरु धरीजै। सिरु दीजै काणि न कीजै।।१।।

(गुरुनानक/१४१२)

पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस।
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि।।२।।

(गुरु अर्जन देव/११०२)

साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि।
नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि।।३।।

(गुरु अर्जन देव/५१८)

लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी।
नानक से अखडीआ बि अन्नि जिनी डिसन्दो मा पिरी।।४।।

(गुरु अर्जन देव/५७७)

क्या तुम्हे प्रेम का खेल खेलने का चाव है तो सिर उतार कर (अहकार छोड कर) मेरे मार्ग का अनुसरण करो। जब इस मार्ग मे यात्रा आरम्भ करते है तो सिर देने मे कोई आनाकानी नही करनी होगी।।१।।

पहले मरण स्वीकार करो जीवन की आशा तृष्णा का त्याग करो सब की चरण धूलि बनो तब हमारे पास आओ।।२।।

हे सज्जन (प्रभु)! मै सदा तुम्हारे चरण की धूलि बना रहू। मै तुम्हारी शरण मे रहू और तुम्हे ही अपने समीप देखू।।३।।

मैने अपने शारीरिक नेत्रो से इस जगत को देखा है और मुझे उस के देखने की प्यास बहुत है जो शान्त नही होती। गुरु अर्जन देव जी कहते है कि वे आखे दूसरी है जिन से मेरा मालिक दिखाई देता है।।४।।

भाव साम्य -

ईरान के सूफी कवि हाफिज की एक गजल की पक्तियॉ गुरु वाणी के श्लोको के भाव निम्न प्रकार है –

ए बेखबर बकोश कि साहिब खबर शवी।
ता राहरौ न बाशी की राहबर शबी।
अज पाए ता सूरत हमी नूर खुदा शवद
दर राह जुल जलाल चू बे पा व सर शवी।
बुनियाद हस्ती तु चू जेरो जबर शवद
दर दिल मदार हेच कि जेरो जबर शवी।
वजह खुदा अगर शवदत मजिर नजर
जी पस शके नमाद कि साहिब नजर शवी।
दर मकतबे हकायके पेशे अदीब इश्क
हा ए पिसर बकोश कि रोजे पिदर शवी।
गर दर मरत हवाए वसाल अस्त हाफिजा
बायद कि खाक दरगहे अहले नजर शवी।।

हे पथ से अनजान पथिक! पहले रास्ते की अच्छी तरह जानकारी करो क्योकि जब तक तुम्हे स्वय मार्ग का ज्ञान नही होगा तुम अन्य यात्रियो के पथ प्रदर्शक कैसे बन सकते हो।

तुम सिर से पाव तक प्रभु की ज्योति से प्रकाशित हो जाओगे अगर अपना सिर और पाव दोनो प्रभु के मार्ग मे समर्पण कर दो।

क्योकि तुम्हारे अस्तित्त्व का आधार उलट पलट हो जावेगा इसलिए तुम्हारे दिल मे ऊच नीच का भाव नही आना चाहिए।

अगर तुम्हारा लक्ष्य प्रभु के सौन्दर्य का दीदार करना है तो निसन्देह तुम्हे अर्न्तदृष्टि वाला दर्शक बनना होगा।

दैवीय सत्य के विद्यालय मे दैवीय प्रेम के गुरु के चरणो मे बैठ तब आज का शिष्य कल का गुरु होगा।

अगर तुम्हे प्रभु मिलन की इच्छा है तो हे हाफिज! सन्त जनो के दरवाजे की धूल बन जाओ।

प्रभु से मिलन मे अहकार बाधक है। शास्त्रो का ज्ञान भी अहकार होने पर प्रभु मिलन मे सहायक नही हे।

सत ज्ञानेश्वर द्वारा निम्न ओवि मे यह विचार दिया गया हे –

तैसा चित्ती अहते ठावो। जिभे सकल शास्त्राचा सरावो
ऐसेनि कोडी एक जन्म जावो। परि न पविजे माते।।

(ज्ञानेश्वरी – १५/३६६)

ठीक इसी प्रकार यदि चित्त मे अहकार भरा हो और मनुष्य सब प्रकार के शास्त्रो की चर्चा करता हो तो करोडो बार जन्म लेने पर भी कभी मेरी प्राप्ति नही हो सकती।

महत्त्व ओर अभिमान की भावना छोडकर अपने को सब से छोटा समझ कर ही मनुष्य प्रभु के समीप पहुचता है। सत ज्ञानेश्वर जी ने इस भाव को निम्न प्रकार व्यक्त किया है –

म्हणोनि थोरपण परहा साडिजे।
येथ व्युत्पति आघवी विसरिजे।
जै जगा धाकुटे होईजे। तै जवळीक माझी।।

(ज्ञानेश्वरी – ६/३७८)

इस लिए पहले अपने महत्त्व के सब विचार छोडने पडते है। ज्ञान सम्बन्धी अभिमान का परित्याग करना पडता है और मन मे इस प्रकार की सच्ची भावना रखकर विनयी होना पडता है कि मै ससार के सब जीवो से छोटा हू तब जाकर मनुष्य मेरे स्वरूप के समीप पहुच सकता है।

108

सभनी घटी सहु वसै सहु बिनु घटु न कोइ।
नानक ते सोहागणी जिन्हा गुरमुखि परगटु होइ।।१।।

(गुरु नानक/१४१२)

धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ।
एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ।।२।।

(गुरु अमर दास/७८८)

हउ दूढेदी सजणा सजणु मैडै नालि।

जन नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देहि दिखालि।।३।।

(गुरु रामदास/१३१८)

सब शरीरो मे हरि का वास है। हरि के निवास के बिना कोई शरीर नही है गुरु नानक कहते है कि सुहागिन जीवात्मा वही है जिस के भीतर रहने वाला प्रभु प्रियतम गुरु के उपदेश द्वारा प्रकट हो गया है।।१।।

पति और पत्नी वे नही है जो एक जगह मिल कर बैठते है। वास्तव मे पति पत्नी वे है जिन के दो शरीर और एक ज्योति (प्राण) है।।२।।

मै अपने साजन को ढूढ रही थी किन्तु सज्जन ते मेरे साथ ही है। गुरु राम दास जी कहते है कि उस अलख प्रभु को देख नही सकते। गुरु के द्वारा ही दिखलाई पडता है।।३।।

भाव साम्य -

सभनी घटी सहु वसै एक जोति दुई मूरती तथा सजणु मेडे नालि इन तीन श्लोको को शाह लतीफ अपने रसालो मे नई भगिमा के साथ प्रस्तुत करते है –

पाए कान कमान मे मिया! मारि म मू,

मू मे आही तू मतॉ तुहिजोई तोखे लगे।।८५।।

हे प्रियतम धनुष पर बाण चढा कर मुझे मत मार क्योकि मेरे अन्तर मे तेरा ही निवास है अतएव कही ऐसा न हो कि तेरा तीर तुझे ही लगे।

बनि! बियाई सुपिरी! पाणा मूखे पलि।

आऊॅ ओरिया झलि तोखे रसे तो घणी।।५६२।।

प्रिय दुई भाड मे जाय। तू उस से मुझे रोक। मै तेरे अत्यन्त निकट हू (कृपया) मै ले ले (जिस से) तू अपने को पा सके।

असी सिकॅू जनिखे से तॉ असी पाण।

हाणे वञ गुमान! सही सञाता सुपिरी।।६१०।।

हम जिनके लिए तडप रहे है वे खुद हम ही है हे भ्रम! अब भाग जा। मैने साजन को सही पहचान लिया है।

109

नीचै लोइन करि रहउ ले साजन घट माहि।

सभ रस खेलउ पीअ सउ किसी लखावउ नाहि।।१।।

आठ जाम चउसठि घरी तुअ निरखत रहै जीउ।

नीचे लोइन किउ करउ सभ घट देखउ पीउ।।२।।

सुनु सखी पीअ महि जीउ बसै जीअ महि बसै कि पीउ।

जीउ पीउ बूझउ नही घट महि जीउ कि पीउ।।३।।

(कबीर/१३७७)

प्रियतम (प्रभु) को अपने हृदय मे छिपा कर नयन नीचे कर के विनम्रता पूर्वक रहो। अपने प्रियतम से सब प्रकार का रस भोग करो किन्तु किसी पर प्रकट मत होने दो।।१।।

आठो पहर चौसठ घडी मेरे प्राण तो तुम्हे देखते रहते है मै नेत्र नीचे किस लिए करुँ। मेरे नेत्र तो सर्वत्र प्रियतम ही देखते है (फिर मुझे क्या छिपाना है।)।।२।।

ऐ सखी! मेरे प्राण प्रियतम मे बसते है और प्रियतम प्राणो मे बसता है। अब तो यह दशा हो गई है कि मुझे यह पता नही चलता कि मेरे अन्तर मे प्राण बसे है या प्रियतम बसा है? (अर्थात प्रभु और साधक की अवस्था अभेद हो गई है।)।।३।।

भाव साम्य -

पजाबी के सूफी कवि साई बुल्हेशाह (१६८०–१७५७) ने प्रभु के मुख को ज्योति माना है। ससार एक घूघट है जिस का आचल मुख पर डाल कर प्रीतम छिप गया हे –

इस का मुख इक जोति है घूगट है ससार।

घुगट मे वुह छुप गया मुख पर आचल डार।।

बुल्हे शाह ने अपने प्रीतम से मुख से घूघट उठाये जाने की प्रार्थना की है।

(घूघट मुखडे से उठाओ हे प्रियतम)

पानी मे मथानी डाल कर मथना बेकार है बिना कारण के बाह थकाने से कोई फायदा नही। हे प्रियतम! इस प्रकार की पहेली प्रस्तुत करना छोड दो। सीधी प्रम कहानी आरम्भ कर दो। मुझे इन वकीलो के आगे पीछे बेकार दौड भाग न करवाओ।।१।।

(प्रभु दृश्यमान तमाशे के पीछे छिपा है वह कर्मकाण्ड या बाहरी आवरण से प्राप्त नही होता। प्रभु ने अपने आवरण की पहेली मे जीव को भरमा रखा है। बुल्हे शाह सशय की इस स्थिति से छुटकारा चाहते है। वे प्रभु के इस पाश से छूटना चाहते है ताकि वे अपने सत्य स्वरूप प्रियतम का दीदार कर सके।)

हिन्दू धर्म के किताबी पण्डित सिख धर्म के परम्परागत भाई तथा दीन इस्लाम मे श्रद्धा रखने वाले काजी और मुल्ला व्यर्थ ही हुज्जत बाजी करते है। जब प्रभु प्रसन्न होता हे तो धर्म के ये ठेकेदार नाराज होते है और अगर मै धर्म के इन ठेकेदारो के चगुल मे फसता हू तो प्रभु नाराज हो जाते है। धार्मिक अगुआ दो लोगो का मिलन और प्यार नही देख सकते।।२।।

हे प्रभु! समाज के अगुआ लोगो ने जादूगर की तरह अपने पेट के लिए स्वाग रचा रखा है और हम दोनो के बीच एक दीवार खडी कर रखी है। वे स्वय बीच के निर्णायक बन बैठे है। इन को इस निर्णायक पद से कान से पकड कर उठा दो।।३।।

मै बस्ती या गृहस्थ छोड कर उजाड स्थलो पर सन्यासी के रुप मे क्यो भ्रमण करुँ और मैदानो तथा पहाडो की व्यर्थ यात्रा क्यो करुँ? रोजे रख कर अपने शरीर को क्यो जलाऊँ और बाग देकर क्यो गला फाडूँ? मै ने प्रभु से मिलन की इच्छा की है कोई बडा अपराध नही किया। हे प्रियतम! यह किस बात की सजा है?।।४।।

हे प्रभु! तुमने रास्त मे मन्दिर मस्जिद व अन्य ठिकाने क्यो बना रखे है? इससे धक्के खा कर मेरा दिल फुटकी फुटकी हो गया है। हे प्रभु! इन भूल भुलैयो मे और न भटकाओ।।५।।

हे साजन! बुरा मत मनाना। मै ऐसे ही छोटी मोटी बात पर खीजता नही हूँ लेकिन रोजाना खीज पैदा करने पर कभी कभी दिल की हाय निकल पडती है। आखिर कार दबा दबा कर रखी हसरत मेरे होठो पर आ गई है।

110

दिसै सुणीऐ जाणीऐ साउ न पाइआ जाइ।

रुहला टुण्डा अधुला किउ गलि लगै धाइ।।

भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ।

नानकु कहै सिआणीए इव कत मिलावा होइ।।

(वारभाझ – सलाक २/३) गुरु अगद देव जी/१३६

(परमात्मा प्रकृति मे बसा हुआ) दिखाई देता है। (उस की प्राण दायक शक्ति की लहर की आवाज सारी रचना मे) सुनी जा रही है। (उस के कामो से) उस की जानकारी भी मिल रही है कि वह अपनी रचना (कुदरत) मे मौजूद है फिर भी उस के मिलाप का स्वाद जीव को प्राप्त नही होता ऐसा क्यो?

ऐसा इसलिए है कि जीव के प्रभु से मिलन के लिए न हाथ है न पैर है और न आखे है। (जीव गलत मार्ग पर जाने से अपाहिज है हिसा के द्वारा टुण्डा है और विषयो मे आसक्त होने से अन्धा है।)

यदि जीव परमात्मा प्राप्ति चाहे तो वह भय के चरण बनाये प्रेम के हाथ बनावे और सुरति पूर्ण नेत्र करे। गुरु जी कहते है– हे चतुर स्त्री कन्त (पति प्रभु) का इस प्रकार मिलाप होता है।

भाव साम्य -

कशमीरी शैव साधिका लाल द्यद ने प्रश्नोत्तर रुप मे औपचारिक पूजा और प्रभु की प्राप्ति के वास्तविक मार्ग का विवरण निम्न प्रकार दिया हे–

कुस पुश तु कीसु पुशानी

कम कुसुम लाग्यज्यस पूजे।

कव गोड दिज्यस जलुचि दानी

कवु सनु मतुर शकर स्वात्म वुजे।।६८।।

मन पुश तय यछ पुशानी

बावक्य कुसुम लाग्यज्यस पूजे।

शेशि रसु गोडु दिज्यस जलु दानी

कौन माली है? कौन मालिन है? तू उस की किन फूलो से किस सामान से उस की पूजा करते हो? मन की शान्ति हासिल करके किस नदी के जल से उसे धीरे धीरे नहलाता हे? किस मन्त्र से अपनी आत्मा मे हमे शिव (प्रभु) से साक्षात्कार होगा?

(यह परम्परागत पूजा है जिसका कोई महत्त्व नही हे यह साक्षात्कार का माध्यम नही है)।

मन माली हे भक्ति मालिन है जो श्रद्धा की पुष्प माला पूजा के लिए लाती हे। दैवीय प्रेम मे चाद की कला से झरने वाले रस की गगा के ताजा जल से उस का स्नान करा ले। जब मौन मन्त्र से शकर जाग उठेगा तब तू उसे अपने मन मे देखेगा।

111

कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मतु।

कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कतु।।

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिह्वा मणीआ मतु।

ए त्रै भैणे वेस करि ता वसि आवी कतु।।

(सलोक/१२६ १२७) शख फरीद/१३८४

जीवात्मा स्त्री की ओर से शेख फरीद पूछते हे वह कौन सा शब्द है कैसा गुण है कौन सा ऐसा मन्त्र या वेष है जिस के क्रमश (पुकारने अर्जित करने जपने या बनाने से) मेरा प्रभु पति वश हो सकता है।

हे बहिन! नम्रता का शब्द पुकारो क्षमा का गुण अर्जित करो मधुर वचन रुपी मन्त्रो का उच्चारण करो ये तीन वेष बना लेने से परमात्मा रुपी पति वश मे आ सकता है।

-----

(३६) प्रभु प्रीति

112

मू लालन सिउ प्रीति बनी।। रहाउ।।

तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिच तनी।।१।।

दिनसु रैनि मन माहि बसतु है तू करि किरपा प्रभ अपनी।।२।।

बलि बलि जाउ सिआम सुदर कउ अकथ कथा जा की बात सुनी।।३।।

जन नानक दासनि दासु कहीअत है मोहि करहु क्रिपा ठाकुर अपुनी।।४।।

(राग बिलावलु – सबद – ११४) गुरु अर्जन देव/८२७

मेरी वाहि गुरु से प्रीति बनी है।। रहाउ।।

प्रभु से मेरा ऐसा आकर्षण हुआ है जो न तोडने से टूटता है न छोडने से छूटता है।।१।।

रात दिन वही प्रिय मेरे मन मे बसता है और मुझ पर निरन्तर उस की कृपा है।।२।।

मे अपने सुन्दर परमात्मा पर बलिहार जाता हू और उसकी अकथनीय कथाओ के बारे मे सदैव सुनता रहता हू।।३।।

सेवक नानक विनती करते है कि वह प्रभु उन पर कृपा करे।।४।।

113

बिसरत नाहि मन ते हरी।

अब इह प्रीति महा प्रबल भई आन बिखै जरी।। रहाउ।।

बूद कहा तिआगि चात्रिक मीन रहत न घरी।

गुन गोपाल उचारु टेव एह परी।।१।।

महानाद कुरक मोहिओ बेधि तीखन सरी।

प्रभ चरन कमल रसाल नानक गाठि बाधि धरी।।२।।

(राग केदारा – सबद – ६) गुरु अर्जन देव/११२१

मन से प्रभु मूर्ति भुलाई नही जाती। अब यह प्रीति अति उत्कट हो गई है तथा अन्य सब विषय विकार जल गये है।। रहाउ।।

यह ऐसी दशा हुई है जैसे चातक स्वाति को नही त्याग सकता और मछली जल के बिना घडी भर भी नही रह पाती। अब तो जिह्वा को प्रभु के गुण गाने की टेव पड गई है।

महा सगीत के स्वर से मृग मोहित होता है तो तीरो से बिन्धता हे यहा गुरु नानक को प्रभु चरण कमल से रसमय एकता है जिस मे प्रीति की गाठ लग गई है।

―――――

(४०) कृतज्ञता ज्ञापन

114

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।।
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै।
नीचह ऊच करै मेरा गोबिन्दु काहू ते न डरै।
नाम देव कबीरु त्रिलोचनु सधना सैनु तरै।।
कहि रविदासु सुनहु रे सन्तहु हरि जीउ ते सभै सरै।।

(राग मारु) रविदास जी/११०८

हे प्रिय प्रभु ऐसा कृपा पूर्ण आचरण तुम्हारे सिवा कौन कर सकता है? तुम एसे दीन दयालु हा कि मेर समान अकिचन के माथे पर भी छत्र रख दिया है।। रहाउ।।

ससार जिस अछूत समझता हे उस पर परमात्मा का ही वरद हस्त होता है। मेरा पभु नीच को भी ऊचा बना देता है उसे किसी का भय नही हे।।१।।

नाम देव कबीर त्रिलोचन सधना सैन आदि विभिन्न जातिया के सत प्रभु कृपा से तिर गये। इसलिए रविदास कहते हे कि हे सज्जन पुरुषो परमात्मा के द्वारा सब कुछ किया जा सकता हे।

―――――

खण्ड - तीन विनय

(१) भक्ति के लिए प्रार्थना

वि०—१

दिलहु मुहबति जिन्ह सेई सचिआ।

जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि काढे कचिआ।।१।।

रते इसक खुदाइ रगि दीदार के।

विसरिआ जिन्ह नामु ते भुइ भारु थीए।। रहाउ।।

आपि लीए लडि लाइ दरि दरवेस से।

तिन धनु जणेदी माउ आए सफलु से।।२।।

परवदगार अपार अगम बेअन्त तू।

जिन्हा पछाता सचु चुमा पैर मू।।३।।

तेरी पनह खुदाइ तू बखसदगी।

सेख फरीदै खैरु दीजै बन्दगी।।४।।

(राग आसा) शेख फरीद/४८८

जो जीव परमात्मा के साथ दिल से सच्चा प्यार करते है वे ही सही प्रेमी है। जिन के मन मे कुछ है और मुख मे कुछ है वे कच्चे निकाले गए है।।१।।

जो जीव परमात्मा के प्यार मे लीन है और उस के दर्शन रग मे रगे हुए है वे ही वास्तव मे प्रभु के जीव है। नाम को भुला देने वाले जीव तो भूमि का बोझ मात्र होते है।। रहाउ।।

प्रभु दरबार के सच्चे फकीर वे ही है जिन्हे परमात्मा ने स्वय अपनी शरण मे लिया है। उन को जन्म देने वाली माता धन्य है उन का ससार मे जन्म लेना सफल है।।२।।

हे प्रभु! तुम सब के पालन हार अगम अपार और अनन्त हो। जिन्होने तुम्हारे वास्तविक रूप को पहचान लिया है मै उन के पाव चूमता हू।।३।।

हे हरि! मुझे तुम्हारी शरण दरकार है तुम क्षमाशील हो। हे दाता तुम शेख फरीद को बन्दगी (भक्ति) की भिक्षा दो।।४।।

—————

(२) नाम जाप

वि०—२

राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे। ध्रू प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे।।१।।

दीन दइआल भरोसे तेरे।

सभु परवारु चडाइआ बेडे।। रहाउ।।

जा तिसु भावै ता हुकमु मनावै। इस बेडे कउ पारि लघावै।।२।।

गुर परसादि ऐसी बुधि समानी। चूकि गई फिरि आवन जानी।।३।।

कहु कबीर भजु सारिगपानी। उरवारि पारि सभि एको दानी।।४।।

(राग गउडी – सबद – ६१) कबीर/३३७

हे आत्मा! इस प्रकार प्रार्थना कर कि हे प्रभु! मै तुझे उस प्रेम और श्रद्धा से स्मरण करु जिस प्रेम और श्रद्धा से ध्रुव और प्रहलाद ने किया था।

हे दीनदयाल प्रभु! तेरी कृपा की आशा कर के मेने अपना सारा परिवार तेरे नाम के जहाज पर चढा दिया है अर्थात सब इन्द्रियो को तेरी गुण स्तुति मे लगा दिया है।

जब प्रभु को उचित लगता है तो वह इस सारे परिवार से अपना हुकुम मनवाता है और इस प्रकार इस सारे परिवार को विकारो की लहर से बचा लेता है।

सतिगुरु की कृपा से जिस मनुष्य के भीतर ऐसी बुद्धि प्रकट हो जाती है उस का बार बार जन्म लेना और मरना समाप्त हो जाता है।

हे कबीर! स्वय को समझा धरती को हाथ मे धारण करने वाले प्रभु को स्मरण कर। लोक और परलोक सभी जगह उस प्रभु को ही जान।

अनुशीलन -

ध्रुव और प्रहलाद ने बचपन से ही प्रभु की आराधना की। गुरु अमर दास जी ने भक्त प्रहलाद की कथा का सुन्दर वर्णन किया है। मेरी पट्टी पर गोबिन्द मुरारि लिख दो क्योकि मुझे कुछ और नही पढना है—

नाम बिना नह पडउ अचार।

मेरी पटीआ लिखि देहु गोबिन्द मुरारि।।

(राग भरउ – अष्टपदी)

प्रभु भक्तो की पैज (प्रतिज्ञा) रखता है। इस विषय पर गुरु राम दास जी के एक छन्द का अन्तिम पद बहुत लोकप्रिय है—

हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे।
हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ।।
अहकारीआ निदका पिठि देइ नामदेउ मुखि लाइआ।
जन नानक ऐसा हरि सेविआ अति लए छडाइआ।।

(राग आसा – छन्द – ४/१३) (गुरु राम दास/४५१)

वि०—३

हरि का नामु रिदै नित धिआई। सगी साथी सगल तराई।।१।।
गुरु मेरै सगि सदा है नाले।
सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्हाले।। रहाउ।।
तेरा कीआ मीठा लागै। हरि नामु पदारथु नानकु मागै।।२।।

(राग आसा – सबद – ६३) गुरु अर्जन देव/३६४

गुरु कृपा से मै परमात्मा का नाम सदा अपने हृदय मे स्मरण करता हू (जिस से मै ससार समुद्र से पार हो जाऊ) और अपने सगी साथियो (ज्ञानेन्द्रियो) को पार उतारने योग्य बना सकू।

हे भाई! मेरा गुरु सदा मेरे साथ बसता है इसलिए मै उस परमात्मा को स्मरण कर सदा हृदय मे बसाए रखता हू।

हे प्रभु! गुरु कृपा से मुझे तेरा किया हुआ हर एक काम अच्छा लग रहा है और तेरा दास नानक तुझ से बहुमूल्य वस्तु तेरा नाम माग रहा है।

(३) प्रभु दर्शन

वि०—४

धनु सु वेला जितु दरसनु करणा। हउ बलिहारी सतिगुर चरणा।।१।।
जीअ के दाते प्रीतम प्रभ मेरे।
मनु जीवै प्रभ नामु चितेरे।। रहाउ।।
सचु मन्त्रु तुमारा अम्रित बाणी। सीतल पुरख द्रिसटि सुजाणी।।२।।
सचुं हुकमु तुमारा तखति निवासी। आइ न जावै मेरा प्रभु अबिनासी।।३।।
तुम मिहरवान दास हम दीना। नानक साहिबु भरपुरि लीणा।।४।।

(राग वडहस – सबद – २) गुरु अर्जन देव/५६२

हे भाई! वह समय सौभाग्य पूर्ण होता है जिस समय प्रभु का दर्शन होता है। जिस गुरु की कृपा से यह सभव हुआ है मै उस गुरु के चरणो पर बलिहारी जाता हू।

हे प्राण दाता प्रभु! हे मेरे प्रियतम प्रभु! तुम्हारा नाम स्मरण कर मेरा मन आत्मिक जीवन प्राप्त कर लेता है।

हे प्रभु! तुम्हारा नाम मन्त्र शाश्वत है तुम्हारी गुण स्तुति की बाणी आत्मिक जीवन देने वाली है। हे अकाल पुरुष! तुम्हारा स्वभाव जीवो को शीतलता प्रदान करता है और तुम्हारी दृष्टि विवेकपूर्ण और कृपामय है।

हे सिहासन पर विराजमान प्रभु! तुम्हारा हुकम सच्चा है। तुम अविनाशी हो तुम्हारा जन्म मरण नही है। हे प्रभु! हम जीव तुम्हारे तुच्छ सेवक है। तुम हम पर दया करने वाले हो। नानक का कथन है कि हमारा मालिक प्रभु सब मे व्यापक है।

वि०—५

दरसनु देखि जीवा गुर तेरा। पूरन करमु होइ प्रभ मेरा।।१।।
इह बेनन्ती सुणि प्रभ मेरे।
देहि नामु करि अपणे चेरे।। रहाउ।।
अपणी सरणि राखु प्रभ दाते। गुर प्रसादि किनै विरलै जाते।।२।।
सुनहु बिनउ प्रभ मेरे मीता। चरण कमल वसहि मेरे चीता।।३।।
नानकु एक करै अरदासि। विसरु नाही पूरन गुणतासि।।४।।

(राग सूही – सबद – २४) गुरु अर्जन देव/७४१–७४२

सतिगुरु के दर्शन से मुझे आत्मिक जीवन मिल जाता है। हे प्रभु! कृपा करो और सच्चे गुरु से मिलाप करवा दो।

हे प्रभु! यह प्रार्थना सुनो। मुझे अपना सेवक बना कर अपना नाम प्रदान करो।

हे दाता प्रभु! मुझे अपनी शरण मे रखो। गुरु कृपा से किसी विरले मनुष्य ने तुम्हारे साथ अन्तरग जानकारी पाई है।

हे मेरे मित्र प्रभु! मेरी प्रार्थना सुनो तुम्हारे सुन्दर चरण मेरे हृदय मे बस जावे।

हे समस्त गुणो के भण्डार प्रभु! नानक एक प्रार्थना करता है कि तुम उसे कभी विस्मृत न होना।

अनुशीलन -

भारतीय योग साधना मे साधक की अन्तिम अवस्था ध्यान के द्वारा समाधि की स्थिति मे पहुचना है। गुरु वाणी मे ध्यान की अपेक्षा स्मरण पर बल दिया गया है। मनु जीवे प्रभु नाम चितेरे और विसरु नाही पूरन गुणतासि । प्रभु का स्मरण करते हुए कर्म करना गुरुमुख का आदर्श है। सिमरन के साधन पक्ष को भाई जोध सिह जी ने स्पष्ट किया है।

मनुष्य मन मे दो अश है– ध्यान और याद। ध्यान तो एकान्त स्थान मे निश्चित बैठने से सभव है किन्तु याद को काम करते हुए एक सकल्प से जुडा रख सकते है। गुरु जी ने साधना पक्ष मे याद से काम लेने का उपदेश दिया। मनुष्य अपने करणहार (परमात्मा) को भूल गया है इसलिए वह दुखी है। परमात्मा सर्वव्यापी है। जिस समय सिमरन के द्वारा जिज्ञासु यह तथ्य अपने हृदय मे बैठा लेगा फिर वह पाप कर्म नही करेगा उस की आत्मा की ज्योति प्रज्वलित हो जावेगी।

जिस तरह योग के आठ अग है गुरु साहिब ने पहला अग सन्तोष दूसरा सेवा तीसरा गुरुवाणी का पाठ (उस के उपदेशानुसार अपना आचार ढालने का यत्न) सत्सग कीर्तन और राग (राग मे मन एकाग्र करने की शक्ति है एकाग्र चित्त होकर सुनने पर मन पर विशेष प्रभाव पडता है।) फिर नाम का जप और सिमरन।

(नानक वाणी – मुख बध)

———————

(४) प्रभु नाम दु ख निवारण

विo—६

ताती वाउ न लगई पारब्रहम सरणाई।
चउगिरद हमारै राम कार दुखु लगै न भाई।।१।।
सतिगुरु पूरा भेटिआ जिनि बणत बणाई।
राम नामु अउखधु दीआ एका लिव लाई।। रहाउ।।
राखि लीए तिनि रखनहारि सभ बिआधि मिटाई।
कहु नानक किरपा भई प्रभ भए सहाई।।२।।

(राग बिलावल – ७६) गुरु अर्जन देव/८१६

प्रभु की शरण मे आने पर कभी कोई कष्ट नही होता। प्रभु की शरण शीतल है वहा गर्म हवा तक नही पहुचती। प्रभु के शरणागत के चारो ओर रक्षा करन वाली लक्ष्मण रेखा खिच जाती है और कोई दु ख उस का अतिक्रमण नही कर सकता।।१।।

सतगुरु के मिलने पर ऐसी युक्ति मालूम हो जाती है जिस से जीव एकाग्र हो कर राम नाम मे ही लीन हो जाता है। राम नाम उस की साधना का आधार बन जाता है।।रहाउ।।

प्रभु नित्य रक्षक के रुप मे रक्षा करता है और सब प्रकार के सन्तापो को दूर करता है। गुरु नानक कहते है जब परमात्मा कृपा करता है तो जीवो का सहायक हो जाता है।।२।।

विo—७

सूके हरे कीए खिन माहे। अम्रित द्रिसटि सचि जीवाए।।१।।
काटे कसट पूरे गुर देव।
सेवक कउ दीनी अपुनी सेव।। रहाउ।।
मिटि गई चिन्त पुनी मन आसा। करी दइआ सतिगुरि गुण तासा।।२।।
दुख नाठे सुख आइ समाए। ढील न परी जा गुरि फुरमाए।।३।।
इछ पूनी पूरे गुर मिले। नानक ते जन सुफल फले।।४।।

(राग गउडी – सबद – ५८) गुरु अर्जन देवजी/१६१

गुरु अपनी अमृतमयी दृष्टि से सींच कर माया मे लिप्त सूखे जीवन वाले मनुष्यो को क्षण भर मे हरे (प्रसन्न – आत्मिक रस से पूर्ण) कर देता है।।१।।

जिस सेवक को परमात्मा ने अपनी सेवा भक्ति की देन दी उस के सारे कष्ट काट दिये।।रहाउ।। गुणो के भण्डार सतिगुरु ने जिस मनुष्य पर कृपा की उस की सब चिन्ता मिट गई और उस के मन की आशा पूर्ण हो गई।।२।। गुरु ने जिस मनुष्य पर कृपालु होने का हुकम दिया तनिक भी ढील नही हुई। उसके के सारे दु ख दूर हो गये उस के भीतर सुख आ कर टिक गये।।३।। हे मन! जो मनुष्य पूर्ण गुरु को मिले उन की सब इच्छाये पूर्ण हो गई क्योकि उन्हे आत्मिक जीवन के सुन्दर फल प्राप्त हो गये।।४।।

भाव साम्य -

विनय के इन शब्दो मे प्रभु शरण मे आने पर दुखो के नाश का वर्णन किया गया है। आचार्य शान्ति देव ने क्लेशो का भय छोडने और प्रज्ञा की प्राप्ति के लिये यत्न करने का उपदेश दिया है—

न क्लेशा विषयेषु नेन्द्रियगणे नाप्यन्तराले स्थिता।
ना तोऽन्यत्र कुत्र स्थिता पुनरमी मथ्नाति कृत्स्न जगत।
मायैवेयमेतो विमुञ्च हृदयत्रास भजस्वोद्यम।
प्रज्ञार्थ किमकाण्ड एव नरकेष्वात्मान बाधसे।।

क्लेश न तो विषयो मे न इन्द्रिय समूह मे और न ही कही उसके मध्य मे स्थित है और न इन स्थानो के अतिरिक्त किसी अन्य स्थानो मे स्थित है ऐसे निसत्व होने पर भी ये सारे ससार को मथ रहे है। तब तथ्य क्या है ये केवल माया स्वरूप है— इसलिए ऐ मेरे हृदय क्लेशो का भय छोडो प्रज्ञा के अधिगम के लिए यत्न करो। क्यो निष्प्रयोजन नरको मे क्लेश पर वश होकर स्वय का पीडित कर रहे हो?

(बोधि चर्यावतार) (आचार्य शान्ति देव)

सुख दुख का स्रोत स्वय परमात्मा है—

नानक बोलणु झखणा दुखि छडि मगीअहि सुख।
सुखु दुखु दुइ करि कपडे पहिरहि जाइ मनुख।
जित्थे बोलणि हारीऐ तिथे चगी चुप।।२।।

(वार माझ — सलोक — २४) (गुरु नानक देव/१४६)

नानक! दुख न हो और सुख ही मिले यह माग मागना व्यर्थ है। सुख और दुख दोनो पोशाक प्रभु के दर से आती है। जो मनुष्य सदा से पहनते रहे है। जहॉ बोलकर हार माननी पडे वहॉ चुप रहना ही अच्छा है।

(५) प्रभु नाम - इच्छा पूरक

वि०—८

सत जना मिलि हरि जसु गाइओ।
कोटि जनम के दूख गवाइओ।। रहाउ।।
जो चाहत सोई मनि पाइओ।
करि किरपा हरि नामु दिवाइओ।।१।।
सरब सूख हरि नामि वडाई।
गुर प्रसादि नानक मति पाई।।२।।

(राग बैराडी) गुरु अर्जन देव/७२०

हे भाई! जिस मनुष्य ने सन्तो के साथ मिलकर भगवान का गुण गान किया है उस के करोडो जन्मो के दुःख समाप्त हो गये जानो।

हरि यश कीर्तन करने वाला भक्त जीव जो भी इच्छा करता है वही पूरी होती है। ऐसे भक्त को गुरु स्वय कृपा करके हरिनाम का दान भी दिला देते है।

भगवान के नाम की महिमा यह है कि इस से जीव को सभी सुख मिल जाते है। गुरु नानक कहते है कि भगवान की ओर उन्मुख होने की बुद्धि भी गुरु की प्रसन्नता से मिलती है।

वि०—६

थिरु घरि बैसहु हरिजन पिआरे। सतिगुरि तुमरे काज सवारे।। रहाउ।।
दुसट दूख परमेसरि मारे। जन की पैज रखी करतारे।।१।।
बादिसाह साह सभ वसि करि दीने। अम्रित नाम महारस पीने।।२।।
निरभउ होइ भजहु भगवान। साधसगति मिलि कीनो दानु।।३।।
सरणि परे प्रभ अन्तर जामी। नानक ओट पकरी प्रभ सुआमी।।४।।

(राग गउडी – सबद – १०८) गुरु अर्जन देव/२०१

हे प्रिय भक्त जनो! अपने हृदय मे यह पूर्ण विश्वास बनाओ कि सति गुरु ने हमारे सब काम सवार दिये है।

(जो मनुष्य ईश्वर पर आस्था रखता है) परमेश्वर ने उस के सब दुश्मन समाप्त कर दिये है। प्रभु ने अपने सेवक की प्रतिष्ठा अवश्य रखी है।

परमात्मा ने अपने सेवको को दुनिया के शाहो बादशाहो की ओर से निश्चित कर दिया है। परमेश्वर के सेवक आत्मिक जीवन देने वाला नाम रस पीते हैं।

हे भक्त जनो! प्रभु ने तुम्हे नाम दान दिया है तुम सत्सगति मे मिल कर निर्भय हो कर भगवान का नाम स्मरण करो।

हे नानक! प्रभु द्वार पर प्रार्थना कर और कह – हे अन्तर्यामी प्रभु! मै तेरी शरणागत हू मैने तेरा सहारा लिया है (मुझे अपने नाम की देन दे)।

(६) अरदास (प्रार्थना)

वि०—१०

तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि।

जीउ पिण्डु सभु तेरी रासि।।

तुम मात पिता हम बारिक तेरे।

तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे।।

कोइ न जानै तुमरा अतु।

ऊचे ते ऊचा भगवत।।

सगल समग्री तुमरै सूत्रिधारी।

तुम ते होइ सु आगिआकारी।।

तुमरी गति मिति तुम ही जानी।

नानक दास सदा कुरबानी।।

(राग गउडी – सुखमनी – ८/४) गुरु अर्जन देव/२६८

हे कर्तार! तू मालिक है तेरे पास ही बेनती है। हमारी जीवात्मा और शरीर सब तेरी बख्शी हुई पूजी है। तुम माता हो तुम पिता हो हम तेरे बालक है। तुम्हारी कृपा मे ही हमे बहुत सुख मिल रहे है।

हे भगवन्त! तेरा कोई अन्त नही जानता तुम ऊचो से भी ऊचे हो। ससार की सारी सामग्री तुम्हारे हुकम रुपी सूत्र के द्वारा स्थित है। यह सामग्री तुम से रची गई है इसलिए तुम्हारी आज्ञा मे चल रही है।

(परन्तु किस प्रकार की वह सामग्री है और कैसे तुम स्वय हो?) तुम्हारे तक पहुच और तुम्हारा विस्तार तुम स्वय ही जानते हो। नानक दास तुम पर सदा बलिहार होता है।

(७) हरि नाम महिमा

वि०—११

हरि को नामु सदा सुखदाई।
जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हू गति पाई।। रहाउ।।
पचाली कउ राज सभा मे राम नाम सुधि आई।
ताको दूखु हरिओ करुणामै अपनी पैज बढाई।।१।।
जिह नर जसु किरपानिधि गाइओ ता कउ भइओ सहाई।
कहु नानक मै इही भरोसै गही आनि सरनाई।।२।।

(राग मारु) गुरु तेग बहादुर/१००८

हरि का नाम सदा सुख दाई है जिस नाम का स्मरण कर अजामिल का उद्धार हुआ और गणिका के समान वेश्या भी परम गति को प्राप्त हुई। कौरवो की राजसभा मै द्रौपदी ने हरि नाम का स्मरण किया तो करुणा मय प्रभु ने अपने विरद की लाज रखते हुए उसके दु खो का हरण किया। जो मनुष्य कृपानिधि प्रभु का यश गाता है प्रभु उसका सदा सहायक होता है। गुरु नानक कहते है कि उन्होने भी इसी भरोसे प्रभु की शरण ली है।

वि०—१२

हरि के नाम बिना दुखु पावै।
भगति बिना सहसा नह चूकै गुरु इहु भेदु बतावे।। रहाउ।।
कहा भइओ तीरथ ब्रत कीए राम सरनि नही आवै।
जोग जग निहफल तिह मानउ जो प्रभ जसु बिसरावै।।२।।
मान मोह दोनो कउ परहरि गोबिन्द के गुन गावै।
कहु नानक इह बिधि को प्रानी जीवन मुकति कहावै।।२।।

(राग बिलावलु) गुरु तेग बहादुर/८३० ३१

हरि के नाम के जाप के बिना जीव दु ख पाता है। भक्ति के बिना सशय का नाश नही होता यह रहस्य गुरु से जाना जाता है। यदि राम की शरण नही ली तो तीर्थ व्रत करने से क्या लाभ? उस जीव के योग साधन और यज्ञ कर्म बेकार है जिसने परमात्मा की कीर्ति भुला दी है। जीव को मान और मोह छोडकर परमात्मा के गुण गाना चाहिए। गुरु नानक का कथन है कि यही विधि जीव को जीवन मुक्ति प्रदान करती है।

वि०—१३

हरि बिनु तेरो को न सहाई।
का की मात पिता सुत बनिता को काहू को भाई।। रहाउ।।
धनु धरनी अरु सपति सगरी जो मानिओ अपनाई।
तन छूटै कछु सगि न चालै कहा ताहि लपटाई।।१।।
दीन दइआल सदा दुख भजन ता सिउ रुचि न बढाई।
नानक कहत जगत सब मिथिआ जिउ सुपना रैनाई।।२।।

(राग सारग) गुरु तग बहादुर/१२३१

हे जीव! परमात्मा के बिना तुम्हारा कोई सहायक नही। माता पिता पुत्र पत्नी किसके हुए है? कौन किसी का भाई है? धन धरती और सारी सम्पत्ति जिन को तुम अपनी मानते हो वे भी शरीर छूटते समय साथ नही चलते। अत उन से लिपटे रहने का भी क्या है? दु खो को दूर करने वाल दयालु परमात्मा मे यदि रुचि न बढी तो गुरु नानक कहते है यह मिथ्या जगत रात्रि के स्वप्न के समान नि सार है।

अनुशीलन -

हरि कीर्तन से ही उद्धार होता है। अन्य धार्मिक कर्मकाण्ड से अहकार की वृद्धि होती है। जिससे स्वर्ग या नर्क मे रहना पडता है और आवागमन से मुक्ति नही होती है। सभी स्वर्ग लोक अस्थायी है। हरि नाम कीर्तन से वास्तविक सुख मिलता है—

होम जग तीरथ कीए बिचि हउमै बधे बिकार।
नरकु सुरगु दुइ भुचना होइ बहुरि बहुरि अवतार।।
सिवपुरी ब्रह्म इन्द्रपुरी निहचलु को थाउ नाहि।
बिनु हरि सेवा सुखु नही हो साकत आवहि जाहि।।
जैसो गुरि उपदेसिआ मे तैसो कहिआ पुकारि।
नानकु कहै सुनि रे मना करि कीरतनु होइ उधारु।।

(राग गउडी – सबद – १५८) (गुरु अर्जन देव/२१४)

————

(८) ठाकुर शरण

वि०—१४

हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता।
हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता।।१।।
माधो हम ऐसे तू ऐसा।
हम पापी तुम पाप खण्डन नीको ठाकुर देसा।। रहाउ।।
तुम सभ साजे साजि निवाजे जीउ पिण्डु दे प्राना।
निरगुनीआरे गुनु नही कोई तुम दानु देहु मिहरवाना।।२।।
तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला।
तुम सुखदाई पुरख विधाते तुम राखहु अपुने बाला।।३।।
तुम निधान अटल सुलितान जीअ जत सभि जाचै।
कहु नानक हम इहै हवाला राखु सतन कै पाछै।।४।।

(राग सोरठि/सबद – १७) गुरु अजन दव/६१३

हे प्रभु! हम विकारो के मैल से दूषित है तुम हमे पवित्र करते हो। हम गुणहीन है तुम गुण देने वाले हो। हम जीव मूर्ख है तुम बुद्धिमान हो और सर्वज्ञ हो।

हे माया के स्वामी (प्रभु) हम ऐसे (विकृत गुणहीन) है और तुम ऐसे (कल्याण कारक) हो। हम पाप करने वाले है तुम हमारे पापो को नष्ट करने वाले हो। हे ठाकुर! तुम्हारा देश सुन्दर है।

हे प्रभु! तुम ने सब सृष्टि का सृजन किया है और जीवो को आत्मा देह और प्राण दे कर सब पर कृपा की है। हे कृपालु! हम जीव गुणहीन है हम मे कोई गुण नही है तुम हमे गुणो की देन देते हो।

हे प्रभु! तुम हमारा कल्याण करते हो लेकिन हम इस कल्याण भावना को नही समझते। लेकिन फिर भी तुम हमेशा दयालु रहते हो। हे सुखदायक सृजनहार अकाल पुरुष! तुम बच्चो के समान हमारी रक्षा करते हो।

हे सत्य स्वरूप बादशाह! तुम सब गुणो के भण्डार हो समस्त जीव तुम्हारे द्वार पर भीख मागते है। नानक का कथन है कि हम जीवो का तो यही हाल है तुम हमे सन्तजनो के सहारे रखो।

वि०–१५

तुम दाते ठाकुर प्रतिपालक नाइक खसम हमारे।
निमख निमख तुम ही प्रतिपालहु हम बारिक तुमरे धारे।।१।।
जिहवा एक कवन गुन कहीऐ।
बेसुमार बेअत सुआमी तेरो अतु न किनही लहीऐ।। रहाउ।।
कोटि पराध हमारे खण्डहु अनिक बिधी समझावहु।
हम अगिआन अलप मति थोरी तुम आपन बिरदु रखावहु।।२।।
तुमरी सरणि तुमारी आसा तुम ही सजन सुहेले।
राखहु राखनहार दइआला नानक घर के गोले।।३।।

(राग धनासरी/सबद – १२) गुरु अर्जन देव/६७४

हे प्रभु! तुम सब कुछ देने वाले हो सब के पालनकर्ता हो सब के अगुआ हो तुम हम सब के स्वामी हो। हे प्रभु! तुम हर क्षण हमारी देखभाल करते हो। हम तुम्हारे बालक तुम्हारे सहारे है। हे प्रभु! तुम्हारे गुण बेअन्त है उन की गणना नही की जा सकती किसी के द्वारा तुम्हारे गुणो का भेद नही पाया जा सकता। मनुष्य की जिह्वा अनेक है उस से कौन सा गुण कहा जावे।। रहाउ।।

हे प्रभु! तुम हमारे करोडो अपराध नष्ट करते हो तुम हमे अनेक तरीको से समझाते हो। हम जीव आत्मिक जीवन की सूझ से खाली है हमारी बुद्धि थोडी है फिर भी तुम अपना विरद निभाते हो।।२।।

नानक का कथन है कि हे प्रभु हम तुम्हारे आश्रित है। तुम्हारी कृपा की आशा है तुम सुख देने वाले सज्जन हो। हे सब की रक्षा करने मे समर्थ प्रभु! हमारी रक्षा करो। हम तुम्हारे गुलाम है।।३।।

———––

वि०—१७

मिहरवानु साहिबु मिहरवानु।
साहिबु मेरा मिहरवानु।
जीअ सगल कउ देइ दानु।। रहाउ।।
तू काहे डोलहि प्राणीआ तुधु राखैगा सिरजणहारु।
जिनि पैदाइसि तू कीआ सोई देइ आधारु।।१।।
जिनि उपाई मेदनी सोई करदा सार।
घटि घटि मालकु दिला का सचा परवदगारु।।२।।
कुदरति कीम न जाणीऐ वडा वेपरवाहु।
करि बदे तू बदगी जिचरु घट महि साहु।।३।।
तू समरथु अकथु अगोचरु जीउ पिण्डु तेरी रासि।
रहम तेरी सुखु पाइआ सदा नानक की अरदासि।।४।।

(राग तिलग) गुरु अर्जन देव जी/७२४

हे भाई! मेरा मालिक दयालु है। सदा दया करने वाला है। वह सब जीवो को जीवन दान देता है।। रहाउ।।

हे प्राणी! तू क्यो घबराता है? वह सर्जक प्रभु तेरी रक्षा करेगा। जिसन तुझे उत्पन्न किया है वही सारी सृष्टि को आश्रय देता है।।१।।

जिस परमात्मा ने सृष्टि पैदा की है वही देखरेख भी करता है। प्रत्येक शरीर मे अवस्थित प्रभु दिलो का मालिक है वह सत्य स्वरूप है और सभी की देख रेख करन वाला है।।२।।

हे भाई! उस मालिक का मूल्य उस की रचना के द्वारा नही जाना जा सकता। वह सर्वोपरि है उसे किसी की जरुरत नही है। हे प्राणी! जब तक तुम्हारे शरीर मे श्वास चलता है तब उस मालिक की बन्दगी करते रहो।।३।।

हे प्रभु! तुम सर्वशक्तिमान हो तुम्हारे स्वरूप को वर्णन नही किया जा सकता। ज्ञानेन्द्रियो के द्वारा तुम तक पहुच नही हो सकती। यह शरीर और प्राण तुम्हारी ही दी हुई पूजी है। जिस मनुष्य पर तुम्हारी कृपा हो उसे सुख मिलता है। नानक की भी सदा तुम्हारे द्वारे पर यही प्रार्थना है कि उसे तुम्हारे नाम स्मरण का सुख मिले।।४।।

(१०) प्रभु हृदय निवास

वि०—१८

उदमु करउ करावहु ठाकुर पेखत साधू सगि।
हरि हरि नामु चरावहु रगनि आपे ही प्रभ रगि।।
मन महि राम नामा जापि।
करि किरपा वसहु मेरै हिरदै होइ सहाई आपि।। रहाउ।।
सुणि सुणि नामु तुमारा प्रीतम प्रभु पेखन का चाउ।
दइआ करहु किरम अपुने कउ इहै मनोरथु सुआउ।।२।।
तनु धनु तेरा तू प्रभु मेरा हमरै वसि किछु नाहि।
जिउ जिउ राखहि तिउ तिउ रहणा तेरा दीआ खाहि।।३।।
जनम जनम के किलविख काटै मजनु हरि जन धूरि।
भाइ भगति भरम भउ नासै हरि नानक सदा हजूरि।।४।।

(राग आसा सबद – १३६) गुरु अर्जन देव/४०५

हे मेरे मालिक! मुझ से यह उद्यम कराता रह गुरु सगति मे तेरा दर्शन करता हुआ मै तेरे नाम जपने का काम काज करता रहू। हे प्रभु! मेरे मन पर अपने नाम का रग चढाओ तुम आप ही मेरे मन को प्रेम रग से रग दो।।१।।

हे प्रभु! मुझ पर कृपा कर मेरे हृदय मे विराजमान हो। यदि तुम मेरे सहायक बनो तो मै अपने मन मे तुम्हारा राम नाम जपता रहू।।रहाउ।।

हे मेरे प्यारे! तुम मेरे मालिक हो अपने इस तुच्छ सेवक पर कृपा करो ताकि तुम्हारा नाम सुन सुन कर मेरे भीतर तुम्हारे दर्शन का चाव बना रहे। मेरा मनोरथ मेरा यह स्वार्थ पूर्ण करो।।२।।

हे प्रभु! मेरा यह शरीर धन सर्वस्व तेरा ही दिया हुआ है। तुम ही मेरे स्वामी हो हमारे वश कुछ नही है। तुम हम जीवो को जिस रुप मे रखते हो वैसे ही हम जीवन बिताते है हम तुम्हारा दिया हुआ ही हर एक पदार्थ खाते है।।३।।

हे नानक! कह— परमात्मा के सेवको के चरणो की धूलि मे किया गया स्नान मनुष्य के जन्म जन्म के पाप दूर कर देता है। प्रभु प्रेम के द्वारा भक्ति के प्रभाव से मनुष्य का सभी तरह का भय दूर हो जाता है और परमात्मा उस के साथ साथ प्रत्यक्ष प्रकट रहता है।।४।।

वि०—१६

तुधु चिति आए महा अनदा जिसु विसरहि सो मरि जाए।
दइआलु होवै जिसु ऊपरि करते सो तुधु सदा धिआए।।१।।
मेरे साहिब तू मै माणु निमाणी।
अरदासि करी प्रभ अपने आगै सुणि सुणि जीवा तेरी बाणी।। रहाउ।।
चरण धूडि तेरे जन की होवा तेरे दरसन कउ बलि जाई।
अम्रित बचन रिदै उरि धारी तउ किरपा ते सगु पाई।।२।।
अतर की गति तुधु पहि सारी तुधु जेवडु अवरु न कोई।
जिसनो लाइ लैहि सो लागै भगतु तुहारा सोई।।३।।
दुइ कर जोडि मागउ इकु दाना साहिबि तुठै पावा।
सासि सासि नानकु आराधे आठ पहर गुण गावा।।४।।

(राग सूही/५६) गुरु अर्जन देव/७४६

हे प्रभु! यदि तुम हृदय मे आ बसो तो बडा आनन्द मिलता है। जिस मनुष्य को तुम भुला देते हो समझो कि उस मनुष्य की आत्मिक मृत्यु हो गई। जिस मनुष्य पर तुम दयालु होते हो वह हमेशा तुम्हे स्मरण करता रहता है।।१।।

यह जीव आप की वाणी सुन सुनकर विनती करता है कि हे प्रभु! तुम मेरे साहिब हो और मै तुम्हारा तुच्छ सेवक हूँ।।रहाउ।।

हे प्रभु! मै तुम्हारे दर्शन पर बलिहारी जाता हू। मेरी कामना है कि तुम्हारे सेवको के चरणो की धूल बना रहू। तुम्हारे आत्मिक जीवन देने वाले वचन मै अपने भीतर बसाए रखू और तुम्हारी कृपा से तुम्हारे सन्तो की सगति प्राप्त करुँ।।२।।

हे प्रभु! मैने अपने मन की स्थिति आप के पास खोल कर रख दी है। मुझे तुम्हारे समान कोई नही दिखता। जिस मनुष्य को तुम चरणो मे जगह देते हो वही तुम्हारे चरणो मे जगह पाता है।।३।।

हे प्रभु! मै दोनो हाथ जोड कर एक दान मागता हू यदि आप प्रसन्न हो तो यह दान मिल जावेगा। मै प्रत्येक श्वास तुम्हारी आराधना करुँ और आठो प्रहर तुम्हारी गुण स्तुति के गीत गाता रहू।।४।।

———

(११) प्रभु सन्तो का सहारा

वि०—२०

जिस के सिर ऊपरि तू सुआमी सो दुखु कैसा पावै।
बोलि न जाणै माइआ मदि माता मरणा चीति न आवै।।१।।
मेरे राम राइ तू सन्ता का सन्त तेरे।
तेरे सेवक कउ भउ किछु नाही जमु नही आवै नेरे। रहाउ
जो तेरै रगि राते सुआमी तिन्ह का जनम मरण दुखु नासा।।२।।
तेरी बखस न मेटै कोई सतिगुर का दिलासा।।२।।
नामु धिआइनि सुख फल पाइनि आठ पहर आराधहि।
तेरी सरणि तेरै भरवासै पच दुसट लै साधहि।।३।।
गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा सार न जाणा तेरी।
सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी।।४।।

(राग सूही सबद – ५७) गुरु अर्जन देव जी/७४६

हे मेरे मालिक! जिस मनुष्य के सिर पर तुम्हारा हाथ है उसे कोई दुख नही होता। वह मनुष्य माया प्रेरित होकर कभी नही बोलता मृत्यु का भय भी कभी उसके चित्त मे नही होता।

हे प्रभु! तुम सन्तो के रक्षक हो तुम्हारे सन्त तुम्हारे ही सहारे रहते है। तुम्हारे सेवक को कोई भय नही होता। यमराज उस के निकट नही आता।

जो मनुष्य तुम्हारे प्रेम मे रगे रहते है उन के जन्म मरण का दुख दूर हो जाता है। उन्हे गुरु का यह दिया हुआ भरोसा है कि उन पर हुई तुम्हारी कृपा को कोई मिटा नही सकता।

तुम्हारे सन्त तुम्हारा नाम स्मरण करते रहते है आत्मिक आनन्द भोगते है। आठो पहर तुम्हारा पूजन करते है। तुम्हारी शरण मे आकर तुम्हारे भरोसे वे पाच विकारो को वश मे कर लेते है।

हे प्रभु! मै तुम्हारी कृपा की कीमत नही जानता था। मुझे आत्मिक जीवन की सूझ नही थी परन्तु तुम्हारी कृपा से मुझे सब से बडा गुरु मिल गया जिसने मेरी लाज रख ली।

वि०—२१

तेरा भाणा तूहे मनाइहि जिसनो होहि दइआला।
साई भगति जो तुधु भावै तू सरब जीआ प्रतिपाला।।१।।
मेरे राम राइ सन्ता टेक तुम्हारी।
जो तुधु भावे सो परवाणु मनि तनि तूहै अधारी।। रहाउ
तू दइआलु क्रिपालु क्रिपानिधि मनसा पूरणहारा।
भगत तेरे सभि प्राणपति प्रीतम तू भगतन का पिआरा।।२।।
तू अथाहु अपारु अति ऊचा कोई अवरु न तेरी भाते।
इह अरदासि हमारी सुआमी विसरु नाही सुखदाते।।३।।
दिन रैणि सासि सासि गुण गावा जे सुआमी तुधु भावा।
नामु तेरा सुखु नानकु मागै साहिब तुठै पावा।।४।।

(राम सूही सबद – ४८) गुरु अर्जन देव जी/७४७

ह प्रभु! जिस मनुष्य पर तुम दयालु होते हो तुम आप ही उसे अपना रजा मे चलाते हो। असली भक्ति वही है जो तुम्हे स्वीकार होती है। तुम समस्त जीवो की देखभाल करने वाले हो।

हे प्रभु! तुम्हारे सन्तो को तुम्हारा ही सहारा रहता है। जो कुछ तुम्हे भला लगता है वही उन्हे स्वीकार्य होता है। उन के मन तन मे तुम ही रमते हो।

तुम दया के घर हो कृपा क भण्डार हो तुम अपने भक्तो की मनो कामना पूरी करने वाले हो। हे आत्मा के मालिक प्रियतम प्रभु तुम्हारे भक्त तुम्हे प्यारे लगते है और तुम भक्तो को प्यारे लगते हो।

तुम्हारी गहराई अथाह हे तुम्हारे सामर्थ्य का ओर छोर नही मिल सकता। तुम बहुत ऊचे हो कोई भी तुम्हारे जैसा नही है। हे सुख दाता प्रभु! हम जीवो की यह विनती है कि तुम हमे कभी विस्मृत न होओ।।३।।

यदि तुम्हे स्वीकार हो तो मै दिनरात प्रत्येक श्वास के साथ तुम्हारे गुण गाता रहू। दास नानक तुम से तुम्हारा नाम मागता है क्योकि यही सुख हे। हे मेरे मालिक! तुम दया करके मुझे यह देन दो।

—————

(१२) सेवक की जीवन यात्रा

वि०—२२

मान मोह अरु लोभ विकारा बीओ चीति न घालिओ।
नाम रतनु गुणा हरि बणजे लादि वखरु लै चालिओ।।१।।
सेवक की ओडकि निबही प्रीति।
जीवत साहिबु सेविओ अपना चलते राखिओ चीति।। रहाउ।।
जैसी आगिआ कीनी ठाकुरि तिस ते मुखु नही मोरिओ।
सहजु अनदु रखिओ ग्रिह भीतरि उठि उआहू कउ दउरिओ।।२।।
आगिआ महि भूख सोई करि सूखा सोग हरख नही जानिओ।
जो जो हुकमु भइओ साहिब का सो माथै ले मानिओ।।३।।
भइओ क्रिपालु ठाकुरु सेवक कउ सवरे हलत पलाता।
धनु सेवकु सफलु नानक ओहु आइआ जिनि नानक खसमु पछाता।।४।।

(राग मारु सबद – ५) गुरु अर्जुन देव जी/१०००

मान मोह लोभ विकार और द्वैत भाव मे जो जीव मन नहीं लगाता जो नाम रत्न और प्रभु के गुणो का ही व्यापार करता है वह नाम की सामग्री ले कर परलोक सिधारता है।

उस सेवक की प्रीति अन्तत निभती है जो जीवन मे परमात्मा को याद करता है और मरते समय भी उसी को मन मे रखता है।

स्वामी जैसी आज्ञा देते है उस से वह मुँह नही मोडता। यदि परमात्मा ने उसे घर मे रखा तो वहा प्रसन्न रहा। यदि उठने को कहा तो तुरन्त उठ कर चल दिया।

भूख के दिनो मे भी उस का आदेश समझ कर सुख माना। किसी प्रकार का हर्ष शोक अनुभव नही किया जो जो स्वामी का हुक्म हुआ शिरोधार्य किया।

जब परमात्मा सेवक पर कृपा करता है तो उस का इह लोक और परलोक दोनो सवर जाते है। गुरु नानक कहते है कि स्वामी को पहचान लेने वाला सेवक धन्य है उस का जीवन सफल है।

———––

गुरमत विचार केन्द्र के प्रेरणा स्रोत गुरुवाणी के निष्ठावान विद्वान श्रद्धेय सरदार मोहन सिह जी की पावन स्मृति मे
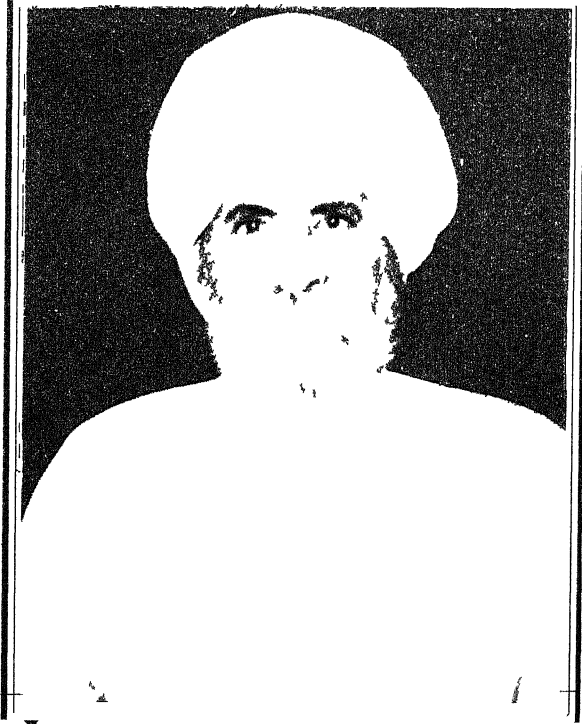
सेवक की ओडकि निबही प्रीति।
जीवत साहिब सेविओ अपना चलते राखिओ चीति।।

विनय–२२
पृष्ठ २५६

(१३) सोहिला (प्रभु-यश गायन)

वि०—२३

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो।
तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो।।१।।
तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला।
हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ।।१।। रहाउ
नित नित जीअडे समालीअनि देखै गा देवणहारु।
तेरे दानै कीमति न पवै तिसु दाते कवणु सुमारु।।२।।
सबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु।
देहु सजण असीसडीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु।।३।।
घरि घरि एहो पाहुचा सदडे नित पवनि।
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवनि।

(राग गउडी पूरबी दीपकी सबद २०) गुरु नानक देव जी/ १५७

अपने मन का उस हालत मे लाओ जिस मे सब को पेदा करन वाले करतार का यश गायन किया जाता हे ओर प्रभु का विचार किया जाता हे। मन की उस हालत म प्रभु का यह यशगान (सोहिला) गाओ उस वाहिगुरु को स्मरण करा जो सब को बनाने वाला ह।

तुम उस निर्भय प्रभु का यश गाओ। मे इस यशगान पर बलिहार जाता हू। इस स सदा सुख मिलता हे।।रहाउ।।

उस वाहिगुरु क द्वारा जीवो की हर समय सभाल हा रही हे इसलिए वह दाता हमारी रक्षा करगा। प्रभु की दन का मूल्य नही ऑका जा सकता उस दाता क भण्डार की गणना केसे हो सकती हे।।२।।

वह साल व दिन निश्चित हे जब जीव रुपी स्त्री का विवाह होगा जब वह इस दुनिया से विदा होकर पति परमात्मा के दश चली जावगी। इसलिए हे सखिया तुम मुझ पर वेस ही तल चढाने की रस्म करो जेस विवाह से पहल वधू (कन्या) की जाती हे। ह सज्जना! आप भी मुझ ससुराल जान के लिए तेयार करा। ह सज्जना! मुझे एसी आशीष दा जिस स मेरा उस प्रियतम प्रभु स मिलन हो जाव।।३।।

जीव रुपी स्त्री के इस विवाह (मौत) का पत्र हर घर मे पहुच रहा है जिस म निमन्त्रण पत्र और कलाई पर बान्धने का धागा (मृत्यु की गाठ) सम्मिलित है। हे नानक! उस निमन्त्रण भेज कर बुलाने वाले पभु का स्मरण करो क्याकि वह निमन्त्रण का दिन हर एक के लिए आने वाला है।

पाठान्तर –राग मे सिवरिहु के स्थान पर सिवरहु असीसडिआ के स्थान पर आसीसडिआ तथा हउ वारी के स्थान पर हउ वारी जाउ पाठ है।

भाव साम्य -

इस सबद मे मृत्यु को विवाह के समान मगलमय अवसर माना गया ह। भारतीय साहित्य मे कबीर सत तुकाराम और कविवर रवीन्द्र नाथ टैगोर न भी मृत्यु के अवसर का वर्णन इसी प्रकार किया हे।

कविवर रवीन्द्र का एक गीत निम्न प्रकार हे–

ऐवार तोरा आमार जाबार वेलाते सबाइ जय ध्वनि कर।
भोरेर आकाश राडा हल रे आमार पथ हल सुन्दर।।
की निये वा जाब सेथा ओगो तोरा भाविस नेता।
शून्य हातेइ चलबो बहिए आमार व्याकुल अन्तर।
माला परे जाब मिलन वेशे आमार पथिक सज्जा नय।
बाधा विपद आछे माझेर द्वेशे मने राखि ने सइ भइ।
यात्रा जखन हबे सारा उठबे ज्वले सन्ध्या तारा।
पूरबीते करुण बॉशरी द्वारे वाजव मधुर स्वर।

(गीति माल्य – २१ गीताजलि – ६४) (रवीन्द्र नाथ टेगार)

इस समय मेरे जाने के अवसर पर तुम लोग सब जय ध्वनि करा। प्रभात कालीन आकाश रगीन हो उठा हे और मेरा मार्ग भी सुन्दर हो गया ह।

अरे ओ मै अपने साथ क्या लिये जा रहा हू, यह मत सोचो। मैने व्याकुल हृदय स खाली हाथो ही जाना निश्चित किया है।

मे पथिक के साज को छोडकर मिलन (विवाह) की वेश भूषा मे जाऊगा। मरे माग म अनेको बाधाए आएगी परन्तु मे अपने हृदय मे उनका भय नही रखूगा।

जिस समय यात्रा समाप्त हो जावेगी आर सन्ध्या का तारा चमक उठेगा उस समय द्वार पर पहले ही करुण वशी मधुर स्वरा मे बज उठेगी।

(१४) आशीर्वाद वचन

वि०—२४

जिसु सिमरत सभि किलविख नासहि पितरी होइ उधारो।
सो हरि हरि तुम्ह सद ही जापहु जा का अतु न पारो।।१।।
पूता माता की आसीस।
निमख न बिसरउ तुम्ह कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस।। रहाउ।।
सतिगुरु तुम्ह कउ होइ दइआला सत सगि तेरी प्रीति।
कापडु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति।।
अम्रितु पीवहु सदा चिर जीवहु हरि सिमरत अनद अनता।
रग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिता।।
भवरु तुम्हारा इहु मनु होवउ हरि चरणा होहु कउला।
नानक दास उन सगि लपटाइओ जिउ बून्दहि चात्रिकु मउला।।

(राग गूजरी – सबद – ४) गुरु अजन दव/४६५

जिस प्रभु को स्मरण करने से सब पापो का नाश हो जाता ह आर पूवजा का भी मुक्ति प्राप्त होती है उस हरि का सदैव नाम जपो वह प्रभु अगम ओर अपार ह।।१।।

पुत्र के लिए माता की यही कल्याण कारी आशीष हो सकती है कि तुम्हे क्षण भर क लिए भी हरि विस्मृत न हो। उस परम प्रभु को सदा भजते रहो।। रहाउ।।

सतिगुरु की तुम पर कृपा हो और गुरमुखो के साथ तुम्हारी नित्य प्रीति बनी रह। प्रभु द्वारा दी गई तुम्हारे सम्मान की रक्षा ही तुम्हारा आवरण हो ओर प्रभु गुणगान ही तुम्हारा भोजन हो।।२।।

सदव हरि के नाम अमृत का पान करो। हरि स्मरण करते हुए दीघायु का भोग करा। तुम्हे अनन्त सुख आनन्द प्राप्त हो। जीवन मे सदा खुशिया आर उल्लास बना रहे। सब आशाय पूर्ण हो चिन्ताओ का नाश हो।।३।।

तुम्हारा मन हरि चरण रुपी कमल पर भ्रमर की तरह सदा मॅडराता रह। गुरु जी कहते हे कि तुम उन को स्वाति बून्द मान कर चातक की तरह उन पर आसक्त रहो।

———

(१५) प्रभु भक्त वत्सल

वि०—२५

सता के कारजि आपि खलोइआ हरि कमु करावणि आइआ राम।
धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंम्रित जलु छाइआ राम।।
अंम्रित जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे।
जैजैकारु भइआ जग अतरि लाथे सगल विसूरे।।
पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइआ।
अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइआ।।१।।
नव निधि सिधि रिधि दीने करते तोटि न आवै काई राम।
खात खरचत बिलछत सुखु पाइआ करते की दाति सवाई राम।।
दाति सवाई निखुटि न जाई अतरजामी पाइआ।
कोटि बिघन सगले उठि नाठे दूखु न नेडै आइआ।।
साति सहज आनद घनेरे बिनसी भूख सबाई।
नानक गुण गावहि सुआमी के अचरजु जिसु वडिआई राम।।२।।
जिस का कारजु तिन ही कीआ माणसु किआ वेचारा राम।
भगत सोहनि हरि के गुण गावहि सदा करहि जैकारा राम।।
गुण गाइ गोबिन्द अनद उपजे साधसगति सगि बनी।
जिनि उदमु कीआ ताल केरा तिस की उपमा किआ गनी।।
अठसठि तीरथ पुन्न किरिआ महा निरमल चारा।
पतित पावनु बिरदु सुआमी नानक सबद अधारा।।३।।
गुण निधान मेरा प्रभु करता उसतति कउनु करीजै राम।
सता की बेनती सुआमी नामु महा रसु दीजै राम।।
नामु दीजै दानु कीजै बिसरु नाही इक खिनो।
गुण गोपाल उचरु रसना सदा गाईऐ अनदिनो।।
जिसु प्रीति लागी नाम सेती मनु तनु अंम्रित भीजै।
बिनवति नानक इछ पुनी पेखि दरसनु जीजै।।४।।

(राग सूही – छन्द – १०) गुरु अर्जन देव/७८३

परमात्मा सन्तो के कार्य सम्पन्न कराने के लिए स्वय उपस्थित रहता ह काय करवाने के लिए वह स्वय आता है। उसकी कृपा से यह धरती सुन्दर हा गइ हे। सरोवर सुशोभित है और उसमे अमृत समान निर्मल जल भर गया हे। अमृत जल भरा है सब कार्य सम्पन्न हो गया है और सभी मनोरथ पूर हा गए ह। ससार मे जय जयकार हुआ है सब दुख दूर हो गए है। वेद पुराणा म अ्गुत अविनाशी पूर्ण प्रभु का यश गान हुआ है इसलिए गुरु नानक का कथन ह कि उसका नाम जपने से वह अपने विरद की रक्षा करता है।।१।।

परमात्मा ने सभी रिद्धि सिद्धि और निधिया दी है कोई अभाव नही रह गया हे। ससार के सभी कार्य करते हुए सुख का अनुभव हो रहा हे। परमात्मा की देन नित्य बढती ही जाती है। प्रभु को पाकर जीव की उपलब्धिया बढती ही जाती है कभी समाप्त नही होती करोडा विघ्न अपने आप दूर हो जात हे काइ दुख निकट नही आता। मन को शान्ति मिलती है। सहज अवस्था म आनन्द प्राप्त हे सभी प्रकार की तृष्णा का नाश हो जाता है। गुरु नानक प्रभु क गुण गाते ह जिनकी बडाई आश्चर्यमयी हे।।२।।

जिसका कार्य था उसी ने पूरा कर दिया बेचारे मनुष्य के हाथ म क्या ह? भक्त जन हरि के गुण गा कर सदा प्रतिष्ठित होते हे और सदा उसी की जय जयकार करते है। प्रभु के गुण गान से आनन्द होता हे आर सत्सगति प्राप्त होती हे। जिसने सरोवर को तैयार करने का उद्यम किया ह उसकी उपमा नही की जा सकती। इस सरोवर मे अडसठ तीथ पुण्य कर्म सब आ गय ह। गुरु नानक को पतित पावन विरद रक्षक परमात्मा का ही आश्रय ह।।।३।।

मेरा परमात्मा गुणो का भण्डार हे उस की पूर्ण स्तुति कौन कर सकता ह। उस क चरणा मे सन्तो की विनती है कि वह हमे नाम रस प्रदान कर। नाम का दान दकर वह हमारे भीतर ही स्थिर हो जावे क्षण भर के लिए भी हम स दूर न हा। ह मरी जिह्वा! तू रात दिन प्रभु के गुणो का गान कर जिस क नाम म प्रीति लगन से तन मन अमृतमय हो जाता हे। गुरु नानक विनती करत हे कि ह वाहि गुरु! मरी एक इच्छा पूरी कर दो मुझे दर्शन दो मरा जीवन उसी म हे।।४।।

❋❋❋❋❋

(१५) प्रभु भक्त वत्सल

वि०—२५

सता के कारजि आपि खलोइआ हरि कमु करावणि आइआ राम।
धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अम्रित जलु छाइआ राम।।
अम्रित जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे।
जैजैकारु भइआ जग अतरि लाथे सगल विसूरे।।
पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइआ।
अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइआ।।१।।
नव निधि सिधि रिधि दीने करते तोटि न आवै काई राम।
खात खरचत बिलछत सुखु पाइआ करते की दाति सवाई राम।।
दाति सवाई निखुटि न जाई अतरजामी पाइआ।
कोटि बिघन सगले उठि नाठे दूखु न नेडै आइआ।।
साति सहज आनद घनेरे बिनसी भूख सबाई।
नानक गुण गावहि सुआमी के अचरजु जिसु वडिआई राम।।२।।
जिस का कारजु तिन ही कीआ माणसु किआ वेचारा राम।
भगत सोहनि हरि के गुण गावहि सदा करहि जैकारा राम।।
गुण गाइ गोबिन्द अनद उपजे साधसगति सगि बनी।
जिनि उदमु कीआ ताल केरा तिस की उपमा किआ गनी।।
अठसठि तीरथ पुन्न किरिआ महा निरमल चारा।
पतित पावनु बिरदु सुआमी नानक सबद अधारा।।३।।
गुण निधान मेरा प्रभु करता उसतति कउनु करीजै राम।
सता की बेनती सुआमी नामु महा रसु दीजै राम।।
नामु दीजै दानु कीजै बिसरु नाही इक खिनो।
गुण गोपाल उचरु रसना सदा गाईऐ अनदिनो।।
जिसु प्रीति लागी नाम सेती मनु तनु अम्रित भीजै।
बिनवति नानक इछ पुनी पेखि दरसनु जीजै।।४।।

(राग सूही – छन्द – १०) गुरु अर्जन देव/७८३

परमात्मा सन्तो के कार्य सम्पन्न कराने के लिए स्वय उपस्थित रहता ह कार्य करवाने के लिए वह स्वय आता है। उसकी कृपा से यह धरती सुन्दर हा गइ है। सरोवर सुशोभित है और उसमे अमृत समान निर्मल जल भर गया ह। अमृत जल भरा है सब कार्य सम्पन्न हो गया है और सभी मनोरथ पूरे हा गए ह। ससार मे जय जयकार हुआ है सब दुख दूर हो गए हे। वेद पुराणा म अच्युत अविनाशी पूर्ण प्रभु का यश गान हुआ है इसलिए गुरु नानक का कथन ह कि उसका नाम जपने से वह अपने विरद की रक्षा करता है।।१।।

परमात्मा ने सभी रिद्धि सिद्धि और निधिया दी है कोई अभाव नही रह गया हे। ससार के सभी कार्य करते हुए सुख का अनुभव हो रहा हे। परमात्मा की देन नित्य बढती ही जाती है। प्रभु को पाकर जीव की उपलब्धिया बढती ही जाती है कभी समाप्त नही होती करोडो विघ्न अपने आप दूर हो जात ह काइ दुख निकट नही आता। मन को शान्ति मिलती है। सहज अवस्था म आनन्द प्राप्त हे सभी प्रकार की तृष्णा का नाश हो जाता है। गुरु नानक प्रभु क गुण गात हे जिनकी बडाई आश्चर्यमयी है।।२।।

जिसका कार्य था उसी ने पूरा कर दिया बेचारे मनुष्य के हाथ म क्या ह? भक्त जन हरि के गुण गा कर सदा प्रतिष्ठित होते हे और सदा उसी की जय जयकार करते है। प्रभु के गुण गान से आनन्द होता ह आर सत्सगति प्राप्त हाती है। जिसने सरोवर को तैयार करने का उद्यम किया ह उसकी उपमा नही की जा सकती। इस सरोवर मे अडसठ तीर्थ पुण्य कर्म सब आ गय ह। गुरु नानक को पतित पावन विरद रक्षक परमात्मा का ही आश्रय ह।।।३।।

मेरा परमात्मा गुणो का भण्डार हे उस की पूर्ण स्तुति कौन कर सकता ह। उस क चरणा मे सन्तो की विनती हे कि वह हमे नाम रस प्रदान कर। नाम का दान दकर वह हमार भीतर ही स्थिर हो जावे क्षण भर क लिए भी हम स दूर न हा। ह मरी जिह्वा! तू रात दिन प्रभु के गुणो का गान कर जिस क नाम म प्रीति लगन से तन मन अमृतमय हो जाता है। गुरु नानक विनती करत ह कि ह वाहि गुरु! मेरी एक इच्छा पूरी कर दा मुझे दर्शन दो मरा जीवन उसी म ह।।४।।

❋❋❋❋❋

रचयिता परिचय

गुरु ग्रन्थ सहिब मे कुल रचनाकारो की सख्या ३६ है जिनको चार भागो मे बाटा जाता है। पहले वर्ग मे गुरु साहिबान है दूसरे मे निर्गुण भक्त तीसरे मे भाट या चारण और चौथे वर्ग मे गुरु घर से सम्बन्धित सज्जन। वाणी के महत्त्व ओर विस्तार को देखते हुए पहले वर्ग मे चार गुरु (गुरु नानक देव अमर दास राम दास अर्जन देव) और दो भक्त (कबीर और फरीद) है। दूसरे वर्ग मे दो गुरु (गुरु अगद देव और गुरु तेग बहादुर) और दो भक्त (नाम देव और रैदास) है। तीसरे वर्ग मे अन्य ११ भक्त है और चौथे वर्ग मे भाट व अन्य गुरु घर से सम्बन्धित व्यक्ति है इस प्रकार गुरु ग्रन्थ साहिब का मुख्य भाग प्रथम दो वर्ग के केवल १० रचनाकारो (६ गुरु और ४ भक्तो) द्वारा रचित है।

गुरु ग्रन्थ साहिब मे प्रथम पाच गुरुओ (गुरु नानक अगद अमरदास राम दास और अर्जन देव जी) तथा नवम गुरु तेग बहादुर जी की रचनाय सकलित है। पहले चार गुरुओ का चयन पैतृक परम्परा से नही था। गुरु नानक देव जी ने अपने पुत्रो को छोडकर अपने शिष्य लहना जी को अपना उत्तराधिकारी बनाया जो गुरु अगद देव जी के नाम से प्रसिद्ध है। इसी प्रकार तीसरे गुरु अमरदास जी अपनी वृद्धावस्था तक गुरु अगद देव जी की सेवा करते रहे और ७३ वर्ष की आयु मे गुरु गद्दी पर प्रतिष्ठित किये गये। चौथे गुरु रामदास जी तीसरे गुरु के दामाद थे वे निर्धन थे और चने उबाल कर (घूघनिया) बेचा करते थे तीसरे गुरु उन की ईमानदारी की जीविका से प्रभावित हुए और अपनी पुत्री बीबी भानी जी का विवाह जेठा जी मे किया जो बाद मे गुरु राम दास के नाम से चतुर्थ गुरु हुए। बीबी भानी ने गुरु गद्दी के पैतृक होने का वर अपने पिता से प्राप्त किया। इस प्रकार उनके पिता पति और पुत्र तीनो को गुरु गद्दी प्राप्त हुई। पचम गुरु अर्जन देव जी को अपने नाना से वाणी का बोहित (भवसागर पार करने को जहाज) होने का वरदान भी मिला और उन्होने गुरु ग्रन्थ साहिब का सकलन १६०४ ईसवी मे किया।

प्रथम पाच गुरुओ का सिक्ख धर्म के विकास मे अलग अलग रुप से योगदान रहा है। गुरु नानक देव जी की शिक्षाओ के आधार पर सिक्ख धर्म की नीव पडी। गुरु अगद देव जी ने पजाब की लोक लिपि को सशोधित करके गुरुमुखी लिपि का प्रचार प्रसार किया। गुरु अमर दास जी के द्वारा गोविन्द वाल नगर बसाया गया तथा लगर (सामूहिक भोजन) का आरम्भ किया गया। चतुर्थ गुरु

राम दास जी ने अमृतसर सरोवर का निर्माण कराया। गुरु अर्जुन देव जी ने सरोवर का काम पूरा कराया तथा निकटवर्ती स्थान तरन तारन मे एक सरोवर बनवाया तथा कोढियो की सेवा का पहला आश्रम स्थापित किया।

गुरु नानक दव जी देवीय प्रतिभा के धनी थे। उन्होने बचपन से सस्कृत और फारसी का अध्ययन किया। उन का यह अध्ययन उन की २२ वर्ष की यात्राओ मे उपयोगी सिद्ध हुआ। लोक उद्धार के लिए की गई यात्राओ मे गुरु नानक देव जी ने अपने विचार स्थानीय भाषा मे व्यक्त किये। जगन्नाथ पुरी मे उन्होने सस्कृत निष्ठ हिन्दी मे रचना की तो मक्का मे अरबी फारसी मे शबद उच्चारण किया। गुरु नानक देव जी के १६ रागो मे ६७६ पद सकलित है। गुरु अगद देव जी ने समास शैली मे प्रभु विरह वर्णन किया है। तृतीय गुरु अमरदास जी की वाणी मुख्यत सरल पजाबी भाषा मे है गुरु नानक देव जी के कई सबदो की इन्होने सरल पजाबी मे व्याख्या की है इन की रचना अनदु साहिब को नित्त नेम से पढी जाने वाली बाणी मे स्थान दिया जाता है। गुरु राम दास जी की वाणी मधुर सरल पजाबी भाषा मे है इन की वाणी मे गुरु सेवा और गुरु दर्शन उत्कण्ठा का स्वर प्रधान है। गुरु रामदास जी की रचना २६ रागो मे है। गुरु ग्रन्थ साहिब मे पाचवे गुरु अर्जुन देव जी की वाणी सर्वाधिक है। इन की कुल रचना २२१६ छन्दो मे है इस मे सबद सवैये सलोक अष्टपदी और दोहा चोपाई आदि सम्मिलित है। उनकी वाणी सुखमनी दोहा चौपाई शैली मे है। गुरु अर्जन देव जी ने ब्रज भाषा के साथ पजाबी सस्कृत (सहसक्रिती) गाथा लहदा (पश्चिम पजाब) सराइची (सिन्धी की उपभाषा) का प्रयोग किया है।

गुरुओ मे प्रथम पाच गुरुओ के अतिरिक्त नवम गुरु तेग बहादुर जी की वाणी गुरु ग्रन्थ साहिब मे सकलित है। नौवे गुरु की वाणी गुरु गोविन्द सिह जी ने दमदमा साहिब मे निवास करते समय १७०५ ईसवी मे गुरुग्रन्थ साहिब के सकलन (बीड) मे सम्मिलित की। नौवे गुरु के ५८ सबदो और ५८ श्लोको की रचना उपलब्ध है। इन को मिलाकर गुरु ग्रन्थ साहिब का अन्तिम रुप तेयार किया गया।

रचनाकारो का द्वितीय वर्ग १५ भक्तो का है जिनमे कबीर फरीद नामदेव तथा रविदास की वाणी का विस्तार विशेष है।

कबीर गुरु नानक देव जी के पूर्ववर्ती थे इन के सबद सलोक और पट्टी वाणी सकलित की गई है। कबीर कर्मकाण्ड पाखण्ड और अत्याचार के विरोधी थे।

उन्होने सत्य को ही परमेश्वर माना और मूर्ति पूजा का विरोध किया। कबीर के कुछ सबदो का भाव साम्य गुरु नानक तथा अन्य गुरुओ की वाणी से है। कबीर के सबदो मे पजाबी भाषा का प्रभाव परिलक्षित है।

भक्त कवियो मे नाम देव जी के ६१ पद (सबद) सग्रहीत है जिनमे एक की भाषा शुद्ध मराठी है अन्य की भाषा मराठी मिश्रित हिन्दी है। नाम देव जी उत्तर भारत मे पहले हरिद्वार रहे फिर गुरदास पुर जिले के घमान गाव मे बस गय। घमान गाव के समीप नाम देव जी के नाम से एक नामियाना तालाब भी है। इस स्थान पर उन का सुन्दर स्मारक बना हुआ है नाम देव जी छीपा जाति के थे और प्रेम भक्ति के गायक थे।

सन्त रैदास जी जाति के चमार थे और काशी के आस पास ढोर ढोने का कार्य करते थे। काशी मे सत्सग के कारण वे एक बडे महात्मा के रुप म प्रसिद्ध हुए और मेवाड की झाली रानी ने इन से प्रभावित होकर इन की शिष्यता स्वीकार की। एकान्त निष्ठा सात्विक जीवन प्रेम भक्ति आत्म समर्पण इनके सबदो की प्रमुख विशेषताए है। रविदास जी के ४० सबद गुरु ग्रन्थ साहिब म है।

भक्तो के अतिरिक्त गुरु ग्रन्थ साहिब मे सूफी फकीर शेख फरीद की वाणी भी गुरु ग्रन्थ साहिब मे है इनको पजाबी साहित्य का पितामह माना जाता हे इन की भाषा मुलतान के आस पास बोली जाने वाली पजाबी की उपभाषा है। शेख फरीद के ११२ श्लोक और ४ सबद सकलित किये गये है। गुरु नानक देव जी की भेट शेख फरीद के उत्तराधिकारी शेख इब्राहीम से हुई थी। इन की वाणी मे प्रेम वेदना और ससार अनित्यता सूफी शैली मे वर्णित है।

सूफी शेख फरीद और तीन मुख्य भक्तो (नामदेव रैदास और कबीर) के बाद अन्य १० भक्तो की वाणी मे त्रिलोचन के चार बेणी और धन्ना के तीन तीन जेदव और भीखन के दो दो तथा सेन सधना पीपा रामानन्द और परमानन्द का एक एक पद सम्मिलित है। नाम रत्न की प्राप्ति अथवा जो ब्रह्माण्डे साइ पिण्ड से सम्बन्धित भीखन पीपा रामानन्द के सबद वर्तमान चयन मे रखे गये हे।

रचनाकारो का तीसरा वर्ग भाटो की वाणी का है। जिनके १२३ सवेया राग वाणी के बाद दिये गये हैं। सवैया शब्द का उपयोग यहा गुरुओ की प्रशस्ति म उच्चारित सबदो के अतिरिक्त बाणी से है जिनमे सवैया छप्पय या अन्य आठ पक्ति के छन्द सम्मिलित है। सवैयो मे सर्वाधिक रचना कलसहार की ह जिसन

पाचो गुरुओ की प्रशस्ति गाई है। भट कीरत के द्वारा तीसरे और चौथे गुरु की प्रशस्ति की गई है भट मथुरा ने चौथे और पाचवे गुरु की प्रशस्ति मे सात सात सवेया उच्चारित किये है।

गुरु घर से सम्बन्धित रचनाकारो मे भाई मरदाना गुरु नानक देव जी के साथ रबाब बजाते थे। आप भी तलवण्डी के ही निवासी थे। गुरु जी ने इन्हे भाई कहकर सम्मान दिया। इनके तीन सलोक राग विहागडा की वार मे सग्रहीत है।

राय बलवण्ड और गुरु अर्जन देव जी की सेवा मे उपस्थित रहकर कीर्तन करते थे। गुरु से विमुख होने पर इन को कष्ट हुआ। बाद मे इन्होने प्रायश्चित किया और गुरु महिमा की एक वार का उच्चारण किया जो राग रामकली मे सग्रहीत है।

बाबा सुन्दर भल्ला वश के थे और तीसरे गुरु अमरदास जी के प्रपौत्र थे। गुरु अमर दास जी ने मृत्यु के समय कीर्तन के जो उपदेश दिये थे उनको सद्दु (बुलावा) के रुप मे छ छन्दो मे बाबा सुन्दर जी ने अकित किया। गुरु अमर दास जी के आदेश का पालन करते हुए उनकी मृत्यु के बाद सद्दु का पाठ किया गया।

वर्तमान चयन मे रचयिता वार वाणी

रचयिता	सबद	अष्टपदी	छद	श्लोक	पउडी
गुरु नानक	२०	५	४	१२	१
गुरु अगद देव	—	—	—	३	—
गुरु अमर दास	३	—	१	३	२
गुरु राम दास	१०	१	६	२	१
गुरु अर्जन देव	४४	२	४	६	१
गुरु तेग बहादुर	७	—	—	—	—
भक्त	१६	१	—	५	—
	१०३	६	१५	३४	५

नोट —उक्त के अतिरिक्त भटो के ५ सवैये गुरु अर्जन देव के ३ अन्य छन्द मिलाकर १७४ अश हैं जो १६३ शीर्षक (अको) मे दिये गये है।

बाणी विवरण (रचयिता वार सकलन)

गुरु ग्रन्थ साहिब मे गुरु भक्तो और भटो द्वारा रचित वाणी का सकलन निम्न प्रकार है –

	रचयिता का नाम	*राग*	*छन्द*	*पद सख्या*
१	गुरु नानक देव	१६	सबद पउडी श्लोक छन्द	६७६
२	गुरु अगद देव	६	श्लोक	६१
३	गुरु अमर दास	१७	सबद पउडी श्लोक छन्द	६०१
४	गुरु राम दास	२६	सबद पउडी श्लोक छन्द	६७६
५	गुरु अर्जन देव	३०	सबद पउडी श्लोक छन्द दोहा चौपाई सवैया	२२१६
६	गुरु तेग बहादुर	१५	सबद सलोक	११६
				४६४५

भक्त वाणी

क्रम सख्या	*नाम*	*राग*	*विवरण*	*पद सख्या*
१	जय देव	२	गूजरी १ भैरउ १	२
२	नाम देव	१७	भैरउ गोण्ड आदि	६१
३	त्रिलोचन	३	सिरी गूजरी धनासरी	४
४	बेनी	३	सिरी प्रभाती रामकली	३
५	धन्ना	२	आसा धनासरी	३
६	कबीर	१६	गउडी आसा आदि	५४०(श्लाक सहित)
७	रविदास	१६	गउडी आसा सोरठि	४०
८	फरीद	२	आसा सूही श्लोक	११६
९	परमानन्द	१	सारग	१
१०	सधना	१	बिलावलु	१
११	रामानन्द	१	बसन्त	१
१२	पीपा	१	धनासरी	१
१३	सेन	१	धनासरी	१
१४	भीखन	१	सोरठि	२
१५	सूरदास	१	सोरठि	१(एक पक्ति मात्र)
				७८२
भाटो द्वारा रचित सवैये (कलसहार मथुरा कीरत आदि)				१२३
सत्ता बलवण्ड मरदाना				१७
			योग	**५८७१**

गुरु ग्रन्थ साहिब मे बाणी विवरण (आधार छन्द भाषा)

	गेय साहित्य (वर्ग क)				नीति साहित्य (वर्ग ख)		वार →	विशेष बाणी →
	सबद	अष्टपदी	सोलहे	छन्द	सरस्कृत	गाथा	फुनहे	श्लोक वारो से अधिक
गुरु १	२०६	१२२	२२	२५	—	—	—	३३
गुरु २	—	—	—	—	—	—	—	—
गुरु ३	१७२	६०	२४	२६	—	—	—	६७
गुरु ४	२६४	३१	२	३८	—	—	—	३०
गुरु ५	१३२२	६३	१४	६३	६७	२४	३४	२२
गुरु ६	५६	—	—	—	—	—	—	५७
	२०२६	३०६	६२	१४५	६७	२४	३४	२०६
भक्त वाणी	३४६							
	२३७५							

योग गय साहित्य=२८८८

योग नीति साहित्य ७०७+सवेय १५३=८६०

(वर्ग ग)

वार	पउडी	श्लोक
गुरु १	७८	२२१
गुरु २	—	६२
गुरु ३	८५	३४५
गुरु ४	१८६	१०६
गुरु ५	१११	२५५
	४६३	कबीर ३
सत्ता बलवन्त	८	६६२
	४७१	

छन्द सख्या
वर्ग क = २८८८
वर्ग ख = ८६०
वर्ग ग = १४६३
वर्ग घ = २८७ + सुखमनी
५४६८ + सुखमनी

सुखमनी

गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी को तीन भागो मे बॉटा जा सकता हे— मुक्तक भक्तिपरक पदावली नीतिपरक श्लोक और पउडी तथा लम्बी दार्शनिक रचनाये। सुखमनी वाणी २४ अष्टपदियो मे गुरु अर्जन देव जी द्वारा रचित लम्बी दार्शनिक रचना है जिसकी रचना दोहा चौपाई शेली मे की गई है। अष्टपदी के प्रत्येक पद मे चौपाई के १० चरण या पाच अर्द्धाली है अष्टपदी के आरम्भ मे सलोकु (दोहा) दिया गया है जिस की व्याख्या अगले आठ पदो मे की गई ह।

सुखमनी का विषय नाम साधना के द्वारा सहज अवस्था को प्राप्त करना है जिसे प्रथम अष्टपदी के पहले पद के बाद दिये गए रहाउ मे स्पष्ट किया गया ह —

सुखमनी सुख अम्रित प्रभ नामु। भगत जना कै मनि बिस्राम।

सुखमनी एक व्यवहारिक सरल बोधगम्य अध्यात्मिक रचना है।

सुखमनी मे भावो का क्रमिक विकास है— पहली छ अष्टपदी मे परमात्मा की स्तुति नाम महिमा और प्रभु कृपा का वर्णन है। सुखमनी का आरम्भ नाम सिमरन (स्मरण) से होता है नाम साधना के द्वारा पूरे गुरु की प्राप्ति होती ह। प्रत्यक अष्टपदी के विषय का ज्ञान पहले पद की प्रथम पक्ति से लग जाता ह जेसे सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावहु।

अष्टपदी ७–६ तक सज्जन पुरुषो की कथा है अष्टपदी ७ मे सत्सगति (साधजनो के सत्सग) का गान है अष्टपदी आठ मे ब्रह्मज्ञानी के लक्षण दिये गए हे अष्टपदी ६ मे अलग अलग समुदाय के लोगो मे अपेक्षित गुणो की चर्चा ह जेसे अपरस वैष्णव भगौती पण्डित राम दासी और जीवनयुक्त। अष्टपदी १०–१२ तक परमात्मा के करता पुरुख रुप का वर्णन है। पूर्वार्द्ध के अन्तिम पद मे परमात्मा के स्वरूप कथन मे प्रत्येक पक्ति मे शब्दो का तीन तीन बार दोहराव है —

सति सति सति प्रभु सुआमी।
गुर परसादि किनै विरलै जानी।।
पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत।
नाम जपत नानक मन प्रीति।।

सुखमनी के उत्तराध मे पुन सन्त शरण और परमात्मा का स्वरूप विवेचन

किया गया हे। इसमे साध या ब्रह्म ज्ञानी के स्थान पर सिख अथवा ठाकुर के सेवक का वर्णन हे। अष्टपदी–१७ मे सत्स्वरूप प्रभु के वर्णन मे जपु जी क प्रथम श्लोक को आधार बनाया गया है–

आदि सच जुगादि सच। है भि सचु नानक होसी भि सचि।।

सुखमनी की अन्तिम छ अष्टपदियो मे गुरमत दर्शन का साराश है अष्टपदी १६–२० मे नाम भक्ति का विवेचन है। भक्ति के सन्दभ मे एको जपि एका सालाहि का उपदेश दिया गया है। उसी एक से ही अनेक विस्तार होता हे अनिक बिसथार एक ते भये। अष्टपदी २१–२२ मे प्रभु द्वारा सृष्टि रचना और उस मे व्याप्त होने का वर्णन है। गुरु अर्जन देव जी पाचवी अष्टपदी मे माया के मिथ्या होन का वर्णन कर चुके है– मिथ्या से अभिप्राय क्षणिक या परिवर्तनशील है अस्तित्वहीन होना नही। अष्टपदी २३ मे इस तथ्य को स्पष्ट किया गया हे–

आपि सति कीआ सभु सति। तिसु प्रभ ते सगली उतपति।

सुखमनी की अन्तिम दो अष्टपदियो मे सदगुरु स्तवन ओर सुखमनी वाणी की महिमा हे सदगुरु के ज्ञान अजन से अज्ञान के अन्धेरे का नाश होता है ओर मन मे प्रकाश होता है गुरु का म्लिन हरि कृपा से ही सभव है। गुरु ग्रन्थ साहिब की प्रकाश स्वरूप वाणी मे सुखमनी वास्तव मे ध्रुवतारा के समान प्रकाश मान है। इस के नाम और भक्ति के सन्देश को दृढता से अपनाना चाहिए–

प्रभु की उसतति करहु सत मीत।
सावधान एकागर चीत।

तभी हम इस की टेक से आत्मिक शान्ति प्राप्त कर सकेग।

सुखमनी सुख अम्रित प्रभ नामु।
भगत जना के मनि बिस्राम।

—————

जनम साखी परम्परा

गुरु नानक देव जी के जीवन वृत्तान्त को जनम साखी कहा जाता है। जन्म साखी लिखने की परम्परा का आरम्भ गुरु हरगोविन्द जी (१६०६–१६४४) क समय मे हुआ। भाई गुरदास जी गुरु अमर दास जी के भाई दातार चन्द्र भल्ले के पुत्र और सिख धर्म के व्याख्याता है। उन्होने ही गुरु अर्जन देव जी के निर्देश से गुरु ग्रन्थ साहिब का लेखन कार्य किया। भाई गुरदास जी ने पजाबी भाषा म गुरमत व्याख्या अपने ग्रन्थ ज्ञान रत्नावली मे की है। उक्त ग्रन्थ की प्रथम वार मे ४५ पउडी है जिनमे से पउडी २५ से ४५ मे गुरु नानक देव जी के जीवन की कुछ घटनाओ का वर्णन किया है। पउडी २८–२६ मे कैलाश पर्वत की यात्रा ३२–३३ मे मक्का की यात्रा ३५–३६ मे बगदाद की यात्रा तथा पउडी ३८ मे करतार पुर निवास का वर्णन है। फिर ३६–४३ तक अचल बटाला जा कर सिद्ध गाष्ठि ४४ मे मुलतान यात्रा और ४५ मे करतार पुर मे ज्योति लीन होने का वर्णन ह।

भाई गुरदास जी की काव्यमयी वार के २० छन्दो द्वारा जनम साखी परम्परा का श्री गणेश हुआ। गुरु नानक देव जी की चार जनम साखिआ प्रसिद्ध ह। प्रथम साखी भाई गुरुदास की वार से पहले गुरु नानक देव जी के शिष्य भाई वाले के नाम से साखी भाई बाले वाली कहलाती है। इस का रचना काल भाई गुरदास जी से पूर्व होना सदिग्ध हे। यह साखी सामाजिक पक्ष को ध्यान म रखकर लिखी गई है। इसमे भाई बहन के प्रेम सुलतान पुर मे साधु आगमन ओर मलिक भागो के पकवान आदि की कथाए रोचक ढग से दी गई है।

गुरु नानक देव जी की दूसरी जन्म साखी भाइ मिहरवान द्वारा रचित हे जा गुरु अर्जन दव जी के बड भाई प्रिथी चन्द के पुत्र थे। मिहरवान जी विद्या क अनुरागी थे। उन्हे गुरु अर्जन देव जी का अनुराग प्राप्त था। भाई मिहरवान जी न गुरु नानक जी के सबदो की व्याख्या को आधार बनाया ओर उनसे सम्बन्धित भावा के अनुसार गुरु नानक देव जी की जीवनी की पृष्ठ भूमि स्पष्ट की। उन की जनम साखी का दूसरा भाग उनके पुत्रो हरि जी और चतुर्भुज जी ने पूरा किया। मिहरवान हरि जी और चतुर्भुज के द्वारा गुरु वाणी की व्याख्या प्रणाली (भाष्य) का एक स्वरूप रखा जिसके माडल पर अन्य भाषाआ मे कोई ग्रन्थ नही ह यह जीवनी भाष्य और चिन्तन की मिली जुली विधा हे।

गुरु नानक देव जी की तीसरी जन्म साखी विलायत वाली जन्म साखी कहलाती है। इसे १८१५ मे हेनरी थामस कालब्रुक इग्लैण्ड ले गया था यह आजकल कामन वैल्थ लायब्रेरी लन्दन मे है। कुछ विद्वानो के अनुसार इस का लेखन भाई सेवा दास ने १५८८ मे किया। वास्तविक रचना १६३४ के आस पास मानी जाती है। इस जन्म साखी मे बहुमूल्य जानकारी है।

गुरु नानक देव जी की चौथी जनम साखी श्री गुरु गोविन्द सिह जी के निर्देश से भाई मनी सिह जी ने लिखी। मनी सिह जी ने भाई गुरदास जी की वार को आधार बनाकर जीवन व्याख्या की। इस मे पश्चिम यात्रा का वर्णन विस्तार से है।

पश्चिम के विद्वान मैकालिफ ने सिक्ख धर्म सम्बन्धी चार भागो मे प्रथम भाग मे गुरु नानक देव जी के जीवन तथा उच्चारण की गई वाणी का विवेचन किया हे। गुरु नानक देव जी के द्वारा उच्चारित वाणी को उन की यात्रा के साथ एक क्रम मे प्रस्तुत किया है जिस का आरम्भ यज्ञोपवीत सस्कार से होता है। दया कपाह सन्तोख सूत सलोक का उच्चारण गुरु जी ने उस समय किया। फिर उनकी आध्यात्मिक अवस्था पर व्याकुल होकर उनके पिता ने बुलाया तो वैद बुलाया वैदगी सलोक का उच्चारण किया गया।

गुरु जी की यात्राओ का पूरा विवरण तिथिवार भाई साहिब सिह जी ने निर्धारित किया है। इस के अनुसार प्रसिद्ध आरती के सबद का उच्चारण २७ चैत्र १५६५ को जगन्नाथ जी मे किया गया। इआनडीए मानडा काइ करेहि सबद का उच्चारण आगरा मे ४ भादो १५६६ को किया गया। पूरब की यात्रा मे इलाहाबाद मे झूसी मे स्री राग के चौथे पद लबु कुत्ता कूड चूहडा का उच्चारण किया गया। बनारस मे गुरु बाग मे चतुर दास से सालग्राम बिपू पूजि़ मनावहु सबद का उच्चारण किया। मक्का की यात्रा मे अरबी फारसी के सबद यक अरज गुफ्तम का उच्चारण किया गया। कश्मीर यात्रा मे ब्रह्म दास को सहसर दान दे इन्द्रु रोआइआ सलोक से नानक दुखीआ सभु ससार का उपदेश दिया गया निष्कर्ष रुप मे यह कहा जा सकता है कि गुरु नानक जी ने जो विशेष सन्दर्भ मे उदगार व्यक्त किये वह मानवो के उपदेश के लिए है–

परथाइ साखी महापुरख बोलदे साझी सगल जहानै।

दशम ग्रन्थ

गुरु गोविन्द सिह जी ने अपनी वाणी को पूर्ववर्ती गुरुओ की वाणी के साथ गुरु ग्रन्थ साहिब मे सम्मिलित नही किया। उनकी वाणी का सकलन उन की मृत्यु के बाद अमृतसर के प्रथम मुख्य ग्रन्थी भाई मनी सिघ ने १७३४ मे किया। इस ग्रन्थ को दशम ग्रन्थ कहा जाता है।

गुरु गोविन्द सिह जी आनन्द पुर निवास के बाद १६ वर्ष की आयु मे नाहन रियासत मे यमुना जी के किनारे शान्तमय वातावरण मे गये तथा वहा पावटा साहिब नगर बसाया। पावटा मे एक किले का निर्माण भी कराया गया। पावटा साहिब मे रहकर गुरु जी ने साहित्य रचना की और विद्या प्रेमी सिक्खो को सस्कृत अध्ययन के लिए वाराणसी भेजा जिन्हे निर्मले सिक्ख कहा जाता है। गुरु जी के दरबार मे ५२ कवि थे।

दशम ग्रन्थ मे सगृहीत रचनाओ का विवरण निम्न प्रकार है—

१ जापु साहिब — यह वाणी परमात्मा के नाम स्मरण की अनूठी रचना है तथा इसके १९६ छन्दो मे परमात्मा के लगभग ५५० नामो का जाप है। जापु साहिब परमात्मा के नामो की शुष्क सूची न होकर तरगमयी काव्य त्रिवेणी है जो ब्रजभाषा फारसी और पजाबी के सगम से प्रभु के सभी नामो को अपने मे समेटे है। यह वाणी इस बात का प्रमाण है कि ध्यान की अद्वैत अवस्था मे किस प्रकार धर्म और भाषा की दीवारे हट जाती है और प्रभु से साक्षात्कार होता है।

२ अकाल उसतत — इस बाणी मे काल रहित परमात्मा की स्तुति की गई है। छोटे छन्दो मे परमात्मा के नाम स्वत स्फूर्त होते प्रतीत होते है। सवैयो मे प्रेम रस के माधुर्य की मिठास है कर्मकाण्ड को छोडकर प्रेम से ही प्रभु प्राप्ति का सन्देश है।

गुरु नानक देव जी ने राग आसा के एक सबद मे यह वर्णन किया है कि प्रभु को पाने के लिए देवता योगी यती पीर पैगम्बर ज्ञानी और आस्तिक अलग अलग वेश भूषा अपनाते है। मनुष्य को अपने मार्ग या सम्प्रदाय का अभिमान नही होना चाहिए। जाति का अभिमान मिथ्या है। (राग आसा सबद—३३) गुरु गोविन्द सिह जी ने इस भाव को मानस की जात सबै एकै पहिचानबो मे स्पष्ट किया है—

कोऊ भइओ मुडीआ सनिआसी कोऊ जोगी भइओ
कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो।

हिन्दू तुरक कोऊ राफजी इमामसाफी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो।।
करता करीम सोई राजक रहीम ओई
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो।
एक ही सेव सब ही को गुरदेव एक
एक ही सरूप सबै एकै जोत जानबो।।

(अकाल उसतत १५/८५)

गुरु जी ने अनेकता मे एकता को मूर्त रुप दिया है मदिर और मस्जिद एक हैं पुरान और कुरान एक है सभी मनुष्य पच तत्त्वो से मिलकर बने हैं। अलग अलग देशो के वेष के अनुसार बाहरी भेस अलग अलग है–

देहरा मसीत सोई पूजा और निवाज ओई
मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाउ है।
देवता अदेव जच्छ गध्रब तुरक हिदू
निआरे निआरे देसन के भेस को प्रभाउ है।
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान
खाक बाद आतस औ आब को रलाउ है।
अलह अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई
एक ही सरुप सबै एक ही बनाउ है।।

(अकाल उसतत १६/८६)

अकाल उसतत वाणी के १० सवैयो (त्व प्रसादि) का पाठ प्रतिदिन नित्य नेम मे किया जााता है। इन सवैयो मे निर्गुण परमात्मा को स्री पति स्री भगवान स्री साहिब कहा गया है।

माते मतग जरे जर सगि अनूप उतग सरग सवारे।
कोट तुरग कुरग से कूदत पउन के गउन कउ जात निवारे।।
भारी भुजान के भूप भली बिधि निआवत सीस न जात बिचारे।
एते भए तु कहा भए भूपति अत कौ नागे ही पाइ पधारे।।

(त्व प्रसादि २/२२)

हिन्दी मे कवितावली मे तुलसीदास ने अपने इष्ट देव के प्रति इसी शैली मे सवैये लिखे है–

झूमत द्वार अनेक मतग जजीर जरे मद अम्ब चुचाते।
तीखे तुरग मनोगति चचल पउन के गउनहु ते बढ जाते।।
भीतर चन्द्रमुखी अवलोकति बाहर भूप खरे न समाते।
ऐसे भए तो कहा तुलसी जो पै जानकी नाथ के रग न राते।।

(कवितावली – उत्तरकाण्ड/४४)

३ **बचित्र नाटक** – दशम ग्रन्थ मे सग्रहीत बिचित्र नाटक गुरु जी के द्वारा ब्रजभाषा मे लिखित आत्म कथा है। गुरु जी साधुओ के परित्राण के लिए तथा दुष्टो के विनाश के लिए इस ससार मे एक पात्र के रुप मे आते है। वे भगवान का अवतार नही उस के दास है–

मे हो परम पुरख को दासा। देखन आया जगत तमासा।

बचित्र नाटक मे गुरु जी ने भगाणी नदौण और हुसैनी युद्धो का वर्णन किया है। वीर रस के अनुरूप इस मे प्रभु को काल रूप मे वर्णन किया गया है। ग्रन्थ के प्रथम अध्याय के १०१ छन्दो मे काल के स्वरूप की व्याख्या है। यह भगवान का वह विश्व रूप दर्शन है जिसे देख कर अर्जुन भयभीत हो गया था–

नमो चक्र पाण। अभूत भयाण।
नमो उग्रदाड। महा ग्रिसट गाड।।१/६

काल स्वरूप प्रभु के समक्ष राम और कृष्ण काल की सीमा मे बधे है।

जिते राम हूए। सभै अत मूए।
जिते कृष्णा ह्वै है। सभै अत जैहे।। (१/७०)

काल स्वरूप प्रभु का प्रतीक स्त्री खडग है जिस की स्तुति वीर रस का सुन्दर उदाहरण है–

खग खड बिहण्ड खल दल खण्ड अति रण मड बरबड।
भुजदड अखड तेज प्रचड जोति अमड भान प्रभ।।
सुख सता करण दुरमति दरण किलबिख हरण असि सरण।
जै जै जग कारण स्रिसटि उबारन मम प्रतिपारण जै तेग।

हे कृपाण के रूप मे प्रभु! तुम देशो को जीतने वाले हो। खलो के समूहो का नाश करते हो। वीर सैनिको का युद्ध मे आभूषण हो। तुम्हारे भुज्दण्ड बलिष्ठ है। तुम्हारी चमक और ज्योति सूर्य प्रभा के समान है। तुम सतो को आश्रय देते हो दुर्बुद्धि लोगो का दलन करते हो। पापो का नाश करते हो। हे भगवती

(कृपाण) मै तुम्हारी शरण मे हू। तुम जग के सृजन का कारण हो जीवो के पालक हो। हे प्रभु के स्वरूप मे कृपाण तुम्हारी जय हो मै तुम्हारे सरक्षण मे हू।

४ चडी चरित्र – गुरु गोविन्द सिह जी की चण्डी (दुर्गा) के चरित्र के सम्बन्ध मे तीन रचनाये है। चडी चरित्र उकति विलास की रचना कवित्त सवैया और दोहा छन्दो मे हुई है। दूसरी चण्डी चरित्र लिख्यते चौपाई नराज आदि छोटे छन्दो मे है। तीसरी चण्डी दी वार पउडी छन्द मे है। जैसा कि चण्डी दी वार मे कहा गया है निर्गुण प्रभु असीम हे उसी से सब बल प्राप्त करते है। चण्डी या दुर्गा का सृजन भी प्रभु ने किया और दैत्यो का नाश कराया।

चण्डी चरित्र उकति विलास मे वीर रस का सुन्दर परिपाक हुआ है। इस मे उपमा और रुपक अलकार का स्वाभाविक प्रयोग है। मार्कण्डेय पुराण की कथा उक्ति विलास के २२४ छन्दो मे पूर्ण हो गई है। अन्त मे आठ छन्दो मे गुरु जी ने कथा का उपसहार स्वतन्त्र रुप से किया है।

शिवा के रुप मे गुरु जी असि को धारण करने वाले प्रभु को सम्बोधित करते है। यह सवैया सिक्ख धर्म मे राष्ट्र गान का रुप ले चुका है–

देहि शिवा वर मोहि इहै सुभ करमन ते कबहू न टरो।
न डरो अरि सो जब जाइ लरो निसचै कर अपनी जीत करो
अरु सिख हो आपने ही मन कौ इह लालच हउगुन तउ उचरो
जब आव की अउध निदान बनै अति ही रन मै तब जूझ मरो।।

५ गिआन प्रबोध – इस रचना मे प्रभु की स्तुति के बाद राजा युधिष्ठिर तथा उनके उत्तराधिकारियो द्वारा कराये गये यज्ञो का वर्णन है। यज्ञ होने के पश्चात सभी दान सामग्री ब्राह्मण प्राप्त करते है। ज्ञान प्रबोध के अन्त मे गुरु जी केशो देव मिश्र को सम्बोधित करते हुए कहते है मिश्र जी! आप को दान देना भूल गया था इस लिए क्रोध मत करो। तुम विश्वास रखो कि तुम्हे यज्ञ की दान सामग्री मिल जावेगी किन्तु तुम्हे क्षत्रियो पर भी कृपा दृष्टि रखनी चाहिए क्योकि (वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत) ये भी आप के बनाए हुए है। अगले दो सवैयो मे गुरु जी खालसा पन्थ के प्रति सम्मान व्यक्त करते है–

जुध जिते इनही के प्रसादि इनही के प्रसादि सु दान करे।
अघ ओघ टरे इनही के प्रसादि इनही की क्रिपा फुनि धाम भरे।।
इनही के प्रसादि सु बिदिआ लई इनही ही क्रिपा सभ सत्र मरे।

इनही की क्रिपा के सजे हम है नही मो सो गरीब करोर परे।।

वर्ण व्यवस्था पर प्रहार और क्षात्र धर्म (खालसा) के प्रति गुरु जी का समर्पण नेश्र जी को अच्छा नही लगता।

६ **चउबीस अवतार** गुरु गोविन्द सिह जी ने परम्परागत चौबीस अवतारो ा वर्णन किया है। अवतार प्रभु का स्वरूप नही है वे महान आत्माएँ है जो ाकाल पुरुष मे मिल जाती है–

भूमि भार हरि सुर पुर जाई।
काल पुरख मो रहत समाई।।

२४ अवतार भी प्रभु का भेद नही जानते–

जो चौबीस अवतार कहाए।
तिन भी तुम प्रभ तनक न पाए।।

अवतारो मे रामकथा की रचना केशवदास की राम चन्द्रिका की भाति कई ाकार के छन्दो मे है। परशुराम–राम सवाद मे राम विनम्रता दिखाने की बजाय ारशुराम को ललकारते है। राम कथा के अन्त मे भी खडग धारण करने वाले ाभु की स्तुति की गई है–

पाइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आख तरे नही आनयो।
राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहै मत एक न मानयो।
सिम्रिति सासत्र बेद सबै बहु भेद कहै हम एक न जानयो।
स्री असिपान क्रिपा तुमरी कर मै न कहयो सभ तोहि बखानयो।

चउबीस अवतार मे कृष्णावतार का वर्णन २४९२ छन्दो मे किया गया है इस मे क्रम से वात्सल्य श्रृगार और वीर रस का नियोजन है। कृष्णावतार के अन्त मे गुरु जी ने कृष्ण के रुप मे आदर्श मानव की कल्पना की है।

वह जीव इस जगत मे धन्य है जो मुख से प्रभु का स्मरण करते हुए मन मे हमेशा बुराई पर भलाई की विजय के लिए सघर्षरत रहने का विचार बनाये रखता है। जो इस शरीर को नश्वर मानते हुए इस के द्वारा अधिक से अधिक भले कार्य करके यश की नाव पर सवार होकर ससार सागर को तैर कर पार कर जाता है। वह व्यक्ति धन्य है जो इस शरीर को धैर्य का घर बना कर बुद्धि के दीप से प्रकाशित करता है और बौद्धिकता तथा प्रेम से उत्पन्न ज्ञान की झाडू हाथ मे लेकर असहायता और निराशा के कूडे करकट को ससार भर से साफ कर देता है–

धन्न जीओ तिह को जग मै मुख ते हरि चित्त मे जुधु बिचारै।
देह अनित्त न नित्त रहै जसु नाव चडै भवसागर तारै।।
धीरज धाम बनाइ इहै तन बुधि सु दीपक जिउ उजिआरै।
ग्यानहि की बढनी मनहु हाथ लै कातरता कुतवार बुहारै।।

(कृष्णावतार – २४६२/५१४)

७ शस्त्र नाम माला मे युद्ध मे प्रयुक्त होने वाले शस्त्रो का वर्णन है।

८ **आख्यान चरित्र** – दशम ग्रन्थ मे ४०४ चरित्र आख्यान है जो इतिहास रोमास या लोक कथाओ से लिए गये है। इन कथाओ मे ऐतिहासिक पात्रो मे नूरजहा और मुमताज महल तथा रोमाटिक पात्रो मे सोहनी महीवाल और यूसुफ जुलेखा प्रसिद्ध है।

६ **जफर नामा** (विजय पत्र) – गुरु गोविन्द सिह जी अपने छोटे बच्चो की शहीदी के बाद ग्राम दीना मे एक श्रद्धालु शमीर खा के पास रुके थे उन्हे औरगजेब के दो पत्र मिल चुके थे तब उन्होने उनका उत्तर फारसी काव्य मे ११२ छन्दो मे लिखा और उसका नाम जफर नामा रखा। इस मे गुरु जी ने औरगजेब को अपने वचन का पालन न करने पर झूठा और विश्वासघाती बतलाया। गुरु जी ने स्पष्ट किया कि शान्ति के सभी उपाय असफल होने पर हाथ मे तलवार लिया जाना उचित है–

चुकार अज हम हीलते दरगुजशत।
हलाल असत बुरदन बशमशीर दसत।

दशम ग्रन्थ के अन्त मे कुछ फारसी मे लिखित नीति कथाये है और रीति कालीन काव्य से प्रभावित स्फुट कवित्त सवैयो का सग्रह है।

दशम ग्रन्थ की रचनाओ के माध्यम से गुरु गोविन्द सिह जी ने भारतीय साहित्य और चिन्तन मे एक नया आयाम जोडा। गुरु ग्रन्थ साहिब के आध्यात्मिक सन्देश को स्पष्ट करने के साथ साथ उन्होने पौराणिक कथाओ की नयी व्याख्या करके उन्हे जन जागरण का वाहक बनाया। गुरु जी ने जीवन के जो आदर्श निर्धारित किये उन पर आचरण किया और उन्हे ही काव्य मे प्रस्तुत किया। भारतीय साहित्य मे एक सन्त एक सिपाही और एक साहित्यकार के सगम का कोई दूसरा उदाहरण नही है।

सबद सूची

छन्द सूची

पउडी

सवैये/अन्य छन्द

सलोक सूचि (वर्णमाला क्रम से)

गुरु ग्रन्थ साहिब एव भारतीय साहित्य

गुरु ग्रन्थ साहिब मे गुरुओ का मौलिक चितन है उस समय की परम्परा के अनुसार पुराने धर्म गन्थो की व्याख्या को गुरुओ ने नही अपनाया। गुरु ग्रन्थ साहिब के सकलन के पश्चात भारतीय सतो और सूफी फकीरो ने गुरुवाणी को आधार बना कर रचना की। सिन्धी एव कश्मीरी भाषा मे गुरु ग्रन्थ साहिब को आधार बना कर चैन राइ सामी तथा भाई परमानन्द जी ने आध्यात्मिक काव्य रचना की।

सस्कृत साहित्य एव प्रादेशिक भाषाओ मे उपलब्ध भक्ति साहित्य के कुछ चुने हुए सन्दर्भ भाव साम्य के अन्तर्गत दिये गये है। पूर्ववर्ती साहित्य से आध्यात्मिक प्रतीक का साम्य है परवर्ती साहित्य मे गुरुवाणी के भावो की पुष्टि की गई है।

क्रम स०	सन्दर्भ चयन	पक्ति	ग्रन्थ/रचयिता	विषय
१	७०	एतस्य वा अक्षरस्य	बृहदारण्यकोपनिषद	निरभउ परमात्मा
२	१	उद्वहथ निसीदथ	गौतम बुद्ध	मन उद्‌बोधन
३	२७	काम कामय मानस्स		विषय मिठास
४	७१	पस्सामि लोके परिफन्दमान		तृष्णा त्याग
५	३१	चत्तरि परमगाणि	महावीर	मानव जीवन
६	६३	हस पद्‌मवन	शकराचार्य{६८६–७१८}	प्रभु प्रीति
७	६२	रोधस्तोयहृत श्रमेण		
८		अकोल निज बीज		
६	वि ७	न क्लेशा विषयेसु	आचार्य शान्ति देव	प्रभु दुख निवारण
१०	८१	मानव देह का बर्तन	बासवेश्वर{११२८–११६८}	
११	५८	चन्दनव कडिदु कारदु	अक्का महादेवी	प्रभु प्रीति
१२	XVII	गुरु सम्प्रदाय धर्म	ज्ञानेश्वर{१२७५–१२६६}	गुरु सेवा
१३	XX	साचा प्रेमाचिआ मुनी		
१५	४	जैसी ते शुकाचेनि		भ्रम
१६	१६	परिस आता फुडेपणे		मन का स्वरूप
१७	५२	ऐसे माझेनि नामघोषे		नाम सकीर्तन
१८	१०७	तैसा चित्ती अहते ठावो		प्रभु मिलन

१६		म्हणोनि थोरपण		
२०	५०	ग्वर शब्दस युस	लल द्यद{१३३५}	गुरु उपदेश पालन
२१	५१	चिदा नन्दस ज्ञानु		जीवन मुक्त
२२	८७	मुकरस जन मल		मन जोति सरुप
२३	११०	कुस पुश		प्रभु की सच्ची पूजा
२४		मन पुश		
२५	६४	मन्दार मकरन्द	पोतन्ना (तेलगू)	प्रभु प्रीति
२६	१	ए भव गहन वन	सकर देव{१४४६–१५५६}	मन सम्बोधन
२७	१०७	ए बगैर बकोश	हाफिज	प्रभु मिलन
२८	२१	साहेब है रगरेज	कबीर{१३६८–१४७८}	देह विवेक
२६	८४	ग्रह चद तपन		आरती
३०	१६	मै केहि कहौ बिपति	तुलसी दास{१५४३–१६२३}	पाच विकार
३१	५४	राम कहतु चल		गुरु मन्त्र
३२	८१	सुनह तात यह अकथ	(राम चरित मानस)	ज्ञान का पन्थ
३३	XV	जा दिन सत पाहुने आवत	सूर दास	सन्त तीर्थ है
३४	८	मेरो मन मति हीन	{१४७८–१५८३}	लोभ
३५	३३	धन मेच्चिन	वेमना	सासारिक धन
३६	६२	तन लो सर्व वडुग	वेमना	शरीर मदिर
३७	६३	पडि पडि भ्रोकग्गि		तत्व ज्ञानी
३८	१०६	इस का मुख इक जोति	बुल्हे शाह{१६८०–१७५७}	घूघट मे प्रभु
३६	१०६	पाके पाणी विचि मधाणी	बुल्हे शाह	घूघट मे प्रभु
४०	५५	बाले तैसा चाले	तुका राम	कथनी करनी
४१	६२	कामिनीसी जैसा आवडे		प्रभु प्रीति
४२		माते विणु बाला।	{१५६८–१६५०}	
४३	३२	बहुता जन्माचे सेवटी	समर्थ गुरु राम दास	मानव जीवन
४४	६०	दृश्या बेगळा दृश्या अतर्र।	{१६०८–१६८१}	गुपत हीरु
४५	२	करहा कसर छड	शाह लतीफ{१६८६–१७५२}	मन उद्‌बोधन
४६	१०२	तनु तसबीह मनु मणिओ		प्रभु मिलन
४७	१०८	पाए कान कमानि		प्रभु अद्वैत भाव
४८	१०८	बनि बियाई		

४६	१०८	असी सिकू		
५०	XXII	देवियू ऐ देवा	चैनराइ सामी (सिन्धी)	सेवा
५१	XXIV	हई हठु विजाइ	{१७४३–१८५०}	अभिमान त्याग
५२	४	पहिजो पाण मरे		लोभ
५३	४५	करे सम सिदकु		सत्सगति
५४	५४	माया मझि उदास		जीवनमुक्त (गुरमुख)
५५	८२	अधा अनुमानी		तिल तेरी वडिआइ
५६	८७	हैरत ऐ हासी		मन जोति सरुप
५७	८६	अणहूदे ओले सामी लिको		प्रभु अन्तर्दशन
५८	६२	कूके कोहु चरी		प्रभु अर्न्तदर्शन
५६	६६	अन्धे वटि आयो		
६०	२४	निधि चाल सुखमा	त्यागराज{१७६७–१८४७}	विवेक जागरण
६१	८	आमि भिक्षा करे फिरते	रवीन्द्रनाथ टैगोर	कृपण खेया
६२	३०	जीवन यखन सुकाय जाय	{१८६१–१६४१}	प्रभु नाम सिमरन
६३	४४	माझे माझे कत बार		काहेरे मन चितवहि
६४	८४	तॉहार आरती करे चन्द्र तपन		आरती
६५	८५	तव सिहासनेर आसन हते		रते तेरे भगत रसाले
६६	वि २३	एबार तोरा आमार		सोहिला (यश गान)
६७	६५	सुमरन पानुव दित्तोनम	जिदा कौल	नाम सिमरन रत्न
६८	६५	प्राप्त जाहले ते तुजला	केशव सुत{१८६६–१६०५}	नाम रत्न
६६	७६	जग का एक देखा तार	सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	एक नूर
७०	दशम ग्रन्थ	झूमत द्वार अनेक मतग	तुलसीदास	प्रभु प्रीति
७१		होहि अनित्य भजे भगक्तहि	सुन्दर दास {१५६६–१६८६}	एको जपि एको सालाह

सिक्ख धर्म क प्रथम छ गुरुओ की सेवा म रहने वाले बाबा बुडढा जी न गुरु अर्जन देव जी की पत्नी माता गगा जी की विनम्र सेवा स प्रसन्न होकर शूरवीर पुत्र होन का वरदान दिया। गुरु हरगोविन्द जी का जन्म १६ जून १५६५ को हुआ।

गुरु गोविन्द सिह जी के छोटे बच्चो के बुर्ज मे कैद हाने पर भयरहित मोती कहार कलश मे दूध लेकर उपस्थित हुआ। बच्चो की दादी माता गुजरी जी दूध का गिलास बच्चो को दे रही है।